विषय सूची

भूमिका

अध्यात्म के अन्दर कुछ गूढ़ बातें होती हैं जिनको ठीक से न समझकर गुरू लोग भ्रमित ज्ञान प्रचार करके अध्यात्म का स्वरूप ही बिगाड़ देते हैं।

उदाहरण के लिए :- आज तक हिन्दू धर्म गुरूजनों-संतजनों, आचार्यों तथा शंकराचार्यों को पता नहीं है कि श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी के माता-पिता कौन हैं? आप जी को यह जानकारी भी इसी पुस्तक से होगी। धैर्य से पढ़ना।

अध्यात्म में मूल रूप में पूज्य, पूजा, साधक तथा साधना शब्द आते हैं, जिनको समझना अनिवार्य है। इस के साथ-साथ आध्यात्म ज्ञान बहुत महत्वपूर्ण है, उसको जानना चाहिए।

❖ पूज्य :- परमेश्वर जिसे हम प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं।

❖ पूजा, अर्थात भक्ति :- जिस परमेश्वर को हम प्राप्त करना चाहते हैं उस के गुणों का ज्ञान हमें होता है, फिर उसकी प्राप्ति के लिए तड़फ, समर्पण, तथा आस्था अटूट श्रद्धा यह पूजा कहलाती है।

❖ साधक :- परमेश्वर की प्राप्ति के लिए कमर कसकर प्रयत्न करने वाला व्यक्ति साधक कहा जाता है, इसे पुजारी भी कह सकते हैं तथा भक्त भी।

❖ साधना :- परमेश्वर अर्थात पूज्य पदार्थ की प्राप्ति के लिए किया जाने वाला प्रयत्न साधना कहलाती है

उदाहरण :- जैसे किसी को पीने के पानी की आवश्यकता है, उसको ज्ञान हुआ कि पृथ्वी में नीचे पीने का मीठा पानी है, यह पूज्य पदार्थ हुआ अर्थात् पानी पूज्य वस्तु है।

उसके प्राप्ति के लिए किया जाने वाला प्रयत्न 'साधना' कहलाती है जैसे बोकी लगाना, पाईप जमीन में डालना, फिर ऊपर हैंडपम्प लगाकर हैंडल से पम्प चलाना फिर पानी होता है।

पानी पूज्य हुआ, इसकी इच्छा करने वाला भक्त साधक हुआ।

उसके पाने के लिए जो प्रयत्न मजदूरी की वह साधना हुई।

पानी को प्राप्ति की इच्छा 'पूजा' कहलाती है।

साधना में प्रयोग किए गए उपकरण पूज्य नहीं होते परन्तु आदरणीय होते हैं। उनका विशेष ध्यान रखा जाता है। अन्य उदाहरण :- जैसे पतिव्रता स्त्री अपने पति के साथ सपरिवार (Joint family) में रहती है। उसमें सास-ससुर, जेठ-जेठानी, देवर-देवरानी, ननंद तथा पति सब होते हैं, वह स्त्री पूजा तो अपने पति की करती है, परंतु सबका यथोचित आदर करती है, जब परिवार भिन्न-भिन्न होता है तो उस समय वह अपना सर्व सामान जो बँटवारे में हिस्से में आया, उसको उठाकर अपने पति के साथ अपने हिस्से के मकान में चली जाती है, पहले वह ऐसी लगती है जैसे जेठ-जेठानी समझती है, हमें बहुत प्यार करती है, देवर-देवरानी को ऐसी लगती थी जैसे हमारी अपनी ही है। हमारे को बहुत चाहती है, भाई तथा बहन के रूप

में। इसी प्रकार ननंद समझती है कि हमारे लिए कुर्बान है, हमारी प्रत्येक आवश्यकता का कितना ध्यान रखती है, सास-सुसर का माता-पिता की तरह सम्मान व सेवा करती है, उनको भी बहू अपनी बेटी के समान प्यारी लगती है। परन्तु वह पूजा अपने पति की करती रहती है। पति वाला भाव किसी अन्य पुरूष में नहीं रखती तथा जो प्यार पति से होता है, वह अन्य से नहीं करती। लेकिन आदर-सत्कार सबका करती है। जिस समय वह पतिव्रता स्त्री परिवार से भिन्न होती है तो अपने हिस्से की चम्मच तक भी उठा ले जाती है और अपने पति के घर में चली जाती है। इसी प्रकार साधक का परिवार, भक्तों का समूह तथा प्रभुओं का दरबार होता है।

आप जी को शंका होगी कि प्रभु तो एक ही सुना है, अनेक प्रभुओं का क्या अर्थ हुआ?

प्रभु की परिभाषा :- प्रभु का अर्थ है स्वामी, मालिक, इसी के पर्यायवाची नाम हैं, राम, अल्लाह, रब, परमात्मा आदि-आदि हम उसे साहेब कहते हैं। जैसे सरपंच साहब, चेयरमैन साहब, विधायक साहब, मन्त्री साहब, मुख्यमन्त्री साहब, केन्द्र का मन्त्री साहब, प्रधान मन्त्री साहब (प्रभु) ये सर्व साहब कहलाते हैं परन्तु इनकी शक्ति में अन्तर होता है।

इसी प्रकार :- एक ब्रह्मण्ड में "ब्रह्म" जिसे क्षर पुरूष कहते हैं, यह भी प्रभु है। यह 21 ब्रह्मण्डों का स्वामी है, एक ब्रह्मण्ड में सृष्टि जीवन चालू रखता है। अन्य खाली रहते है जब एक ब्रह्मण्ड का विनाश समय (प्रलय) होता है तो दूसरे ब्रह्मण्ड में जीवन शुरू कर लेता है। इसकी अधिक जानकारी इसी पुस्तक में लिखी ''सृष्टि रचना'' विषय में पढ़ेंगे।

एक ब्रह्मण्ड में तीन लोक हैं :- 1. पृथ्वी लोक जिस पर हम रह रहे हैं। 2. स्वर्ग लोक, 3. पाताल लोक, एक ब्रह्मलोक भी है जो इनसे भिन्न है। इन तीन लोकों तथा ब्रह्म लोक का मालिक मुख्य मन्त्री ब्रह्म अर्थात क्षर पुरूष है, इस के तीन पुत्र है, जिनको तीनों लोकों में एक-एक विभाग का मन्त्री बना रखा है।

1. श्री ब्रह्मा जी रजगुण विभाग के मन्त्री हैं अर्थात् प्रभु हैं।

2. श्री विष्णु जी सतगुण विभाग के मन्त्री हैं अर्थात् प्रभु हैं।

3. श्री शिव जी तमगुण विभाग के मन्त्री हैं अर्थात् प्रभु हैं।

उपरोक्त प्रभु एक ब्रह्माण्ड में बने उपरोक्त केवल तीन लोक के स्वामी हैं। हमारे किए कर्म का फल ये तीनों प्रभु ही देते हैं, इसलिए ये हमारे संसार रूपी परिवार के गणमान्य सदस्य हैं।

4. इनके पिता ब्रह्म (क्षर पुरूष) इक्कीस ब्रह्मण्ड के स्वामी हैं, प्रभु हैं।

5. अक्षर पुरूष :- यह 7 संख ब्रह्माण्डों का स्वामी है, प्रभु है।

इन दोनों पुरूषों अर्थात् प्रभुओं का वर्णन गीता अध्याय 15 श्लोक 16 में है।

6. परम अक्षर पुरूष :- यह असँख्य ब्रह्माण्डों का स्वामी है, प्रभु है। यह कुल का मालिक, जो सर्व भक्तों का "पूज्य" है, जिस का वर्णन गीता अध्याय 15

श्लोक 17, गीता अध्याय 18 श्लोक 62, गीता अध्याय 15 श्लोक 4 तथा गीता अध्याय 8 श्लोक 3, 8, 9, 10 तथा 20, 21, 22 में है।

यह परम अक्षर ब्रह्म संसार रूपी वृक्ष की जड़ (मूल) है, इसका प्रमाण गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 17 में है। अधिक जानकारी आप जी को इसी पुस्तक "भक्ति से भगवान तक" में ''सृष्टि रचना'' तथा अन्य स्थानों पर पढ़ने को मिलेगी।

जैसे आम का पौधा रोपेंगे तो मूल की सिंचाई करनी होती है, मूल की सिंचाई करने से वृक्ष का तना, डार, शाखाऐं तथा पत्ते फलते-फूलते है पौधा वृक्ष बन कर फल देता है। फल वृक्ष की शाखाओं को लगते हैं।

सूक्ष्मवेद में लिखा है :-

कबीर, अक्षर पुरूष वृक्ष का तना है, क्षर पुरूष वाकि डार।
तीनों देवा शाखा हैं, पात रूप संसार।।

संसार रूपी वृक्ष का मूल अर्थात् मुख्य परमात्मा तो परम अक्षर ब्रह्म है, जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सब का धारण पोषण करता है, अक्षर पुरूष उस का तना है, क्षर पुरूष मोटी डार है, तीनों देवता (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव जी) शाखाऐं हैं, टहनियाँ हैं और पात रूप संसार।

जैसे आम के पौधे की मूल की पूजा की, वृक्ष बना, आम का फल शाखाओं को लगा। इसी प्रकार हमने पूजा तो परम अक्षर ब्रह्म की करनी है परन्तु आदर उपरोक्त सर्व प्रभुओं का करना है जब हम संसार छोड़कर जाऐंगे, अपने मूल मालिक के साथ उनके सनातन परम धाम में चले जाएंगे। फिर कभी संसार में लौटकर नहीं आएंगे, यह पूर्ण मोक्ष होगा।

विस्तृत ज्ञान आप जी इसी पवित्र पुस्तक में पढ़ेंगे यदि सच्ची लगन श्रद्धा से अमल करोगे तो आप जी की 101 पीढ़ी पार हो जाएगी। इस पुस्तक में "भक्ति से भगवान तक" पहुँचने का शास्त्रानुकूल मार्ग है। पढ़ो और अपने अनमोल मानव जीवन को सफल बनाओ।

लेखक
संत रामपाल दास महाराज
सतलोक आश्रम बरवाला
जिला - हिसार, हरियाणा (भारत)

”दो शब्द“

जीव हमारी जाति है, मानव धर्म हमारा।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, धर्म नहीं कोई न्यारा।।

अध्यात्म ज्ञान के अभाव से विश्व का मानव अपने मूल उद्देश्य से भटक चुका है। यदि हम विश्व अवलोकन करें तो पता चलेगा कि देश की सीमा के पार धर्म की सीमा है। जैसे भारत में 80% हिन्दू, नेपाल देश में 99% हिन्दू हैं। मुसलमानों के 17 देश माने जाते हैं जिनमें 99 % मुसलमान हैं। इसी प्रकार U.S.A (United State America) तथा अन्य कई देश हैं जो ”ईसाई“ धर्म से सम्बन्ध रखते हैं। चीन में पहले बौद्ध धर्म को मानते थे। वर्तमान में नास्तिक प्रायः हो चुका है। रूस में भी बौद्ध धर्म का बोलबाला था। अब नास्तिक प्रायः हो चुका है। इससे स्पष्ट है कि देश की सीमाओं के पार धर्म की छाया है जो हमें याद दिलाती है कि हम एक हैं क्योंकि जब प्रत्येक मानव में धार्मिकता प्रवेश कर जाएगी तो हम विश्व के मानव हो जाएंगे। हम मानवता को भूलकर धार्मिकता से दूर हो गए हैं।

हम हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई तथा अन्य धर्म को मानने वाले हैं। मानव के लिए प्रारम्भ से ही धर्म प्रमुख है। अब हम धर्मावलम्बी (मैं हिन्दू हूँ, मैं मुसलमान हूँ, मैं सिक्ख हूँ, मैं ईसाई हूँ...) तो हैं परंतु धार्मिकता केवल औपचारिक ही शेष है। धार्मिकता का लगभग ह्रास हो चुका है।

एक धार्मिक (धर्मावलम्बी) व्यक्ति के लिए अनिवार्य है कि वह 1. नशा न करे, 2. माँसाहार न करे, 3. भ्रष्टाचार न करे, 4. दुराचार-व्याभीचार न करे, 5. अहिंसावादी हो, 6. परमार्थी हो, 7. दानी-धर्मी हो, 8. मधुर भाषी हो, 9. अहंकार रहित नम्र हो, 10. अपनी ताकत का, अपने शारीरिक बल या पद के बल का दुरूपयोग न करे, 11. दयावान हो, 12. प्रत्येक प्रकार के पाप से बचे, 13. राग-द्वेष न करे, 14. शास्त्रानुकूल भक्ति करे। उपरोक्त बुराईयों से आप बचे रहें और शास्त्रानुसार भक्ति कर रहें हैं तो आप धार्मिक हैं अन्यथा आप मानव का बिगड़ा रूप हैं। उपरोक्त गुण वर्तमान में किसी भी धर्म के व्यक्तियों में दिखाई नहीं देते। उपरोक्त गुणों के अभाव से हम मानवता से गिर चुके हैं। जब तक ये गुण मानव ग्रहण नहीं करेगा, तब तक विश्व का मानव अपने मूल उद्देश्य से भटका रहेगा तथा अपने अनमोल मानव जीवन को व्यर्थ करके संसार छोड़कर चला जाएगा। फिर अनेकों जन्मों तक पशु-पक्षियों, कीट-पतंगों आदि-आदि के जीवन में कष्ट उठाएगा, इस महान कष्ट से बचने के लिए आप जी अपने मूल उद्देश्य को जानें।

प्रश्न :- मानव का उद्देश्य क्या है?

उत्तर :- जैसाकि आप जी ने ऊपर पढ़ा कि सर्व प्रथम हम धर्मावलम्बी हैं। उपरोक्त गुणों को ग्रहण करने से हम धार्मिक बनेंगे। धार्मिक बनकर हम भविष्य में होने वाले उपरोक्त महान कष्ट से बचेंगे।

सीधे शब्दों में कहें तो मानव का मूल उद्देश्य भक्ति करके भगवान के पास जाना है। मानव का मूल उद्देश्य ‘‘भक्ति से भगवान तक‘‘ है।

हम तीन युग (सत्ययुग = 17 लाख 20 हजार वर्ष, त्रेतायुग = 12 लाख 96 हजार वर्ष तथा द्वापरयुग = 8 लाख 64 हजार वर्ष) पार करके चौथे युग अर्थात् कलयुग में जी रहे हैं। वर्ष सन् 2013 को कलयुग 5 हजार 5 सौ 21 वर्ष बीत चुका है। (सन् 1997 में कलयुग 5505 वर्ष बीत चुका था। इसलिए 2013 को 5521 वर्ष का कलयुग हो चुका है।) वर्तमान से 50 वर्ष पूर्व के मानव में मानवता का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि भारत वर्ष में कितनी शान्ति थी। भारत का मानव मानवता के पूर्वोक्त गुणों से लगभग परिपूर्ण था, भले ही अशिक्षित था, परंतु इन्सानियत दूर से झलकती थी। सन् 1970 के पश्चात् मानवता का ह्रास इतनी तीव्र गति से हुआ है कि समझ से बाहर की बात लगने लगी है। जितनी शिक्षा बढ़ी है, उतनी इन्सानियत घटी है। जितनी विज्ञान ने उन्नति की है, उतनी ही नास्तिकता ने उन्नति की है। विज्ञान को परमात्मा का पर्यायवाची बनाने की चेष्टा की जा रही है। विज्ञान के खोखले आविष्कारों से परमात्मा की सत्ता को समाप्त करने का व्यर्थ प्रयत्न किया जा रहा है। विश्व का मानव उच्च शिक्षा प्राप्त करके अपने मूल उद्देश्य को छोड़कर संसार की नाशवान शानौ-शौकत को प्राप्त करने में बे-सबरा होकर लगा है। उच्च सरकारी पद या कम्पनी में उच्च पद प्राप्त करना तथा बड़ी कोठी, बड़ी कार खरीदना, व्यापार से अनगिनत धन इकट्ठा करना, फिर विवाह-शादियों में अनाप-सनाप खर्च करके फोकट की महिमा बनाना एक परम्परा-सी बन गई है, परंतु इन्सानियत तथा शान्ति का लगभग नाश हो चुका है।

लेखक (सन्त रामपाल दास) एक बार सत्संग करने के लिए "गोवा" राज्य में गया। सत्संग स्थल समुद्र के लगभग आधा किलोमीटर की दूरी पर था। समुद्र तट को देखने के लिए तथा सैर के उद्देश्य से समुद्र तट पर गए तो वहाँ समुंद्र के किनारे-किनारे विदेशी पर्यटक पुरूष केवल कच्छे में तथा स्त्री कच्छे (जांघिए) तथा छाती (Breast) पर अंगिया, जो मुश्किल से स्तनों को ढ़क पा रही थी, वे रेत में लेटे थे। लोगों ने बताया कि ये बाहर के देशों के बहुत धनी व्यक्ति हैं, ऐशोआराम की सब सुविधाऐं प्राप्त हैं, टी.वी., ऐसी (A.C), मोबाइल, दो-दो गाड़ियाँ, धन की कमी नहीं है, बड़ी-बड़ी कोठियाँ हैं जो 8-8 मंजिल की हैं। ये कह रहे हैं कि हमें यहाँ इस स्थिति में (रेत में वस्त्रहीन अवस्था में) आनन्द आता है, शांति मिलती है। उस ऐश्वर्य के जीवन से हम ऊब चुके हैं।

पाठकों से निवेदन है कि कृप्या विचार करें :- अपने भारत वर्ष में वे माया के पुजारी शान्ति प्राप्त कर रहे हैं तो उन कोठी-बंगलों व अन्य साधनों को सिर में मारेंगे जिनको बनाने में जीवन का सब समय लगाया। कोठी-कार आदि-आदि भौतिक सुविधाऐं सुखी जीवन जीने के लिए प्राप्त करते हैं। उनमें वह सुख (शान्ति) है ही नहीं तो वे किसलिए बनाई व खरीदी? उत्तर स्पष्ट है कि अशान्ति के लिए। अशान्ति का सीधा अर्थ है दुःखी अर्थात् बेचैन रहने के लिए। शान्ति कहाँ मिली? कोठी-बंगलों को छोड़कर जल के किनारे रेत (Sand) में, वृक्षों के नीचे, भारत वर्ष की प्राचीन सभ्यता का अवलोकन करने से ज्ञान होता है कि हमारे देश के नागरिक

नदी या तलाबों के किनारे वृक्षों के नीचे झोंपड़ी बनाकर शान्ति से रहते थे। इसके साथ-साथ परमात्मा की भक्ति भी करते थे। फलदार वृक्ष प्रत्येक मौसम में फलों से भरपूर रहते थे। झाड़-बोझे भी फलों से युक्त रहते थे। छोटे-छोटे पौधे जो जड़ी-बूटियाँ होती थी, वे भी फल-फूलों से युक्त होते थे। सर्व मानव अनाज कम खाते थे, जंगल की जड़ी-बूटियाँ, हरी सब्जियाँ तथा फल अधिक खाते थे क्योंकि ये पर्याप्त मात्रा में होते थे। केवल राजा लोग तथा धनी व्यक्ति शहर बनाकर पक्के मकानों में रहा करते थे जो पत्थरों से निर्मित होते थे। वे सदा दुःखी ही रहते थे। लेकिन कुछ समय पश्चात् मानव में भक्ति का शास्त्रविरूद्ध प्रचलन हुआ है, जिस कारण से परमात्मा से मिलने वाला लाभ बन्द हो गया और मानव शहरी लोगों के रहन-सहन से प्रभावित होकर सामान्य तरीके से धन प्राप्ति न करके, पाप कर्म करके धन इकट्ठा करने लगा, समयानुसार इनकी सँख्या बढ़ती चली गई और मानव में अशांति भी बढ़ती चली गई। ऊपरी दिखावा करना, स्वभाव तथा परम्परा में बदल गया जिसका परिणाम सामने है।

प्रश्न :- अब मानवता का उत्थान कैसे संभव होगा?

उत्तर :- तत्वज्ञान का प्रचार जोर-शोर से होना चाहिए। वह तत्वज्ञान मेरे पास (सन्त रामपाल दास के पास) है जो निम्नलिखित **Web Site** पर उपलब्ध है। वह आप पुस्तकों तथा सतसंग वचनों की **D.V.D** तथा **C.D.** के रूप में आप जी सुन सकते हैं जो **Web Site** से आप **Download** भी कर सकते हैं। **Web Site** है = **www.jagatgururampalji.org**

सर्व प्रथम आप जी सुनें या पढ़ें "सृष्टि रचना" अर्थात् संसार की रचना जो अध्यात्म की कुँजी (**Key**) है, उसके पश्चात् सुनें तथा देखें "आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा" जो भिन्न-भिन्न सन्तों तथा मेरे विचारों को दिखाया-सुनाया गया है। फिर सत्संगों की **D.V.D** देखें जो उसी वैबसाइट पर है। फिर देखना दो वर्ष में भारत वर्ष में कैसे शान्ति तथा आपसी भाई-चारा होता है, विश्व देखेगा।

धन संग्रह करके अपने कर्म खराब करने वालों पर जादू जैसा प्रभाव पड़ेगा, सर्व बुराई समाप्त हो जाऐंगी। सर्व भारतवासी शास्त्रविधि अनुसार भक्ति की साधना करके यहाँ भी सुखी हो जाऐंगे तथा पूर्ण मोक्ष भी प्राप्त करेंगे। इसके पश्चात् पूरा विश्व भारत का अनुसरण करेगा, विश्व में शान्ति होगी। भारत धार्मिक जगतगुरू रूप में जाना जाएगा।

प्रश्न :- आप इतना परमार्थी कार्य निःस्वार्थ कर रहे हैं, फिर भी आपका घोर विरोद्ध हो रहा है, आपको जेल भी जाना पड़ा, क्यों न आप अपना प्रचार विदेशों में करें, जहाँ के व्यक्ति शीघ्र अनुयाई बन जाते हैं जैसे एक हिन्दुस्तानी संत ने विदेशों में अपना प्रचार करके लगभग सौ देशों में फैला दिया है।

उत्तर :- उस संत का ज्ञान ऐसा है जिससे किसी को कोई लाभ होने वाला नहीं है, शास्त्र प्रमाणित नहीं है। जैसे काबुली किक्कर (बबूल) को विशेष जलवायु तथा उपजाऊ जमीन की आवश्यकता नहीं होती। उसे कहीं बीज दो, अपने आप

फल-फूल जाती है। इसी प्रकार अन्य व्यर्थ के झाड़-बोझे भी अपने आप ही उग जाते हैं परन्तु गेहूँ की फसल तथा फलदार वृक्ष (आम आदि-आदि) को विशेष जलवायु तथा उपजाऊ पृथ्वी की आवश्यकता होती है।

भारतवर्ष की जनता परमार्थी है, वह स्वार्थ का परित्याग आसानी से कर सकती है। परमार्थ में तन-मन-धन शीघ्र समर्पित कर देती है। भारत वर्ष में धर्म तथा शुभ कर्म करने की प्रत्येक व्यक्ति, बच्चे, वृद्ध, माता तथा बेटी-बहन की प्रबल इच्छा है। परंतु तत्वज्ञान न होने के कारण वह स्वभाव समाप्त प्रायः हो चुका है। तत्वज्ञान के द्वारा इनको फिर से सक्रिय करना बहुत सरल है। उदाहरण के लिए पहले मेरे अनुयाईयों को देख लें, इनका स्वभाव कैसा था? कितनी बुराईयाँ थी, वर्तमान में इनमें कितना परिवर्तन आया है। हिन्दुस्तान से प्रारम्भ होकर यह तत्वज्ञान विश्व में सरलता से फैल सकता है, इसलिए भारतवर्ष से प्रारम्भ किया गया है, भारत वर्ष के नागरिकों का क्षेत्र (शरीर) भक्ति रूपी आम को उगाने के अनुकूल स्थान है, थोड़े ही प्रयत्न से खेत (क्षेत्र) साफ होता है, शीघ्र भक्ति प्रवेश हो जाती है।

प्रश्न :- भक्ति करना किसलिए अनिवार्य है?

उत्तर :- पहले तो सद्ग्रन्थों से ही प्रमाणित करता हूँ कि भक्ति करनी चाहिए। श्रीमद् भगवत गीता अध्याय 18 श्लोक 65, गीता अध्याय 9 श्लोक 33 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि हे अर्जुन! मुझ में मनवाला हो, मेरा भक्त बन, मेरा पूजन करने वाला हो, मुझको प्रणाम कर, ऐसा करने से मुझे ही प्राप्त होगा, मैं तुझ से सत्य प्रतिज्ञा करता हूँ क्योंकि तू मेरा अत्यन्त प्रिय है। (गीता अध्याय 18 श्लोक 65) श्रीमद् भगवत गीता के इस एक श्लोक ने आपके प्रश्न का उत्तर दे रखा है। भक्ति इसलिए करना अनिवार्य है कि पवित्र सद्ग्रन्थों में हमें भक्ति करने का प्रभु का आदेश है। गीता अध्याय 8 श्लोक 5, 7 में कहा है कि जो साधक अन्त काल में भी मुझको स्मरण करता हुआ शरीर त्यागकर जाता है, वह मेरे भाव में भावित रहता है, इसमें कोई संशय नहीं है। (गीता अध्याय 8 श्लोक 5)

❖ इसलिए हे अर्जुन! तू सब समय में मेरा स्मरण कर और युद्ध भी कर। इस मुझ में अर्पण किए हुए मन-बुद्धि से युक्त होकर निःसंदेह ही मुझको ही प्राप्त होगा। (गीता अध्याय 8 श्लोक 7) अध्याय 9 श्लोक 33 में भी यही प्रमाण है।

इन गीता अध्याय 8 के दो श्लोकों (गीता अध्याय 8 श्लोक 5, 7) में तो गीता ज्ञान दाता ने अपनी भक्ति करने को कहा है और गीता अध्याय 8 के ही श्लोक 8, 9, 10 में गीता ज्ञान दाता ने अपने से श्रेष्ठ परमेश्वर की भक्ति करने को कहा है तथा उस परमेश्वर की भक्ति करने से उसी (परम्) श्रेष्ठ (दिव्यम्) अलौकिक (पुरूषम्) पुरूष को अर्थात् परमेश्वर को प्राप्त होगा। (गीता अध्याय 8 श्लोक 8)

❖ जो (कविम्) कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर (पुराणम्) प्राचीन अर्थात् अनादि सब का नियन्ता सूक्ष्म से भी अति सूक्ष्म सबका धारण-पोषण करने वाला, अचिन्त स्वरूप, सूर्य के सदृश प्रकाशमान साकार है। अविद्या से अति परे शुद्ध

सच्चिदानन्द परमेश्वर का स्मरण करता है। (गीता अध्याय 8 श्लोक 9)

❖ गीता अध्याय 8 श्लोक 10 = वह भक्तियुक्त साधक अन्त काल में भक्ति के बल से अर्थात् भक्ति की शक्ति से भृकुटि के मध्य में प्राणों अर्थात् श्वांसों को (आवेश्य) स्मरण के लिए स्थापित करके और निश्चल मन से स्मरण करता हुआ उस (परम् = पर) गीता ज्ञान दाता से दूसरे (दिव्यम्) दिव्य (पुरूषम्) पुरूष अर्थात् परमेश्वर को ही प्राप्त होता है।

ऊपर लिखे गीता के श्लोकों में लिखा है कि भक्ति करनी चाहिए। इसलिए भक्ति करना अनिवार्य है। जैसे रोग नाश के लिए औषधि का सेवन करना अनिवार्य है, ऐसे ही आत्म-कल्याण के लिए भक्ति करना अनिवार्य है।

प्रश्न :- भक्ति करने से क्या लाभ है? भक्ति न करने से क्या हानि है?

उत्तर :- सद्ग्रन्थों में लिखा है कि प्राणी अपनी भक्ति तथा पुण्यों के बल से स्वर्ग-महास्वर्ग में जाता है, वहाँ इसे सर्व सुख प्राप्त होता है। जिस समय भक्ति तथा पुण्य क्षीण (समाप्त) हो जाते हैं तो वह प्राणी पृथ्वी पर भिन्न-भिन्न प्राणियों के शरीरों में कष्ट भोगता है। वर्तमान में जितने भी प्राणी पृथ्वी पर हैं, इनको यहाँ कोई सुख नहीं है। अन्य प्राणी केवल अपना कर्म भोग ही भोगते हैं। जिस समय इनको मानव शरीर प्राप्त होगा, तब इनका उद्धार सम्भव है।

श्रीमद् भगवत गीता अध्याय 5 श्लोक 12 में कहा है कि युक्तः अर्थात् जो परमात्मा की भक्ति में लगा है, उसके कर्म फल छूट जाते हैं। उनको त्यागकर भक्त भगवान प्राप्ति वाली अर्थात् परमात्मा प्राप्त होने के पश्चात् जो शान्ति अर्थात् सुख होता है, उस शान्ति को प्राप्त होता है और अयुक्तः अर्थात् जो परमात्मा की भक्ति में नहीं लगा। वह सामान्य व्यक्ति, कर्मों के कारण संसार बन्धन में फँसा रहता है। उसको कर्मानुसार अन्य प्राणियों के शरीरों में कष्ट प्राप्त होता रहता है।

❖ जैसे ट्रक या कार, बस आदि गाड़ी के पहिए की ट्यूब की हवा निकल जाती है तो वह गाड़ी खड़ी रहती है। जब उसकी ट्यूब में हवा भर दी जाती है तो वह कई क्विंटल वजन को उठाकर ले जाती है। इसी प्रकार जीव की भक्ति तथा पुण्य समाप्त हो जाते हैं तो वह हवारहित ट्यूब के समान होता है। उसके लिए भक्ति रूपी हवा भर देने के पश्चात् वही आत्मा भक्ति की शक्ति से संसार सागर से तर जाती है।

भक्ति न करने से हानि :- जीव का शरीर एक वस्त्र माना जाता है। जब कोई साधु मृत्यु को प्राप्त हो जाता है तो सन्त तथा भक्तजन कहा करते हैं कि अमुक सन्त चोला छोड़ गया। गीता अध्याय 2 श्लोक 22 में कहा है कि जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसरे नए वस्त्र ग्रहण करता है। वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरों को त्यागकर अन्य नए शरीरों को प्राप्त होती है। (गीता अध्याय 2 श्लोक 22) इसलिए प्रत्येक प्राणी अपने-अपने शरीर अर्थात् पोषाक (Dress) पहने हुए है। जैसे कोई गधे, कुत्ते, सूअर, अन्य पशु-पक्षियों व कीटों रूपी वस्त्र धारण किए है, मनुष्य का शरीर भी एक पोषाक है। जो बच्चे विद्यालय में प्रवेश प्राप्त कर लेते हैं, उनके

लिए एक विशेष प्रकार की पोषाक (Dress) अनिवार्य होती है।

इसी प्रकार पृथ्वी पर जितने भी स्त्री-पुरूष हैं, ये सबके सब अन्य प्राणियों से भिन्न पोषाक अर्थात् शरीर धारण किए हैं, सर्व मानव को ऐसे जानें जैसे विद्यार्थी होते हैं। उनकी पोषाक विशेष होती है। विद्यार्थियों से माता-पिता कोई विशेष कार्य नहीं लेते। उनको सुविधाऐं भी परिवार के अन्य सदस्यों से भिन्न देते हैं। यदि वे विद्यार्थी अपना उद्देश्य त्यागकर अन्य बच्चों की तरह ही खेलकूद में लगे रहें जो बच्चे विद्यालय में नहीं जाते (उनकी पोषाक भी भिन्न होती है) तो वे विद्यार्थी अपने विद्याकाल को समाप्त करके बहुत पश्चाताप् करेंगे, बहुत कष्ट उठाऐंगे। जैसे सन्तानोत्पत्ति, सन्तान का पालन पोषण सर्व प्राणी करते हैं। यदि मनुष्य भी यही कार्य करके अपना जीवन अन्त कर जाता है तो उसमें और अन्य पशु-पक्षियों में कोई अन्तर नही रहा। उसको मानव शरीर प्राप्त हुआ था भक्ति करने के लिए, वह भक्ति न करके फिर पशु व अन्य प्राणी के शरीर को प्राप्त करके बहुत कष्ट उठाएगा। तब केवल पश्चाताप् ही हाथ लगेगा।

❖ एक समय एक मजदूर एक सड़क के निर्माण कार्य में मजदूरी कर रहा था। उसकी पत्नी भी वहीं मजदूरी कर रही थी। उसके बच्चे वहीं वृक्ष के नीचे मिट्टी में खेल रहे थे। सड़क विभाग का Xen (एक्सइन) निर्माण कार्य का निरीक्षण करने गाड़ी में बैठकर आया। जब Xen चला गया तो वह मजदूर कह रहा था कि यह Xen मेरा सहपाठी (Class fellow) था। मेरी किस्मत फूट गई, मैंने पढ़ाई नहीं की, मैं मजदूरी कर रहा हूँ। मेरे बच्चे यहाँ वृक्षों के नीचे गर्म हवा में गर्मी से जूझ रहे हैं। कपड़े भी अच्छे नहीं, खाना भी रूखा-सूखा खाने को मिलता है। इस Xen के बच्चे शहर में कूलर तथा A.C. कमरों में सुख से रह रहे हैं। मैं बहुत अभागा हूँ। मैंने वह शिक्षा का समय खेल-कूद में नष्ट कर दिया। यदि मैं भी मन लगाकर पढ़ाई कर लेता तो आज मेरा परिवार भी सुखी होता। कबीर जी ने कहा है :-

अच्छे दिन पिछे गए, गुरू से किया न हेत।
अब पछतावा क्या करे, चिड़िया चुग गई खेत।।

हे मानव शरीरधारी विद्यार्थियो! सावधान हो जाओ अपने मूल उद्देश्य को पहचानो।

❖ सूक्ष्मवेद में बताया है कि जो मनुष्य शरीर प्राप्त करके भक्ति नहीं करते, उनको क्या हानि होती है?

कबीर, हरि के नाम बिना, नारि कुतिया होय।
गली–गली भौकत फिरै, टूक ना डालै कोय।।

सन्त गरीब दास जी की वाणी से :-

बीबी पड़दै रहे थी, ड्योडी लगती बाहर।
अब गात उघाड़ै फिरती हैं, बन कुतिया बाजार।
वे पड़दे की सुन्दरी, सुनों संदेशा मोर।
गात उघाड़ै फिरती है करें सरायों शोर।।

नक बेसर नक पर बनि, पहरें थी हार हमेल।
सुन्दरी से कुतिया बनी, सुन साहेब के खेल।।

भावार्थ :- मनुष्य जीवन प्राप्त प्राणी यदि भक्ति नहीं करता है तो वह मृत्यु के उपरान्त पशु-पक्षियों आदि-आदि की योनियाँ प्राप्त करता है, परमात्मा के नाम जाप बिना स्त्री अगले जन्म में कुतिया का जीवन प्राप्त करती है। फिर निःवस्त्र होकर नंगे शरीर गलियों में भटकती रहती है, भूख से बेहाल होती है, उसको कोई रोटी का टुकड़ा भी नहीं डालता। जिस समय वह आत्मा स्त्री रूप में किसी राजा, राणा तथा उच्च अधिकारी की बीवी (पत्नी) थी। वे उसके पूर्व जन्मों के पुण्यों का फल था जो कभी किसी जन्म में भक्ति-धर्म आदि किया था। वह सर्व भक्ति तथा पुण्य स्त्री रूप में प्राप्त कर लिए, वह आत्मा उच्च घरानों की बहू-बेटियाँ थीं। तब पर्दों में रहती थी, काजु-किशमिश डालकर हलवा तथा खीर खाती थी, उनका झूठा छोड़ा हुआ नौकरानियाँ खाती थी। उनको सत्संग में नहीं जाने दिया जाता था क्योंकि वे उच्च घरानों की बहुऐं तथा बेटियाँ थी, घर से बाहर जाने से बेइज्जती मानती थी। बड़े घरों की इज्जत इसी में मानी जाती थी कि बहू-बेटियाँ का पर्दों में रहना उचित है। इन कारणों से वह पुण्यात्मा सत्संग विचार न सुनने के कारण भक्ति से वंचित रह जाती थी। उस मानव शरीर में वह स्त्री गले मे नौ-नौ लाख रूपये के हार हमेल पहनती थी, नाक में सोने की नाथ पहनती थी, उसी हार-सिंगार में अपना जीवन धन्य मानती थी। वे अब कुतिया का जीवन प्राप्त करके नंगे शरीर गलियों में एक-एक टुकड़े के लिए तरस रही होती हैं, शहर में पहले सराय (धर्मशाला) होती थी। यात्री रात्रि में उनमें रूकते थे, सुबह भोजन खाकर प्रस्थान करते थे। वह पर्दे में रहने वाली सुन्दर स्त्री कुतिया बनकर धर्मशाला में रूके यात्री का डाला टुकड़ा खाने के लिए सराय (धर्मशाला) में भौंकती है। रोटी का टुकड़ा धरती पर डाला जाता है। उसके साथ कुछ रेत-मिट्टी भी चिपक जाती है, वह सुन्दरी जो काजु-किशमिश युक्त हलवा-खीर खाती थी, भक्ति नही करती थी, उस रेत-मिट्टी युक्त टुकड़े को खा रही है। यदि मनुष्य शरीर रहते-रहते पूरे सन्त से नाम लेकर भक्ति कर लेती तो ये दिन नहीं देखने पड़ते।

‘‘पुहलो बाई की नसीहत‘‘

एक राजा ने पुहलो बाई के ज्ञान-विचार सुने, बहुत प्रभावित हुआ। उस राजा की तीन रानियाँ थी। राजा ने अपनी रानियों को पुहलो बाई के विषय में बताया। राजा ने कई बार पुहलो बाई भक्तिन की अपनी रानियों के सामने प्रशंसा की। अपने पति के मुख से अन्य स्त्री की प्रशंसा सुनकर रानियों को अच्छा नहीं लगा। परंतु कुछ बोल नहीं सकी। उन्होंने भक्तमति पुहलो बाई को देखने की इच्छा व्यक्त की। राजा ने पुहलो बाई को अपने घर पर सत्संग करने के लिए कहा तो पुहलो बाई ने सत्संग की तिथि तथा समय राजा को बता दिया। सत्संग के दिन रानियों ने अति सुंदर तथा कीमती वस्त्र पहने तथा सब आभूषण पहने। अपनी सुंदरता दिखाने

के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी। रानियों ने सोचा था कि पुहलो बहुत सुंदर होगी। भक्तमति पुहलो राजा के घर आई। उसने खद्दर का मैला-सा वस्त्र धारण कर रखा था। हाथ में माला थी, चेहरे का रंग भी साफ नहीं था। भक्तमति पुहलो को देखकर तीनों रानियाँ खिल-खिलाकर हँसने लगी और बोली कि यह है वह पुहलो, हमने तो सोचा था कि बहुत सुंदर होगी। उनकी बात सुनकर भक्तमति पुहलो बाई ने कहा कि :-

वस्त्र—आभूषण तन की शोभा, यह तन काच्चो भाण्डो।
भक्ति बिना बनोगी कुतिया, राम भजो न रांडो।।

भावार्थ :- सुंदर वस्त्र तथा आभूषण शरीर की शोभा बढ़ाते हैं। यह शरीर नाशवान है जैसे कच्चा घड़ा होता है। यह शरीर क्षण भंगुर है। न जाने किस कारण से, किस आयु में और कब कष्ट हो जाए। यदि भक्ति नहीं की तो अगले जन्म में कुतिया का जन्म पाओगी। फिर निःवस्त्र भटकी फिरोगी। इसलिए कहा है 'राण्डो' अर्थात् स्त्रियों भक्ति करो। 'राण्ड' शब्द विधवा के लिए प्रयोग होता है। परंतु सामान्य रीति में स्त्रियाँ अपनी प्रिय सखियों को प्यार से सम्बोधित करने में प्रयोग किया करती। अब शिक्षित होने पर यह शब्द प्रयोग नहीं होता। भक्तमति पुहलो बाई ने सत्संग सुनाया। कबीर परमेश्वर जी की साखियाँ सुनाई :-

कबीर, राम रटत कोढ़ी भलो, चू—चू पड़े जो चाम।
सुंदर देहि किस काम की, जा मुख नाहीं नाम।।
कबीर, नहीं भरोसा देहि का, विनश जाए छिन माहीं।
श्वांस—उश्वांस में नाम जपो, और यत्न कुछ नाहीं।।
श्वांस—उश्वांस में नाम जपो, व्यर्था श्वांस मत खोओ।
ना जाने इस श्वांस का, आवन हो के ना होय।।
सर्व सोने की लंका थी, रावण से रणधीरम्।
एक पलक में राज्य गया, जम के पड़े जंजीरम्।।
मर्द—गर्द में मिल गए, रावण से रणधीरम्।
कंस, केसि, चाणूर से, हिरणाकुश बलबीरम्।।
गरीब, तेरी क्या बुनियाद है, जीव जन्म धरि लेत।
दास गरीब हरि नाम बिन, खाली रह जा खेत।।

भक्तिन पुहलो ने इस संसार की वास्तविकता बताई तथा भक्ति बिना होने वाले कष्ट बताए। छोटे-से राज्य के टुकड़े को प्राप्त करके आप इतना गर्व कर रहे हो, यह व्यर्थ है। लंका का राजा रावण ने सोने (Gold) के मकान बना रखे थे। सत्य भक्ति न करने से राज्य भी गया, स्वर्ण भी यहीं रह गया, नरक का भागी बना। राजा-रानियों ने उपदेश लेकर भक्ति की तथा जीवन धन्य बनाया।

कबीर, हरि के नाम बिन, राजा रषभ होय।
मिट्टी लदे कुम्हार के, घास न नीरै कोए।।

भगवान की भक्ति न करने से राजा गधे का शरीर प्राप्त करता है। कुम्हार

के घर पर मिट्टी ढ़ोता है, घास स्वयं जंगल में खाकर आता है।

फिर पीछे तू पशुआ किजै, दीजै बैल बनाय।
चार पहर जंगल में डोले, तो नहीं उदर भराय।।
सिर पर सींग दिए मन बौरे, दूम से मच्छर उड़ाय।
कांधै जूआ जोतै कूआ, कोंदों का भुस खाय।।

भावार्थ :- गधे का शरीर पूरा करके वह प्राणी बैल की योनि प्राप्त करता है। मानव शरीर में जीव को कितनी सुविधाऐं प्राप्त थी। भूख लगते ही खाना खाओ, दूध पीओ, चाय पीओ, प्यास लगे तो पानी पी लो। भक्ति न करने से वही प्राणी बैल बनकर सुबह से शाम तक चार पहर अर्थात् 12 घण्टे तक जंगल में फिरता है, हल में जोता जाता है। दिन में केवल दो बार आहार बैल को खिलाया जाता है। दोपहर 12 बजे तथा रात्रि के 1 बजे के बीच में भूख लगी है और चारों ओर चारा भी पड़ा होता है, लेकिन खा नहीं सकता। हाली उसको घास नहीं खाने देता, पानी भी समय पर दिन में दो या तीन बार पिलाया जाता है। सिर पर सींग तथा एक दुम (पूँछ) लगे होंगे। जब मानव शरीर में था, तब वह जीव कूलर, पंखे तथा ए. सी. कमरों में रहता था। अब एक दुम है, इसको चाहे कूलर की जगह, चाहे पंखे की जगह प्रयोग करो, उसी से मच्छर उड़ाता है।

''क्रमानुसार मानव शरीरधारी प्राणी के लक्षण''

कुछ मानव शरीरधारी प्राणी इतने कर्म खराब कर लेते हैं अर्थात् इतने अधिक पाप कर लेते हैं। जब वे बैल बनते हैं तो उनकी दुम (पूँछ) भी कट जाती है। केवल 8-9 इंच की शेष रहती है। उससे मच्छर-मक्खी भी नहीं उड़ती। इधर-उधर डण्डा-सा घूमता रहता है।

पहले खेतों की सिंचाई कुओं में बने रहट से होती थी। उस रहट को बैल से चलाया जाता था। वह मानव बैल बनकर कुंऐ का रहट चलाया करता, उस समय जौ की खेती अधिक होती थी। उसका भूसा बैलों को खिलाया जाता था। उसमें तुस (काँटे) होते थे, उनको वह बैल भूखा मरता खाता था। यह हालत उस व्यक्ति की हुई जो भक्ति नहीं करता था।

ऊपर के लोकों में स्वर्ग तथा नरक बने हैं, पुण्यों के भोग के लिए प्राणी स्वर्ग जाता है तथा पापों के भोग के लिए नरक में कष्ट उठाता है जहाँ पर असहनीय पीड़ाऐं दी जाती हैं, अनेकों यातनाऐं दी जाती हैं।

परमात्मा ने विधान बनाया है कि 84 लाख प्रकार के प्राणियों के शरीरों में कष्ट उठाने के पश्चात् स्वर्ग-नरक का पुण्य-पाप भोगने के पश्चात् प्राणी को एक मानव शरीर मिलता है। यह Turn wise (क्रमानुसार) प्राप्त होता है। मनुष्य शरीर में फिर से पति-पत्नी, सन्तान, सम्पत्ति कर्मानुसार प्राप्त होती है। उस समय मानव शरीर धारी प्राणी यही मान बैठता है कि अगले जन्म में भी मैं मनुष्य बनूंगा, ऐसे ही सुख बने रहेंगे, भक्ति करने की रूचि नहीं बनती। इस प्रकार फिर से मानव

शरीर नष्ट करके भोला प्राणी मृत्यु उपरान्त धर्मराज अर्थात् परमात्मा के न्यायधीश के न्यायालय में जाता है। वहाँ उससे पूछा जाता है कि आप क्या लाए अपने साथ? जो सम्पत्ति-सन्तान आपने अपनी मान रखी थी, वह तो पृथ्वी पर ही रह गई, यहाँ के लिए कुछ नहीं किया। जब आप यहाँ से मानव शरीर प्राप्त करके जाने लगे थे, तब आपको कितनी बार समझाया था कि मनुष्य शरीर भक्ति करके भक्ति धन संग्रह करने के लिए मिलता है। तूने पहले बहुत मानव शरीर व्यर्थ किए हैं। अब सतर्क रहकर साधु-सन्तों का संग करके सत्संग वचन सुनना, अपना कल्याण कराना। तूने कहा था कि हे भगवान! पहले बहुत गलतियाँ हुई हैं। मानव शरीर प्राप्त करके भक्ति न करके हजारों वर्ष नरक भी भोगा था, 84 लाख प्रकार की योनियों में भी महाकष्ट उठाया था। अबकी बार ऐसी गलती नहीं दोहराऊँगा। भोले जीव! तूने फिर से वही गलती कर दी, इतना कहकर उसके सामने Video चला दी जाती है। पहले की वार्ता तथा सर्व मानव शरीरों का क्रियाक्रम, नरक की यातनाऐं, जो पूर्व में भोगी थी, स्वर्ग के सुख जो कभी कुछ पुण्यों का फल भोगा तथा वर्तमान के जीवन में जो कर्म किये थे, वे भी चलचित्र (फिल्म) में दिखाए जाते हैं। उस समय उस मूर्ख प्राणी से धर्मराज जी कहते हैं कि हे नादान! यह क्या किया, मनुष्य जन्म मिलना शुलभ नहीं है। तुझे जितने भी मानव शरीर मिले हैं, ये परमात्मा ने दान किए थे। तेरे भाग्य में मनुष्य शरीर प्राप्त करना नहीं लिखा था। यह अनुदान पूर्ण परमात्मा देता है। तूने इस मानव शरीर के अनमोल समय की कीमत नहीं जानी, भाँग के भाड़े बर्बाद कर दिया। उस समय उस जीव को अहसास होता है कि बहुत बड़ी भूल हो गई। फिर दहाड़ मार-मारकर रोता है। कहता है बक्श दो महाराज, गलती हो गई। मानव जीवन का एक अवसर और दे दो, अबके ऐसी गलती नहीं करूँगा, मैं आपकी कसम खाकर कहता हूँ। उसी समय धर्मराज उसके सामने प्रत्येक मानव शरीर प्राप्त करके पृथ्वी पर जाने तथा मानव शरीर व्यर्थ करके आने के समय जो-जो बातें हुई थी, उनकी फिल्म (चलचित्र) अर्थात् Video चला देता है और कहता है कि आप प्रत्येक बार ऐसा ही कहते हो। अब तू जा पहले नरक में, उसके पश्चात् पृथ्वी पर बन कुत्ता, गधा, सूअर। फिर कभी जब मानव शरीर मिले, फिर कर लेना। ''हर बार मूर्ख बनाता है और स्वयं को घोर कष्ट में डालकर आ खड़ा होता है।'' इतना कहते ही कर्मों के अनुसार अपना फल भोगने के लिए भेज दिया जाता है।

प्रश्न :- क्या 84 लाख योनियों के भोगने के पश्चात् ही मानव शरीर प्राप्त होता है? वैसे नहीं।

उत्तर :- मानव (स्त्री या पुरूष) का शरीर दो प्रकार से प्राप्त होता है:-

1. = एक तो 84 लाख प्राणियों के शरीरों में कष्ट भोगने के पश्चात् मानव शरीर प्राप्त होता है, इसे कहते हैं क्रमानुसार। (Turn wise)

2. = दूसरा मानव शरीर प्राप्त होता है शुभ कर्मानुसार। (Worship) जिस किसी प्राणी के शुभ कार्य अधिक होते हैं तो उसे तुरन्त मानव शरीर प्राप्त होता

है। ऐसा व्यक्ति (स्त्री या पुरूष) जब कभी किसी से परमात्मा की महिमा सुनता है, वह तुरन्त भक्ति करने लग जाता है। जैसा भी उसको ज्ञान होता है, वैसी ही साधना वह अवश्य करता है। ध्यान रहे! गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में कहा है कि शास्त्रविधि को त्यागकर जो साधक मनमाना आचरण करते हैं अर्थात् शास्त्र के विरूद्ध नामों का जाप या अन्य क्रिया करते हैं, उनको न तो कोई सुख प्राप्त होता है, न सिद्धि प्राप्त होती है और न गति अर्थात् मोक्ष ही प्राप्त होता है अर्थात् उनकी वह साधना भी व्यर्थ होती है। फिर भी प्रसंग को आगे बढ़ाता हूँ। यदि तुरन्त उस मानव शरीर प्राप्त प्राणी को तत्वदर्शी सन्त नहीं मिलता है और वह मनमानी साधना करके या नकली गुरू बनाकर साधना करके अपना मानव जीवन नष्ट कर जाता है। फिर 84 लाख योनियों के कष्ट उठाने पड़ते हैं। नरक का कष्ट भी भोगना ही पड़ता है। यदि पूर्ण सन्त मिल जाए तो वह प्राणी शीघ्र सत्य साधना स्वीकार करके अपना जीवन सफल कर लेता है।

उदाहरण :- जैसे धर्मदास जी थे। वे तुरन्त मानव शरीर प्राप्त प्राणी थे। उन्होंने परमात्मा के सत्य ज्ञान को समझा, पहले मनमाना आचरण कर रहे थे, नकली गुरू भी बना रखा था। तत्वज्ञान प्राप्ति के पश्चात् सतगुरू की शरण में सत्य भक्ति करके अपना मानव जीवन सफल किया।

क्रमानुसार (Turn wise) मानव शरीर प्राप्त प्राणी शीघ्र भक्ति पर नहीं लगता। उसकी सत्संग सुनने की रूचि भी नहीं बनती। यदि किसी मित्र के बार-बार कहने से सत्संग सुनने चला जाता है तो सत्संग के दौरान उसे या तो नींद आने लगेगी या कोई और प्रसंग मित्र के साथ शुरू कर देगा, अन्य बातें करने लगेगा। आस-पास बैठे श्रोता उससे बाधित होते हैं क्योंकि उनको सत्संग में आनन्द आ रहा होता है। वे उस नए व्यक्ति से कहते हैं कि हे भक्त! सत्संग सुनो, अन्य चर्चा करने का समय नहीं है, यह तो बाद में कर लेना, इतना सुनकर वह कर्महीन व्यक्ति उठकर चला जाता है। परमेश्वर कबीर जी ने सूक्ष्मवेद में कहा है कि :-

कबीर, पिछले पाप से हरि चर्चा न सुहावै, के उंघै के उठ चलै या औरे बात चलावै।

तुलसी दास जी जो श्री रामचन्द्र के उपासक थे, उन्होनें भी कहा है:-

तुलसी पिछले पाप से हरि चर्चा ना भावै, जैसे ज्वर के वेग से भूख विदा हो जावै।।

भावार्थ :- मलेरिया ज्वर के रोगी को खाना कड़वा लगता है। मुनक्का-दाख, किशमिश, खीर भी कड़वी लगती है क्योंकि ज्वर ने शरीर की व्यवस्था खराब कर दी। जिस कारण से मीठे पदार्थ भी कड़वे लगते हैं। उसका उपचार कराना पड़ता है। कड़वी कुनीन की गोलियाँ न चाहते हुए भी खानी पड़ती हैं। यदि उपचार नहीं कराया अर्थात् कुनीन की गोली नहीं खाई तो मृत्यु निश्चित है। कड़वी गोलियों को खाने से स्वस्थ हुआ व्यक्ति रूचि से खाना खाता है। इतनी भूख लगती है कि बिना सब्जी के भी रोटियाँ खा जाता है। ठीक इसी प्रकार जिन प्राणियों को सत्संग की चर्चा अच्छी नहीं लगती। उनकी आत्मा पर पाप कर्मों का ज्वर चढ़ा है। उसका उपचार है कि न चाहते हुए भी सत्संग सुनना चाहिए। धीरे-धीरे पाप कम हो

जाऐंगे। फिर वही व्यक्ति 100 कि.मी. तथा 200 कि.मी. सफर करके भी सत्संग सुनने जाता है। उसकी आत्मा स्वस्थ हो चुकी है। उसको परमात्मा की महिमा सुनने की भूख लगने लगी है।

उदाहरण :- कागभुसण्ड नामक एक भक्त हुऐ हैं। उनका मुख तो कौवे (Crow) जैसा चौंच वाला है और शेष शरीर देवताओं वाला अर्थात् मनुष्य सदृश है। एक दिन गरूड़ जी (श्री विष्णु जी का वाहन) तथा कागभुसण्ड एक स्थान पर इकट्ठे हुए। दोनों महान आत्माओं में आपसी परिचय हुआ। तब गरूड़ जी ने पूछा हे कागभुसण्ड जी! आपके पास बैठने से मुझे अनोखी शान्ति मिलती है? आपकी भक्ति की महिमा सब देवता बताते हैं, आपसे मिलने का सौभाग्य आज प्राप्त हुआ है। आपका सान्निध्य पाकर मेरा जीवन धन्य हो गया है, आपके शरीर की कांन्ति देखकर मालूम होता है जैसे कोई भिन्न चन्द्रमा उदय हो गया हो। आपकी शीतलता का वर्णन नहीं किया जा सकता। हे कागभुसण्ड जी! आपको यह भक्ति तथा गति कैसे प्राप्त हुई? मेरी जिज्ञासा की प्यास को कृप्या शान्त करें।

कागभुसण्ड जी ने बताया कि हे खगेश! एक समय मुझे मानव शरीर प्राप्त था, उससे पहले के असँख्य मानव जीवन, भक्ति के बिना व्यर्थ कर दिए थे। हमारा माता-पिता, दो भाई तथा दो बहनों का परिवार था। एक बार दुर्भिक्ष (अकाल) गिरा, त्राहि-त्राहि मच गई। भूख के कारण मनुष्य-मनुष्य को खाने लगा। उसी दुर्भिक्ष के कारण मेरे माता-पिता तथा सब भाई-बहन भूख के कारण मर गए। मैं युवा था, इसलिए कई दिन तक भूख सहन कर गया। मैं उस नगरी को त्यागकर मालुदेश की अवन्तिका नगरी में चला गया। वहाँ पर दुर्भिक्ष नहीं था। भरपेट भोजन किया, परन्तु परिवार नाश का दर्द हृदय में शूल की तरह चुभता था, रो-रोकर आँसुओं रहित हो चुका था। वह परिवार स्वपन था या वास्तविक था, यह विश्वास नहीं हो रहा था। उसी समय एक शिवालय में परमात्मा की कथा की वाणी कानों में पड़ी, कोई रूचि नहीं बनी, मैंने सोचा कोई परमात्मा वगैरह नहीं है, सब गलत बात है, मैं उठकर चल पड़ा। जब उस मन्दिर के सामने से गुजरने लगा तो वहाँ भोजन-भण्डारा अर्थात् लंगर का खाना तैयार हो रहा था, मुझे भोजन खाना था। इसलिए भोजन तैयार हो, तब तक समय बिताने के लिए श्रोताओं में बैठ गया। पण्डित जी भगवान शिव की कथा सुना रहे थे। मेरे मन में आया कि चल उठ, यहाँ तो सिर दर्द हो गया। लेकिन मुझे रात्रि व्यतीत करनी थी, इसलिए नहीं उठा, बाद में सब श्रोता चले गए। पण्डित जी बहुत नेक तथा दयालु थे। उन्होंने मेरे से पूछा कि बेटा! आप नहीं गए, क्या आप बाहर के रहने वाले हैं? मैंने कहा जी, मेरा इस संसार में न कोई गाँव और न घर है, न परिवार है। मैंने अपनी दु:ख भरी कथा सुना दी। पण्डित जी की आँखें भर आई और सीने से लगाकर बोला बेटा जिसका कोई नहीं होता, उनका भगवान होता है। आप यहाँ मन्दिर में रहो, सेवा करो और सत्संग सुनो। फिर दीक्षा लेकर अपना मानव जीवन सफल करो। एक दिन सब संसार छोड़कर जाएंगे, यहाँ न कोई रहा है, न कोई रहेगा, चिन्ता त्यागकर मनुष्य

जीवन का मूल कार्य सम्भाल बेटा! कागभुसण्ड जी ने कहा, हे गरूड़ देव! मैंने छः महीनों तक लगातार पण्डित जी के सत्संग सुने। परंतु ऐसे लगता था जैसे मलेरिया के रोगी को भोजन (कड़वा) लगता है। पण्डित जी प्रतिदिन कहते बेटा! दीक्षा ले, तब तेरा जीवन सफल होगा। मैं कहता रहता कि अवश्य दीक्षा लूंगा गुरू जी, परन्तु अभी नहीं। हे गरूड़ देव! मेरे पूर्व जन्म के पापों का इतना दुष्प्रभाव था कि छः महीनों तक हरि चर्चा सुनने के पश्चात् एक दिन न चाहते हुए दीक्षा ले ली। जो कथाऐं गुरू जी सुनाया करते थे, वो मुझे भी याद हो गई, गुरू जी गृहस्थी थे। वे रात्रि में घर चले जाते थे। सुबह पूजा करने देवालय में आते थे, कुछ देर कथा करते थे। गुरू जी की अनुपस्थिति में मैं कथा किया करता था। मैं युवा था, मेरी आवाज भी सुरीली थी। श्रोतागण मेरी प्रशंसा किया करते थे, कहते थे कि आप तो गुरू जी जैसी ही कथा करते हो, अधिकतर यही कहते थे कि चेला गुरूजी से बढ़ गया, पण्डित जी से भी अच्छे तरीके से कथा करता है। श्रोताओं के मुख से अपनी प्रसंशा सुनकर मैं अहंकारी हो गया। मुझे अभिमान हो गया, जो मेरे नाश का कारण बना। एक दिन मैं गुरू जी के आने से पहले मन्दिर के आँगन में बैठा कथा कर रहा था। श्रोता मुग्ध होकर सुन रहे थे। पण्डित जी मन्दिर में प्रविष्ट हुए। पहले जब भी गुरू जी मन्दिर में आते थे तो मैं खड़ा होकर सत्कार करता था। उस दिन श्रोता खड़े हो गए परन्तु मैं बैठा रहा, बैठे-बैठे प्रणाम कर दिया। गुरू जी महान थे। उन्होंने मेरी इस कृतघ्नता की ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया, सीधे भगवान शिव की मूर्ति के सामने जाकर आरती करने की तैयारी करने लगे। आरती प्रारम्भ की ही थी, उसी समय भगवान शिव ने आकाशवाणी की। उनकी आवाज बहुत भयानक थी, कहा हे धूर्त! तूने मेरे परम भक्त, तेरे गुरूदेव का अनादर किया है, खड़ा होकर सत्कार नहीं किया। जब तू अपने गुरू जी का अनादर कर सकता है तो तू मेरा क्या सत्कार करेगा। मुझे तेरे जैसे भस्मासुरों की आवश्यकता नहीं है। गुरू को ईष्टदेव का स्वरूप मानकर भक्ति करनी चाहिए। इष्ट देव यह अनुमान लगाता है कि जो भक्त जैसा मेरे प्रतिनिधि सन्त (गुरू) से बर्ताव करता है, वैसा ही मेरे साथ करेगा। अब तू एक लाख वर्ष तक नरक में रहेगा। कागभुसण्ड ने बताया कि हे खगेश! यह आकाशवाणी मेरे गुरू जी ने सुनी तो मुझे बुलाया और कहा कि बेटा! क्या गलती कर दी। जिस कारण भगवान कुपित हुए, क्षमा याचना कर भगवान के आगे। गुरू जी ने मेरे लिए भगवान शिव जी से क्षमा माँगी, कहा, हे प्रभु! आपका बच्चा है, इसको क्षमा करो दाता! बहुत देर तक विनय करने के पश्चात् भगवान शिव की आकाशवाणी हुई कि इस पापी प्राणी के लिए क्षमा का स्थान नहीं है, लाख वर्ष नरक में रहना पड़ेगा। गुरू जी ने पुनः स्तुति की। तब भगवान शिव ने कहा कि तेरे गुरूदेव जी की अर्ज से मैं प्रसन्न हूँ, लेकिन जो वचन मैंने बोल दिया वह वापिस नहीं हो सकता। तेरे गुरू जी के कारण इतनी राहत तुझे देता हूँ कि नरक में तुझे यम के दूत तंग नहीं करेंगे परन्तु रहना पड़ेगा नरक में ही। (उदाहरण के लिए जैसे किसी व्यक्ति को सजा हो जाए और वह कारागार

में रहता है। यदि कोई मन्त्री उसका जानकार हो तो वह जेल उसके लिए कष्टदायक नहीं रहती। सब प्रसाशन उसकी सहायता करता है। लेकिन रहना पड़ता है जेल में ही। सजा पूरी होने पर ही जेल से छूट सकता है।)

कागभुसण्ड ने बताया कि मैं नरक में एक लाख वर्ष तक रहा, परंतु भगवान शिव की कृपा से यमदूतों ने मुझे कोई यातना नहीं दी।

हे खगेश! फिर मेरा जन्म मानव का हुआ। मेरी आत्मा में भक्ति का बीज पड़ चुका था। एक मित्र के बार-बार कहने से मैं एक सत्संग में गया। मेरा हठी स्वभाव तथा नरक के प्रभाव से बहुत लम्बे समय में दीक्षा लेने की इच्छा बनी। फिर एक दिन लोमस ऋषि कथा कर रहे थे। मैं कथा सुनने गया। उस दिन परमात्मा के सर्गुण होने का प्रमाण सुनाया जा रहा था। मैंने अपने अज्ञान के कारण लोमस ऋषि से कहा कि सर्गुण तो नाशवान है, मैं तो निर्गुण परमात्मा की भक्ति करना चाहता हूँ। यदि आपको ज्ञान है तो बताओ? लोमस ऋषि ने कहा कि सर्गुण बिना निर्गुण को कैसे जाना जाएगा। जैसे आम के बीज (गुठली) को दिखाकर कोई कहे कि इस बीज में सामने खड़े बहुत बड़े आम के पेड़ जैसा इस गुठली में पेड़ है और इस गुठली (आम के बीज) जैसी लाखों गुठली हैं तो अज्ञानी नहीं मान सकता। जब आम का बीज बोया जाएगा, आम का वृक्ष बनेगा। तब यह निर्गुण रूप की महिमा समझी जाएगी। इसलिए सूक्ष्मवेद में कहा है कि :

सर्गुण बिना निर्गुण क्या गावै, निर्गुण पद नजरों नहीं आवै।
जैसे वृक्ष बीज के मांही, जब उगा तब नजरों आहीं।।

कागभुसण्ड ने बताया कि हे गरूड़ देव! मैंने अपनी अज्ञानता के कारण इस उदाहरण को नहीं समझा और अधिक वाद-विवाद अज्ञान आधार से करने लगा। तब लोमस ऋषि जी ने मुझे श्राप दे दिया कि तू काग चण्डाल के घर जन्म लेगा, तू चण्डाल व्यक्ति है। यह श्राप लोमस ऋषि से सुनकर मैं बहुत दुःखी हुआ। लेकिन मुझे क्रोध नहीं आया अपितु अति आधीन होकर विनती की कि हे ऋषिवर! मुझसे गलती हुई है, क्षमा करो। हे दाता! क्षमा करो! मेरी आधीनी व विनती से प्रभावित होकर लोमस ऋषि ने कहा कि मैं तेरी विनती से प्रसन्न हूँ। परन्तु जन्म तो तेरा काग चण्डाल के घर पर ही होगा।

मैंने प्रार्थना कि हे ऋषि जी! एक आशीर्वाद दे दें कि मेरा कहीं भी जन्म हो, मुझे परमात्मा की भक्ति की भूल न पड़े। लोमस ऋषि ने कहा तथास्तु, तेरे को भक्ति याद रहेगी।

हे गरूड़ देव! फिर एक दिन श्री ब्रह्मा जी की पत्नी अपनी हँसनी को कागभुसण्ड के पास गर्भ धारण कराने ले गई। मेरा जन्म हँसनी से कागभुसण्ड के बीज से हुआ। मेरी ऊपर की चौंच तो आप देख रहे हैं, काग (कौवे) जैसी है और शेष शरीर देवताओं जैसा है। मैं भगवान विष्णु का पूजन करता था। भगवान शिव की भी भक्ति किया करता था। एक दिन एक तत्वदर्शी सन्त जोगजीत का सान्निध्य प्राप्त हुआ। मैंने पहले बहुत गलतियाँ की थी। जिसके डर से मैं उस सन्त

जोगजीत जी से बहुत नम्रता से पेश आया। उनका ज्ञान सुना, मेरी आँखें खुल गई। उस महात्मा ने श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी से ऊपर परमात्मा बताया। पहले तो उनकी सब बातें अविश्वसनीय लगी, परन्तु जब भगवानों से चर्चा की तो तीनों ने कहा कि वह परम सन्त है। वह जो ज्ञान बता रहे हैं, वह तत्वज्ञान है। जिस सतपुरूष (परम अक्षर ब्रह्म) का वे ज्ञान सुनाते हैं, वह सबकी पहुँच से बाहर है। उसकी प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना व्यर्थ है। यह वचन तीनों (ब्रह्मा, विष्णु तथा शिवजी) के श्री मुख से सुनकर उस सन्त के प्रति विश्वास दृढ़ हो गया कि कोई परम पुरूष है। सन्त जी का यह ज्ञान सत्य है तो यह भी सत्य ही होगा कि मेरे पास (सन्त जोगजीत के पास) उस परम अक्षर ब्रह्म की प्राप्ति का मन्त्र है, उसकी साधना से उसकी प्राप्ति सरलता से हो जाएगी।

हे गरूड़ देव! मैंने महात्मा जोगजीत जी से दीक्षा ले ली। उसके पश्चात् आज तक मैं उनके बताए नाम का जाप कर रहा हूँ जिससे मुझे आज यह स्थिति प्राप्त हुई है।

पाठकों से निवेदन है कि कागभुसण्ड जी को केवल प्रथम मन्त्र ही प्राप्त है क्योंकि सम्पूर्ण साधना के सम्पूर्ण मन्त्र अब कलयुग के 5505 वर्ष सन् 1997 में पूरे हो गए। अब वह सत्यनाम तथा सारनाम दिया जाएगा। वह सम्पूर्ण मोक्ष मन्त्र मेरे (सन्त रामपाल दास) पास हैं। अब वह 1997 से दीक्षा लेने वालों को विधिवत प्रदान किये जा रहे हैं।

उपरोक्त कथाओं से स्पष्ट हुआ कि भक्ति करनी चाहिए। यह पवित्र गीता में लिखा है। यही आदेश वेदों में है। यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 15 में कहा है कि ओम् नाम का स्मरण कार्य करते-करते करो, विशेष तड़फ के साथ स्मरण करो, मनुष्य जीवन का मूल उद्देश्य जान कर स्मरण करो।

सूक्ष्मवेद में लिखा है कि :-

"भजन कर राम दुहाई रे, भजन कर राम दुहाई रे।
जन्म अनमोला तुझे मिला, नर देही पाई रे।।
कबीर, लूट सको तो लूटियो, रामनाम की लूट।
फिर पीछे पछताओगे, प्राण जाहिंगे छूट।।
कबीर, हरि की भक्ति बिन, धिक् जीवन संसार।
धूवैं जैसा धौलहर, जात न लागै वार।।

❖ यह भी सिद्ध हुआ कि जो प्राणी मानव शरीर से पुनः मानव शरीर प्राप्त करता है, वह शीघ्र भक्ति करने लग जाता है। जो प्राणी क्रमानुसार (Turn wise) 84 लाख प्रकार के प्राणियों के शरीरों में कष्ट भोगकर मानव शरीर प्राप्त करता है, वह भक्ति नहीं करता। यदि उसको भक्ति की प्रेरणा की जाती है तो शीघ्र स्वीकार नहीं करता।

❖ गुरू-गुरू में बहुत अन्तर है, जैसे कागभुसण्ड जी का प्रथम गुरू पण्डित जी केवल तमगुण भगवान शिव की भक्ति का मार्ग दर्शन करता था।

❖ फिर लोमस ऋषि केवल ब्रह्म साधना की प्रेरणा करता था। परंतु ब्रह्म का साकार स्वरूप श्री विष्णु जी को ही मानता था।

❖ फिर जोगजीत जी गुरू मिले जिनके पास संपूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान तथा पूर्ण मोक्ष मार्ग था। जिससे कागभुसण्ड जी मोक्ष के अधिकारी हुए। कागभुसण्ड जी को अब जब भी मानव शरीर पृथ्वी पर प्राप्त होगा, तब उसको पुनः सतगुरू मिलेंगे, उसका सम्पूर्ण मोक्ष मन्त्र देकर कल्याण करेंगे। कुछ समय उपरांत ऊपर के लोकों के देवता भी देवलोक छोड़कर पृथ्वी पर जन्म लेंगे, अपना कल्याण कराऐंगे। उपरोक्त प्रकरण से यह भी सिद्ध हुआ कि पूरे गुरू से ही पूर्ण मोक्ष सम्भव है।

❖ उसी प्रसंग को आगे बढ़ाते हैं कि मानव शरीर प्राप्त प्राणी को अपना उद्देश्य याद रखना चाहिए। भक्ति करके अपना कल्याण कराना चाहिए। सूक्ष्म वेद में लिखा है कि :-

यह सौदा फिर नाहीं सन्तो, यह सौदा फिर नाहीं।
लोहे जैसा ताव जात है, काया देह सराही।।
तीन लोक और भुवन चतुर्दश, सब जग सौदे आहीं।
दुगने–तिगुने किए चौगुने, किन्हूँ मूल गवाहीं।।

भावार्थ :- जैसे दो व्यापारी (Businessmen) दूर किसी शहर में सौदा करने गए और 5-5 लाख रूपये मूलधन ले गए। एक ने अपने धन का सदुपयोग किया। धर्मशाला या होटल में किराए पर कमरा लिया। सामान खरीदा और महंगे मोल बेचा। जिससे उसने 20 लाख रूपये और कमा लिए। दो वर्ष में वापिस अपने घर आ गया। सब जगह प्रसंशा हुई और धनी बन गया।

दूसरे ने भी होटल या धर्मशाला में कमरा किराए पर लिया। शराब पीने लगा, वेश्याओं के नृत्य देखता, खाता और सो जाता। उसने अपना मूल धन 5 लाख रूपये भी नष्ट कर दिया, वापिस घर आया तो ऋण (कर्जा) हो गया। जिससे 5 लाख रूपये उधार लेकर गया था, उसने अपने रूपये मांगे। न देने पर उसको अपना मजदूर रखा, उससे अपना 5 लाख का धन पूरा किया। उपरोक्त वाणी का यही तात्पर्य है कि तीन लोक (स्वर्ग लोक, पाताल लोक तथा पृथ्वी लोक) में जितने भी प्राणी हैं, वे सब अपना राम-नाम का सौदा करने आए हैं। किसी ने तो दुगना, तीन गुना, चार गुना धन कमा लिया अर्थात् पूर्ण सन्त से दीक्षा लेकर मनुष्य जीवन के श्वांसों की पूँजी जो मूल धन है, उसको सत्य भक्ति करके बढ़ाया। अन्य व्यक्ति जिसने भक्ति नहीं की, शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण किया या अन्अधिकारी गुरू से दीक्षा लेकर भक्ति की, उसको कोई लाभ नहीं मिलता। यह पवित्र गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में प्रमाण है। जिस कारण से उसने भी अपना मनुष्य जीवन के श्वांस रूपी मूलधन को सत्य भक्ति बिना नष्ट कर लिया।

❖ भक्ति न करने से हानि का अन्य विवरण :-

यह दम टूटै पिण्डा फूटै, हो लेखा दरगाह मांही।
उस दरगाह में मार पड़ैगी, जम पकड़ेंगे बांही।।
नर–नारायण देहि पाय कर, फेर चौरासी जांही।
उस दिन की मोहे डरनी लागे, लज्जा रह के नांही।।
जा सतगुरू की मैं बलिहारी, जो जामण मरण मिटाहीं।
कुल परिवार तेरा कुटम्ब कबीला, मसलित एक ठहराहीं।
बाँध पींजरी आगै धर लिया, मरघट कूँ ले जाहीं।।
अग्नि लगा दिया जब लम्बा, फूंक दिया उस ठाहीं।
पुराण उठा फिर पण्डित आए, पीछे गरूड पढाहीं।।

भावार्थ :- यह दम अर्थात् श्वांस जिस दिन समाप्त हो जाऐंगे। उसी दिन यह शरीर रूपी पिण्ड छूट जाएगा। फिर परमात्मा के दरबार में पाप-पुण्यों का हिसाब होगा। भक्ति न करने वाले या शास्त्रविरूद्ध भक्ति करने वाले को यम के दूत भुजा पकड़कर ले जाऐंगे, चाहे कोई किसी देश का राजा भी क्यों न हो, उसकी पिटाई की जाएगी। सन्त गरीबदास को परमेश्वर कबीर जी मिले थे। उनकी आत्मा को ऊपर लेकर गए थे। सर्व ब्रह्माण्डों को दिखाकर सम्पूर्ण आध्यात्म ज्ञान समझाकर वापिस शरीर में छोड़ा था। सन्त गरीब दास जी आँखों देखा हाल ब्यान कर रहे हैं कि :- हे मानव! आपको नर शरीर मिला है जो नारायण अर्थात् परमात्मा के शरीर जैसा अर्थात् उसी का स्वरूप है। अन्य प्राणियों को यह सुन्दर शरीर नहीं मिला। इसके मिलने के पश्चात् प्राणी को आजीवन भगवान की भक्ति करनी चाहिए। ऐसा परमात्मा स्वरूप शरीर प्राप्त करके सत्य भक्ति न करने के कारण फिर चौरासी लाख वाले चक्र में जा रहा है, धिक्कार है तेरे मानव जीवन को! मुझे तो उस दिन की चिन्ता बनी है, डर लगता है कि कहीं भक्ति कम बने और उस परमात्मा के दरबार में पता नहीं इज्जत रहेगी या नहीं। मैं तो भक्ति करते-करते भी डरता हूँ कि कहीं भक्ति कम न रह जाए। आप तो भक्ति ही नहीं करते। यदि करते हो तो शास्त्रविरूद्ध कर रहे हो। तुम्हारा तो बुरा हाल होगा और मैं तो राय देता हूँ कि ऐसा सतगुरू चुनो जो जन्म-मरण के दीर्घ रोग को मिटा दे, समाप्त कर दे। जो सत्य भक्ति नहीं करते, उनका क्या हाल होता है मृत्यु के पश्चात्। आस-पास के कुल के लोग इकट्ठे हो जाते हैं। फिर सबकी एक ही मसलति अर्थात् राय बनती है कि इसको उठाओ। (उठाकर शमशान घाट पर ले जाकर फूँक देते हैं, लाठी या जैली की खोद (ठोकर) मार-मारकर छाती तोड़ते हैं। सम्पूर्ण शरीर को जला देते हैं। जो कुछ भी जेब में होता है, उसको निकाल लेते हैं। फिर शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण कराने और करने वाले उस संसार से चले गए जीव के कल्याण के लिए गुरू गरूड पुराण का पाठ करते हैं।)

तत्वज्ञान (सूक्ष्मवेद) में कहा है कि अपना मानव जीवन पूरा करके वह जीव चला गया। परमात्मा के दरबार में उसका हिसाब होगा। वह कर्मानुसार कहीं

गधा-कुत्ता बनने की पंक्ति में खड़ा होगा। मृत्यु के पश्चात् गरूड पुराण का पाठ उसके क्या काम आएगा। यह व्यर्थ का शास्त्रविरूद्ध क्रियाक्रम है। उस प्राणी का मनुष्य शरीर रहते उसको भगवान के संविधान का ज्ञान करना चाहिए था। जिससे उसको अच्छे-बुरे का ज्ञान होता और वह अपना मानव जीवन सफल करता।

प्रेत शिला पर जाय विराजे, फिर पितरों पिण्ड भराहीं।
बहुर श्राद्ध खान कूं आया, काग भये कलि माहीं।।

भावार्थ है कि मृत्यु उपरान्त उस जीव के कल्याण अर्थात् गति कराने के लिए की जाने वाली शास्त्रविरूद्ध क्रियाऐं व्यर्थ हैं। जैसे गरूड पुराण का पाठ कराया। उस मरने वाले की गति अर्थात् मोक्ष के लिए। फिर अस्थियाँ गंगा में प्रवाहित की उसकी गति (मोक्ष) कराने के लिए। फिर तेहरवीं या सतरहवीं को हवन व भण्डारा (लंगर) किया उसकी गति कराने के लिए। पहले प्रत्येक महीने एक वर्ष तक महीना क्रिया करते थे, उसकी गति कराने के लिए, फिर छठे महीने छःमाही क्रिया करते थे, उसकी गति कराने के लिए, फिर वर्षी क्रिया करते थे उसकी गति कराने के लिए, फिर उसकी पिण्डोदक क्रिया कराते हैं, उसकी गति कराने के लिए श्राद्ध निकालते हैं अर्थात् श्राद्ध क्रिया कराते हैं, श्राद्ध वाले दिन पुरोहित भोजन स्वयं बनाता है और कहता है कि कुछ भोजन मकान की छत पर रखो, कहीं आपका पिता कौआ (काग) न बन गया हो। जब कौवा भोजन खा जाता तो कहते हैं कि तेरे पिता या माता आदि जो मृत्यु को प्राप्त हो चुका है जिसके हेतु यह सर्व क्रिया की गई है और यह श्राद्ध किया गया है। वह कौवा बना है, इसका श्राद्ध सफल हो गया। इस उपरोक्त विवरण से स्पष्ट हुआ कि वह व्यक्ति जिसका उपरोक्त क्रियाकर्म किया था, वह कौवा बन चुका है।

श्राद्ध करने वाले पुरोहित कहते हैं कि श्राद्ध करने से वह जीव एक वर्ष तक तृप्त हो जाता है। फिर एक वर्ष में श्राद्ध फिर करना है।

विचार करें :- जीवित व्यक्ति दिन में तीन बार भोजन करता था। अब एक दिन भोजन करने से एक वर्ष तक कैसे तृप्त हो सकता है? यदि प्रतिदिन छत पर भोजन रखा जाए तो वह कौवा प्रतिदिन ही भोजन खाएगा।

दूसरी बात :- मृत्यु के पश्चात् की गई सर्व क्रियाऐं गति (मोक्ष) कराने के उद्देश्य से की गई थी। उन ज्ञानहीन गुरूओं ने अन्त में कौवा बनवाकर छोड़ा। वह प्रेत शिला पर प्रेत योनि भोग रहा है। पीछे से गुरू और कौवा मौज से भोजन कर रहा है। पिण्ड भराने का लाभ बताया है कि प्रेत योनि छूट जाती है। मान लें प्रेत योनि छूट गई। फिर वह गधा या बैल बन गया तो क्या गति कराई?

नर से फिर पशुवा कीजै, गधा, बैल बनाई।
छप्पन भोग कहाँ मन बौरे, कहीं कुरड़ी चरने जाई।।

मनुष्य जीवन में हम कितने अच्छे अर्थात् 56 प्रकार के भोजन खाते हैं। भक्ति न करने से या शास्त्रविरूद्ध साधना करने से गधा बनेगा, फिर ये छप्पन प्रकार के भोजन कहाँ प्राप्त होंगे, कहीं कुरड़ियों (रूड़ी) पर पेट भरने के लिए घास खाने

जाएगा। इसी प्रकार बैल आदि-आदि पशुओं की योनियों में कष्ट पर कष्ट उठाएगा।

जै सतगुरू की संगत करते, सकल कर्म कटि जाईं।
अमर पुरि पर आसन होते, जहाँ धूप न छाँइ।।

सन्त गरीब दास ने परमेश्वर कबीर जी से प्राप्त सूक्ष्मवेद में आगे कहा है कि यदि सतगुरू (तत्वदर्शी सन्त) की शरण में जाकर दीक्षा लेते तो उपरोक्त सर्व कर्मों के कष्ट कट जाते अर्थात् न प्रेत बनते, न गधा, न बैल बनते। अमरपुरी पर आसन होता अर्थात् गीता अध्याय 18 श्लोक 62 तथा अध्याय 15 श्लोक 4 में वर्णित सनातन परम धाम प्राप्त होता, परम शान्ति प्राप्त हो जाती। फिर कभी लौटकर संसार में नहीं आते अर्थात् जन्म-मरण का कष्टदायक चक्र सदा के लिए समाप्त हो जाता। उस अमर लोक (सत्यलोक) में धूप-छाया नहीं है अर्थात् जैसे धूप दुःखदाई हुई तो छाया की आवश्यकता पड़ी। उस सत्यलोक में केवल सुख है, दुःख नहीं है।

गरीब दास गलतान महल में, मिले कबीर गोसांई।।

सन्त गरीब दास जी ने कहा है कि मुझे कबीर परमेश्वर मिले हैं। जिस कारण से सत्यलोक (शाश्वत स्थान) में अपने महल में आनन्द से रहता हूँ क्योंकि सत्य साधना जो परमेश्वर कबीर जी ने सन्त गरीब दास को जो बताई थी और उस स्थान (सत्यलोक) को गरीब दास जी परमेश्वर के साथ जाकर देखकर आए थे। जिस कारण से विश्वास के साथ कहा कि मैं जो शात्रानुकूल साधना कर रहा हूँ यह परमात्मा ने बताई है। जिस शब्द अर्थात् नाम का जाप करने से मैं अवश्य पूर्ण मोक्ष प्राप्त करूँगा, इसमें कोई संशय नहीं रहा। जिस कारण से मैं (गरीब दास) सत्यलोक में बने अपने महल (विशाल घर) में जाऊँगा, जिस कारण से निश्चिन्त तथा गलतान (महल प्राप्ति की खुशी में मस्त) हूँ क्योंकि मुझे पूर्ण गुरू स्वयं परमात्मा कबीर जी अपने लोक से आकर मिले हैं।

गरीब, अजब नगर में ले गए, हमको सतगुरू आन।
झिलके बिम्ब अगाध गति, सूते चादर तान।।

भावार्थ :- गरीबदास जी ने बताया है कि सतगुरू अर्थात् स्वयं परमेश्वर कबीर जी अपने निज धाम सत्यलोक से आकर मुझे साथ लेकर अजब (अद्भुत) नगर में अर्थात् सत्यलोक में बने शहर में गए। उस स्थान को आँखों देखकर मैं परमात्मा के बताए भक्ति मार्ग पर चल रहा हूँ। सत्यनाम, सारनाम की साधना कर रहा हूँ। इसलिए चादर तानकर सो रहा हूँ अर्थात् मेरे मोक्ष में कोई संदेह नहीं है।

चादर तानकर सोना = निश्चिंत होकर रहना। जिसका कोई कार्य शेष न हो और कोई चादर ओढ़कर सो रहा हो तो गाँव में कहते है कि अच्छा चादर तानकर सो रहा है। क्या कोई कार्य नहीं है? इसी प्रकार गरीबदास जी ने कहा है कि अब बड़े-बड़े महल बनाना व्यर्थ लग रहा है। अब तो उस सत्यलोक में जाऐंगे। जहाँ बने बनाए विशाल भवन हैं, जिनको हम छोड़कर गलती करके यहाँ काल के मृत्यु लोक में आ गए हैं। अब दाँव लगा है। सत्य भक्ति मिली है तथा तत्वज्ञान मिला है।

सज्जनों! वह सत्य भक्ति वर्तमान में मेरे (रामपाल दास के) पास है। जिससे इस दुःखों के घर संसार से पार होकर वह परम शान्ति तथा शाश्वत स्थान (सनातन परम धाम) प्राप्त हो जाता है जिसके विषय में गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है तथा गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि तत्वदर्शी सन्त से तत्वज्ञान प्राप्त करके, उस तत्वज्ञान से अज्ञान का नाश करके, उसके पश्चात् परमेश्वर के उस परमपद की खोज करनी चाहिए। जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आता।

''भक्ति न करने से बहुत दुःख होगा''

सूक्ष्मवेद में कहा है :-

यह संसार समझदा नाहीं, कहंदा शाम दुपहरे नूँ।
गरीबदास यह वक्त जात है, रोवोगे इस पहरे नूँ।।

आध्यात्मिक ज्ञान के अभाव से परमात्मा के विधान से परीचित न होने के कारण यह प्राणी इस दुःखों के घर संसार में महान कष्ट झेल रहा है और इसी को सुख स्थान मान रहा है।

जैसे एक व्यक्ति जून के महीने में दिन के 12 या 1 बजे, हरियाणा प्रान्त में शराब पीकर चिलचिलाती धूप में गिरा पड़ा है, पसीनों से बुरा हाल है, रेत शरीर से लिपटा है। एक व्यक्ति ने कहा हे भाई! उठ, तुझे वृक्ष के नीचे बैठा दूँ, तू यहाँ पर गर्मी में जल रहा है। शराबी बोला कि मैं बिल्कुल ठीक हूँ, मौज हो रही है, कोई कष्ट नहीं है।

❖ एक व्यक्ति किसी कारण कोर्ट में गया। वहाँ उसका रिश्तेदार मिला। एक-दूसरे से कुशल-मंगल पूछी, दोनों ने कहा, सब ठीक है, मौज है।

❖ एक व्यक्ति का इकलौता पुत्र बहुत रोगी था। उसको P.G.I. में भर्ती करा रखा था। लड़के की बचने की आशा बहुत कम थी। ऐसी स्थिति में माता-पिता की क्या दशा होती है, आसानी से समझी जा सकती है। रिश्तेदार मिलने आए और पूछा कि बच्चे का क्या हाल है? पिता ने बताया कि बचने का भरोसा नहीं, फिर पूछा और कुशल-मंगल है, पिता ने कहा कि सब मौज है।

विचार करें :- शराब के नशे में घोर धूप के ताप को झेल रहा था। फिर भी कह रहा था कि मौज हो रही है।

❖ कोर्ट कचहरियों में जो रिश्तेदार मिले, दोनों ही कह रहे थे कि सब मौज है। विचार करें जो व्यक्ति कोर्ट के कोल्हू में फँसा है। उसको स्वपन में भी सुख नहीं होता। फिर भी दोनों कह रहे थे कि मौज है अर्थात् आनन्द है।

❖ जिस व्यक्ति का इकलौता पुत्र मृत्यु सैय्या पर हो, उसको मौज कैसी? इसलिए सूक्ष्मवेद में कहा है कि इस दुःखालय संसार में यह प्राणी महाकष्ट को सुख मान रहा है।

यह संसार समंझदा नाहीं, कहंदा शाम दोपहरे नूं।

गरीब दास यह वक्त जात है, रोवोगे इस पहरे नूँ।।

सन्त गरीबदास जी ने बताया है कि मनुष्य जन्म प्राप्त करके जो व्यक्ति भक्ति नहीं करता, वह कुत्ते, गधे आदि-आदि की योनि में कष्ट उठाता है। कुत्ता रात्रि में आसमान की ओर मुख करके रोता है। इसलिए गरीबदास जी ने बताया है कि यह मानव शरीर का वक्त एक बार हाथ से निकल गया और भक्ति नहीं की तो इस समय (इस पहरे) को याद करके रोया करोगे।

''भक्ति किस प्रभु की करनी चाहिए'' गीता अनुसार।

इसलिए सूक्ष्मवेद में कहा कि :-

"भजन करो उस रब का, जो दाता है कुल सब का"

श्रीमद् भगवत् गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16-17 में कहा है कि यह संसार ऐसा है जैसे पीपल का वृक्ष है। जो संत इस संसार रूपी पीपल के वृक्ष की मूल (जड़ों) से लेकर तीनों गुणों रूपी शाखाओं तक सर्वांग भिन्न-भिन्न बता देता है। (सः वेद वित्) वह वेद के तात्पर्य को जानने वाला है अर्थात् वह तत्वदर्शी सन्त है।

अपने द्वारा रची सृष्टि का ज्ञान तथा वास्तविक आध्यात्म ज्ञान परमात्मा स्वयं पृथ्वी पर प्रकट होकर अपने मुख कमल से सुनाता है। प्रमाण के लिए पढ़ें निम्न वेद मंत्र। इन मंत्रों की फोटोकापी कृप्या देखें इसी पुस्तक के पृष्ठ 86 पर जिनका अनुवाद आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानंद तथा उसके अनुयाईयों ने किया है। उसकी त्रुटियाँ लेखक (संत रामपाल दास) ने शुद्ध की हैं।

ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 86 मन्त्र 26-27, ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 82 मन्त्र 1-2, ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 96 मन्त्र 16 से 20, ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 94 मन्त्र 1, ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 95 मन्त्र 2, ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 54 मन्त्र 3, ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 20 मन्त्र 1 में प्रमाण है कि जो सर्व ब्रह्माण्डों का रचनहार, सर्व का पालनहार परमेश्वर है। वह सर्व भुवनों के ऊपर के लोक में बैठा है। (ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 54 मन्त्र 3) वह परमात्मा वहाँ से गति करके अर्थात् सशरीर चलकर यहाँ पृथ्वी पर आता है, भक्तों के संकटों का नाश करता है। उसका नाम कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर है। यहाँ पर अच्छी आत्माओं को मिलता है, उनको तत्वज्ञान अपने मुख कमल से बोलकर बताता है। वह परमात्मा ऊपर के लोक में बैठा है। (ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 86 मन्त्र 26-27, मण्डल 82 मन्त्र 1-2 तथा मण्डल नं. 9 सूक्त 20 मन्त्र 1)

परमात्मा पृथ्वी पर कवियों की तरह आचरण करता हुआ विचरण करता है। (ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 94 मन्त्र 1)

परमात्मा अपने मुख से वाणी बोलकर साधकों को भक्ति करने की प्रेरणा करता है। परमात्मा भक्ति के गुप्त मन्त्रों का अविष्कार करता है। (ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 95 मन्त्र 2)

परमात्मा तत्वज्ञान को कविर्वाणी (कबीर वाणी) द्वारा लोकोक्तियों, दोहों, चौपाईयों द्वारा बोलकर सुनाता है। वह कविर्देव (कबीर परमेश्वर) है जो सन्त रूप में प्रकट होता है। उस परमेश्वर द्वारा ऋषि या सन्तों द्वारा रची असँख्यों वाणियाँ जो तत्वज्ञान है, वे उसके अनुयाईयों के लिए अमृत तुल्य आनंददायक होती हैं।

वह परमेश्वर प्रसिद्ध कवियों में से भी एक प्रसिद्ध कवि की पदवी भी प्राप्त करते हैं। उनको कवि कहते हैं, परंतु वह परमात्मा होता है। वह परमात्मा तीसरे मुक्ति धाम (सत्यलोक) में विराजमान है। जैसे मनुष्य अन्य वस्त्र धारण करता है, ऐसे ही वह परमात्मा भिन्न-भिन्न रूपों में पृथ्वी पर प्रकट होता है। उपरोक्त ऋग्वेद के मन्त्रों से स्पष्ट है कि परमात्मा अपने अमर धाम से चलकर पृथ्वी पर प्रकट होता है। वह अच्छी आत्माओं को मिलता है। वह तत्वदर्शी सन्त की भूमिका करके तत्व ज्ञान दोहों, चौपाईयों, शब्दों द्वारा बोलता है। उस परमेश्वर ने सन् 1398 से 1518 तक 120 वर्ष पृथ्वी पर भारत वर्ष की पावन धरती पर काशी शहर में जुलाहे (धाणक) के रूप में रहकर तत्वज्ञान बताया था।

कबीर, अक्षर पुरूष एक पेड़ है, क्षर पुरूष वाकि डार।
तीनों देवा शाखा हैं, पात रूप संसार।।

विशेष :- कबीर वाणी पुस्तक में एक वाणी ऐसे भी लिखी है :-

कबीर, अक्षर पुरूष वृक्ष का तना है, क्षर पुरूष है डार।
त्रयदेव शाखा भए, पात जानों संसार।।

सरलार्थ :- वृक्ष का जो हिस्सा पृथ्वी से बाहर दिखाई देता है। उसकी जानकारी बताई है कि वृक्ष का जो तना होता है, उसे तो "अक्षर पुरूष" जानें। तने के ऊपर कई मोटी डार निकलती हैं, उनमें से एक डार को क्षर पुरूष जानें। फिर उस डार के मानों तीन शाखा निकली हैं। वे तीनों देवता :- (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव जी) जानें और उन शाखाओं पर लगे पत्ते जीव-जन्तु जानें।

परमेश्वर कबीर जी ने तत्वज्ञान में सब ज्ञान बताया है। गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में भी कहा है कि यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों की जानकारी (ब्रह्मणः मुखे) सच्चिदानन्द घन ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म ने अपने मुख कमल से बोली, वाणी में विस्तार के साथ कही है, वह तत्वज्ञान है।

गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में कहा है कि जो तत्वज्ञान परमात्मा स्वयं बताता है। उसको उसके कृपा पात्र सन्त ही समझते हैं। उस तत्वज्ञान को तू तत्वदर्शी सन्तों के पास जाकर समझ। उनको दण्डवत् प्रणाम (पृथ्वी पर पेट के बल लम्बा लेटकर प्रणाम) करके, नम्रतापूर्वक प्रश्न करने से वे तत्वदर्शी सन्त तत्वज्ञान का उपदेश करेंगे।

परमेश्वर ने यह तत्वज्ञान स्वयं पृथ्वी पर प्रकट होकर बताया था। गीता अध्याय 15 श्लोक 1 में तत्वदर्शी सन्त की पहचान बताई है कि जो सन्त संसार रूपी वृक्ष को मूल (जड़) से लेकर सर्व अंगों को जानता है, वह तत्वदर्शी सन्त है।

❖ अब जानें संसार रूपी वृक्ष के सर्वांग :-

1. मूल (जड़) :- यह परम अक्षर ब्रह्म है जो सबका मालिक है। सबकी उत्पत्ति करता है। सबका धारण-पोषण करने वाला है जिसकी जानकारी गीता अध्याय 8 श्लोक 1 के प्रश्न का उत्तर गीता अध्याय 8 के ही श्लोक 3, 8, 9, 10 तथा 20, 21, 22 में दिया है। उसी का वर्णन गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में है। जैसे गीता अध्याय 15 श्लोक 16 में दो पुरूष बताए हैं :- एक "क्षर पुरूष" दूसरा "अक्षर पुरूष", ये दोनों तथा इनके अन्तर्गत जितने शरीरधारी प्राणी हैं, वे सब नाशवान हैं। जीव आत्मा तो किसी की नहीं मरती।

गीता अध्याय 15 के ही श्लोक 17 में कहा है कि (उत्तम पुरूषः) अर्थात् पुरूषोत्तम तो (अन्यः) अन्य ही है जिसे (परमात्मा इति उदाहृतः) परमात्मा कहा जाता है (यः लोक त्रयम्) जो तीनों लोकों में (अविश्य विभर्ती) प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है (अव्ययः ईश्वरः) अविनाशी परमेश्वर है, यह परम अक्षर ब्रह्म संसार रूपी वृक्ष की मूल (जड़) रूप परमेश्वर है। यह वह परमात्मा है जिसके विषय में सन्त गरीब दास जी ने कहा है :-

"भजन करो उस रब का, जो दाता है कुल सब का"

यह असँख्यों ब्रह्माण्डों का मालिक है। यह क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष का भी मालिक तथा उत्पत्तिकर्ता है।

2. अक्षर पुरूष :- यह संसार रूपी वृक्ष का तना जानें। यह 7 शंख ब्रह्माण्डों का मालिक है, नाशवान है।

3. क्षर पुरूष :- यह गीता ज्ञान दाता है, इसको "क्षर ब्रह्म" भी कहते हैं। यह केवल 21 ब्रह्माण्डों का मालिक है, नाशवान है।

4. तीनों देवता (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) तीन शाखाऐं :- ये एक ब्रह्माण्ड में बने तीन लोकों (पृथ्वी लोक, पाताल लोक तथा स्वर्ग लोक) में एक-एक विभाग के मन्त्री हैं, मालिक हैं।

जैसे = रजगुण विभाग के श्री ब्रह्मा जी मालिक हैं, जिसके प्रभाव से सर्व प्राणी सन्तानोत्पत्ति करते हैं। सतगुण विभाग के श्री विष्णु जी मालिक हैं, जिससे एक-दूसरे में ममता बनी रहती है, कर्मानुसार सर्व का किया फल देते हैं। तमोगुण विभाग के श्री शंकर जी मालिक हैं, जिसके कारण सर्व का अन्त होता है और पात रूप में संसार के प्राणी जानो। यह है संसार रूपी वृक्ष के सर्वांगों की भिन्न-भिन्न जानकारी। यह ज्ञान स्वयं परमेश्वर कबीर जी ने अपने मुख कमल से बोला था। वह कबीर वाणी, कबीर बीजक, कबीर शब्दावली तथा कबीर सागर में श्री धनी धर्मदास (बाँधवगढ़ वाले) द्वारा लिखा गया था। उस परमेश्वर ने तो बताया ही था या वर्तमान में इस दास (संत रामपाल दास) ने समझा है। यह कृपा परमेश्वर कबीर जी की ही है कि सम्पूर्ण आध्यात्म ज्ञान मुझे प्राप्त है।

गीता अध्याय 15 श्लोक 1 के अनुसार तत्वदर्शी सन्त की पहचान से भी यह सिद्ध हुआ कि यह दास (संत रामपाल दास) वह तत्वदर्शी सन्त है।
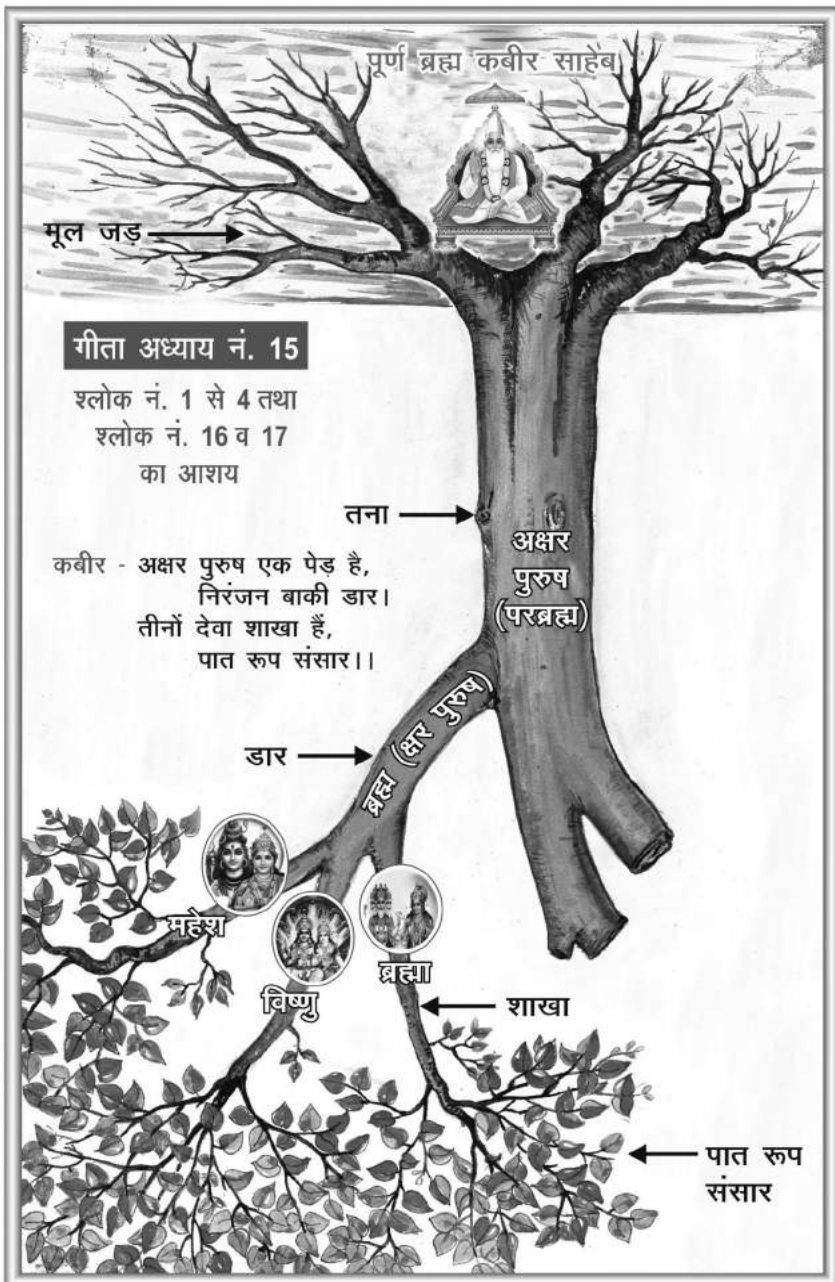
गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16 से 17 का सांराश रूप चित्र।

पुनः प्रसंग पर आते हैं कि ''भजन करो उस रब का, जो दाता है कुल सब का।''

अभी तक तो यही बताया है कि भक्ति करनी चाहिए परंतु अब यह स्पष्ट करते हैं कि भक्ति किसकी करें। 1. श्री ब्रह्मा जी रजगुण की या 2. श्री सतगुण विष्णु जी की या 3. तमगुण श्री शिव जी रूपी तीनों शाखाओं की या फिर 4. क्षर पुरूष गीता ज्ञान दाता डार की या 5. अक्षर पुरूष तना की या 6. परम अक्षर पुरूष = मूल की।

उदाहरण :- यदि हम नर्सरी से कोई आम का पौधा लाते हैं, उसको अपने खेत या घर के आँगन में रोपते हैं तो कैसे रोपते हैं?

जमीन में गढ्ढ़ा खोदते हैं, पौधे की मूल (जड़ों) को गढ्ढ़े में रखकर मिट्टी से ढ़क देते हैं। फिर पौधे की मूल (जड़ों) में पानी से सिंचाई करते हैं, खाद डालते हैं अर्थात् पौधे की जड़ की पूजा करते हैं। जड़ों से आहार तने में, तना अपने अनुसार आहार रखकर बचा हुआ आगे डार में भेज देता है। डार अपने लिए आवश्यक आहार रखकर शेष शाखाओं में भेज देती है। इसी प्रकार शाखाऐं शेष भोजन पत्तों तक भेजती हैं। इस प्रकार वह पौधा पेड़ बनकर फल देता है।

पाठक जन बहुत बुद्धिमान हैं। समझ गए होंगे कि हमने किस परमात्मा की पूजा करनी चाहिए?

सूक्ष्मवेद में परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि :-

कबीर, एकै साधै सब सधै, सब साधै सब जाय।
माली सींचै मूल कूँ, फूलै फलै अघाय।।

एक मूल मालिक की पूजा करने से सर्व देवताओं की पूजा हो जाती है जो शास्त्रानुकूल है। जो तीनों देवताओं में से एक या दो (श्री विष्णु सतगुण तथा श्री शंकर तमगुण) की पूजा करते हैं या तीनों की पूजा ईष्ट रूप में करते हैं तो वह गीता अध्याय 13 श्लोक 10 में वर्णित अव्यभिचारिणी भक्ति न होने से व्यर्थ है। जैसे कोई स्त्री अपने पति के अतिरिक्त अन्य पुरूष से शारीरिक सम्बन्ध नहीं करती, वह अव्यभिचारिणी स्त्री है। जो कई पुरूषों से सम्पर्क करती है, वह व्यभिचारिणी होने से समाज में निन्दनीय होती है। वह पति के दिल से उतर जाती है।

शास्त्रानुकूल साधना अर्थात् सीधा बीजा हुआ भक्ति रूपी पौधे का चित्र इसी पुस्तक के पृष्ठ 26 पर व शास्त्रविरूद्ध साधना अर्थात् उल्टा बीजा हुआ भक्ति रूपी पौधा पृष्ठ 27 पर देखें।

ब्रह्मा
शिव
विष्णु
गीता अध्याय नं. 15
श्लोक नं. 1 से 4 तथा
श्लोक नं. 16 व 17
का आशय
डार ब्रह्म
(क्षर पुरुष)
कबीर-अक्षर पुरुष एक पेड़ है,
निरंजन वाकी डार।
तीनों देवा शाखा हैं,
पात रूप संसार।।
तना
(अक्षर पुरुष परब्रह्म)
कबीर साहेब
(मूल जड़)
शास्त्रानुकूल साधना
अर्थात सीधा बीजा हुआ भक्ति रूपी पौधा
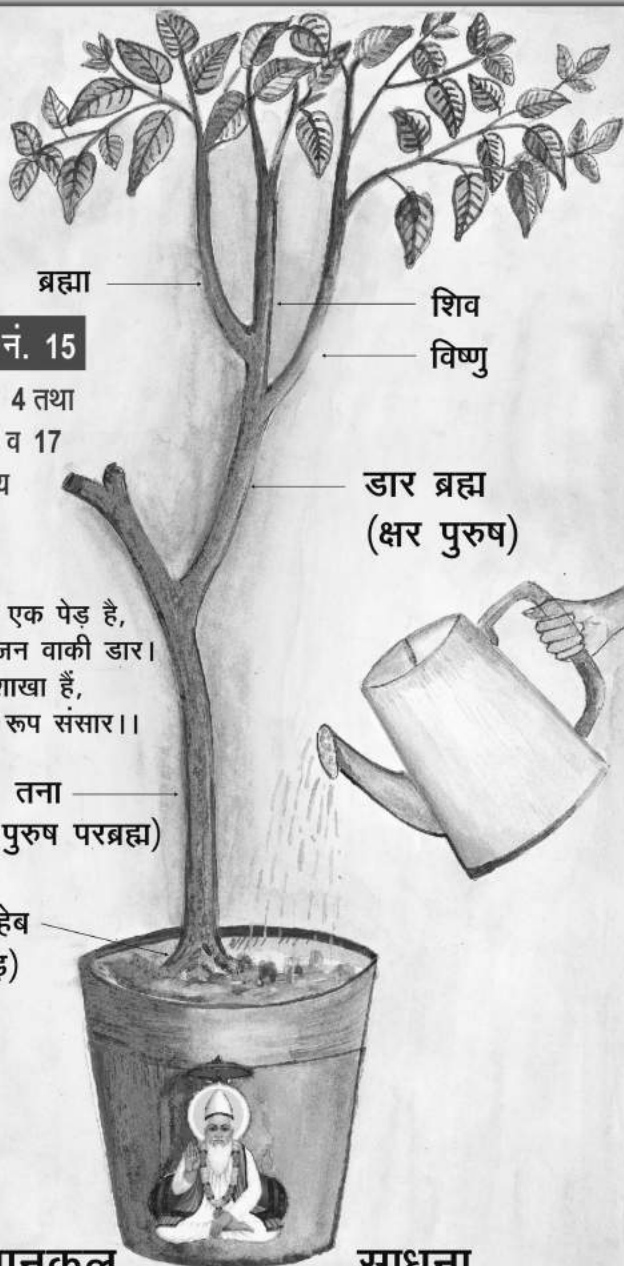
गीता अध्याय नं. 15
श्लोक नं. 1 से 4 तथा
श्लोक नं. 16 व 17
का आशय
पूर्ण ब्रह्म कबीर साहेब
मूल जड़
कबीर - अक्षर पुरुष एक पेड़ है,
निरंजन वाकी डार।
तीनों देवा शाखा हैं,
पात रूप संसार।।
तना
(अक्षर पुरुष परब्रह्म)
डार ब्रह्म
(क्षर पुरुष)
विष्णु (शाखा)
ब्रह्मा
शिव
शास्त्रविरुद्ध साधना
अर्थात उल्टा बीजा हुआ भक्ति रूपी पौधा
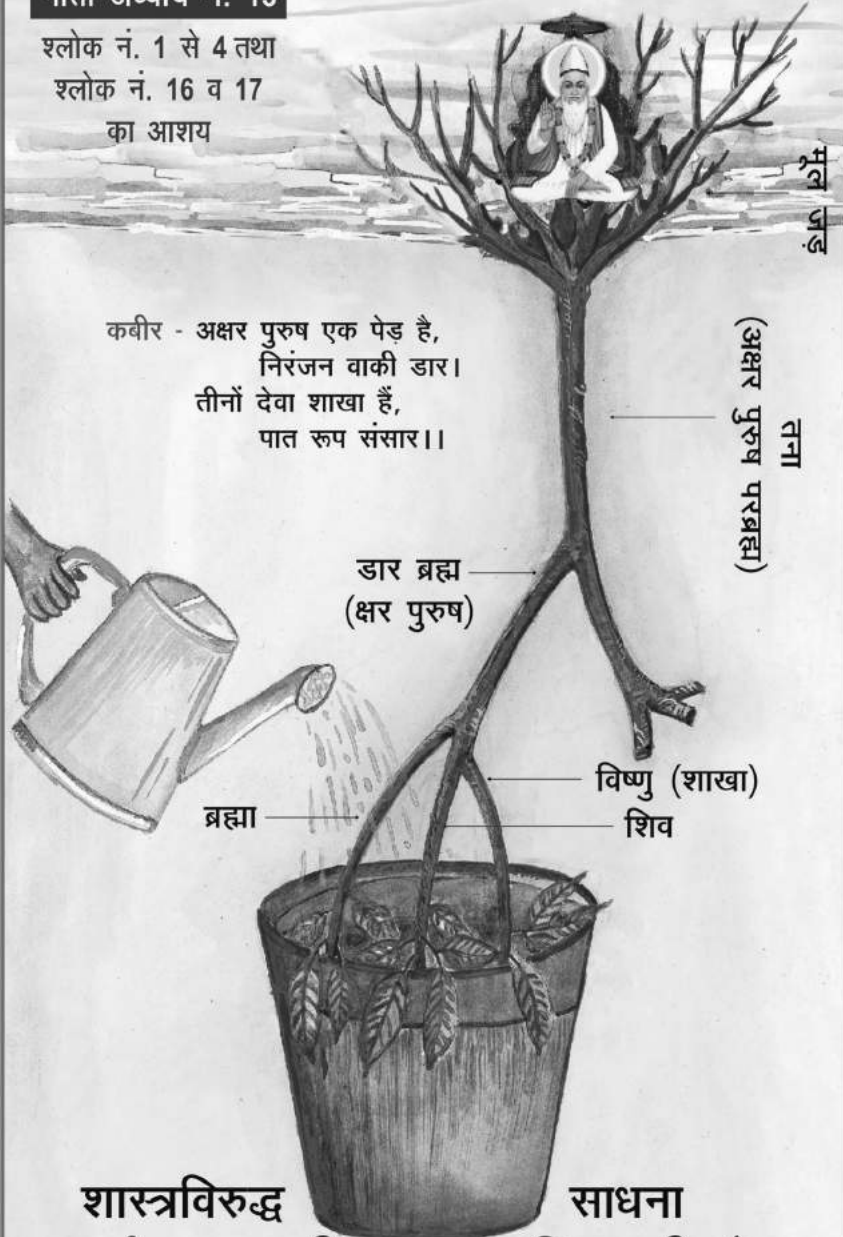
उपरोक्त प्रमाणों से स्पष्ट हुआ कि एक मूल मालिक की भक्ति करने से साधक का आत्म-कल्याण सम्भव है।

अन्य प्रमाण :- गीता अध्याय 3 श्लोक 10 से 15 में इसी उपरोक्त भक्ति का समर्थन किया है।

❖ गीता अध्याय 3 श्लोक 10 = प्रजापति ने अर्थात् कुल के मालिक ने सृष्टि के आदि में यज्ञ सहित अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों के ज्ञान सहित प्रजाओं को उत्पन्न करके आदेश दिया था कि तुम सब धार्मिक अनुष्ठानों द्वारा वृद्धि को प्राप्त होओ। यह यज्ञ अर्थात् धार्मिक अनुष्ठान तुम लोगों को ईच्छित भोग प्रदान करने वाले हैं। (गीता अध्याय 3 श्लोक 10)

❖ इस शास्त्रानुकूल धार्मिक अनुष्ठान द्वारा देवताओं (संसार रूपी पौधे की शाखाओं) को उन्नत करो अर्थात् पूर्ण परमात्मा (मूल मालिक) को ईष्ट मानकर साधना करने से शाखाऐं अपने आप उन्नत हो जाती हैं जैसाकि पूर्व में स्पष्ट हो चुका है। फिर वे देवता (शाखाऐं बड़ी होकर फल देंगी) तुम लोगों को उन्नत करें अर्थात् जब हम शास्त्रानुकूल साधना करेंगे तो हमारे भक्ति कर्म बनेंगे, कर्मों का फल ये तीनों देवता (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी रूपी शाखाऐं ही) देते हैं। इस प्रकार एक-दूसरे को उन्नत करते हुए तुम्हारा कल्याण होगा तथा इससे दूसरे परमात्मा को प्राप्त हो जाओगे। (यह ज्ञान गीता ज्ञान दाता बता रहा है) (गीता अध्याय 3 श्लोक 11)

❖ शास्त्रानुकुल किए यज्ञ अर्थात् अनुष्ठानों द्वारा बढ़ाए हुए देवता अर्थात् संसार रूपी पौधे की शाखाऐं तुम लोगों को बिना माँगे ही इच्छित भोग निश्चय ही देते रहेंगे। जैसे पौधे की मूल की सिंचाई करने से पौधा पेड़ बन जाता है। वे शाखाऐं फलों से लदपद हो जाती हैं। फिर उस वृक्ष की शाखाऐं अपने आप प्रतिवर्ष फल देती रहेंगी यानि आप जी का किया शास्त्रानुकूल भक्ति कर्म का फल जो संचित हो जाता है, उसे यही देवता आपको देते रहेंगे, आप माँगो या न माँगो। यदि उन देवताओं द्वारा दिया गया आपका कर्म संस्कार का धन पुनः धर्म में नहीं लगाया तो वह साधक भक्ति का चोर है। वह भविष्य में पुण्य रहित होकर हानि उठाता है। (गीता अध्याय 3 श्लोक 12)

❖ यज्ञ से बचे हुए अन्न को खाने वाले संतजन सब पापों से मुक्त हो जाते हैं। भावार्थ है कि तत्वदर्शी सन्त सर्वप्रथम परम अक्षर ब्रह्म को भोग लगाकर फिर बचे हुए भोजन को सर्व भक्तों में वितरित करता है। यह पहचान है सत्य साधना की तो वह सन्त सर्व भक्ति मन्त्र भी शास्त्रानुकूल देता है। जिस कारण से साधक सर्व पापों से मुक्त होकर सत्यलोक में चला जाता है और जो पापी लोग शास्त्रविधि अनुसार धार्मिक क्रियाऐं नहीं करते या धर्म नहीं करते, केवल अपने शरीर पोषण के लिए अन्न पकाते हैं। वे तो पाप को ही खाते हैं। (गीता अध्याय 3 श्लोक 13)

❖ सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं अर्थात् अन्न खाने से शरीर में संतानोत्पत्ति का पदार्थ बनता है जिससे सर्व प्राणियों की उत्पत्ति होती है। अन्न की

उत्पत्ति वृष्टि से होती है। वर्षा शास्त्रविधि अनुसार किए गए यज्ञ अर्थात् धार्मिक अनुष्ठान से होती है। यज्ञ अर्थात् धार्मिक अनुष्ठान शास्त्रों में वर्णित विधि से किए जाते हैं। कर्म को ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरूष से उत्पन्न हुए जान क्योंकि हम ब्रह्म (काल) के लोक में आए हैं तो हमको कर्म करके ही सब प्राप्त होता है। जब हम सत्यलोक में थे, तब बिना कर्म किए सब प्राप्त था। इसलिए कहा है कि कर्म को ब्रह्म (काल) से उत्पन्न जान तथा ब्रह्म (काल) की उत्पत्ति अविनाशी परमात्मा से हुई। (जिसका वर्णन गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में है तथा सृष्टि रचना अध्याय में पढ़ें।) इससे सिद्ध होता है कि (सर्वगतम् ब्रह्म) सर्वव्यापी परम अक्षर परमात्मा अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म सदा ही यज्ञों में अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों में (प्रतिष्ठितम्) प्रतिष्ठित है अर्थात् सब धार्मिक क्रियाओं में परम अक्षर ब्रह्म ईष्ट रूप में पूज्य है। (गीता अध्याय 3 श्लोक 14-15)

परम अक्षर ब्रह्म गीता ज्ञान दाता से अन्य है।

गीता ज्ञान दाता ने स्वयं गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है कि हे भारत! तू सर्वभाव से उस परमेश्वर अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म की शरण में जा, उस परमेश्वर की कृपा से ही तू परम शान्ति को तथा शाश्वत स्थान अर्थात् सनातन परम धाम को प्राप्त होगा।

❖ गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में गीता ज्ञान दाता ने बताया है कि तत्वदर्शी सन्त मिलने के पश्चात् तत्वज्ञान रूपी शस्त्र द्वारा अज्ञान को काटकर परमेश्वर के उस परम पद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर कभी संसार में जन्म नहीं लेते अर्थात् उनको सनातन परम धाम प्राप्त हो जाता है, जहाँ परमशान्ति है, कोई कष्ट नहीं है, वहाँ मृत्यु नहीं होती, वहाँ वृद्धावस्था नहीं होती, किसी पदार्थ का अभाव नहीं हैं। जिस परमेश्वर से संसार रूपी वृक्ष की प्रवृति विस्तार को प्राप्त हुई है, उसी परमेश्वर की भक्ति करनी चाहिए।

❖ गीता अध्याय 13 श्लोक 17 में गीता ज्ञान दाता ने बताया है कि वह परब्रह्म अर्थात् मेरे से दूसरा प्रभु दूसरे शब्दों में परम अक्षर ब्रह्म(जिसके विषय में गीता अध्याय 8 श्लोक 3 में कहा है।) ज्योतियों का भी ज्योति, माया से अति परे कहा जाता है, बोधरूप (जानने योग्य) परमात्मा तत्वज्ञान से प्राप्त करने योग्य है और सबके हृदय में विशेष रूप से स्थित है। (गीता अध्याय 13 श्लोक 17)

विचार करें :- जिस तत्वज्ञान से परम अक्षर ब्रह्म प्राप्त होता है, उसे सूक्ष्म वेद भी कहते हैं। उसका ज्ञान गीता ज्ञान दाता को नहीं है। इसलिए गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 4 श्लोक 32 तथा 34 में बताया है कि यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों का विस्तार पूर्व ज्ञान स्वयं (ब्रह्मणः मुखे) सच्चिदानन्द घन ब्रह्म परमात्मा अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म अपने मुख कमल से बोलकर बताता है जो सच्चिदानन्द घन ब्रह्म की वाणी कही जाती है, उसे तत्वज्ञान कहते हैं। उसे जानकर साधक सर्व पापों से मुक्त हो जाता है। (गीता अध्याय 4 श्लोक 32)

❖ पाठकों से निवेदन है कि गीता अध्याय 4 श्लोक 32 के मूल पाठ में

"ब्रह्मणः" शब्द है। गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित गीता या अन्य स्थानों से प्रकाशित गीता में अनुवादकों ने ब्रह्मणः का अर्थ "वेद" किया है जो गलत है।

गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में भी "ब्रह्मणः" शब्द है, उसमें अनुवादकों ने ठीक अर्थ "सच्चिदानन्द घन ब्रह्म" किया है। इसलिए गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में "ब्रह्मणः मुखे" का अर्थ सच्चिदानन्द घन ब्रह्म के मुख कमल से उच्चरित वाणी में करना उचित है।

गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि उस तत्वज्ञान को जिसे परमेश्वर अपने मुख कमल से बताता है, तू तत्वदर्शी सन्तों के पास जाकर समझ, उनको दण्डवत् प्रणाम करने से, नम्रतापूर्वक प्रश्न करने से वे परमात्मा तत्व को भली-भाँति जानने वाले तत्वदर्शी महात्मा तुझे तत्वज्ञान का उपदेश करेंगे।

प्रभु प्रेमी पाठक जनों! इससे सिद्ध हुआ कि वह तत्वज्ञान जिससे परम अक्षर परमात्मा प्राप्त होता है, गीता ग्रन्थ में नहीं है। गीता चारों वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद) का संक्षिप्त रूप है, उनका सारांश है। इससे सिद्ध हुआ कि सूक्ष्मवेद वाला तत्वज्ञान किसी भी प्रचलित सद्ग्रन्थ में नहीं है। वह ज्ञान मेरे (सन्त रामपाल दास) पास है, विश्व में किसी के पास नहीं है।

प्रश्न :- क्या श्री ब्रह्मा जी रजगुण, श्री विष्णु जी सतगुण तथा श्री शिव जी तमगुण भी ईष्ट रूप में पूज्य नहीं है? हिन्दू धर्म में इन्हीं देवताओं की पूजा की जाती है। हिन्दू धर्मगुरू, शंकराचार्य तथा अन्य इन्हीं की पूजा ईष्ट रूप में मानकर करने को कहते हैं, वे स्वयं भी करते हैं। आपकी बात अविश्वसनीय लगती है, क्या आप गीता में प्रमाणित कर सकते हैं?

उत्तर :- हिन्दू धर्म के धर्मगुरूओं को अपने सद्ग्रन्थों का ही ज्ञान नहीं। जैसे अक्षर ज्ञान देने वाले अध्यापक को अपने पाठ्यक्रम की पुस्तकों के उल्लेख का ही ज्ञान नहीं तो वह अध्यापक विद्यार्थियों के लिए हानिकारक होता है। वह शिक्षक ठीक नहीं, यही दशा हिन्दू धर्म के धर्मगुरूओं की है।

प्रमाण :- श्रीमद् भगवत गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि तीनों गुणों से (रजगुण श्री ब्रह्मा जी से उत्पत्ति, सतगुण श्री विष्णु जी से स्थिति तथा तमगुण श्री शंकर जी से संहार) जो हो रहा है, उसका निमित मैं हूँ, परंतु उनमें मैं तथा वे मुझमें नहीं हैं। (गीता अध्याय 7 श्लोक 12),

पहले यह प्रमाणित करते हैं कि रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव शंकर है :-

1. मार्कण्डेय पुराण (गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित केवल हिन्दी सचित्र मोटा टाईप) के पृष्ठ 123 पर लिखा है कि ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश ब्रह्म की प्रधान शक्तियाँ हैं। ये ही तीन गुण हैं, ये ही तीन देवता हैं।

2. श्री देवी पुराण (श्री खेमचन्द श्री कृष्ण चन्द वैंकेटेश्वर प्रैस मुम्बई से प्रकाशित) के तीसरे स्कंद के अध्याय 5 श्लोक 8 में कहा है :-

यदा दयादर्मना सदा अम्बिके कथम् अहमं विहितः तमोगुणः
कमलजः रजगुणः कथम् विहितः श्री हरिः सतगुणः (देवी पुराण 3/5/8)

अनुवाद :- भगवान शिव अपनी माता दुर्गा जी से प्रश्न कर रहे हैं कि हे मातः! यदि आप हम पर दयायुक्त हैं तो मुझे तमोगुण क्यों उत्पन्न किया? कमल से उत्पन्न ब्रह्मा जी को रजोगुण तथा श्री विष्णु जी को सतगुण क्यों बनाया?

❖ इससे प्रमाणित हुआ कि 1. रजगुण कहो चाहे ब्रह्मा जी कहो, 2. सतगुण कहो चाहे विष्णु जी कहो, 3. तमगुण कहो चाहे शिव जी कहो।

गीता अध्याय 7 श्लोक 12 का भावार्थ :- गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म है। प्रमाण गीता अध्याय 11 श्लोक 31-32, गीता अध्याय 11 श्लोक 31 में अर्जुन ने पूछा कि :- हे महानुभाव! आप कौन हैं। जबकि श्री कृष्ण जी तो अर्जुन के साले थे। श्री कृष्ण जी की बहन सुभद्रा का विवाह अर्जुन से हुआ था। विचार करें कि यदि गीता ज्ञान दाता श्री कृष्ण होते तो अर्जुन को यह जानने की नौबत नहीं आती कि आप कौन हो? क्या जीजा अपने साले को नहीं जानता? वास्तव में श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रेतवत् प्रवेश करके काल ब्रह्म गीता ज्ञान बोल रहा था। (″अधिक प्रमाण के लिए पढ़ें पुस्तकें ″गीता तेरा ज्ञान अमृत“, ‘‘गहरी नजर गीता में‘‘, ″ज्ञान गंगा“, आध्यात्मिक ज्ञान गंगा तथा देखें सत्संगों की D.V.D. श्री मद्भगवत गीता का ज्ञान किसने बोला। ये सब हमारी Web Site = www.jagatgururampalji.org" पर उपलब्ध है, निःशुल्क डाउनलोड कर सकते हैं। You Tube पर भी Search कर सकते हैं। Satsang Barwala Ashram या Sant Rampal Ji ke Satsang) गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म है जो गीता अध्याय 11 श्लोक 32 में स्वयं कह रहा है कि मैं काल हूँ, अब प्रवृत हुआ हूँ अर्थात् अब प्रकट हुआ हूँ। यदि श्री कृष्ण जी गीता ज्ञान बोल रहे होते तो यह नहीं कहते कि मैं अब आया हूँ क्योंकि श्री कृष्ण जी तो पहले ही विद्यमान थे। श्री कृष्ण जी ने कभी पहले नहीं कहा कि मैं काल हूँ, न कभी बाद में कहा कि सबका नाश करने वाला बढ़ा हुआ काल हूँ। कौरवों की सभा में अपना विराट रूप भी दिखाया था। विराट रूप भक्ति युक्त प्रत्येक आत्मा का होता है। कोई-कोई ही इसे प्रकट कर सकता है। यह भक्ति की शक्ति अनुसार होता है।

गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 11 श्लोक 47 में कहा है कि अर्जुन! मेरा यह विराट रूप तेरे अतिरिक्त पहले किसी ने नहीं देखा है। ″पाठकों से निवेदन है कि श्री कृष्ण जी ने तो अपना विराट रूप पहले कौरवों की सभा में दिखाया था“ जो उपस्थित सैंकड़ों कौरवों सहित हजारों ने देखा था। यदि श्री कृष्ण जी गीता ज्ञान बोल रहे होते तों यह कदापि नहीं कहते कि यह मेरा विराट रूप तेरे अतिरिक्त पहले किसी ने नहीं देखा था। इससे स्पष्ट है कि गीता ज्ञान दाता ″काल ब्रह्म“ जिसे गीता अध्याय 15 श्लोक 16 में क्षर पुरूष कहा गया है। जिसने गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में कहा है कि :-

″ओम् इति एकाकक्षर ब्रह्म व्यवहारन् माम् अनुस्मरन्
यः प्रयाति त्यजन् देहम् सः याति परमाम् गतिम्“

सरलार्थ :- गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि (माम् ब्रह्म) मुझ ब्रह्म का (ओम् इति एकाक्षरम्) यह एक ऊँ अक्षर है। (व्यवहारन्) उच्चारण करके (अनुस्मरन्) स्मरण करता हुआ (यः प्रयाति त्यजन् देहम्) जो साधक शरीर त्यागकर जाता है, (सः याति परमाम् गतिम्) वह ऊँ नाम से होने वाली परम गति को प्राप्त होता है, इसी को और स्पष्ट करता हूँ।

श्री देवी पुराण (सचित्र मोटा टाईप केवल हिन्दी, गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित) के सातवें स्कंद में पृष्ठ 562-563 पर प्रकरण इस प्रकार है :-

श्री देवी जी राजा हिमालय को ब्रह्म ज्ञानोपदेश देती है। कहा कि हे राजन्! तू ओम् (ऊँ) नाम का जाप कर जिससे ब्रह्म की प्राप्ति होती है। यह ऊँ नाम ब्रह्म जाप मन्त्र है और सब बातों को, पूजाओं को त्यागकर केवल एक ॐ नाम का जाप कर, ब्रह्म प्राप्ति का उद्देश्य रख, तेरा कल्याण हो। इससे ब्रह्म को प्राप्त हो जाएगा, वह ब्रह्म दिव्य आकाश रूपी ब्रह्म लोक में रहता है। इस देवी महापुराण से स्पष्ट हुआ कि ओम् (ऊँ) नाम जाप ब्रह्म का है।

अन्य प्रमाण :- श्री शिव महापुराण (गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित सचित्र मोटा टाईप) के विध्वेश्वर संहिता के पृष्ठ 23 से 25 पृष्ठ पर प्रकरण इस प्रकार हैः-

एक समय श्री ब्रह्मा जी रजगुण तथा विष्णु जी सतोगुण का युद्ध हो गया। कारण था कि श्री ब्रह्मा जी ने श्री विष्णु जी के निवास पर जाकर कहा कि हे अभिमानी! तूने मेरे आने पर उठकर सत्कार नहीं किया, तू पुत्र होकर भी पिता का सत्कार नहीं करता। मैं सर्व जगत की उत्पत्ति करने वाला सबका पिता हूँ। यह वचन सुनकर श्री विष्णु जी को अंदर से तो बहुत क्रोध आया परंतु ऊपर से मुस्कुराते हुए कहा कि आजा पुत्र, मैं तेरा पिता हूँ। तेरी उत्पत्ति मेरे नाभि कमल से हुई है। इसी बात पर दोनों ने हथियार उठा लिए, आपस में युद्ध करने लगे। उसी समय काल ब्रह्म ने इन दोनों के बीच में एक तेजोमय स्तंभ खड़ा कर दिया। जिस कारण से दोनों ने युद्ध करना बंद कर दिया। उसी समय काल ब्रह्म ने अपने पुत्र शिव का रूप बनाया तथा अपनी पत्नी दुर्गा को पार्वती बनाकर उनके पास प्रकट हो गए। उन दोनों से कहा कि तुम दोनों को ज्ञान नहीं है कि यहाँ का ईश कौन है? मैं ब्रह्म हूँ। यह संसार मेरा है, हे विष्णु तथा ब्रह्मा! तुम दोनों ने तप करके मेरे से एक-एक कृत प्राप्त किए हैं। ब्रह्मा को सृष्टि की उत्पत्ति तथा विष्णु को स्थिति। पुत्रो सुनो! मैनें इसी प्रकार महेश तथा रूद्र को भी एक-एक कृत संहार तथा तिरोभाव दिए हैं। फिर कहा है कि मेरा एक अक्षर ओम् (ॐ) मन्त्र जाप करने का है। यह पाँच अवयवों (अ, उ, य, नाद तथा बिन्दु) का संग्रह एक ''ॐ'' अक्षर मन्त्र बना है। पाठक जनों को स्पष्ट हुआ कि ''ॐ'' एक अक्षर ब्रह्म का जप मंत्र है। यह भी स्पष्ट हुआ कि श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री महेश से अन्य काल ब्रह्म है और ब्रह्मा जी, विष्णु जी तथा शिव जी तीनों काल ब्रह्म के पुत्र हैं।

अन्य प्रमाण :- श्री शिव महापुराण (गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, सचित्र मोटा टाईप) में रूद्र संहिता के पृष्ठ 110 पर लिखा है कि रजगुण ब्रह्मा, सतगुण

विष्णु तथा तमगुण शिव तीनों देवताओं में गुण हैं। मैं इनसे भिन्न हूँ।

इन सर्व प्रमाणों से स्पष्ट हुआ कि गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म है, इसे श्राप लगा है कि यह प्रतिदिन एक लाख मानव शरीरधारी प्राणियों को खाएगा तथा सवा लाख प्रतिदिन उत्पन्न करेगा।

इस कारण से इसने अपने तीनों पुत्रों को एक-एक गुणयुक्त बना रखा है, इनके शरीर से निकल रहे गुणों का सूक्ष्म प्रभाव प्रत्येक प्राणी को विवश करके कार्य करता है। जैसे रसोई घर में मिर्चों का छौंक लगता है, छींक आती है। उन छींकों को कोई नहीं रोक पाता। स्थूल रूप में मिर्च रसोई घर में होती हैं, उनसे निकले गुण ने दूर कमरे में बैठे व्यक्तियों को प्रभावित कर दिया।

इसी प्रकार तीनों देवता (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) अपने-अपने लोकों में रहते हैं, परन्तु उनके शरीर से निकल रहे गुणों का सूक्ष्म प्रभाव तीनों लोकों (स्वर्ग लोक, पाताल लोक, पृथ्वी लोक) के प्राणियों को प्रभावित करता रहता है जिससे काल ब्रह्म के लिए एक लाख मानव का आहार तैयार होता है। इसीलिए गीता अध्याय 7 श्लोक 12 में गीता ज्ञान दाता ब्रह्म ने कहा है कि :-

❖ तीनों गुणों से जो कुछ भी हो रहा है, उसका निमित कारण मैं ही हूँ। जैसे रजगुण ब्रह्मा जी से उत्पत्ति, सतगुण विष्णु जी से स्थिति तथा तमगुण शिव जी से संहार होता है। यह सब मेरे लिए ही इनके द्वारा हो रहा है ऐसा जान, परन्तु वे मुझमें और मैं उनमें नहीं हूँ क्योंकि काल ब्रह्म इन तीनों देवताओं से भिन्न रहता है। (गीता अध्याय 7 श्लोक 12)

❖ सारा संसार इन्हीं तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) पर ही मोहित है। इन्हीं तक ज्ञान रखता है। इन तीनों देवताओं से परे मुझको तथा (अव्ययम्) उस अविनाशी परमात्मा को नहीं जानता। (गीता अध्याय 7 श्लोक 13)

❖ क्योंकि यह अलौकिक त्रिगुणमयी मेरी माया (अर्थात् मेरे पुत्रों द्वारा फैलाया मायाजाल) बड़ी दुस्तर है, निक्कमी है। जो साधक केवल मुझ (काल ब्रह्म) को भजते हैं, वे इस माया (ब्रह्मा, विष्णु, महेश की भक्ति से होने वाले लाभ से अधिक लाभ ब्रह्म भक्ति में है। इसलिए कहा है कि जो इन तीनों से मिलने वाले लाभ को त्यागकर काल ब्रह्म की साधना करते हैं, वे इनका उल्लंघन करके अर्थात् इनकी साधना का त्याग कर देते हैं) का उल्लंघन कर जाते हैं। (गीता अध्याय 7 श्लोक 14)

❖ गीता अध्याय 7 श्लोक 15 में कहा है कि :- तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव जी) रूपी मायाजाल द्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है अर्थात् जो साधक इन तीनों देवताओं से भिन्न प्रभु को नहीं जानते। इन्हीं से मिलने वाले नाममात्र लाभ से ही मोक्ष मानकर इन्हीं से चिपके रहते हैं, इन्हीं की पूजा करते रहते हैं। ऐसे व्यक्ति असुर स्वभाव को धारण किए हुए, मनुष्यों में नीच, दूषित कर्म करने वाले मूर्ख जन मुझ काल ब्रह्म को नहीं

भजते। (गीता अध्याय 7 श्लोक 15)

गीता अध्याय 14 श्लोक 19 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि जिस समय दृष्टा अर्थात् तत्वज्ञान सुनने वाला और जो तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) की ईष्ट रूप में पूजा करने वाला अपनी पुरानी धारणा को नहीं बदलता अर्थात् इन तीनों के अतिरिक्त किसी को कर्ता नहीं मानता और इन तीनों से परे पूर्ण परमात्मा का ज्ञान भी प्राप्त कर लेता है, वह मेरे ही जाल में रह जाता है। (गीता अध्याय 14 श्लोक 19)

गीता अध्याय 14 श्लोक 20 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि देहधारी मनुष्य इन तीनों का उल्लंघन करके अर्थात् इन तीनों की पूजा त्यागकर ही जन्म-मरण तथा वृद्धावस्था के तथा अन्य सब दुःखों से मुक्त होकर परमानन्द अर्थात् गीता अध्याय 18 श्लोक 62 तथा अध्याय 15 श्लोक 4 में वर्णित परम शान्ति तथा सनातन परम धाम को प्राप्त होता है।

सारांश :- तीनों देवताओं (ब्रह्मा जी रजगुण, विष्णु जी सतगुण तथा शिव जी तमगुण) की पूजा करने वाले राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच, दुषित कर्म करने वाले मूर्ख कहा है। भावार्थ है कि इनकी पूजा नहीं करनी चाहिए।

कारण :- 1. श्री ब्रह्मा जी रजगुण की पूजा हिरण्यकश्यप ने की थी, अपने पुत्र प्रहलाद का शत्रु बन गया, राक्षस कहलाया, कुत्ते वाली मौत मरा।

2. श्री शिव जी तमगुण की पूजा रावण ने की थी, जगतजननी सीता को उठाया, पत्नी बनाने की कुचेष्टा की, राक्षस कहलाया, कुत्ते की मौत मरा। भस्मासुर ने भी तमगुण शिव जी की पूजा की थी, राक्षस कहलाया, बेमौत मारा गया।

3. श्री विष्णु जी की पूजा करने वाले वैष्णव कहलाते हैं। एक समय हरिद्वार में एक कुम्भ का पर्व लगा। उस पर्व में स्नान करने के लिए सर्व सन्त (गिरी, पुरी, नाथ, नागा) पहुँच गए। नागा श्री शिव जी तमगुण के पुजारी होते हैं तथा वैष्णव श्री विष्णु सतगुण के पुजारी होते हैं। सभी हरिद्वार में हर की पैड़ी पर स्नान करने की तैयारी करने लगे जो सँख्या में लगभग 20 हजार थे। कुछ देर बाद इतनी ही सँख्या में वैष्णव साधु हर की पैड़ियों पर पहुँच गए। वैष्णव साधुओं ने नागाओं से कहा कि हम श्रेष्ठ हैं, हम पहले स्नान करेंगे। इसी बात पर झगड़ा हो गया। तलवार, कटारी, छुरों से लड़ने लगे, लगभग 25 हजार दोनों पक्षों के साधु तीनों गुणों के उपासक कटकर मर गए।

इसलिए गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 में तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव जी) के उपासकों को राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच दुषित कर्म करने वाले मूर्ख कहा है।

इससे सिद्ध हुआ कि श्री ब्रह्मा रजगुण, श्री विष्णु सतगुण तथा श्री शिव तमगुण की भक्ति करने वाले मूर्ख, राक्षस, मनुष्यों में नीच तथा घटिया कर्म करने वाले मूर्ख व्यक्ति हैं अर्थात् इनकी पूजा करना श्रीमद् भगवत गीता में मना किया है, इनकी ईष्ट रूप में पूजा करना व्यर्थ है।

''पूजा तथा साधना में अंतर''

प्रश्न :- काल ब्रह्म की पूजा करनी चाहिए या नहीं? गीता में प्रमाण दिखाऐं।

उत्तरः- नहीं करनी चाहिए। पहले आप जी को पूजा तथा साधना का भेद बताते हैं।

भक्ति अर्थात् पूजा :- जैसे हमारे को पता है कि पृथ्वी के अन्दर मीठा शीतल जल है। उसको प्राप्त कैसे किया जा सकता है? उसके लिए बोकी के द्वारा जमीन में सुराख किया जाता है, उस सुराख (Bore) में लोहे की पाईप डाली जाती है, फिर हैण्डपम्प (नल) की मशीन लगाई जाती है, तब वह शीतल जीवनदाता जल प्राप्त होता है।

हमारा पूज्य जल है, उसको प्राप्त करने के लिए प्रयोग किए उपकरण तथा प्रयत्न साधना जानें। यदि हम उपकरणों की पूजा में लगे रहे तो जल प्राप्त नहीं कर सकते, उपकरणों द्वारा पूज्य वस्तु प्राप्त होती है।

अन्य उदाहरण :- जैसे पतिव्रता स्त्री परिवार के सर्व सदस्यों का सत्कार करती है, सास-ससुर का माता-पिता के समान, ननंदों का बड़ी-छोटी बहनों के समान, जेठ-देवर का बड़े-छोटे भाई के समान, जेठानी-देवरानी का बड़ी-छोटी बहनों के समान, परंतु वह पूजा अपने पति की करती है। जब वे अलग होते हैं तो अपने हिस्से की सर्व वस्तुऐं उठाकर अपने पति वाले मकान में ले जाती है।

अन्य उदाहरण :- जैसे हमारी इच्छा आम खाने की होती है, हमारे लिए आम का फल पूज्य है। उसे प्राप्त करने के लिए धन की आवश्यकता पड़ती है। धन संग्रह करने के लिए मजदूरी/नौकरी/खेती-बाड़ी करनी पड़ती है, तब आम का फल प्राप्त होता है। इसलिए आम पूज्य है तथा अन्य क्रिया साधना है। साध्य वस्तु को प्राप्त करने के लिए साधना करनी पड़ती है, साधना भिन्न है, पूजा अर्थात् भक्ति भिन्न है। स्पष्ट हुआ।

प्रश्न चल रहा है कि क्या ब्रह्म की पूजा करनी चाहिए। उत्तर में कहा है कि नहीं करनी चाहिए। अब श्रीमद् भगवत गीता में प्रमाण दिखाते हैं।

गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 में तो गीता ज्ञान दाता ने बता दिया कि तीनों गुणों (रजगुण श्री ब्रह्मा जी, सतगुण श्री विष्णु जी तथा तमगुण श्री शिव जी) की भक्ति व्यर्थ है। फिर गीता अध्याय 7 के श्लोक 16-17-18 में गीता ज्ञान दाता ब्रह्म ने अपनी भक्ति से होने वाली गति अर्थात् मोक्ष को "अनुत्तम" अर्थात् घटिया बताया है। बताया है कि मेरी भक्ति चार प्रकार के व्यक्ति करते हैं।

1. अर्थार्थी :- धन लाभ के लिए वेदों अनुसार अनुष्ठान करने वाले।

2. आर्त :- संकट निवारण के लिए वेदों अनुसार अनुष्ठान करने वाले।

3. जिज्ञासु :- परमात्मा के विषय में जानने के इच्छुक। (ज्ञान ग्रहण करके स्वयं वक्ता बन जाने वाले)

इन तीनों प्रकार के ब्रह्म पुजारियों को व्यर्थ बताया है।

4. ज्ञानी :- ज्ञानी को पता चलता है कि मनुष्य जन्म बड़ा दुर्लभ है। मनुष्य जीवन प्राप्त करके आत्म-कल्याण कराना चाहिए। उन्हें यह भी ज्ञान हो जाता है कि अन्य देवताओं की पूजा से मोक्ष लाभ होने वाला नहीं है। इसलिए एक परमात्मा की भक्ति अनन्य मन से करने से पूर्ण मोक्ष संभव है। उनको तत्वदर्शी सन्त न मिलने से उन्होंने जैसा भी वेदों को जाना, उसी आधार से ब्रह्म को एक समर्थ प्रभु मानकर यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 15 से ओम् नाम लेकर भक्ति की, परन्तु पूर्ण मोक्ष नहीं हुआ। ओम् (ऊँ) नाम ब्रह्म साधना का है, उससे ब्रह्मलोक प्राप्त होता है जोकि पूर्व में प्रमाणित किया जा चुका है। गीता अध्याय 8 श्लोक 18 में कहा है कि ब्रह्म लोक प्रयन्त सब लोक पुनरावर्ती में हैं अर्थात् ब्रह्म लोक में गए साधक भी पुनः लौटकर संसार में जन्म-मृत्यु के चक्र में गिरते हैं।

काल ब्रह्म की साधना से वह मोक्ष प्राप्त नहीं होता जो गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में बताया है कि "तत्वज्ञान से अज्ञान को काटकर परमेश्वर के उस परम पद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में कभी वापिस नहीं आते।''

❖ गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि ये ज्ञानी आत्मा (जो चौथे नम्बर के ब्रह्म के साधक कहें हैं) हैं तो उदार अर्थात् नेक, परंतु ये तत्वज्ञान के अभाव से मेरी अनुत्तम् गति में ही स्थित रहे। गीता ज्ञान दाता ने अपनी साधना से होने वाली गति को भी अनुत्तम अर्थात् घटिया कहा है, इसलिए ब्रह्म पूजा करना भी उचित नहीं।

कारण :- एक चुणक नाम का ऋषि ज्ञानी आत्मा था। उसने ओम् (ऊँ) नाम का जाप तथा हठयोग हजारों वर्ष किया। जिससे उसमें सिद्धियाँ आ गई। ब्रह्म की साधना करने से जन्म-मृत्यु, स्वर्ग-नरक का चक्र सदा बना रहेगा क्योंकि गीता अध्याय 2 श्लोक 12, गीता अध्याय 4 श्लोक 5, गीता अध्याय 10 श्लोक 2 में गीता ज्ञान दाता ब्रह्म ने कहा है कि अर्जुन! तेरे और मेरे अनेकों जन्म हो चुके हैं, तू नही जानता, मैं जानता हूँ। तू, मैं तथा ये सर्व राजा लोग पहले भी जन्मे थे, आगे भी जन्मेंगे। यह न सोच कि हम सब अब ही जन्मे हैं। मेरी उत्पत्ति को महर्षिजन तथा ये देवता नहीं जानते क्योंकि ये सब मेरे से उत्पन्न हुए हैं।

इससे स्वसिद्ध है कि जब गीता ज्ञान दाता ब्रह्म भी जन्मता-मरता है तो इसके पुजारी अमर कैसे हो सकते हैं? इससे यह सिद्ध हुआ कि ब्रह्म की उपासना से वह मोक्ष नहीं हो सकता जो गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में तथा अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है। इन श्लोकों में गीता ज्ञान दाता ने स्पष्ट निर्देश दिया है कि हे भारत! तू सर्वभाव से उस परमेश्वर परम अक्षर ब्रह्म की शरण में जा। उस परमेश्वर की कृपा से ही तू परमशान्ति को तथा सनातन परमधाम अर्थात् सत्यलोक को प्राप्त होगा। तत्वज्ञान समझकर उसके पश्चात् परमात्मा के उस परम पद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आते। विचार करें कि गीता ज्ञान दाता तो स्वयं जन्मता-मरता है। इसलिए ब्रह्म की पूजा

से होने वाली गति अनुत्तम कही है।

अब चुणक ऋषि का प्रसंग आगे सुनाते हैं :- चुणक ऋषि ने ऊँ (ओम्) नाम का जाप तथा हठ योग किया। वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) में बताई भक्ति से परमात्मा प्राप्ति नहीं होती। इसका प्रमाण गीता अध्याय 11 श्लोक 47-48 में है। गीता ज्ञान दाता ब्रह्म ने बताया है कि हे अर्जुन! मुझ काल ब्रह्म का यह विराट रूप है। मेरे इस रूप के दर्शन तेरे अतिरिक्त पहले किसी को नहीं हुए, मैंने तेरे ऊपर अनुग्रह करके यह रूप दिखाया है। मेरे इस रूप के दर्शन अर्थात् ब्रह्म प्राप्ति न तो वेदों में वर्णित विधि से अर्थात् ऊँ नाम के जाप से, न तप से, न हवन आदि-आदि यज्ञों से होते हैं अर्थात् वेदों में वर्णित विधि से ब्रह्म प्राप्ति नहीं होती। यही कारण रहा कि चुणक जैसे ऋषि भी ब्रह्म को निराकार कहते रहे। चुणक ऋषि में सिद्धियाँ आ गई। जिस कारण से संसार में प्रसिद्ध हो गया। सिद्धि प्राप्त साधक अपनी वर्षों की साधना से की गई चार्ज बैट्री से किसी को श्राप देकर नाश करते हैं, किसी को आशीर्वाद देकर नाश करते हैं। किसी पर सिद्धि से जन्त्र-मन्त्र करके अपनी भक्ति नाश करते हैं तथा संसार में प्रशंसा के पात्र बनकर स्वयं प्रभु बन बैठते हैं।

एक मानधाता चक्रवर्ती राजा था। उसका पूरी पृथ्वी पर राज्य था। उसने अपने राज्य में यह जाँचना चाहा कि क्या पृथ्वी के अन्य राजा जो मेरे पराधीन हैं या उनमें से कोई स्वतन्त्र होना चाहता है? इसलिए राजा ने अपने निजी घोड़े के गले में एक पत्र लिखकर बाँध दिया कि जिस किसी राजा को मानधाता राजा की पराधीनता स्वीकार न हो, वह इस घोड़े को पकड़ ले और युद्ध के लिए तैयार हो जाए, राजा के पास 72 क्षौणी सेना है। उस घोड़े के साथ सैंकड़ों सैनिक भी चले। सारी पृथ्वी पर चक्कर लगाया। किसी राजा ने उस घोड़े को नहीं पकड़ा। इससे स्पष्ट हो गया कि पूरी पृथ्वी के छोटे राजा अपने चक्रवर्ती शासक मानधाता के आधीन हैं। सर्व सैनिक जो घोड़े के साथ थे, खुशी से वापिस आ रहे थे। रास्ते में ऋषि चुणक की कुटिया थी। चुणक ऋषि ने सैनिकों से पूछा जो घोड़ों पर सवार थे कि हे सैनिको! कहाँ गए थे? इस घोड़े का सवार कहाँ गया? सैनिकों ने ऋषि जी को सर्व बात बताई। ऋषि ने कहा क्या किसी ने राजा मानधाता का युद्ध नहीं स्वीकारा? सैनिक बोले कि है किसी की बाजुओं में दम, पिलाया है किसी माता ने दूध जो हमारे राजा के साथ युद्ध कर ले। राजा के पास 72 क्षौणी अर्थात् 72 करोड़ सेना है। जॉड़ तोड़ देंगे यदि किसी ने युद्ध करने की हिम्मत की तो। ऋषि चुणक जो काल ब्रह्म का पुजारी था ने कहा कि हे सैनिको! आपके राजा का युद्ध मैंने स्वीकार कर लिया, यह घोड़ा बाँध दो मेरी कुटिया वाले वृक्ष से। सैनिक बोले कि हे कंगले! तेरे पास दाने तो खाने को नहीं हैं, क्या युद्ध करेगा तू राजा मानधाता के साथ? अपनी भक्ति कर ले, क्यों श्यात् बोल दे रही है तेरी अर्थात् तेरी क्यों सामत आई है? ऋषि ने कहा, जो होगा सो देखा जाएगा। जाओ, कह दो तुम्हारे राजा को कि तुम्हारा युद्ध चुणक ऋषि ने स्वीकार कर लिया है। राजा को पता चला तो सोचा कि आज एक कंगाल सिरफिरे ऋषि की हिम्मत हुई है, कल कोई अन्य

हिम्मत करेगा। बुराई को प्रारम्भ में ही समाप्त कर देना चाहिए। जनता को भयभीत करने के लिए एक व्यक्ति को मारने के लिए राजा ने 72 करोड़ सेना की चार टुकड़ियाँ बनाई। एक टुकड़ी 18 करोड़ सैनिक पहले भेजे ऋषि से युद्ध करने के लिए। काल ब्रह्म के पुजारी ऋषि ने सिद्धि शक्ति से चार पुतलियाँ बनाई अर्थात् चार परमाणु बम्ब तैयार किए। एक पुतली छोड़ी, उसने 18 करोड़ सेना को काट डाला। राजा ने दूसरी टुकड़ी भेजी। ऋषि ने दूसरी पुतली छोड़ी। इस प्रकार राजा मानधाता की 72 क्षौणी सेना का नाश काल ब्रह्म के पुजारी चुणक ने कर दिया।

विचार करें :- ऋषि-महर्षियों को राजाओं के बीच में टाँग नहीं अड़ानी चाहिए। कारण यह है कि ऋषिजनों ने हजारों वर्ष ॐ नाम का जाप किया परमात्मा प्राप्ति के लिए। परमात्मा मिला नहीं क्योंकि गीता अध्याय 11 श्लोक 47-48 में लिखा है कि वेदों में (चारों वेदों ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद) वर्णित भक्ति विधि से ब्रह्म प्राप्ति नहीं है। इसलिए इससे ऋषियों में सिद्धियाँ प्रकट हो जाती हैं। अज्ञानता के कारण उसी भूल-भूलइया को ये भक्ति की उपलब्धि मान बैठे। जिस कारण से भक्ति करके भी उस पद को नहीं प्राप्त कर सके, जहाँ जाने के पश्चात् पुनः जन्म नहीं होता क्योंकि इनको तत्वदर्शी सन्त नहीं मिले। सूक्ष्म वेद में कहा कि :-

कबीर, गुरू बिन काहू न पाया ज्ञाना, ज्यों थोथा भुस छड़े मूढ़ किसाना।
गुरू बिन वेद पढ़े जो प्राणी, समझे न सार रहे अज्ञानी।।
गरीब, बहतर क्षौणी खा गया, चुणक ऋषिश्वर एक।
देह धारें जौरा फिरें, सबही काल के भेष।।

भावार्थ :- तत्वदर्शी सन्त गुरू न मिलने के कारण जो साधना साधक करते हैं, वह शास्त्र विधि त्यागकर मनमाना आचरण होता है जिससे कोई लाभ साधक को नहीं होता। गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में प्रमाण है कि हे भारत! जो साधक शास्त्रविधि को त्यागकर मनमाना आचरण करता है, उसको न तो सुख होता है, न सिद्धि प्राप्त होती है और न ही उसकी गति अर्थात् मोक्ष होता है। इससे तेरे लिए शास्त्र ही प्रमाण हैं कि कौन-सी साधना करनी चाहिए और कौन-सी नहीं करनी चाहिए।

गुरू बिना अर्थात् तत्वदर्शी सन्त के बिना चाहे वेदों को पढ़ते रहो, चाहे उनको कण्ठस्थ भी करलो जैसे पहले के ब्राह्मण वेदों के मन्त्रों को याद कर लेते थे। जो चारों वेदों के मन्त्र याद कर लेता था, वह चतुर्वेदी कहलाता था। जो तीन वेदों के मन्त्रों को याद कर लेता था, वह त्रिवेदी कहलाता था। परंतु उनको वेदों के गूढ़ रहस्यों का ज्ञान न होने के कारण वे ऋषिजन वेदों को पढ़कर-घोटकर भी अज्ञानी रहे। सूक्ष्मवेद में कहा है कि :-

"पीठ मनुखा दाख लदी है, ऊँट खात बबूल।"

भावार्थ है कि पहले के समय में रेगिस्तान में ऊँटों पर मनुका दाख लादकर ले जाते थे। ऊँट पीठ पर तो इतनी स्वादिष्ट मनुका दाख लादे हुए होता था और

स्वयं बबूल (कीकर) पेड़ के काँटों में मुख मार-मारकर बबूल के पत्ते खा रहा होता था। बिना ज्ञान के सर्व ऋषि जी चारों वेदों रूपी मनुका दाख को लादे फिरते थे और पूजा करते थे काल ब्रह्म रूपी बबूल की जिससे न सनातन परम धाम और न ही परम शांति प्राप्त होती थी। फिर सूक्ष्मवेद में कहा है कि :-

बनजारे के बैल ज्यों, फिरा देश—विदेश।
खण्ड छोड़ भुष खात है, बिन सतगुरू उपदेश।।

भावार्थ है कि पहले के समय में बैलों के ऊपर गधे की तरह थैला (बोरा) रखकर उसमें खाण्ड भरकर बनजारे अर्थात् व्यापारी लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाते-ले जाते थे। बैल की पीठ पर बोरे में खाण्ड है, स्वयं भुष खाया करता। इसी प्रकार गुरू द्वारा तत्वज्ञान न मिलने के कारण ऋषिजन वेदों रूपी खाण्ड (चीनी) को तो कण्ठस्थ करके रखते थे। उनको ठीक से न समझकर साधना वेद विरूद्ध करते थे।

उदाहरण के लिए :- श्री देवी पुराण (सचित्र मोटा टाईप केवल हिन्दी गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित) के 5वें स्कंद पृष्ठ 414 पर लिखा है :- वेद व्यास जी ने कहा कि सत्ययुग के ब्राह्मण वेद के पूर्ण विद्वान थे। वे देवी अर्थात् श्री दुर्गा जी की पूजा करते थे। प्रत्येक गाँव में श्री देवी का मंदिर बनवाने की उनकी प्रबल इच्छा थी।

पाठकजन विचार करें :- चारों वेदों में तथा इन्हीं वेदों के सारांश श्रीमद् भगवत गीता में कहीं पर भी देवी की पूजा करने का निर्देश नहीं है तो सत्ययुग के ब्राह्मण क्या खाक विद्वान थे वेदों के। इसी श्री देवी पुराण के 7वें स्कंद में पृष्ठ 562, 563 पर श्री देवी जी ने राजा हिमालय से कहा था कि तू मेरी पूजा भी त्याग दे। यदि ब्रह्म प्राप्ति चाहता है तो और सब बातों को त्यागकर केवल ओम् (ॐ) का जाप कर। यह ब्रह्म का मंत्र है। इससे ब्रह्म को प्राप्त हो जाएगा। वह ब्रह्म ब्रह्मलोक रूपी दिव्य आकाश में रहता है। पाठकजन आसानी से समझेंगे कि जब सत्ययुग के ब्राह्मणों का यह ज्ञान तथा साधना थी तो वर्तमान के ब्राह्मणों को क्या ज्ञान होगा? इसी श्री देवी पुराण के 5वें स्कन्द में पृष्ठ 414 पर यह भी लिखा है कि सत्ययुग में जो राक्षस समझे जाते थे, वे कलयुग में ब्राह्मण माने जाते हैं। ब्राह्मण कोई जाति विशेष नहीं है। जो परमात्मा अर्थात् ब्रह्म के लिए प्रयत्नशील है, वही ब्राह्मण कहलाता है चाहे किसी भी जाति का हो। वर्तमान में परंपरागत ब्राह्मण कम हैं। संत रूप में ब्रह्मज्ञान देने वाले अधिक हैं जो ब्राह्मण अर्थात् मार्गदर्शक गुरू कहलाते हैं और तत्वज्ञानहीन हैं। इसलिए कहा है कि तत्वदर्शी गुरू के बिना किसी को वेदों के गूढ़ रहस्यों का ज्ञान नहीं हुआ, जिस कारण से वेदों को पढ़ते थे, परंतु साधना वेद विरूद्ध करते थे। वेदों व गीता में तीनों देवताओं (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) की पूजा करना निषेध है। सर्व हिन्दू समाज ज्ञानहीन संतों द्वारा इन्हीं तीनों देवताओं पर केन्द्रित कर रखा है, श्री देवी दुर्गा तथा विष्णु जी, शिव जी की भक्ति कर तथा करा रहे हैं। पहले से ही यह लोकवेद (दंत कथा)

का ज्ञान चला आ रहा है जो आज मेरे सामने दीवार बनकर खड़ी है। मैं शास्त्रोक्त ज्ञान बताता हूँ, प्रोजैक्टर पर दिखाता हूँ। परंतु पहले के अज्ञान को सत्य मानकर सत्य को आँखों देखकर भी विश्वास नहीं कर रहे। विरोध करते हैं, जेल में भिजवा देते हैं। सूक्ष्मवेद में कहा है कि :-

गरीब, वेद पढ़ैं पर भेद न जानें, बाँचैं पुराण अठारह। पत्थर की पूजा करें, बिसरे सिरजनहारा।।

भावार्थ है कि वेद तथा अठारह पुराणों को पढ़ते हैं और मूर्ति की पूजा करते हैं। वेदोक्त सर्व के सृजनहार परम अक्षर ब्रह्म को भूल गए हैं। अन्य प्रभुओं की पूजा करके उस परम शक्ति तथा सनातन परम धाम अर्थात् परमेश्वर के उस परम पद से वंचित रह जाते हैं जो गीता अध्याय 18 श्लोक 62 तथा अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है। सूक्ष्मवेद में लिखा है कि :-

गुरूवां गाम बिगाड़े संतो, गुरूवां गाम बिगाड़े।
ऐसे कर्म जीव के ला दिए, फिर झड़ैं नहीं झाड़े।।

भावार्थ है कि वेद ज्ञानहीन तत्वज्ञान से अपरीचित गुरूओं ने गाँव के गाँव में शास्त्रविरूद्ध ज्ञान व भक्ति का अज्ञान सुनाकर उनको इतना भ्रमित कर दिया कि वे अब समझाए से भी शास्त्र विरूद्ध साधना को त्यागने के लिए तैयार नहीं होते।

गीता अध्याय 16 श्लोक 23 में लिखा है कि शास्त्र विधि त्यागकर मनमाना आचरण करने से न तो सिद्धि प्राप्त होती है, न सुख प्राप्त होता है और न गति होती है अर्थात् व्यर्थ साधना है।

दूसरी ओर आप जी ने चुणक ऋषि की कथा में पढ़ा कि ऋषि चुणक जी को सिद्धियाँ प्राप्त हो गई। पाठकों को यह समझना है कि सिद्धि भक्ति का बाई प्रोडैक्ट है, जैसे जौं का भी भूस (तूड़ा) होता है जिसमें तुस बहुत होते हैं। पशु खाता है तो मुख में जख्म कर देते हैं। यह सिद्धि प्राप्त होती है काल ब्रह्म की भक्ति से जो चुणक ऋषि जी को प्राप्त हुई।

जो शास्त्र विधि अनुसार भक्ति करने से सिद्धि प्राप्त होती है, वह गेहूँ का भुस (तूड़ा) समझें जो पशुओं के लिए उपयोगी तथा खाने में सुगम होता है। भावार्थ है कि शास्त्रविधि अनुसार साधना न करने से जो सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं, वे साधक को नष्ट करती हैं क्योंकि अज्ञानतावश ऋषिजन उनका प्रयोग करके किसी की हानि कर देते हैं, किसी को आशीर्वाद देकर अपनी भक्ति की शक्ति जो ॐ नाम के जाप से होती है, उसको समाप्त करके फिर से खाली हो जाते हैं।

जैसे चुणक ऋषि जी ने मानधाता चक्रवर्ती राजा की 72 करोड़ सेना का नाश कर दिया, अपनी भक्ति की सिद्धि भी खो दी। सूक्ष्मवेद में कहा है कि :-

गरीब, बहतर क्षौणी क्षय करी, चुणक ऋषिश्वर एक।
देह धारें जौरा (मृत्यु) फिरैं, सब ही काल के भेष।।

भावार्थ :- ऋषियों में सर्वश्रेष्ठ ऋषि चुणक जी ने 72 करोड़ सेना का नाश कर दिया। ये दिखाई तो देते हैं महात्मा, लेकिन जब इनसे पाला पड़ता है तो ये निकलते हैं सर्प जैसे, जरा-सी बात पर श्राप दे देना, किसी से बेमतलब पंगा ले लेना इनके लिए आम बात होती है।

''ऋषि दुर्वासा की कारगुजारी''

❖ एक दुर्वासा नाम के काल ब्रह्म के पुजारी (ब्रह्म साधक) थे। वे चले जा रहे थे। रास्ते में एक अप्सरा (स्वर्ग की स्त्री) सुन्दर मोतियों की माला पहने हुए थी। ऋषि दुर्वासा ने कहा कि यह माला मुझे दे। देवपरी को पता था कि ये ऋषि तो सर्प जैसे हैं, यदि मना कर दिया तो श्राप दे देते हैं। उस अप्सरा ने तुरन्त माला गले से निकाली और ऋषि को आदर के साथ थमा दी। दुर्वासा ऋषि ने वह माला सिर पर बालों के जूड़े में डाल ली। चला जा रहा था। आगे से स्वर्ग का राजा इन्द्र अपने एरावत हाथी पर बैठा आ रहा था। उसके आगे-आगे अप्सराऐं तथा गंद्धर्वजन गाते-बजाते चल रहे थे, और भी करोड़ों देवी-देवता साथ-साथ सम्मान में चल रहे थे। दुर्वासा ऋषि ने माला अपने सिर से उठाकर इन्द्र की ओर फैंक दी। इन्द्र ने वह माला हाथी की गर्दन पर रख दी। हाथी ने वह माला अपने सूंड से उठाकर जमीन पर फैंक दी। जैसे इन्द्र को कोई भक्त या देव कोई फूलमाला भेंट करता था तो इन्द्र उसको बाद में हाथी की गर्दन पर रख देता था जब इन्द्र हाथी पर बैठा हो। हाथी उसे उठाकर नीचे फैंक देता था। हाथी ने उसी रूटीन में वह माला नीचे फैंक दी थी।

इस बात से ऋषि दुर्वासा कुपित हो गये और बोले कि हे इन्द्र! तेरे को राज्य का अभिमान है। मेरे द्वारा दी गई माला का तूने अनादर किया है। मैं श्राप देता हूँ कि तेरा सर्व राज्य नष्ट हो जाए। देवराज इन्द्र एकदम काँपने लगा और बोला हे विप्र! मैंने आपकी माला को आदर से ग्रहण करके हाथी के ऊपर रखा था। हाथी ने अपनी औपचारिकतावश नीचे डाल दी, मुझे क्षमा करें। बार-बार करबद्ध होकर हाथी से नीचे उतरकर दण्डवत् प्रणाम करके भी क्षमा याचना इन्द्र ने की, परंतु दुर्वासा ऋषि नहीं माने और कहा कि जो मैंने कह दिया वह वापिस नहीं हो सकता। कुछ ही समय में इन्द्र का सर्वनाश हो गया, स्वर्ग उजड़ गया।

❖ एक बार ऋषि दुर्वासा जी द्वारका नगरी के पास जंगल में कुछ समय के लिए रूके। द्वारकावासियों को पता चला कि दुर्वासा जी अपनी नगरी के पास आए हैं। ये त्रिकालदर्शी महात्मा हैं, सिद्धियुक्त ऋषि हैं। द्वारकावासी श्री कृष्ण से अधिक शाक्तिशाली किसी को नहीं मानते थे। श्री कृष्ण के पुत्र श्री प्रद्यूमन सहित कई यादवों ने योजना बनाई कि सुना है दुर्वासा जी त्रिकालदर्शी हैं, मन की बात भी बता देते हैं, अन्तर्यामी हैं, उनकी परीक्षा लेते हैं। यह विचार करके प्रद्यूमन को गर्भवती स्त्री का स्वांग बनाकर दस-बारह व्यक्ति साथ चले। एक व्यक्ति को उसका पति बना लिया। दुर्वासा जी के पास जाकर कहा कि हे ऋषि जी! इस स्त्री पर परमात्मा की कृपा बहुत दिनों पश्चात् हुई है, इसको गर्भ रहा है, यह इसका पति है। ये दोनों उतावले हैं कि हमें पता चले कि गर्भ में लड़का है या कन्या। आप तो अन्तर्यामी हैं, कृप्या बताऐं? उन्होंने प्रद्यूमन के पेट पर एक छोटी कढ़ाई बाँध रखी थी, उसके ऊपर रूई का लोगड़ तथा पुराने वस्त्र बाँधकर गर्भ बना रखा था, ऊपर स्त्री वस्त्र पहना रखे थे। ऋषि दुर्वासा जी ने दिव्य दृष्टि से देखा और जाना कि

ये मेरा मजाक करने आए हैं। दुर्वासा जी ने कहा कि इस गर्भ से यादव कुल का नाश होगा, इतना कहकर क्रोधित हो गए। सर्व व्यक्ति वहाँ से खिसक गए। नगरी में यह बात आग की तरह फैल गई कि ऋषि दुर्वासा जी ने श्राप दे दिया है कि यादवों का नाश होगा। उनको विश्वास था कि हमारे साथ सर्व शक्तिमान भगवान अखिल ब्रह्माण्ड के नायक श्री कृष्ण हैं। दुर्वासा के श्राप का प्रभाव हम पर नहीं हो पाएगा। फिर भी कुछ बुद्धिमान यादव इकट्ठे होकर श्री कृष्ण जी के पास गए तथा ऋषि दुर्वासा से किया बच्चों का मजाक तथा ऋषि दुर्वासा द्वारा दिये श्राप का वृत्तांत बताया। सर्व वार्ता सुनकर श्री कृष्ण जी ने कुछ देर सोचकर कहा कि उन बच्चों को साथ लेकर दुर्वासा जी के पास जाओ और क्षमा याचना करो। दुर्वासा के पास गए, क्षमा याचना की, परंतु दुर्वासा ने कहा कि जो मैंने बोल दिया, वह वापिस नहीं हो सकता। सर्व व्यक्ति फिर से श्री कृष्ण जी के पास गये तथा सर्व बात बताई। द्वारका में भोजन भी नहीं बना। सर्व नगरी चिन्ता में डूब गई। श्री कृष्ण जी ने कहा कि चिन्ता किस बात की। जो वस्तु गर्भ रूप में प्रयोग की थीं, उन्ही से तो हमारा विनाश होना बताया है। ऐसा करो, कपड़ों तथा रूई को जलाकर तथा लोहे की कढ़ाई को पत्थर पर घिसाकर प्रभास क्षेत्र (यमुना नदी के किनारे एक स्थान का नाम है) में यमुना नदी में डाल दो। वहीं बैठकर घिसाओ, वहीं चूरा दरिया में डाल दो, वहीं पर रॉख पानी में डाल दो। न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी। जब गर्भ की वस्तुऐं ही नहीं रहेंगी तो हमारा नाश कैसे होगा? यह बात द्वारिकावासियों को अच्छी लगी और अपने को संकट मुक्त माना। श्री कृष्ण जी के आदेशानुसार सब किया गया। कढ़ाई का एक कड़ा पूरी तरह नहीं घिस पाया। उसको वैसे ही यमुना नदी में फैंक दिया। वह एक मछली ने चमकीला खाद्य पदार्थ जानकर खा लिया। उस मछली को बालीया नामक भील ने पकड़ लिया। जब मछली को काटा तो उससे निकली धातु की जाँच करने के पश्चात् उसको अपने तीर को आगे के हिस्से में विषयुक्त करवाकर लगवा लिया, उसे सुरक्षित रख लिया। जो कढ़ाई का लोहे का चूरा पानी में डाला था, वह लम्बे सरकण्डे जैसे घास के रूप में यमुना नदी के किनारे-किनारे पर उग गया। कुछ समय उपरांत द्वारिका नगरी में उत्पात मचने लगा। छोटी-सी बात पर एक-दूसरे का कत्ल करने लगे। आपस में वैर-विरोध बढ़ गया। नगर के लोगों की यह दशा देखकर नगरी के गणमान्य व्यक्ति भगवान श्री कृष्ण जी के पास गए और जो कुछ भी नगरी में हो रहा था, बताया और कारण तथा समाधान श्री कृष्ण जी से जानने की इच्छा व्यक्त की क्योंकि श्री कृष्ण जी यादव तथा पाण्डवों के आध्यात्मिक गुरू थे। संकट का निवारण गुरूदेव से ही कराया जाता है। श्री कृष्ण जी ने कारण बताया कि दुर्वासा ऋषि का श्राप फल रहा है। समाधान है कि सर्व नर (Male) यादव चाहे आज का जन्मा भी लड़का क्यों न हो, सब प्रभास क्षेत्र में जहाँ पर उस कढ़ाई का चूर्ण डाला था, जाकर यमुना में स्नान करो, तुम श्राप मुक्त हो जाओगे। सर्व द्वारिकावासियों ने श्री कृष्ण जी के आदेश का पालन किया। सर्व नर यादव प्रभास क्षेत्र में श्राप

मुक्त होने के उद्देश्य से स्नान करने के लिए चले गए। ऋषि दुर्वासा के श्राप के कारण सर्व यादव समूह बनाकर इकट्ठे हो गए। पहले स्नान किया कि श्राप मुक्त होने के पश्चात् हो सकता है कि आपसी मन-मुटाव दूर हो जाए। परंतु ऐसा कुछ नहीं हुआ। पहले सबने स्नान किया, फिर आपस में गाली-गलोच शुरू हुआ। फिर उस घास को उखाड़कर एक-दूसरे को मारने लगे। जो घास (सरकण्डे) लोहे की कढ़ाई के चूर्ण से उगा था, वह तलवार जैसा कार्य करने लगा। सरकण्डे को मारते ही सिर धड़ से अलग होकर गिरने लगा। इस प्रकार सर्व यादव आपस में लड़कर मृत्यु को प्राप्त हो गए। कुछ दो सौ - चार सौ शेष रहे थे। उसी समय श्री कृष्ण जी भी वहीं पहुँच गए। उन्होंने भी उस घास को उखाड़ा। उसके लोहे के मूसल बन गए। शेष बचे अपने वंशजों को स्वयं श्री कृष्ण जी ने मौत के घाट उतारा। इसके पश्चात् श्री कृष्ण जी एक वृक्ष के नीचे विश्राम करने लगे। इतने में देवयोग से वह बालीया नामक भील जिसने उस लोहे की कढ़ाई के कड़े का विषाक्त तीर (Arreew) बनवाया था, उसी तीर को लेकर शिकार की खोज में उस स्थान पर आ गया जहाँ पर श्री कृष्ण जी विश्राम कर रहे थे। श्री कृष्ण जी के दायें पैर के तलवे में पद्म बना था, उसमें सौ वॉट के बल्ब जैसी चमक थी। वृक्ष की झूर्मुट नीचे तक लटकी थी। उनके बीच से पद्म की चमक अस्पष्ट दिख रही थी। बालीया भील ने सोचा कि यह हिरण की आँख दिखाई दे रही है, इसलिए तीर चला दिया हिरण को मारने के उद्देश्य से। जब तीर श्री कृष्ण जी के पैर में लगा तो श्री कृष्ण जी ने कहा मर गया रे, मर गया। बालीया भील को आभास हुआ कि तीर किसी व्यक्ति को लग गया। दौड़कर गया तो देखा द्वारिकाधीश मारे दर्द के तड़फ रहे थे। बालीया ने कहा कि हे महाराज! मुझसे धोखे से तीर चल गया। आपके पैर की चमक को मैंने हिरण की आँख जानकर तीर मार दिया, मुझसे गलती हो गई, क्षमा करो महाराज। श्री कृष्ण जी ने कहा कि तेरे से कोई गलती नहीं हुई है। यह तेरा और मेरा पिछले जन्म का लेन-देन है, वह मैंने चुका दिया है। तू त्रेतायुग में सुग्रीव का भाई बाली था, मैं रामचन्द्र पुत्र दशरथ था। मैंने भी तेरे को वृक्ष की औट लेकर धोखे से मारा था। वह अदला-बदला (Tit for tat) पूरा किया है।

इस प्रकार दुर्वासा ऋषि के श्राप से सर्व यादव कुल का नाश हुआ जो वर्तमान में यादव हैं। ये वो हैं जो उस समय माताओं के गर्भ में थे, बाद में उत्पन्न हुए थे। सूक्ष्मवेद में लिखा है :-

गरीब, दुर्वासा कोपे तहाँ, समझ न आई नीच।
छप्पन करोड़ यादव कटे, मची रूधिर की कीच।।

सरलार्थ :- दुर्वासा ने बच्चों के मजाक को इतनी गंभीरता से लिया कि उनके कुल का नाश करने का श्राप दे दिया। उस नीच दुर्वासा ने यह भी नहीं सोचा कि क्या अनर्थ हो जाएगा। बात कुछ भी नहीं थी, दुर्वासा नीच ऋषि ने इतना जुल्म कर दिया कि छप्पन करोड़ यादव कटकर मर गए और रक्त के बहने से कीचड़ बन गया।

इसी प्रकार चुणक ऋषि ने बेमतलब पंगा लेकर मानधाता राजा की 72 करोड़ सेना का नाश कर दिया।

❖ एक कपिल नाम के ऋषि थे जिनको भगवान विष्णु के 24 अवतारों में से एक अवतार भी माना जाता है, वे तपस्या कर रहे थे।

एक सगड़ राजा था। उसके 60 हजार पुत्र थे। किसी ऋषि ने बताया कि यदि एक तालाब, एक कुआँ, एक बगीचा बना दिया जाए तो एक अश्वमेघ यज्ञ जितना फल मिलता है। राजा सगड़ के लड़कों ने यह कार्य शुरू कर दिया। समझदार व्यक्तियों ने उनसे कहा कि आप ऐसे जगह-जगह तालाब, कुएँ, बगीचे बनाओगे तो पृथ्वी पर अन्न उत्पन्न करने के लिए स्थान ही नहीं रहेगा। किसी राजा ने विरोध किया तो उससे लड़ाई कर ली। उन राजा सगड़ के लड़कों ने एक घोड़ा अपने साथ लिया। उसके गले में पत्र लिखकर बाँध दिया कि यदि कोई हमारे कार्य में बाधा करेगा, वह इस घोड़े को पकड़ ले और युद्ध के लिए तैयार हो जाए। उन सिरफिरों से कौन टक्कर ले? पृथ्वी देवी भगवान विष्णु जी के पास गई। एक गाय का रूप धारण करके कहा कि हे भगवान! पृथ्वी पर एक सगड़ राजा है। उसके 60 हजार पुत्र हैं। उनको ऐसी सिरड़ उठी है कि मेरे को खोद डाला। वहाँ मनुष्यों के खाने के लिए अन्न भी उत्पन्न नहीं हो सकता। भगवान विष्णु ने कहा तुम जाओ, वे अब कुछ नहीं करेंगे। भगवान विष्णु ने देवराज इन्द्र को बुलाया और समझाया कि राजा सघड़ के 60 हजार लड़के यज्ञ कर रहे हैं। यदि उनकी 100 यज्ञ पूरी हो गई तो तुम्हारी इन्द्र गद्दी उनको देनी पड़ेगी, समय रहते कुछ बनता है तो कर ले। इन्द्र ने हलकारे अर्थात् अपने नौकर भेजे, उनको सब समझा दिया। रात्रि के समय राजा सघड़ के पुत्र सोए पड़े थे। घोड़ा वृक्ष से बाँध रखा था। उन देवराज के फरिश्तों ने घोड़ा खोलकर कपिल तपस्वी की जाँघ पर बाँध दिया। कपिल ऋषि वर्षों से तपस्यारत था। जिस कारण से उसका शरीर अस्थिपिंजर जैसा हो गया था। आसन पदम लगाए हुए था, टाँगें पतली-पतली थी। जैसे वृक्ष की जड़ों की मिट्टी वर्षा के पानी से बह जाती हैं और जड़ों के बीच में 6-7 इंच का रास्ता हो जाता है, ऋषि कपिल जी की टाँगें ऐसी थीं। इन्द्र के हलकारों ने घोड़े को टाँगों के बीच के रास्ते में से जाँघ के पास रस्से से बाँध दिया।

राजा के लड़कों ने सुबह उठते ही घोड़ा देखा। उसकी खोज में युद्ध करने की तैयारी करके 60 हजार का लंगार चल पड़ा। घोड़े के पद्चिन्हों के साथ-साथ कपिल मुनि के आश्रम में पहुँच गए। घोड़े को बँधा देखकर सगड़ राजा के पुत्रों ने ऋषि की ही कोख में (दोनों बाजुओं के नीचे काखों में हरियाणवी भाषा में हींख कहते हैं) भाले चुभो दिए। कपिल ऋषि की पलकें इतनी लम्बी बढ़ चुकी थी कि जमीन पर जा टिकी थी। ऋषि को पीड़ा हुई तो क्रोधवश पलकों को हाथों से उठाया, आँखों से अग्नि बाण छूटे। 60 हजार सगड़ के पुत्रों की सेना की पूली-सी बिछ गई अर्थात् 60 हजार सगड़ के बेटे मरकर ढ़ेर हो गए। सूक्ष्मवेद में कहा है कि :- 60 हजार सगड़ के होते, कपिल मुनिश्वर खाए।

जै परमेश्वर की करें भक्ति, तो अजर–अमर हो जाए।।
72 क्षौणी खा गया, चुणक ऋषिश्वर एक।
देह धारें जौरा फिरैं, सभी काल के भेष।।
दुर्वासा कोपे तहाँ, समझ न आई नीच।
56 करोड़ यादव कटे, मची रूधिर की कीच।।

भावार्थ :- कपिल मुनि जी, चुणक मुनि जी तथा दुर्वासा मुनि जी संसार में कितने प्रसिद्ध हैं, ये सब काल ब्रह्म की भक्ति करने वाले भेषधारी ऋषि हैं। ये चलती-फिरती मौत थी। चलती-फिरती मनुष्य रूप में घाल हैं। गलती से भोले प्राणी इनको महान आत्मा मानते हैं।

ये सब ज्ञानी आत्मा थे, ये सब उदार हृदय के थे। इन्होंने परमात्मा प्राप्ति के लिए अपना कल्याण कराने के लिए तन-मन-धन अर्पित कर दिया, परंतु तत्वदर्शी सन्त न मिलने के कारण इन्होंने काल ब्रह्म को एक समर्थ प्रभु मानकर गलती की और उसी की साधना ओम् (ॐ) नाम के जाप के साथ तथा अधिक हठ योग समाधि के द्वारा की, जिससे परमात्मा प्राप्ति तो है ही नहीं, उल्टा हानि होती है क्योंकि यह साधना शास्त्र विरूद्ध है। गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में कहा है कि शास्त्रविधि को त्यागकर जो मनमाना आचरण करते हैं, उनकी साधना व्यर्थ है। वे उदार आत्माऐं इसी कारण काल ब्रह्म की अनुत्तम गति में स्थित रहें।

गीता अध्याय 17 श्लोक 5, 6 में कहा है कि :-

❖ जो मनुष्य शास्त्र विधि रहित केवल मन कल्पित घोर तप को तपते हैं और दम्भ अहंकार से युक्त, कामना आसक्ति अभिमान से युक्त हैं। (गीता अध्याय 17 श्लोक 5)

❖ शरीर में स्थित सर्व कमलों में देव शक्तियों तथा पूर्ण परमात्मा तथा मुझे भी कृश करने वाले अर्थात् कष्ट देने वाले अज्ञानियों को तू असुर स्वभाव के जान। (गीता अध्याय 17 श्लोक 6)

❖ यही प्रमाण गीता अध्याय 16 श्लोक 17 से 20 में है।

❖ वे अपने आपको श्रेष्ठ मानने वाले घमण्डी पुरूष धन और मान के मद से युक्त होकर केवल नाममात्र यज्ञों द्वारा पाखण्ड से शास्त्रविधि रहित पूजन करते हैं। (गीता अध्याय 16 श्लोक 17)

❖ अहंकार, बल, घमण्ड, कामना, क्रोध आदि के वश और दूसरों की निन्दा करने वाले पुरूष अपने और दूसरों के शरीर में स्थित मुझसे द्वेष करने वाले होते हैं। (गीता अध्याय 16 श्लोक 18)

❖ उन द्वेष करने वाले पापाचीर क्रूरकर्मी "जो वचन से करोंड़ों व्यक्तियों की हत्या करने वाले" नराधमों अर्थात् नीच मनुष्यों को मैं संसार में बार-बार आसुरी अर्थात् राक्षसी योनियों में ही डालता हूँ। (गीता अध्याय 19 श्लोक 19) सूक्ष्मवेद में भी इन्हें नीच कहा है :-

दुर्वासा कोपे तहाँ, समझ न आई नीच।

56 करोड़ यादव कटे, मची रूधीर की कीच।।

❖ हे अर्जुन! मूर्ख मुझको न प्राप्त होकर ही जन्म-जन्म में आसुरी योनियों को प्राप्त होते हैं, उससे भी अति नीच गति को प्राप्त होते हैं अर्थात् घोर नरक में गिरते हैं। (गीता अध्याय 17 श्लोक 20)

उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध हुआ कि गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में गीता ज्ञान दाता ने अपनी साधना से होने वाली गति को भी इसलिए अनुत्तम अर्थात् घटिया बताया है। कहा है कि :-

❖ गीता अध्याय 7 श्लोक 18 = जो चौथी प्रकार के ज्ञानी साधक हैं, वे सभी हैं तो उदार क्योंकि परमात्मा प्राप्ति के लिए अपने शरीर के नष्ट होने की भी प्रवाह नहीं की और हजारों वर्ष भूखे-प्यासे साधनारत रहे, परंतु तत्वदर्शी सन्त न मिलने के कारण वे सभी मेरी अनुत्तम अर्थात् घटिया गति अर्थात् ब्रह्म साधना से होने वाले मोक्ष जो ऊपर ऋषियों को हुआ, उसमें स्थित रहे अर्थात् जन्म-मरण, चौरासी लाख योनियों के चक्कर वाली गति में रह गए। (गीता अध्याय 7 श्लोक 18)

❖ निष्कर्ष :- चुणक ऋषि, दुर्वासा ऋषि तथा कपिल ऋषि ने जो ओम् (ॐ) नाम जाप किया, उसकी भक्ति के फलस्वरूप ये कुछ समय ब्रह्म लोक में जाऐंगे। वहाँ भक्ति समाप्त करके फिर पृथ्वी पर राजा बनेंगे क्योंकि सूक्ष्मवेद में लिखा है :-

तप से राज, राज मध मानम्, जन्म तीसरे शुकर स्वानम्।

फिर कुत्ता, गधा बनेगी, फिर नरक जाएगी। जब कुत्ते बनेंगे, तब इनके सिर में कीड़े पड़ेंगे। जो व्यक्ति इनके श्राप से मरे थे, उनका पाप इनको भोगना पड़ेगा, कीड़े चुन-चुनकर खाऐंगे। इसलिए गीता में भी ऐसे साधकों के विषय में जो बताया है, वो आप जी ने ऊपर पढ़ लिया।

❖ उपरोक्त कथाओं से सारांश :-

1. ब्रह्म साधना अनुत्तम (घटिया) है।

2. तीन ताप को श्री कृष्ण जी भी समाप्त नहीं कर सके। श्राप देना तीन ताप (दैविक ताप) में आता है। दुर्वासा के श्राप के शिकार स्वयं श्री कृष्ण सहित सर्व यादव भी हो गए।

3. श्री कृष्ण जी ने शॉपमुक्त होने के लिए यमुना में स्नान करने के लिए कहा, यह समाधान बताया था। उससे श्राप नाश तो हुआ नहीं, यादवों का नाश अवश्य हो गया। विचार करें :- जो अन्य सन्त या ब्राह्मण जो ऐसे स्नान या तीर्थ करने से संकट मुक्त करने की राय देते हैं, वे कितनी कारगर हैं? अर्थात् व्यर्थ हैं क्योंकि जब भगवान त्रिलोकी नाथ द्वारा बताए समाधान यमुना स्नान से कुछ लाभ नहीं हुआ तो अन्य टुटपुँजियों, ब्राह्मणों व गुरूओं द्वारा बताए स्नान आदि समाधान से कुछ होने वाला नहीं है।

4. पहले श्री कृष्ण जी ने दुर्वासा के श्राप से बचाव का तरीका बताया था।

उस कढ़ाई को घिसाकर चूर्ण बनाकर प्रभास क्षेत्र में यमुना नदी में डाल दो। न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी, बाँस भी रह गया, 56 करोड़ यादवों की बाँसुरी भी बज गई।

सज्जनो! वर्तमान में बुद्धिमान मानव है, शिक्षित है। मेरे द्वारा (सन्त रामपाल दास द्वारा) बताए ज्ञान को शास्त्रों से मिलाओ, फिर भक्ति करके देखो, क्या कमाल होता है।

❖ प्रसंग आगे चलाते हैं।

1. तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव जी) की भक्ति करना व्यर्थ सिद्ध हुआ।

2. गीता ज्ञान दाता ब्रह्म की भक्ति स्वयं गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में अनुत्तम बताई है। उसने गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में उस परमेश्वर अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म की शरण में जाने को कहा है। यह भी कहा है कि उस परमेश्वर की कृपा से ही तू परम शान्ति तथा सनातन परम धाम को प्राप्त होगा।

3. गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 में संसार रूपी वृक्ष का वर्णन है तथा तत्वदर्शी सन्त की पहचान भी बताई है। संसार रूपी वृक्ष के सब हिस्से, जड़ें (मूल) कौन परमेश्वर है? तना कौन प्रभु है, डार कौन प्रभु है, शाखाऐं कौन-कौन देवता हैं? पात रूप संसार बताया है।

इसी अध्याय 15 श्लोक 16 में स्पष्ट किया है कि :-

1. क्षर पुरूष (यह 21 ब्रह्माण्ड का प्रभु है) :- इसे ब्रह्म, काल ब्रह्म, ज्योति निरंजन भी कहा जाता है। यह नाशवान है। हम इसके लोक में रह रहे हैं। हमें इसके लोक से मुक्त होना है तथा अपने परमात्मा कबीर जी के पास सत्यलोक में जाना है।

2. अक्षर पुरूष :- यह 7 संख ब्रह्माण्डों का प्रभु है, यह भी नाशवान है। हमने इसके 7 संख ब्रह्माण्डों के क्षेत्र से होकर सत्यलोक जाना है। इसलिए इसका टोल टैक्स देना है। बस इससे हमारा इतना ही काम है।

❖ गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में कहा है कि :-

उत्तमः पुरूषः तू अन्यः परमात्मा इति उदाहृतः।
यः लोक त्रयम् आविश्य विभर्ति अव्ययः ईश्वरः।।

सरलार्थ :- गीता अध्याय 15 श्लोक 16 में कहे दो पुरूष, एक क्षर पुरूष दूसरा अक्षर पुरूष हैं। इन दोनों से अन्य है उत्तम पुरूष अर्थात् पुरूषोत्तम, उसी को परमात्मा कहते हैं जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है। वह वास्तव में अविनाशी परमेश्वर है। (गीता अध्याय 15 श्लोक 17) गीता अध्याय 3 श्लोक 14-15 में भी स्पष्ट किया है कि सर्वगतम् ब्रह्म अर्थात् सर्वव्यापी परमात्मा, जो सचिदानन्द घन ब्रह्म है, उसे वासुदेव भी कहते हैं जिसके विषय में गीता अध्याय 7 श्लोक 19 में कहा है। वही सदा यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों में

प्रतिष्ठित है अर्थात् ईष्ट रूप में पूज्य है।

सूक्ष्मवेद की वाणी में जो परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी ने संत गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी जिला-झज्जर, हरियाणा प्रान्त) को तत्वज्ञान दिया था :-

मन तू चलि रे सुख के सागर, जहाँ शब्द सिंधु रत्नागर। (टेक)
कोटि जन्म तोहे मरतां होगे, कुछ नहीं हाथ लगा रे।
कुकर–सुकर खर भया बौरे, कौआ हँस बुगा रे।।(1)
कोटि जन्म तू राजा किन्हा, मिटि न मन की आशा।
भिक्षुक होकर दर–दर हांड्या, मिल्या न निर्गुण रासा।।(2)
इन्द्र कुबेर ईश की पद्वी, ब्रह्मा, वरूण धर्मराया।
विष्णुनाथ के पुर कूं जाकर, बहुर अपूठा आया।।(3)
असँख्य जन्म तोहे मरते होगे, जीवित क्यूं ना मरै रे।
द्वादश मध्य महल मठ बौरे, बहुर न देह धरै रे।।(4)
दोजख बहिश्त सभी तै देखे, राज–पाट के रसिया।
तीन लोक से तृप्त नाहीं, यह मन भोगी खसिया।।(5)
सतगुरू मिलै तो इच्छा मेटैं, पद मिल पदै समाना।
चल हँसा उस लोक पठाऊँ, जो आदि अमर अस्थाना।।(6)
चार मुक्ति जहाँ चम्पी करती, माया हो रही दासी।
दास गरीब अभय पद परसै, मिलै राम अविनाशी।।(7)

सूक्ष्मवेद की वाणी का सरलार्थ :-

आत्मा अपने साथी मन को अमर लोक के सुख तथा इस काल ब्रह्म के लोक के दुख को बताकर सुख के सागर रूपी अमर लोक (सत्यलोक) में चलने के लिए प्ररित कर रही हैं। काल (ब्रह्म) के लोक (इक्कीस ब्रह्माण्डों) में रहने वाले प्राणी को क्या-क्या कष्ट होते हैं, पहले यह जानकारी बताई है। कहा है कि :-

काल (ब्रह्म) के लोक का अटल विधान है कि जो जन्मता है, उसकी मृत्यु निश्चित है और जो मर जाता है, उसका जन्म निश्चित है।

प्रमाण गीता जी में देखें :-

श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 2 श्लोक 22 में इस प्रकार कहा है :-

❖ जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसरे नये वस्त्र ग्रहण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरों को त्यागकर दूसरे नये शरीरों को प्राप्त करता है।

❖ गीता अध्याय 2 श्लोक 27 :- क्योंकि जन्में हुए की मृत्यु निश्चित है और मरे हुए का जन्म निश्चित है। इसलिए बिना उपाय वाले विषय में तू शोक करने के योग्य नहीं है।

श्रीमद् भगवत गीता शास्त्र से स्पष्ट हुआ कि काल (ब्रह्म) के लोक का अटल नियम है कि जन्म तथा मृत्यु सदा बने रहेंगे। जैसे गीता अध्याय 2 श्लोक 12 में भी कहा है कि :- हे अर्जुन! तू, मैं (गीता ज्ञान दाता) तथा ये सर्व राजा लोग पहले भी जन्मे, ये आगे भी जन्मेंगे।

❖ गीता अध्याय 4 श्लोक 5 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि हे अर्जुन! तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं, उन सबको तू नहीं जानता, मैं जानता हूँ।

❖ गीता अध्याय 10 श्लोक 2 में गीता ज्ञान ने यह भी स्पष्ट किया है कि मेरी उत्पत्ति को न तो ऋषिजन जानते हैं, न देवता जानते हैं क्योंकि ये सर्व मेरे से उत्पन्न हुए हैं।

इसलिए गीता अध्याय 8 श्लोक 15 में कहा है कि :-

माम् उपेत्य पुनर्जन्मः दुःखालयम् अशाश्वतम्।
न आप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिम् परमाम् गता।।

अनुवाद :- गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि (माम्) मुझे (उपेत्य) प्राप्त होकर तो (दुःखालयम् अशाश्वतम्) दुःखों के घर व नाशवान संसार में (पुनर्जन्मः) पुनर्जन्म है। (महात्मानः) महात्माजन जो (संसिद्धिम् परमाम्) परम सिद्धि को (गता) प्राप्त हो गए हैं, (न अप्नुवन्ति) पुनर्जन्म को प्राप्त नहीं होते।

विशेष :- पाठकजनों से निवेदन है कि मुझ (लेखक संत रामपाल दास) से पहले सर्व अनुवादकों ने गलत (Wrong) अनुवाद किया है। गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि मुझे प्राप्त होकर पुनर्जन्म को प्राप्त नहीं होते।

विचार करें :- पहले लिखे अनेकों गीता के श्लोकों में आप जी ने पढ़ा कि गीता ज्ञान दाता ने स्वयं कहा है कि मेरे तथा तेरे अनेकों जन्म हो चुके हैं। फिर भी इस श्लोक का यह अर्थ करना कि मुझे प्राप्त महात्मा का पुनर्जन्म नहीं होता, गीता की यथार्थता के साथ खिलवाड़ करना तथा अर्थों का अनर्थ करना मात्र है।

❖ फिर गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में तथा गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि :-

गीता अध्याय 18 श्लोक 62 :- हे भारत! तू सर्वभाव से उस परमेश्वर की शरण में जा। उस परमेश्वर की कृपा से तू परम शांति तथा सनातन परम धाम को प्राप्त होगा।

गीता अध्याय 15 श्लोक 4 :- तत्वज्ञान की प्राप्ति के पश्चात् परमेश्वर के उस परमपद की खोज करनी चाहिए। जहाँ जाने के पश्चात् साधक लौटकर संसार में कभी नहीं आते अर्थात् उनका पुनर्जन्म कभी नहीं होता। जिस परमेश्वर से संसार रूपी वृक्ष की प्रवृति विस्तार को प्राप्त हुई है अर्थात् जिस परमेश्वर ने सर्व ब्रह्माण्डों की रचना की है तथा जिससे सर्व प्राणियों की उत्पत्ति हुई है, उसी आदिनारायण की (प्रपद्ये) भक्ति करो। यही प्रमाण गीता अध्याय 18 श्लोक 46 में भी है :-

❖ गीता अध्याय 18 श्लोक 46 :- गीता ज्ञान दाता ने बताया है कि जिस परमेश्वर से संपूर्ण प्राणियों की उत्पत्ति हुई है और जिससे यह समस्त जगत व्याप्त है अर्थात् जिसकी शक्ति से उत्पन्न होकर स्थित है। उस परमेश्वर की अपने स्वाभाविक कर्मों द्वारा अर्थात् अपने सांसारिक कार्य करते हुए पूजा करके मानव परम सिद्धि को प्राप्त हो जाता है।

❖ गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में विशेष ज्ञान कहा है :-

गीता अध्याय 15 श्लोक 16 :- इस संसार में दो पुरूष अर्थात् प्रभु हैं। 1. क्षर पुरूष 2. अक्षर पुरूष। ये दोनों तथा इनके लोकों में इनके अंतर्गत जितने प्राणी हैं, वे सर्व नाशवान हैं। जीवात्मा तो किसी की नहीं मरती।

गीता अध्याय 15 श्लोक 17 :- उत्तम पुरूष अर्थात् पुरूषोत्तम जो श्रेष्ठ प्रभु है, वह तो ऊपर कहे (क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष) दोनों पुरूषों से अन्य है। वही 'परमात्मा' कहा जाता है। जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है, वह वास्तव में अविनाशी परमेश्वर है।

❖ गीता अध्याय 8 श्लोक 1 में अर्जुन ने प्रश्न किया कि आप जी ने जो गीता अध्याय 7 श्लोक 29 में ''तत् ब्रह्म'' कहा है, वह क्या है? गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 8 के ही श्लोक 3 में उत्तर दिया है कि ''वह परम अक्षर ब्रह्म'' है। गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में भी इसी के विषय में कहा है।

गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 8 श्लोक 5 तथा 7 में तो अपनी भक्ति करने को कहा है। उसका परिणाम गीता अध्याय 2 श्लोक 12, अध्याय 4 श्लोक 5, अध्याय 10 श्लोक 2 में बता दिया कि अर्जुन! तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं। इससे सिद्ध हुआ कि गीता ज्ञान दाता की भक्ति से जन्म-मरण का चक्र समाप्त नहीं हो सकता।

फिर गीता अध्याय 8 के ही श्लोक 8, 9, 10 में गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य परम अक्षर ब्रह्म की भक्ति करने को कहा है कि जो उस परम अक्षर ब्रह्म की भक्ति करता है, वह उसी मेरे से अन्य दिव्य पुरूष अर्थात् परम अक्षर पुरूष को प्राप्त होता है। ऊपर आपने पढ़ा कि उस परमेश्वर की भक्ति करने से परम शांति को प्राप्त होता है तथा सनातन परम धाम (शाश्वत स्थान) को प्राप्त होता है जो अविनाशी राम है और जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आते अर्थात् जिनका जरा (वृद्ध अवस्था) तथा मरण सदा के लिए समाप्त हो जाता है, उनका पुनर्जन्म कभी नहीं होता।

❖ सूक्ष्मवेद की अमृतवाणी का यह भावार्थ है :-

वाणी का सरलार्थ :- आत्मा और मन को पात्र बनाकर संत गरीबदास जी ने संसार के मानव को समझाया है। कहा है कि ''यह संसार दुःखों का घर है। इससे भिन्न एक और संसार है। जहाँ कोई दुःख नहीं है। वह स्थान (सनातन परम धाम = सत्यलोक) तथा वहाँ का प्रभु (अविनाशी परमेश्वर) सुखों का सागर है।

सुख सागर अर्थात् अमर लोक की संक्षिप्त परिभाषा बताई है :-

शंखों लहर मेहर की ऊपजैं, कहर नहीं जहाँ कोई।
दास गरीब अचल अविनाशी, सुख का सागर सोई।।

भावार्थ :- जिस समय मैं (लेखक) अकेला होता हूँ, तो कभी-कभी ऐसी हिलोर अंदर से उठती है, उस समय सब अपने-से लगते हैं। चाहे किसी ने मुझे कितना ही कष्ट दे रखा हो, उसके प्रति द्वेष भावना नहीं रहती। सब पर दया भाव बन

जाता है। यह स्थिति कुछ मिनट ही रहती है। उसको मेहर की लहर कहा है। सतलोक अर्थात् सनातन परम धाम में जाने के पश्चात् प्रत्येक प्राणी को इतना आनन्द आता है। वहाँ पर ऐसी असँख्यों लहरें आत्मा में उठती रहती हैं। जब वह लहर मेरी आत्मा से हट जाती है तो वही दुःखमय स्थिति प्रारम्भ हो जाती है। उसने ऐसा क्यों कहा?, वह व्यक्ति अच्छा नहीं है, वो हानि हो गई, यह हो गया, वह हो गया। यह कहर (दुःख) की लहर कही जाती है।

उस सतलोक में असँख्य लहर मेहर (दया) की उठती हैं, वहाँ कोई कहर (भयँकर दुःख) नहीं है। वैसे तो सतलोक में कोई दुःख नहीं है। कहर का अर्थ भयँकर कष्ट होता है। जैसे एक गाँव में आपसी रंजिस के चलते विरोधियों ने दूसरे पक्ष के एक परिवार के तीन सदस्यों की हत्या कर दी, कहीं पर भूकंप के कारण हजारों व्यक्ति मर जाते हैं, उसे कहते हैं कहर टूट पड़ा या कहर कर दिया। ऊपर लिखी वाणी में सुख सागर की परिभाषा संक्षिप्त में बताई है। कहा है कि वह अमर लोक अचल अविनाशी अर्थात् कभी चलायमान अर्थात् ध्वंस नहीं होता तथा वहाँ रहने वाला परमेश्वर अविनाशी है। वह स्थान तथा परमेश्वर सुख का समन्दर है। जैसे समुद्री जहाज बंदरगाह के किनारे से 100 या 200 किमी. दूर चला जाता है तो जहाज के यात्रियों को जल अर्थात् समंदर के अतिरिक्त कुछ भी दिखाई नहीं देता। सब और जल ही जल नजर आता है। इसी प्रकार सतलोक (सत्यलोक) में सुख के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है अर्थात् वहाँ कोई दुःख नहीं है।

अब पूर्व में लिखी वाणी का सरलार्थ किया जाता है :-

कोटि जन्म तोहे भ्रमत होगे, कुछ नहीं हाथ लगा रे।
कुकर शुकर खर भया बौरे, कौआ हँस बुगा रे।।
मन तू चल रे सुख के सागर, जहाँ शब्द सिंधु रत्नागर।।(टेक)

परमेश्वर कबीर जी ने अपनी अच्छी आत्मा संत गरीबदास जी को सूक्ष्मवेद समझाया, उसको संत गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी जिला-झज्जर, हरियाणा प्रान्त) ने आत्मा तथा मन को पात्र बनाकर विश्व के मानव को काल (ब्रह्म) के लोक का कष्ट तथा सतलोक का सुख बताकर उस परमधाम में चलने के लिए सत्य साधना जो शास्त्रोक्त है, करने की प्रेरणा की है। मन तू चल रे सुख के सागर अर्थात् सनातन परम धाम में चल जहाँ पर शब्द अर्थात् शब्द नष्ट नहीं होता। इसलिए शब्द का अर्थ अविनाशीपन से है कि वह स्थान अमरत्व का सिंधु अर्थात् सागर है और मोक्षरूपी रत्न का आगर अर्थात् खान है। इस काल ब्रह्म के लोक में आप जी ने भक्ति भी की। परंतु शास्त्रानुकूल साधना बताने वाले तत्वदर्शी संत न मिलने के कारण आप करोड़ों जन्मों से भटक रहे हो। करोड़ों-अरबों रूपये संग्रह करने में पूरा जीवन लगा देते हो, फिर मृत्यु हो जाती है। वह जोड़ा हुआ धन जो आपके पूर्व के संस्कारों से प्राप्त हुआ था, उसे छोड़कर संसार से चला गया। उस धन के संग्रह करने में जो पाप किए, वे आप जी के साथ गए। आप जी ने उस मानव जीवन में तत्वदर्शी संत से दीक्षा लेकर शास्त्रविधि अनुसार भक्ति की साधना नहीं की।

जिस कारण से आपको कुछ हाथ नहीं आया। पूर्व के पुण्यों के बदले धन ले लिया। वह धन यहीं रह गया, आपको कुछ भी नहीं मिला। आपको मिले धन संग्रह तथा भक्ति शास्त्रानुकूल न करने के पाप।

जिनके कारण आप कुकर = कुत्ता, खर = गधा, सुकर = सूअर, कौआ = एक पक्षी, हँस = एक पक्षी जो केवल सरोवर में मोती खाता है, बुगा = बुगला पक्षी आदि-आदि की योनियों को प्राप्त करके कष्ट उठाया।

कोटि जन्म तू राजा कीन्हा, मिटि न मन की आशा।
भिक्षुक होकर दर–दर हांड्या, मिला न निर्गुण रासा।।

सरलार्थ :- हे मानव! आप जी ने काल (ब्रह्म) की कठिन से कठिन साधना की। घर त्यागकर जंगल में निवास किया, फिर गाँव व नगर में घर-घर के द्वार पर हांड्या अर्थात् घूमा। भिक्षा प्राप्ति के लिए जंगल में साधनारत साधक निकट के गाँव या शहर में जाता है। एक घर से भिक्षा पूरी नहीं मिलती तो अन्य घरों से भोजन लेकर जंगल में चला जाता है। कभी-कभी तो साधक एक दिन भिक्षा माँगकर लाते हैं, उसी से दो-तीन दिन निर्वाह करते हैं। रोटियों को पतले कपड़े रूमाल जैसे कपड़े को छालना कहते हैं। छालने में लपेटकर वृक्ष की टहनियों से बाँध देते थे। वे रोटियाँ सूख जाती हैं। उनको पानी में भिगोकर नर्म करके खाते थे। वे प्रतिदिन भिक्षा माँगने जाने में जो समय व्यर्थ होता था, उसकी बचत करके उस समय को काल ब्रह्म की साधना में लगाते थे। भावार्थ है कि जन्म-मरण से छुटकारा पाने के लिए अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्राप्ति के लिए वेदों में वर्णित विधि तथा लोकवेद से घोरतप करते थे। उनको तत्वदर्शी संत न मिलने के कारण निर्गुण रासा अर्थात् गुप्त ज्ञान जिसे तत्वज्ञान कहते हैं। वह नहीं मिला क्योंकि यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 10 में तथा चारों वेदों का सारांश रूप श्रीमद् भगवत गीता अध्याय 4 श्लोक 32 तथा 34 में कहा है कि जो यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों का विस्तृत ज्ञान स्वयं सच्चिदानन्द घन ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म अपने मुख कमल से बोलकर सुनाता है, वह तत्वज्ञान अर्थात् सूक्ष्मवेद है। गीता ज्ञान दाता ब्रह्म ने कहा है कि उस तत्वज्ञान को तू तत्वज्ञानियों के पास जाकर समझ, उनको दण्डवत् प्रणाम करने से नम्रतापूर्वक प्रश्न करने से वे परमात्म तत्व को भली-भाँति जानने वाले तत्वदर्शी संत तुझे तत्वज्ञान का उपदेश करेंगे। इससे सिद्ध हुआ कि तत्वज्ञान न वेदों में है और न ही गीता शास्त्र में। यदि होता तो एक अध्याय और बोल देता। कह देता कि तत्वज्ञान उस अध्याय में पढ़ें। संत गरीबदास जी ने मन के बहाने मानव शरीरधारी प्राणियों को समझाया है कि वह निर्गुण रासा अर्थात् तत्वज्ञान न मिलने के कारण काल ब्रह्म की साधना करके आप जी करोड़ों जन्मों में राजा बने। फिर भी मन की इच्छा समाप्त नहीं हुई क्योंकि राजा सोचता है कि स्वर्ग में सुख है, यहाँ राज में कोई सुख-चैन नहीं है, शान्ति नहीं है।

निर्गुण रासा का भावार्थ :- निर्गुण का अर्थ है कि वह वस्तु तो है परंतु उसका लाभ नहीं मिल रहा। वृक्ष के बीज में फल तथा वृक्ष निर्गुण रूप में है, उस बीज

को मिट्टी में बीजकर सिंचाई करके वह सरगुण वस्तु (वृक्ष, वृक्ष को फल) प्राप्त की जाती है। यह ज्ञान न होने से आम के फल व छाया से वंचित रह जाते हैं। रासा = झंझट अर्थात् उलझा हुआ कार्य। सूक्ष्मवेद में परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि :-

नौ मन (360 कि.ग्रा.) सूत = कच्चा धागा

कबीर, नौ मन सूत उलझिया, ऋषि रहे झख मार।
सतगुरू ऐसा सुलझा दे, उलझे न दूजी बार।।

सरलार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि आध्यात्म ज्ञान रूपी नौ मन सूत उलझा हुआ है। एक कि.ग्रा. उलझे हुए सूत को सीधा करने में एक दिन से भी अधिक जुलाहों का लग जाता था। यदि सुलझाते समय धागा टूट जाता तो कपड़े में गाँठ लग जाती। गाँठ-गठीले कपड़े को कोई मोल नहीं लेता था। इसलिए परमेश्वर कबीर जुलाहे ने जुलाहों का सटीक उदाहरण बताकर समझाया है कि अधिक उलझे हुए सूत को कोई नहीं सुलझाता था। आध्यात्म ज्ञान उसी नौ मन उलझे हुए सूत के समान है जिसको सतगुरू अर्थात् तत्वदर्शी संत ऐसा सुलझा देगा जो पुनः नहीं उलझेगा। बिना सुलझे आध्यात्म ज्ञान के आधार से अर्थात् लोकवेद के अनुसार साधना करके स्वर्ग-नरक, चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के जीवन, पृथ्वी पर किसी टुकड़े का राज्य, स्वर्ग का राज्य प्राप्त किया, पुनः फिर जन्म-मरण के चक्र में गिरकर कष्ट पर कष्ट उठाया। परंतु काल ब्रह्म की वेदों में वर्णित विधि अनुसार साधना करने से वह परम शांति तथा सनातन परम धाम प्राप्त नहीं हुआ जो गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है और न ही परमेश्वर का वह परम पद प्राप्त हुआ जहाँ जाने के पश्चात् साधक लौटकर संसार में कभी नहीं आते जो गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है। काल ब्रह्म की साधना से निम्न लाभ होता रहता है।

वाणी नं 3 :— इन्द्र—कुबेर, ईश की पदवी, ब्रह्मा वरूण धर्मराया।
विष्णुनाथ के पुर कूं जाकर, बहुर अपूठा आया।।

सरलार्थ :- काल ब्रह्म की साधना करके साधक इन्द्र का पद भी प्राप्त करता है। इन्द्र स्वर्ग के राजा का पद है। इसको देवराज अर्थात् देवताओं का राजा तथा सुरपति भी कहते हैं। यह सिंचाई विभाग अर्थात् वर्षा मंत्रालय भी अपने आधीन रखता है।

प्रश्न :- इन्द्र की पदवी कैसे प्राप्त होती है?

उत्तर :- अधिक तप करने से तथा सौ मन (4 हजार कि.ग्रा.) गाय के घी का प्रयोग करके धर्मयज्ञ करने से एक धर्मयज्ञ सम्पन्न होती है। ऐसी-ऐसी सौ धर्मयज्ञ निर्विघ्न करने से इन्द्र की पदवी साधक प्राप्त करता है। तप या यज्ञ के दौरान यज्ञ या तप की मर्यादा भंग हो जाती है तो नए सिरे से यज्ञ तथा तप करना पड़ता है। इस प्रकार इन्द्र की पदवी प्राप्त होती है।

प्रश्न :- इन्द्र का शासन काल कितना है? मृत्यु उपरांत इन्द्र के पद को छोड़कर प्राणी किस योनि को प्राप्त करता है?

उत्तर :- इन्द्र स्वर्ग के राजा के पद पर 72 चौकड़ी अर्थात् 72 चतुर्युग तक बना रहता है। एक चतुर्युग में सत्ययुग+त्रेतायुग+द्वापरयुग तथा कलयुग का समय होता है। जो 1728000+1296000+864000+432000 क्रमशः सत्ययुग + त्रेतायुग + द्वापरयुग + कलयुग का समय अर्थात् 43 लाख 20 हजार वर्ष का समय एक चतुर्युग में होता है। ऐसे बने 72 चतुर्युग तक वह साधक इन्द्र के पद पर स्वर्ग के राजा का सुख भोगता है। एक कल्प अर्थात् ब्रह्मा जी के एक दिन में (जो एक हजार आठ (1008) चतुर्युग का होता है) 14 जीव इन्द्र के पद पर रहकर अपना किया पुण्य-कर्म भोगते हैं। इन्द्र के पद को भोगकर वे प्राणी गधे का जीवन प्राप्त करते हैं।

''कथा-मार्कण्डेय ऋषि तथा अप्सरा का संवाद''

एक समय बंगाल की खाड़ी में मार्कण्डेय ऋषि तप कर रहा था। इन्द्र के पद पर विराजमान को यह शर्त होती है कि यदि तेरे शासनकाल में 72 चौकड़ी युग के दौरान यदि पृथ्वी पर कोई व्यक्ति इन्द्र पद प्राप्त करने योग्य तप या धर्मयज्ञ कर लेता है और उसकी क्रिया में कोई बाधा नहीं आती है तो उस साधक को इन्द्र का पद दे दिया जाता है और वर्तमान इन्द्र से वह पद छीन लिया जाता है। इसलिए जहाँ तक संभव होता है, इन्द्र अपने शासनकाल में किसी साधक का तप या धर्मयज्ञ पूर्ण नहीं होने देता। उसकी साधना भंग करा देता है, चाहे कुछ भी करना पड़े।

जब इन्द्र को उसके दूतों ने बताया कि बंगाल की खाड़ी में मार्कण्डेय नामक ऋषि तप कर रहे हैं। इन्द्र ने मार्कण्डेय ऋषि का तप भंग करने के लिए उर्वसी (इन्द्र की पत्नी) भेजी। सर्व श्रंगार करके देवपरी मार्कण्डेय ऋषि के सामने नाचने-गाने लगी। अपनी सिद्धि से उस स्थान पर बसंत ऋतु जैसा वातावरण बना दिया। मार्कण्डेय ऋषि ने कोई उत्सुकता नहीं दिखाई। उर्वसी ने कमर-नाड़ा तोड़ दिया, निःवस्त्र हो गई। तब मार्कण्डेय ऋषि बोले, हे बेटी!, हे बहन!, हे माई! आप यह क्या कर रही हो? आप यहाँ गहरे जंगल में अकेली किसलिए आई? उर्वसी ने कहा कि ऋषि जी मेरे रूप को देखकर इस आरण्य खण्ड (बन-खण्ड) के सर्व साधक अपना संतुलन खो गए परंतु आप डगमग नहीं हुए, न जाने आपकी समाधि कहाँ थी? कृप्या आप मेरे साथ इन्द्रलोक में चलो, नहीं तो मुझे सजा मिलेगी कि तू हार कर आ गई। मार्कण्डेय ऋषि ने कहा कि मेरी समाधि ब्रह्मलोक में गई थी, जहाँ पर मैं उन उर्वसियों का नाच देख रहा था जो इतनी सुंदर हैं कि तेरे जैसी तो उनकी 7-7 बांदियाँ अर्थात् नौकरानियाँ हैं। इसलिए मैं तेरे को क्या देखता, तेरे पर क्या आसक्त होता? यदि तेरे से कोई सुंदर हो तो उसे ले आ। तब देवपरी ने कहा कि इन्द्र की पटरानी अर्थात् मुख्य रानी मैं ही हूँ। मुझसे सुन्दर स्वर्ग में कोई औरत नहीं है।

तब मार्कण्डेय ऋषि ने पूछा कि इन्द्र की मृत्यु होगी, तब तू क्या करेगी? उर्वसी ने उत्तर दिया कि मैं 14 इन्द्र भोगूँगी। भावार्थ है कि श्री ब्रह्मा जी के एक

दिन में 1008 चतुर्युग होते हैं जिसमें 72-72 चतुर्युग का शासनकाल पूरा करके 14 इन्द्र मृत्यु को प्राप्त होते हैं। इन्द्र की रानी वाली आत्मा ने किसी मानव जन्म में इतने अत्यधिक पुण्य किए थे। जिस कारण से वह 14 इन्द्रों की पटरानी बनकर स्वर्ग सुख तथा पुरूष सुख को भोगेगी।

मार्कण्डेय ऋषि ने कहा कि वे 14 इन्द्र भी मरेंगे, तब तू क्या करेगी? उर्वसी ने कहा कि फिर मैं मृत्यु लोक (पृथ्वी लोक को मनुष्य लोक अर्थात् मर्त्यः लोक कहते हैं) में गधी बनाई जाऊँगी और जितने इन्द्र मेरे पति होंगे, वे भी पृथ्वी पर गधे की योनि प्राप्त करेंगे।

मार्कण्डेय ऋषि बोले कि फिर मुझे ऐसे लोक में क्यों ले जा रही थी जिसका राजा गधा बनेगा और रानी गधी की योनि प्राप्त करेगी? उर्वसी बोली कि अपनी इज्जत रखने के लिए, नहीं तो वे कहेंगे कि तू हारकर आई है।

मार्कण्डेय ऋषि ने कहा कि गधियों की कैसी इज्जत? तू वर्तमान में भी गधी है क्योंकि तू चौदह खसम करेगी और मृत्यु उपरांत तू स्वयं स्वीकार रही है कि मैं गधी बनूंगी। गधी की कैसी इज्जत? इतने में वहीं पर इन्द्र आ गया। विधानानुसार अपना इन्द्र का राज्य मार्कण्डेय ऋषि को देने के लिए। कहा कि ऋषि जी हम हारे और आप जीते। आप इन्द्र की पदवी स्वीकार करें। मार्कण्डेय ऋषि बोले अरे-अरे इन्द्र! इन्द्र की पदवी मेरे किसी काम की नहीं। मेरे लिए तो काग (कौवे) की बीट के समान है। मार्कण्डेय ऋषि ने इन्द्र से फिर कहा कि तू मेरे बताए अनुसार साधना कर, तेरे को ब्रह्मलोक ले चलूँगा। इस इन्द्र के राज्य को छोड़ दे। इन्द्र ने कहा कि हे ऋषि जी अब तो मुझे मौज-मस्ती करने दो। फिर कभी देखूंगा।

पाठकजनो! विचार करो :- इन्द्र को पता है कि मृत्यु के उपरांत गधे का जीवन मिलेगा, फिर भी उस क्षणिक सुख को त्यागना नहीं चाहता। कहा कि फिर कभी देखूंगा। फिर कब देखेगा? गधा बनने के पश्चात् तो कुम्हार देखेगा। कितना वजन गधे की कमर पर रखना है? कहाँ-सी डण्डा मारना है? ठीक इसी प्रकार इस पृथ्वी पर कोई छोटे-से टुकड़े का प्रधानमंत्री, मंत्री, मुख्यमंत्री या राज्य में मंत्री बना है या किसी पद पर सरकारी अधिकारी या कर्मचारी बना है या धनी है। उसको कहा जाता है कि आप भक्ति करो नहीं तो गधे बनोगे। वे या तो नाराज हो जाते हैं कि क्यों बनेंगे गधे? फिर से मत कहना। कुछ सभ्य होते हैं, वे कहते हैं कि किसने देखा है, गधे बनते हैं? फिर उनको बताया जाता है कि सब संत तथा ग्रन्थ बताते हैं। तो अधिकतर कहते हैं कि देखा जाएगा।

उनसे निवेदन है कि मृत्यु के पश्चात् गधा बनने के बाद आप क्या देखोगे, फिर तो कुम्हार देखेगा कि आप जी के साथ कैसा बर्ताव करना है? देखना है तो वर्तमान में देख। बुराई छोड़कर शास्त्रानुकूल साधना करो जो वर्तमान में विश्व में केवल मेरे पास (लेखक के पास) है। आओ ग्रहण करो और अपने जीव का कल्याण कराओ।

ऊपर लिखी वाणी नं. 3 में बताया है कि इन्द्र-कुबेर तथा ईश की पदवी प्राप्त करने वाले तथा ब्रह्मा जी का पद तथा वरूण, धर्मराय का पद प्राप्त करके तथा

विष्णु जी के लोक को प्राप्त कर देव पद प्राप्त भी वापिस जन्म-मरण के चक्र में रहता है।

स्वर्ग लोक में 33 करोड़ देव पद हैं। जैसे भारत वर्ष की संसद में 540 सांसदों के पद हैं। व्यक्ति बदलते रहते हैं। उन्हीं सांसदों में से प्रधानमंत्री तथा अन्य केन्द्रीय मंत्री आदि-आदि बनते हैं।

इसी प्रकार उन 33 करोड़ देवताओं में से ही कुबेर का पद अर्थात् धन के देवता का पद प्राप्त होता है जैसे वित्त मंत्री होता है। ईश की पदवी का अर्थ है प्रभु पद जो कुल तीन माने गए हैं :- 1. श्री ब्रह्मा जी 2. श्री विष्णु जी तथा 3. श्री शिव जी।

वरूणदेव जल का देवता है। धर्मराय मुख्य न्यायधीश है जो सब जीवों को कर्मों का फल देता है, उसे धर्मराज भी कहते हैं। ये सर्व काल ब्रह्म की साधना करके पद प्राप्त करते हैं। पुण्य क्षीण (समाप्त) होने के पश्चात् पद से मुक्त करके पशु-पक्षियों आदि की 84 लाख प्रकार की योनियों में चले जाते हैं। फिर नए ब्रह्मा जी, नए विष्णु जी तथा नए शिव जी इन पदों पर विराजमान होते हैं।

ये सर्व उपरोक्त देवता जन्मते-मरते हैं। ये अविनाशी नहीं हैं। इनकी स्थिति आप जी को ''सृष्टि रचना'' अध्याय में इसी पुस्तक में स्पष्ट होगी कि ये कितने प्रभु हैं? किसके पुत्र हैं तथा कौन इनकी माता जी हैं?

अन्य प्रमाण :- श्री देवी पुराण (सचित्र मोटा टाईप केवल हिन्दी, गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित) के तीसरे स्कंद में पृष्ठ 123 पर लिखा है कि तुम शुद्ध स्वरूपा हो, यह सारा संसार आप से ही उद्भाषित हो रहा है। मैं (विष्णु), ब्रह्मा और शंकर आपकी कृप्या से विद्यमान हैं। हमारा तो अविर्भाव अर्थात् जन्म तथा तिरोभाव अर्थात् मृत्यु हुआ करता है। आप प्रकृति देवी हैं।

शंकर भगवान बोले कि हे देवी! यदि विष्णु के पश्चात् उत्पन्न होने वाले ब्रह्मा आप से उत्पन्न हुए हैं तो क्या मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या आपकी संतान नहीं हुआ अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम ही हो। हम तो केवल नियमित कार्य ही कर सकते हैं अर्थात् जिसके भाग्य में जो लिखा है, हम वही प्रदान कर सकते हैं। न अत्यधिक कर सकते, न कम कर सकते।

पाठकजनो! इस श्री देवी पुराण के उल्लेख से स्पष्ट हुआ कि श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शंकर जी नाशवान हैं। इनकी माता जी का नाम श्री देवी दुर्गा है। अधिक जानकारी आप ''सृष्टि रचना'' अध्याय से ग्रहण करेंगे जो इसी पुस्तक में पीछे लिखी है। ये प्रधान देवता हैं। अन्य इनसे निम्न स्तर के देव हैं। ये सर्व जन्मते-मरते हैं, अविनाशी राम नहीं हैं, अविनाशी परमात्मा नहीं हैं।

श्रीमद् भगवत गीता अध्याय 10 श्लोक 2 में लिखा है कि गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म ने कहा है कि ''मेरी उत्पत्ति को न तो देवता जानते और न महर्षिजन जानते क्योंकि इन सबका आदि कारण मैं ही हूँ अर्थात् ये सर्व मेरे से उत्पन्न हुए हैं।''

गीता अध्याय 14 श्लोक 3 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि हे अर्जुन! मेरी

प्रकृति अर्थात् दुर्गा तो गर्भ धारण करती है, मैं उसके गर्भ में बीज स्थापित करता हूँ जिससे सर्व प्राणियों की उत्पत्ति होती है।

गीता अध्याय 14 श्लोक 4 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि हे अर्जुन! नाना प्रकार की सब योनियों में जितने शरीरधारी मूर्तियाँ उत्पन्न होती हैं (महत्) प्रकृति तो उन सबकी गर्भ धारण करने वाली माता है। (अहम् ब्रह्म) मैं ब्रह्म बीज स्थापित करने वाला पिता हूँ।

गीता अध्याय 14 श्लोक 4 :- गीता ज्ञान दाता ने स्पष्ट किया है कि हे अर्जुन! सत्वगुण श्री विष्णु जी, रजगुण श्री ब्रह्मा जी तथा तमगुण श्री शिव जी, ये प्रकृति अर्थात् दुर्गा देवी से उत्पन्न तीनों देवता अर्थात् तीनों गुण अविनाशी जीवात्मा को कर्मों के अनुसार शरीर में बाँधते हैं।

उपरोक्त प्रमाणों से स्पष्ट हुआ कि उपरोक्त देवता नाशवान हैं तथा काल ब्रह्म की संतान हैं।

प्रसंग चल रहा है कि वाणी सँख्या 3 का सरलार्थ :-

इन्द्र, कुबेर, ईश अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु, शिव तक की प्राप्त करके तथा वरूण, धर्मराय की पदवी तथा श्री विष्णुनाथ के लोक को प्राप्त करके भी जन्म-मरण के चक्र में रहते हैं।

❖ मार्कण्डेय ऋषि जी ब्रह्म साधना कर रहे थे। उसी को सर्वोत्तम मान रहे थे। इसीलिए इन्द्र को कह रहे थे कि आ तेरे को ब्रह्म साधना का ज्ञान कराऊँ। ब्रह्म लोक की तुलना में स्वर्ग का राज्य हलवे की तुलना में जैसे कौवे की बीट है।

पाठकजनो! ने ब्रह्म साधना करने वाले श्री चुणक ऋषि, श्री दुर्वासा ऋषि तथा कपिल मुनि की दशा जान ली, उनकी साधना को गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में अनुत्तम अर्थात् घटिया बताया है। उसी श्रेणी की साधना मार्कण्डेय ऋषि जी की थी। जिसको अति उत्तम मानकर कर रहे थे तथा इन्द्र जी को भी राय दे रहे थे कि ब्रह्म साधना कर ले।

सूक्ष्मवेद में कहा है कि :- औरों पंथ बतावहीं, आप न जाने राह।

भावार्थ :- अन्य को मार्गदर्शन करते हैं, स्वयं भक्ति मार्ग का ज्ञान नहीं। श्रीमद् भगवत गीता अध्याय 4 श्लोक 25 से 29 तक यही बताया है कि जो साधक जैसी भी साधना करता है, उसे उत्तम मानकर कर रहा होता है, सर्व साधक अपनी-अपनी भक्ति को पापनाश करने वाली जानते हैं।

गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में स्पष्ट किया है कि यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों का ज्ञान स्वयं सच्चिदानन्द घन ब्रह्म ने अपने मुख कमल से बोली वाणी में विस्तार के साथ कहा है, वह तत्वज्ञान है। जिसे जानकर साधक सर्व पापों से मुक्त हो जाता है।

गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में स्पष्ट किया है कि उस तत्वज्ञान को तत्वदर्शी संत जानते हैं, उनको दण्डवत प्रणाम करने से, नम्रतापूर्वक प्रश्न करने से वे तत्वज्ञान को जानने वाले ज्ञानी महात्मा तुझे तत्वज्ञान का उपदेश करेंगे।

वह तत्वज्ञान जिसे ऊपर की वाणी में निर्गुण रासा कहा है, नहीं मिलने से सर्व साधक जन्म-मरण के चक्र में रह गए।

मार्कण्डेय ऋषि ब्रह्म साधना कर रहा था। श्रीमद् भगवत गीता अध्याय 8 श्लोक 16 में कहा है कि ब्रह्मलोक में गए साधक भी पुनरावर्ती अर्थात् बार-बार जन्म-मरण के चक्र में ही रहते हैं।

वाणी सँख्या 4 = असंख जन्म तोहे मरतां होगे, जीवित क्यों न मरै रे।
द्वादश मध्य महल मठ बोरे, बहुर न देह धरै रे।।

सरलार्थ :- हे मानव! तू अनन्त बार जन्म और मर चुका है। सत्य साधना कर तथा जीवित मर। जीवित मरने का तात्पर्य है कि भक्त को ज्ञान हो जाता है कि इस संसार की प्रत्येक वस्तु अस्थाई है। यह शरीर भी स्थाई नहीं है। जन्म-मृत्यु का बखेड़ा भी भयँकर है। इस संसार में दुख के अतिरिक्त कुछ नहीं है। मानव शरीर प्राप्त करके मोक्ष प्राप्त नहीं किया तो पशु जैसा जीवन जीया। जैसे गीता अध्याय 7 श्लोक 29 में कहा है कि जो साधक केवल जरा अर्थात् वृद्धावस्था के कष्ट तथा मरण के दुःख से ही मुक्ति के लिए जो साधनारत हैं, वे तत् ब्रह्म को तथा सम्पूर्ण आध्यात्म को तथा कर्मों को जानते हैं।

इसी प्रकार तत्वज्ञान होने के पश्चात् मानव को अनावश्यक वस्तुओं की इच्छा नहीं होती, तम्बाकू, शराब-माँस सेवन नहीं करता। नाच-गाना मूर्खों का काम लगता है। जैसा भोजन मिल जाए, उसी में संतुष्ट रहता है।

❖ आत्म कल्याण कराने के लिए साधक विचार करता है कि यदि मैं सत्संग में नहीं आऊँगा तो गुरू जी के दर्शन नहीं कर पाऊँगा। सत्संग विचार न सुनने से मन फिर से विकार करने लगेगा। वह साधक सर्व कार्य छोड़कर सत्संग सुनने के लिए चल पड़ता है। वह विचार करता है कि हम प्रतिदिन सुनते हैं तथा देखते हैं कि छोटे-छोटे बच्चों को छोड़कर पिता संसार से चला जाता है, मर जाता है। बड़े-बड़े पूंजीपति दुर्घटना में मर जाते हैं। सर्व सम्पत्ति जो सारे जीवन में जोड़ी थी, उसे छोड़कर चले जाते हैं, दोबारा उस सम्पत्ति को सँभालने नहीं आते। मृत्यु से पहले एक दिन भी कार्य छोड़ने का दिल नहीं करता था, अब परमानैन्ट कार्य छूट गया।

एक भक्त सत्संग में जाने लगा। दीक्षा ले ली, ज्ञान सुना और भक्ति करने लगा। अपने मित्र से भी सत्संग में चलने तथा भक्ति करने के लिए प्रार्थना की। परंतु दोस्त नहीं माना। कह देता कि कार्य से फुर्सत नहीं है। छोटे-छोटे बच्चे हैं। इनका पालन-पोषण भी करना है। काम छोड़कर सत्संग में जाने लगा तो सारा धँधा चौपट हो जाएगा।

वह सत्संग में जाने वाला भक्त जब भी सत्संग में चलने के लिए अपने मित्र से कहता तो वह यही कहता कि अभी काम से फुर्सत नहीं है। एक वर्ष पश्चात् उस मित्र की मृत्यु हो गई। उसकी अर्थी उठाकर नगरवासी चले, साथ-साथ सैंकड़ों नगर-मौहल्ले के व्यक्ति भी साथ-साथ चले। सब बोल रहे थे कि राम नाम सत् है, सत् बोले गत् है।

भक्त कह रहा था कि राम नाम तो सत् है परंतु आज भाई को फुर्सत है। नगरवासी कह रहे थे कि सत् बोले गत् है, भक्त कह रहा था कि आज भाई को फुर्सत है। अन्य व्यक्ति उस भक्त से कहने लगे कि ऐसे मत बोल, इसके घर वाले बुरा मानेंगे। भक्त ने कहा कि मैं तो ऐसे ही बोलूँगा। मैंने इस मूर्ख से हाथ जोड़कर प्रार्थना की थी कि सत्संग में चल, कुछ भक्ति कर ले। यह कहता था कि अभी फुर्सत अर्थात् समय नहीं है। आज इसको परमानैंट फुर्सत है। छोटे-छोटे बच्चे भी छोड़ चला जिनके पालन-पोषण का बहाना करके परमात्मा से दूर रहा। भक्ति करता तो खाली हाथ नहीं जाता। कुछ भक्ति धन लेकर जाता। बच्चों का पालन-पोषण परमात्मा करता है। भक्ति करने से साधक की आयु भी परमात्मा बढ़ा देता है। भक्तजन ऐसा विचार करके भक्ति करते हैं, कार्य त्यागकर सत्संग सुनने जाते हैं।

भक्त विचार करते हैं कि परमात्मा न करे, हमारी मृत्यु हो जाए। फिर हमारे कार्य कौन करेगा? हम यह मान लेते हैं कि हमारी मृत्यु हो गई। हम तीन दिन के लिए सत्संग में चलें, अपने को मृत मान लें और सत्संग में चले गए। वैसे तो परमात्मा के भक्तों का कार्य बिगड़ता नहीं, फिर भी हम मान लेते हैं कि हमारी गैर-हाजिरी में कुछ कार्य खराब हो गया तो तीन दिन बाद जाकर ठीक कर लेंगे। वास्तव में टिकट कट गई अर्थात् मृत्यु हो गई तो परमानैंट कार्य बिगड़ गया। फिर कभी ठीक करने नहीं आ सकते। इस स्थिति को जीवित मरना कहते हैं।

वाणी का शेष सरलार्थ :-

द्वादश मध्य महल मठ बौरे, बहुर न देहि धरै रे।

सरलार्थ :- श्रीमद् भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि तत्वज्ञान की प्राप्ति के पश्चात् परमेश्वर के उस परमपद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक लौटकर संसार में कभी नहीं आते अर्थात् उनका पुनर्जन्म नहीं होता। वे फिर देह धारण नहीं करते। सूक्ष्मवेद की यह वाणी यही स्पष्ट कर रही है कि वह परम धाम द्वादश अर्थात् 12वें द्वार को पार करके उस परम धाम में जाया जाता है। आज तक सर्व ऋषि-महर्षि, संत, मंडलेश्वर केवल 10 द्वार बताया करते। परंतु परमेश्वर कबीर जी ने अपने स्थान को प्राप्त कराने का सत्यमार्ग, सत्य स्थान स्वयं ही बताया है। उन्होंने 12वां द्वार बताया है। इससे भी स्पष्ट हुआ कि आज तक (सन् 2012 तक) पूर्व के सर्व ऋषियों, संतों, पंथों की भक्ति काल ब्रह्म तक की थी। जिस कारण से जन्म-मृत्यु का चक्र चलता रहा।

वाणी सँख्या 5 :— दोजख बहिश्त सभी तै देखे, राजपाट के रसिया।
तीन लोक से तृप्त नाहीं, यह मन भोगी खसिया।।

सरलार्थ :- तत्वज्ञान के अभाव में पूर्णमोक्ष का मार्ग न मिलने के कारण कभी दोजख अर्थात् नरक में गए, कभी बहिश्त अर्थात् स्वर्ग में गए,कभी राजा बनकर आनन्द लिया। यदि इस मानव को तीन लोक का राज्य भी दे दें तो भी तृप्ति नहीं होती।

उदाहरण :- यदि कोई गाँव का सरपंच बन जाता है तो वह इच्छा करता है

कि विधायक बने तो मौज होवे। विधायक इच्छा करता है कि मन्त्री बनूं तो बात कुछ अलग हो जाएगी। मंत्री बनकर इच्छा करता है कि मुख्यमंत्री बनूं तो पूरी चौधर हो। आनन्द ही न्यारा होगा। सारे प्रान्त पर कमांड चलेगी। मुख्यमंत्री बनने के पश्चात् प्रबल इच्छा होती है कि प्रधानमंत्री बनूं तो जीवन की सफलता है। तब तक जीवन लीला समाप्त हो जाएगी। फिर गधा बनकर कुम्हार के लठ खा रहा होगा। इसलिए तत्वज्ञान में समझाया है कि काल ब्रह्म द्वारा बनाई स्वर्ग-नरक तथा राजपाट प्राप्ति की भूल-भुलईया में सारा जीवन व्यर्थ कर दिया।

एक अब्राहिम सुल्तान अधम नाम का बलख शहर का राजा था। वह पूर्व जन्म का बहुत अच्छा भक्त था। परंतु वर्तमान के ऐश्वर्य में मस्त होकर परमात्मा को भूल चुका था। राज के ठाठ में तथा महलों में आनंदमान बैठा था। एक दिन परमात्मा सत्यलोक से आकर एक यात्री का रूप बनाकर राजा के महल में गए तथा कहा कि सराय वाले! एक कमरा किराए पर दे, पैसे बता, रात्रि बितानी है। राजा ने कहा हे भोले यात्री! आपको यह सराय दिखाई देती है। मैं राजा हूँ और यह मेरा महल है। यात्री रूप में परमात्मा ने पूछा कि आप से पहले इस महल में कौन रहते थे? राजा ने कहा कि मेरे पिता, दादा-परदादा रहते थे। यात्री रूप में परमेश्वर ने कि आप कितने दिन रहोगे इस महल में? राजा ने कहा एक दिन मैं भी चला जाऊँगा इन्हें छोड़कर। परमेश्वर बोले कि यह सराय नहीं तो क्या है? यह सराय है। जैसे तेरे बाप-दादा गए, ऐसे ही तू चला जाएगा, इसलिए मैंने महलों को धर्मशाला बताया है। राजा को वास्तविकता का ज्ञान हुआ। संसार की इच्छा त्यागकर आत्म-कल्याण कराया। सदा रहने वाला सुख तथा अमर जीवन प्राप्त करने के लिए दीक्षा ली और आजीवन भक्ति की, अपना मानव जीवन सफल किया।

वाणी सँख्या 6 :—सतगुरू मिलैं तो इच्छा मेटैं, पद मिल पदे समाना।
चल हंसा उस लोक पठाऊँ, जो आदि अमर अस्थाना।।

सरलार्थ :- यदि तत्वदर्शी संत सतगुरू मिलें तो उपरोक्त ज्ञान बताकर काल ब्रह्म के लोक की सर्व वस्तुओं से तथा पदों से इच्छा समाप्त करके ''पद मिल पदे समाना'' इसमें एक 'पद' का अर्थ है पद्धति अर्थात् शास्त्रविधि अनुसार साधना बताकर परमेश्वर के उस परम पद की प्राप्ति करा देता है जहाँ जाने के पश्चात् फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आते। हे भक्त! चल तुझे उस लोक में भेज दूँ जो आदि अमर अस्थान है अर्थात् गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में वर्णित सनातन परम धाम है जहाँ पर परम शांति है।

वाणी सँख्या 7 :- चार मुक्ति जहाँ चम्पी करती, माया हो रही दासी।
दास गरीब अभय पद परसै, मिले राम अविनाशी।।

सरलार्थ :- उस सनातन परम धाम में परम शान्ति तथा अत्यधिक सुख है। काल ब्रह्म के लोक चार मुक्ति मानी जाती है, जिनको प्राप्त करके साधक अपने को धन्य मानता है। परंतु वे स्थाई नहीं हैं। कुछ समय उपरांत पुण्य समाप्त होते ही फिर 84 लाख प्रकार की योनियों में कष्ट उठाता है। परंतु उस सत्यलोक में

चारों मुक्ति वाला सुख सदा बना रहेगा। माया आपकी नौकरानी बनकर रहेगी।

संत गरीबदास जी ने बताया है कि अमर लोक में जाने के पश्चात् प्राणी निर्भय हो जाता है और उस सनातन परम धाम में वह अविनाशी राम अर्थात् परमेश्वर मिलेगा। इसलिए पूर्ण मोक्ष के लिए शास्त्रानुकूल भक्ति करनी चाहिए जिससे उस भगवान तक जाया जा सकता है।

उपरोक्त वाणी तथा पूर्वोक्त विवरण से स्पष्ट हुआ कि श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा शिव जी और इनके पिता काल ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरूष व अक्षर पुरूष सर्व राम अर्थात् प्रभु नाशवान हैं। केवल परम अक्षर ब्रह्म ही अविनाशी राम अर्थात् प्रभु है। इस परमेश्वर की भक्ति से ही परमशांति तथा सनातन परम धाम अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्राप्त होगा जहाँ पर चार मुक्ति का सुख सदा रहेगा। माया अर्थात् सर्व सुख-सुविधाऐं साधक के नौकर की तरह हाजिर रहती हैं। सूक्ष्मवेद में कहा है कि:-

कबीर, माया दासी संत की, उभय दे आशीष।
विलसी और लातों छड़ी, सुमर–सुमर जगदीश।।

भावार्थ :- सर्व सुख-सुविधाऐं धन से होती हैं। वह धन शास्त्रविधि अनुसार भक्ति करने वाले संत-भक्त की भक्ति का By Product होता है। जैसे जिसने गेहूँ की फसल बीजी तो उसका उद्देश्य गेहूँ का अन्न प्राप्त करना है। परंतु भुष अर्थात् चारा भी अवश्य प्राप्त होता है। चारा, तूड़ा गेहूँ के अन्न का By Product है। इसी प्रकार सत्य साधना करने वाले को अपने आप धन माया मिलती है। साधक उसको भोगता है, वह चरणों में पड़ी रहती है अर्थात् धन का अभाव नहीं रहता अपितु आवश्यकता से अधिक प्राप्त रहती है। परमेश्वर की भक्ति करके माया का भी आनन्द भक्त, संत प्राप्त करते हैं तथा पूर्ण मोक्ष भी प्राप्त करते हैं।

भक्ति से भगवान तक कैसे पहुँचेंगे?

प्रश्न = उस परमेश्वर (परम अक्षर ब्रह्म) को कैसे प्राप्त करेंगे?

उत्तर = परमेश्वर प्राप्ति के लिए नाम का जाप करना होता है। सूक्ष्मवेद में लिखा है :-

कबीर, कलयुग में जीवन थोड़ा है, कीजे बेग सम्भार।
योग साधना बने नहीं, केवल नाम आधार।।
कलयुग केवल नाम आधारा, सुमर–सुमर नर उतरे पारा। (रामायण)
कबीर, नाम लिय तिन सब लिया सकल बेद का भेद।
बिन नाम नरकै पड़ा, पढ़कर चारों वेद।।

भावार्थ :- पूर्व के युगों में मानव की आयु लम्बी होती थी। ऋषि व साधक हठयोग करके हजारों वर्षों तक तप साधना करते रहते थे। अब कलयुग में मनुष्य की औसतन आयु लगभग 75-80 वर्ष रह गई है। इतने कम समय में पूर्व वाली हठयोग साधना नहीं कर सकोगे। इसलिए अतिशीघ्र गुरू जी से दीक्षा लेकर अपने जीवन का शेष समय संभाल लें। भक्ति करके इसका सदुपयोग कर लो। यदि कोई

व्यक्ति चारों वेदों को पढ़ता रहा और नाम जाप किया नहीं तो वह भक्ति की शक्ति से रहित होकर नरक में गिरेगा और जिसने विधिवत दीक्षा लेकर नाम का जाप किया तो समझ लो उसने सर्व वेदों का रहस्य जान लिया। उदाहरण के लिए जैसे औषधि की पुस्तक को पढ़ता रहा, उपचार कराया नहीं तो वह जीवन से हाथ धो बैठेगा। और जिसने डॉक्टर से रोग के लक्षण सुने और उपचार कराया, औषधि खाई तो उसने अपने जीवन की रक्षा कर ली। मानो उसने तो औषधि की पुस्तक का रहस्य जान लिया। उसको औषधि की पुस्तक पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं।

प्रश्न :- उपचार भी चलता रहे और औषधि की पुस्तक भी पढ़ता रहे अर्थात् नाम भी जपता रहे, वेदों को भी पढ़ता रहे, इसमें क्या हानि है?

उत्तर :- हानि तो नहीं है परंतु बुद्धिमता भी नहीं है।

जैसे वैद्य (डॉक्टर) ने औषधि की पुस्तकों को पढ़ा। उसका नुस्खा तैयार कर लिया। उस नुस्खे (Formula) से रोग कटेगा। रोगी नुस्खा तैयार भी नहीं कर सकता। फिर उस पुस्तक में माथा मारने से क्या तात्पर्य है? मूर्खता का प्रमाण है।

इसी प्रकार संत-सतगुरू ने सर्व वेदों से नाम रूपी नुस्खा तैयार कर रखा है। भक्त सतगुरू से वह नाम साधना प्राप्त करके जाप करे। उसको वेदों को पढ़ने की क्या आवश्यकता रह जाती है? कुछ नहीं।

अन्य उदाहरण :- जैसे इन्जीनियर ने मोटर साईकिल का नुस्खा तैयार किया। कंपनी ने मोटर साईकिल बना दी। आप जी मोटर साईकिल मोल लो, उसे चलाना सीखो और सफर करो। कोई कहे कि मोटर साईकिल भी चलाता रहे और मोटर साईकिल बनाने की विधि वाली पुस्तक भी पढ़ता रहे तो क्या हानि है? उत्तर होगा मूर्खता है। यदि पुस्तक पढ़ लेगा तो भी मोटर साईकिल बना नहीं सकता। फिर किसलिए नाम जाप करना चाहिए? किसी ग्रन्थ के पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं है।

अब उसी प्रश्न का उत्तर आगे बढ़ाते हैं कि उस परमेश्वर (परम अक्षर ब्रह्म) को कैसे प्राप्त कर सकेंगे? सर्व वेदों तथा श्रीमद् भगवत गीता से लिए गए नामों के जाप का महामंत्र तैयार किया गया है। उसकी भक्ति साधना करके जीव परम अक्षर ब्रह्म तक जा सकेगा। अब पढ़ें निम्न विस्तृत ज्ञान कि ''कैसे मिलेगा भगवान।''

जीव मानव शरीर के हृदय कमल में रहता है। मानव शरीर में त्रिकुटि से पहले पाँच कमल बने हैं जो रीढ़ की हड्डी के साथ-साथ पेट की ओर बने हैं। इन कमलों में क्रमशः नीचे से :-

1. मूल कमल = इसमें गणेश जी का निवास है।
2. स्वाद कमल = इसमें सावित्री तथा ब्रह्मा जी का निवास है।
3. नाभि कमल = इसमें लक्ष्मी तथा विष्णु जी का निवास है।
4. हृदय कमल = इसमें पार्वती तथा शिव जी का निवास है।
5. कण्ठ कमल में दुर्गा जी का निवास है।
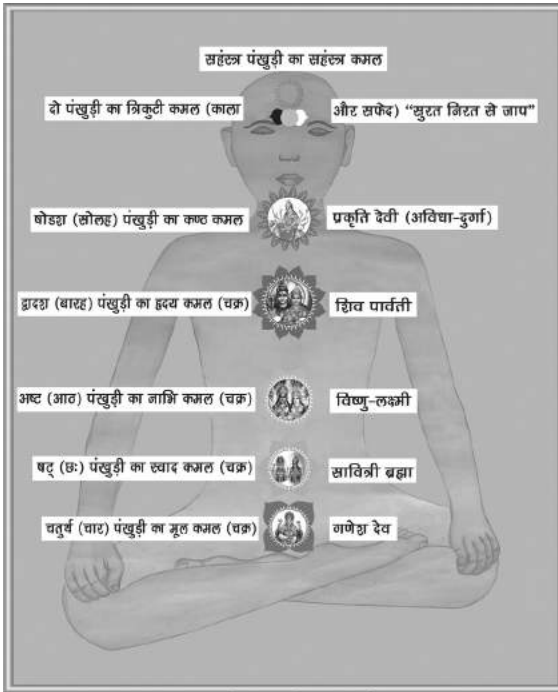
शरीर (पिण्ड) में कमलों (चक्रों) का चित्र

सर्वप्रथम हमने इन कमलों के देवताओं से ऋण-मुक्त होना है। इनके नाम मन्त्रों की साधना अर्थात् मजदूरी करनी है जिससे ये देवता हमें आगे जाने देंगे। हृदय कमल से जीव नीचे मूल कमल में जाएगा, फिर वहाँ से स्वाद कमल में, फिर नाभि कमल में, फिर हृदय कमल में, फिर कण्ठ कमल में जाएगा। इसके पश्चात् त्रिकुटि कमल में जीव जाएगा। त्रिकुटि कमल पर तीन रास्ते हो जाते हैं, उसे त्रिवेणी कहते हैं।

विशेष :- कई संत कहते हैं कि ''हमें नीचे की भक्ति करने की आवश्यकता नहीं है। हम तो सीधे त्रिकुटी में ध्यान लगाते हैं।'' यह कहना बच्चों जैसी बात है। त्रिकुटी बरवाला का बस स्टैंड नहीं है। पैदल जाओ, चाहे साईकिल पर चढ़कर पहुँच जाओ। त्रिकुटी पर जाने से पहले बहुत बैरियर हैं, उनको पार करके त्रिकुटी पर जाया जाएगा। ध्यान लगाने से त्रिकुटी में नहीं जाया जा सकता। उसके लिए सर्व कमलों से होकर जाना पड़ेगा, तब त्रिकुटी में पहुँचेगा। यदि ध्यान लगा ले कि दिल्ली के पंजाबी बाग जाऊँगा। उससे पंजाबी बाग नहीं जाया जाएगा। उसके लिए बरवाला से हाँसी, हाँसी से दिल्ली की बस में बैठकर जाया जाएगा। इसी प्रकार त्रिकुटी में जाया जाएगा। दूसरे शब्दों में त्रिकुटी को अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा जानें। आप स्वदेश आना चाहोगे तो देश की सरकार से कोई उधार शेष नहीं का प्रमाण (No Due Certificate) लेना पड़ेगा। प्रत्येक विभाग से लिखवाना पड़ेगा। यदि आपका लेन-देन शेष नहीं होगा तो तुरंत No Due Certificate बन जाएगा। फिर पासपोर्ट वास्तविक हो, तब अंतर्राष्ट्रीय अड्डे पर जाया जाएगा। इसी प्रकार इन सर्व कमलों अर्थात् कार्यालयों में बैठे देवताओं अर्थात् साहबों से कोई बकाया नहीं का प्रमाण पत्र लेकर जीव त्रिकुटी पर जा सकेगा।

2. त्रिवेणी से आगे चलने के लिए "सत्यनाम" के जाप की साधना की कमाई की अवश्यकता पड़ेगी। सत्यनाम दो अक्षर का है। एक ओम् (ॐ) नाम जाप है जो

क्षर पुरूष का है। दूसरा तत् मन्त्र है, यह सांकेतिक है जो उपदेशी को ही बताया जाता है।

❖ **सन्तों की वाणी मे कहा है :-**

सोई गुरू पूरा कहावै, जो दो अक्षर का भेद बतावै।
एक छुड़ावै एक लखावै, तो प्राणी निज घर को जावै।।

सिख गुरू, गुरू नानक देव साहेब जी ने कहा है :-

जे तू पढ़या पंडित, बिन दो अक्षर बिन दोय नावां।
प्रणवति नानक एक लंघावे, जेकर सच्च समावाँ।।

परमेश्वर कबीर जी की वाणी गुरू ग्रन्थ साहेब जी में लिखी है :-

कह कबीर अक्षर दोय भाख, होगा खसम तो लेगा राख।

❖ **जब आप त्रिकुटि पर पहुँचेंगे तो इस दास (लेखक) के रूप में परमेश्वर मिलेंगे। वे आपको धर्मराज के दरबार में ले जाऐंगे, जो बांई ओर वाले रास्ते में है। धर्मराज अर्थात् काल ब्रह्म के न्यायधीश के सामने परमेश्वर गुरू रूप धारण करके वकील की भूमिका करेंगे। हमारे वेद तथा गीता परमात्मा का संविधान है। परमेश्वर धर्मराज को गीता अध्याय 18 श्लोक 66 को दिखाएगा जिस में लिखा है। गीता ज्ञान दाता ब्रह्म ने कहा है कि :-**

सर्व धर्मान् परित्यज माम्, एकम् शरण व्रज।
अहम् त्वा सर्व पापेभ्यः मोक्षयिष्यामि मा शुच।।

सरलार्थ :- ब्रह्म ने कहा कि मेरी भक्ति की सर्व कमाई मुझे छोड़कर तू उस एकम् जिसके समान अन्य नहीं है, की शरण में (व्रज) जा। मैं तेरे को सर्व पापों से मुक्त कर दूँगा, तू शोक मत कर। (गीता अध्याय 18 श्लोक 66)

वहाँ पर सत्यनाम के दो अक्षरों में जो ऊँ नाम की कमाई अर्थात् ओम् जाप का भक्ति धन धर्मराज के दरबार में जमा करा दिया जाएगा। फिर वहाँ से आगे चलेंगे। त्रिवेणी में जो मध्य का रास्ता है, यह ब्रह्मरन्द्र है, यह सत्यनाम के दूसरे मन्त्र से खुलता है।

सत्यनाम के पश्चात् सारनाम भी साधक को प्रदान किया जाता है जो परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् सत्य पुरूष का मन्त्र है। जैसा गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में कहा है कि सचिदानन्द घन ब्रह्म अर्थात् सत्य पुरूष की प्राप्ति का तीन अक्षर का मन्त्र है :- ओम् (ऊँ), तत्, सत्।

❖ **''ॐ'' नाम ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरूष का है।**

❖ **''तत्'' मन्त्र यह सांकेतिक है, यह अक्षर पुरूष का नाम-जाप है।**

❖ **''सत्'', यह सारनाम कहलाता है, सांकेतिक है, उपदेशी को बताया जाता है। यह परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् सत्य पुरूष का नाम जाप है।**

❖ **जब आप इक्कीशवें ब्रह्माण्ड के अन्त में पहुँचोगे तो आपके साथ परमेश्वर मुझ दास (संत रामपाल) के रूप में चलेंगे, वहाँ ग्यारहवां द्वार है। वह ''तत्'' नाम से खुलेगा। फिर अक्षर पुरूष के 7 शंख ब्रह्माण्ड वाले क्षेत्र में प्रवेश**

कर जाऐंगे। सत्यनाम के "तत्" मन्त्र की भक्ति कमाई वहाँ के न्यायधीश के दरबार में जमा कराके "सत्" मन्त्र अर्थात् सारनाम की शक्ति से बारहवाँ द्वार खुलेगा, उस सारनाम की कमाई हम सत्यलोक में लेकर जाऐंगे, यह भक्ति की शक्ति ही हमें सत्यलोक लेकर जाएगी। सारनाम की भक्ति की कमाई अनन्त गुणा सत्यलोक में बढ़ जाएगी, यह परमेश्वर की कृपा होगी। वहाँ हमारा, आपका अपना घर (महल) मिलेगा, वहाँ आपका फिर से परिवार जुड़ जाएगा जैसे यहाँ परिवार बन गया। फिर वहाँ पर कभी जरा अर्थात् वृद्धावस्था नहीं होगी, कभी मृत्यु नहीं होगी। वहाँ पर किसी वस्तु का अभाव नहीं है।

यह वह स्थान है जो गीता अध्याय 18 श्लोक 62 तथा अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि हे अर्जुन! तू सर्वभाव से उस परमेश्वर की शरण में जा, उस परमेश्वर की कृपा से ही तू परम शान्ति को तथा सनातन परम धाम अर्थात् सत्यलोक (सत्लोक) को प्राप्त होगा। (गीता अध्याय 18 श्लोक 62)

तत्वदर्शी सन्त मिलने के पश्चात् परमेश्वर के उस परमपद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आता। (गीता अध्याय 15 श्लोक 4)

❖ भक्ति से भगवान तक पहुँचने के लिए मध्यस्थ की आवश्यकता पड़ती है, जिसे मार्गदर्शक या गुरू, सतगुरू कहते हैं।

प्रश्न :- क्या गुरू के बिना भक्ति नहीं कर सकते?

उत्तर :- भक्ति कर सकते हैं, परन्तु व्यर्थ प्रयत्न रहेगा।

प्रश्न :- कारण बताऐं?

उत्तर :- परमात्मा का विधान है जो सूक्ष्मवेद में कहा है :-

कबीर, गुरू बिन माला फेरते, गुरू बिन देते दान।
गुरू बिन दोंनो निष्फल है, पूछो वेद पुराण।।
कबीर, राम कृष्ण से कौन बड़ा, उन्हों भी गुरू कीन्ह।
तीन लोक के वे धनी, गुरू आगे आधीन।।
कबीर, राम कृष्ण बड़े तिन्हूं पुर राजा।
तिन गुरू बन्द कीन्ह निज काजा।।

भावार्थ :- गुरू धारण किए बिना यदि नाम जाप की माला फिराते हैं और दान देते हैं, वे दोनों व्यर्थ हैं। यदि आप जी को संदेह हो तो अपने वेदों तथा पुराणों में प्रमाण देखें।

श्रीमद् भगवत गीता चारों वेदों का सारांश है। गीता अध्याय 2 श्लोक 7 में अर्जुन ने कहा कि हे श्री कृष्ण! मैं आपका शिष्य हूँ, आपकी शरण में हूँ। गीता अध्याय 4 श्लोक 3 में श्री कृष्ण जी में प्रवेश करके काल ब्रह्म ने अर्जुन से कहा कि तू मेरा भक्त है। पुराणों में प्रमाण है कि श्री रामचन्द्र जी ने ऋषि वशिष्ठ जी से नाम दीक्षा ली थी और अपने घर व राज-काज में गुरू वशिष्ठ जी की आज्ञा लेकर कार्य करते थे। श्री कृष्ण जी ने ऋषि संदीपनि जी से अक्षर ज्ञान प्राप्त किया

तथा श्री कृष्ण जी के आध्यात्मिक गुरू श्री दुर्वासा ऋषि जी थे।

कबीर परमेश्वर जी हमें समझाना चाहते हैं कि आप जी श्री राम तथा श्री कृष्ण जी से तो किसी को बड़ा अर्थात् समर्थ नहीं मानते हो। वे तीन लोक के मालिक थे, उन्होंने भी गुरू बनाकर अपनी भक्ति की, जीवन सफल किया। इससे सहज में ज्ञान हो जाना चाहिए कि अन्य व्यक्ति यदि गुरू के बिना भक्ति करता है तो कितना सही है? अर्थात् व्यर्थ है।

❖ **गुरू के बिना देखा-देखी कही-सुनी भक्ति को लोकवेद के अनुसार भक्ति कहते हैं। लोकवेद का अर्थ है, किसी क्षेत्र में प्रचलित भक्ति का ज्ञान जो तत्वज्ञान के विपरीत होता है। लोकवेद के आधार से यह दास (संत रामपाल दास) श्री हनुमान जी, बाबा श्याम जी, श्री राम, श्री कृष्ण, श्री शिव जी तथा देवी-देवताओं की भक्ति करता था। हनुमान जी की भक्ति में मंगलवार का व्रत, बुन्दी का प्रसाद बाँटना, स्वयं देशी घी का गिच चुरमा खाता था, बाबा हनुमान को डालडा वनस्पति घी से बनी बुन्दी का भोग लगाता था। हरे राम, हरे कृष्ण, कृष्ण-कृष्ण हरे-हरे का मन्त्र जाप करता था। किसी ने बता दिया कि :-**

ओम् सबसे बड़ा है, इससे बड़ा न कोय।
ऊँ नाम का जाप करे, तो शुद्ध आत्मा होय।।

इस कारण से ओम् नाम का जाप शुरू कर दिया। ओम् नमो शिवायः, यह शिव का मन्त्र जाप करता था। ओम् नमो भगवते वासुदेवायः नमः, यह विष्णु जी का जाप करता था। तीर्थों पर जाना, दान करना, वहाँ स्नान करना, यह भी लोकवेद के आधार से करने जाता था।

जैसे घर में सुख होते थे तो मैं मानता था कि ये सब मेरी उपरोक्त भक्ति के कारण हो रहे हैं। जैसे कक्षा में पास होना, विवाह होना, पुत्र तथा पुत्रियाँ का जन्म होना, नौकनी लगना। ये सर्व सुख उपरोक्त साधना से ही मानता था। कबीर परमेश्वर जी ने सूक्ष्म वेद में कहा है :-

कबीर, पीछे लाग्या जाऊं था, मैं लोक वेद के साथ।
रास्ते में सतगुरू मिले, दीपक दीन्हा हाथ।।

भावार्थ है कि साधक लोकवेद अर्थात् दन्त कथा के आधार से भक्ति कर रहा था। उस शास्त्रविरूद्ध साधना के मार्ग पर चल रहा था। रास्ते में अर्थात् एक दिन तत्वदर्शी सन्त भक्ति के मार्ग पर मिल गए। उन्होंने शास्त्रविधि अनुसार शास्त्र प्रमाणित साधना रूपी दीपक दे दिया अर्थात् सत्य शास्त्रानुकूल साधना का ज्ञान कराया तो जीवन नष्ट होने से बच गया। सतगुरू द्वारा बताये तत्वज्ञान की रोशनी में पता चला कि मैं गलत भक्ति कर रहा था। श्री मद्भगवत गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में कहा है कि शास्त्र विधि को त्यागकर जो साधक मनमाना आचरण करते हैं, उनको न तो सुख होता है, न सिद्धि प्राप्त होती है और न ही गति अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति होती है अर्थात् व्यर्थ साधना है। फिर गीता अध्याय 16 श्लोक 24 में कहा है कि अर्जुन! इससे तेरे लिए कृर्तव्य और अकृर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र

ही प्रमाण हैं।

जो उपरोक्त साधना यह दास (संत रामपाल दास) तथा पूरा हिन्दू समाज कर रहा है, वह सब गीता-वेदों में वर्णित न होने से शास्त्र विरूद्ध साधना हुई जो व्यर्थ है।

कबीर, गुरू बिन काहु न पाया ज्ञाना, ज्यों थोथा भुस छड़े मूढ़ किसाना।
कबीर, गुरू बिन वेद पढ़ै जो प्राणी, समझै न सार रहे अज्ञानी।।

इसलिए गुरू जी से वेद शास्त्रों का ज्ञान पढ़ना चाहिए जिससे सत्य भक्ति की शास्त्रानुकूल साधना करके मानव जीवन धन्य हो जाए।

उदाहरण :- गुरू जी से दीक्षा लेकर भक्ति करना लाभदायक है। बिना गुरू के भक्ति करने से कोई लाभ नहीं होता।

उदाहरण :-

❖ एक राजा की रानी बहुत धार्मिक थी। उसने परमेश्वर कबीर जी से गुरू दीक्षा ले रखी थी। वह प्रतिदिन गुरू दर्शन के लिए जाया करती थी। राजा को यह अच्छा नहीं लगता था, परंतु वह अपनी पत्नी को वहाँ जाने से रोक नहीं पा रहा था। कारण, एक तो वह उस बड़े शक्तिशाली राजा की लड़की थी, दूसरे वह अपनी पत्नी को प्रसन्न देखना चाहता था।

एक दिन राजा ने अपनी पत्नी से कहा कि आप नाराज न हो तो बात कहूँ? रानी ने कहा कहो। राजा ने कहा कि आप अपने गुरू के पास जाती हैं, भक्ति तो गुरू के बिना भी हो सकती है। रानी ने कहा कि गुरू जी ने बताया है कि गुरू के बिना भक्ति करना व्यर्थ है। राजा ने कहा कि मैं तेरे साथ कल तेरे गुरू जी से मिलूँगा, उनसे यह बात स्पष्ट करूँगा।

राजा ने सन्त जी से प्रश्न किया कि आप जनता को मूर्ख बना रहे हो कि गुरू बिन भक्ति नहीं होती, क्यों नही होती भक्ति सफल? नाम मन्त्र जाप करने होते हैं। एक-दूसरे से पूछकर जाप कर लें, पर्याप्त है। सन्त ने कहा राजन्! आपकी बात में दम है, मैं आपके राज दरबार में आऊँगा। वहाँ इस बात का उत्तर दूँगा। निश्चित दिन को सन्त जी राजा के दरबार में गए। राजा सिंहासन पर विराजमान था, आस-पास सिपाही खड़े थे। संत के बैठने के लिए अलग से कुर्सी रखी थी। सन्त ने जाते ही आस-पास खड़े सिपाहियों से राजा की ओर हाथ करके कहा कि इसे गिरफ्तार कर लो। सिपाही टस से मस नहीं हुए। सन्त ने लगातार तीन बार यही वाक्य, आदेश दोहराया कि इसे गिरफ्तार कर लो, परन्तु राजा को सिपाहियों ने गिरफ्तार नहीं किया।

राजा को सन्त पर क्रोध आया कि यह कमबख्त मेरी पत्नी को इसलिए बहका रहा था कि इसके राज्य को प्राप्त कर लूँ। राजा ने एक बार कहा कि सिपाहियो इसे गिरफ्तार कर लो। राजा के हाथ का सन्त की ओर संकेत था। उसी समय सिपाहियों ने सन्त को गिरफ्तार कर लिया।

सन्त ने कहा कि हे राजन्! आप घर पर बुलाकर सन्त का अनादर कर रहे

हो, यह अच्छी बात नहीं। राजा ने कहा आप यह क्या बकवास कर रहे थे। मुझे गिरफ्तार करने का आदेश दे रहे थे। सन्त ने कहा मैं आपके उस प्रश्न का उत्तर दे रहा था कि गुरू से दीक्षा लेकर भक्ति करना क्यों लाभदायक है? मुझे छुड़ाओ तो मैं आपको उत्तर दूँ। राजा ने सिपाहियों से कहा कि छोड़ दो। सिपाहियों ने सन्त को छोड़ दिया। सन्त ने कहा कि हे राजा जी! मैंने यही वाक्य कहा था, "इसे गिरफ्तार कर लो।" सिपाही टस से मस नहीं हुए। आप जी ने भी यही वाक्य कहा था कि तुरंत सिपाहियों ने मुझे गिरफ्तार कर लिया। आपके वचन में राज की शक्ति है। मेरे वचन में आध्यात्मिक शक्ति है। आप उसी नाम-जाप के लिए किसी को भक्ति के लिए कहोगे तो वह मन्त्र कोई कार्य नहीं करेगा। मैं वही नाम जाप करने को कहूँगा, वह तुरन्त प्रभाव से क्रियावान होगा। इसलिए पूर्ण सन्त से दीक्षा लेने से साधक में तुरंत आध्यात्मिक प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है, उसकी आत्मा में भक्ति का अंकुर निकल आता है। सूक्ष्म वेद में कहा है कि:-

सतगुरू पशु मानुष करि डारै, सिद्धि देय कर ब्रह्म बिचारें।

भावार्थ :- सतगुरू पहले मनुष्य को सत्संग सुना-सुनाकर नेक इंसान बनाते हैं, सर्व बुराईयों को छुड़वाते हैं। फिर अपनी भक्ति की सिद्धी अर्थात् शक्ति शिष्य के अन्तःकरण में शब्द से प्रवेश करके ब्रह्म अर्थात् परमात्मा की साधना करने के विचार प्रबल करते हैं जिससे साधक की रूचि भक्ति में दिनों-दिन बढ़ती है। इसलिए कहा है कि :-

कबीर, गुरू बिन माला फेरते, गुरू बिन देते दान।
गुरू बिन दोनों निष्फल हैं, चाहे पूछो बेद पुराण।।
योग, यज्ञ तप दान करावै, गुरू विमुख फल कभी नहीं पावै।।

भावार्थ :- गुरू बिन नाम जाप की माला फिराते हैं या दान देते हैं, वह व्यर्थ है। यह वेदों तथा पुराणों में भी प्रमाण है। फिर अन्तिम चौपाई का भावार्थ है कि यदि दीक्षा लेकर फिर गुरू को छोड़कर उन्हीं मन्त्रों का जाप करता रहे तथा यज्ञ, हवन, दान भी करता रहे, वह भी व्यर्थ है। उसको कोई लाभ नहीं होगा।

कबीर, तांते सतगुरू शरणा लीजै, कपट भाव सब दूर करिजै।

अन्य प्रमाण :-

कबीर, गर्भयोगेश्वर गुरू बिना, करते हरि की सेव।
कहैं कबीर बैकुंठ से, फेर दिया सुखदेव।।
राजा जनक गुरू किया, फिर किन्ही हर की सेव।
कहैं कबीर बैंकुठ में, चले गए सुखदेव।।

भावार्थ :- ऋषि वेदव्यास जी के पुत्र सुखदेव जी अपने पूर्व जन्म की भक्ति की शक्ति से उड़कर स्वर्ग में चले जाते थे। एक दिन वे श्री विष्णु जी के लोक में बने स्वर्ग में प्रवेश करने लगे। वहाँ के कर्मचारियों ने ऋषि सुखदेव जी से स्वर्ग द्वार पर पूछा कि ऋषि जी अपने पुज्य गुरूजी का नाम बताओ। सुखदेव जी ने कहा कि गुरू की क्या अवश्यक्ता है? अन्य गुरू धारण करके यहाँ आए हैं, मेरे में स्वयं

इतनी शक्ति है कि मैं बिना गुरू के आ गया हूँ। द्वारपालों ने बताया ऋषि जी यह आपकी पूर्व जन्म में संग्रह की हुई भक्ति की शक्ति है। यदि फिर से गुरू धारण करके भक्ति नहीं करोगे तो पूर्व की भक्ति कुछ दिन ही चलेगी। आपका मानव जीवन नष्ट हो जाएगा।

उदाहरण के लिए :- वर्तमान में इन्वर्टर की बैट्री को चार्जर लगाकर चार्ज कर रखा है। यदि चार्जर हटा दिया जाए तो भी इन्वर्टर अपना कार्य करता रहेगा क्योंकि उसमें ऊर्जा संग्रह हो चुकी है। कुछ समय पश्चात् वह सर्व कार्य करना छोड़ देता है, न ट्यूब जगेंगी, न पँखा चलेगा। उसको फिर से चार्ज करना अनिवार्य है। उसके लिए चार्जर चाहिए। चार्जर गुरू जानो, बिजली परमेश्वर जानो।

ऋषि सुखदेव में अपनी सिद्धि का अभिमान था, वह नहीं माना। बात भगवान विष्णु जी तक पहुँच गई। श्री विष्णु जी ने भी यह बात कही कि ऋषि जी पहले आप गुरू बनाओ, फिर यहाँ आओ। सुखदेव जी ने कहा भगवान पृथ्वी लोक पर मेरे समान कोई नहीं है, न कोई ढ़ंग का गुरू है। कृपा आप ही बताऐं कि मैं किसको गुरू बनाऊँ? श्री विष्णु जी ने बताया कि आप राजा जनक को गुरू बनाओ। यह कहकर श्री विष्णु जी अपने महल में चले गए। सुखदेव ऋषि वापिस पृथ्वी पर आए। राजा जनक से दीक्षा लेकर उनके बताए भक्ति मन्त्रों का जाप किया, तब ऋषि सुखदेव जी को स्वर्ग में रहने दिया। इसलिए गुरू बनाकर भक्ति करने से ही सफलता सम्भव है। बिना गुरू भक्ति, दान, आदि-आदि करना व्यर्थ है।

❖ गुरू पूरा हो, झूठे गुरू से कोई लाभ नहीं होता।

प्रश्न :- पूरे गुरू की क्या पहचान है? हम तो जिस भी सन्त से ज्ञान सुनते हैं, वह पूर्ण सतगुरू लगता है।

उत्तर :- सूक्ष्मवेद में गुरू के लक्षण बताए हैं :-

गरीब, सतगुरू के लक्षण कहूँ, मधुरे बैन विनोद।
चार वेद छः शास्त्र, कह अठारह बोध।।

सन्त गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी जिला-झज्जर, हरियाणा) को परमेश्वर कबीर जी मिले थे। उनकी आत्मा को ऊपर अपने सत्यलोक (सनातन परम धाम) में लेकर गए थे। ऊपर के सर्व लोकों का अवलोकन कराकर वापिस पृथ्वी पर छोड़ा था। उनको सम्पूर्ण आध्यात्म ज्ञान बताया था। उनका ज्ञानयोग परमेश्वर कबीर जी ने खोला था। उसके आधार से सन्त गरीबदास जी ने गुरू की पहचान बताई है कि जो सच्चा गुरू अर्थात् सतगुरू होगा, वह ऐसा ज्ञान बताता है कि उसके वचन आत्मा को आनन्दित कर देते हैं, बहुत मधुर लगते हैं क्योंकि वे सत्य पर आधारित होते हैं। कारण है कि सतगुरू चार वेदों तथा सर्व शास्त्रों का ज्ञान विस्तार से कहता है।

यही प्रमाण परमेश्वर कबीर जी ने सूक्ष्मवेद में "अगम-निगम वेद बोध'' अध्याय कबीर सागर में कहा है" :-

गुरू के लक्षण चार बखाना, प्रथम वेद शास्त्र को ज्ञाना।।
दुजे हरि भक्ति मन कर्म बानि, तीजे समदृष्टि करि जानी।।

चौथे वेद विधि सब कर्मा, ये चार गुरू गुण जानों मर्मा।।

सरलार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि जो सच्चा गुरू होगा, उसके चार मुख्य लक्षण होते हैं :-

1. सब वेद तथा शास्त्रों को वह ठीक से जानता है।

2. दूसरे वह स्वयं भी भक्ति मन-कर्म-वचन से करता है अर्थात् उसकी कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं होता।

3. तीसरा लक्षण यह है कि वह सर्व अनुयाईयों से समान व्यवहार करता है, भेदभाव नहीं रखता।

4. चौथा लक्षण यह है कि वह सर्व भक्ति कर्म वेदों (चार वेद तो सर्व जानते हैं 1. ऋग्वेद, 2. यजुर्वेद, 3. सामवेद, 4. अथर्ववेद तथा पाँचवां वेद सूक्ष्मवेद है, इन सर्व वेदों) के अनुसार करता और कराता है।

❖ वेदों (चारों वेदों ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद) में केवल ओम् = ॐ यह एक नाम है जाप करने का।

प्रमाण = यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 15 तथा 17 में।

मन्त्र 15 में कहा है कि ओम् (ॐ) नाम का स्मरण कार्य करते-करते करो, विशेष तड़फ के साथ करो, मनुष्य जीवन का परम कर्त्तव्य मानकर स्मरण करो, ॐ का जाप मृत्यु पर्यन्त करने से इतना अमरत्व प्राप्त हो जाएगा जितना ॐ के स्मरण से होता है। (यजुर्वेद 40/15)

❖ यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 17 में वेद ज्ञान दाता ब्रह्म ही है। कहा है कि जो पूर्ण परमात्मा है, वह तो परोक्ष है। वह सबकी दृष्टि में नहीं आता। (उसकी जानकारी यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 10 में बताई है कि उसका यथार्थ ज्ञान तत्वदर्शी सन्त ही जानते हैं, उनसे सुनो) फिर यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 17 में आगे कहा है कि मैं ब्रह्म हूँ। मेरा ओम् = ॐ नाम है। मैं ऊपर दिव्य आकाश रूपी ब्रह्म लोक में रहता हूँ। (यजुर्वेद 40/17)

यही प्रमाण श्री देवी महापुराण :- (गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, सचित्र मोटा टाईप केवल हिन्दी) के सातवें स्कंद में पृष्ठ 562-563 पर श्री देवी जी ने राजा हिमालय को बताया है कि राजन्! आप यदि आत्म-कल्याण चाहते हो तो मेरी भक्ति सहित सर्व बातों को छोड़ दो, केवल एक ॐ नाम का जाप करो, ब्रह्म प्राप्ति का उद्देश्य रखो। इससे आप ब्रह्म को प्राप्त हो जाओगे, वह ब्रह्म ब्रह्मलोक रूपी दिव्य आकाश में रहता है। इससे स्पष्ट हुआ कि वेदों मे केवल एक "ओम्" नाम ही जाप का है। श्रीमद् भगवत गीता जो वेदों का सारांश है, उसमें अध्याय 8 श्लोक 13 में कहा है :-

ओम् इति एकाक्षरम् ब्रह्म व्याहरन् माम् अनुस्मरन्।
यः प्रयाति त्वजन् देहम् सः याति परमाम् गतिम्।।

अनुवाद :- गीता ज्ञान दाता ब्रह्म ने कहा है कि मुझ ब्रह्म का केवल ओम = ॐ, यह एक अक्षर है, इसका उच्चारण-स्मरण करता हुआ जो साधक शरीर

त्यागकर जाता है, वह मृत्यु उपरान्त ॐ नाम के स्मरण से मिलने वाली परम गति अर्थात् ब्रह्म लोक को प्राप्त होता है।

श्री मद्भगवत गीता तथा वेदों में इसके अतिरिक्त अर्थात् "ओम्" = ॐ के अतिरिक्त कोई नाम ब्रह्म साधना का नहीं है।

प्रमाणित हुआ कि ॐ = ओम् नाम का जाप शास्त्र प्रमाणित है।

❖ गीता ज्ञान दाता ने स्पष्ट किया है कि अर्जुन! तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं, आगे भी होंगे। मेरी उत्पत्ति को ऋषि तथा देवतागण नहीं जानते। (गीता अध्याय/श्लोक 2/12, 4/5, 10/2)

इससे सिद्ध हुआ कि गीता ज्ञान दाता ब्रह्म नाशवान है तथा जन्मता-मरता है। इसके पुजारी भी जन्म-मरण के चक्र में ही रहेंगे। इसलिए गीता अध्याय 8 श्लोक 16 में कहा है कि ब्रह्म लोक में गए साधक भी पुनर्जन्म में रहते हैं। इसलिए गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है कि हे भारत! तू सर्वभाव से उस परमेश्वर की शरण में जा, उस परमेश्वर की कृपा से ही तू परमशान्ति तथा सनातन परम धाम अर्थात् सत्यलोक को प्राप्त होगा।

❖ फिर गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि जब तत्वदर्शी सन्त से तत्वज्ञान प्राप्त हो जाए, उसके बताए अनुसार साधना करके उसके पश्चात् परमेश्वर के उस परम पद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आते। केवल उस परमेश्वर की पूजा करो।

गीता अध्याय 7 श्लोक 29 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है :-

जरा मरण मोक्षाय माम् आश्रित्य यतन्ति ये।
ते तत् ब्रह्म विदुः कृतस्नम् अध्यात्मम् कर्म च अधिलम्।।

भावार्थ :- गीता ज्ञान दाता ने बताया है कि जो मेरे बताए ज्ञान पर आश्रित होकर अर्थात् मेरे कहे अनुसार तत्वदर्शी संतों से तत्वज्ञान जान लेते हैं। जो जरा अर्थात् वृद्धावस्था तथा मृत्यु के कष्ट से मोक्ष प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करते हैं। संसार की किसी कीमती वस्तु की इच्छा भक्ति के प्रतिफल में नहीं करते हैं। वे (तत् ब्रह्म विदुः) उस ब्रह्म को संपूर्ण आध्यात्म को और सर्व कर्मों को जानते हैं।

❖ अर्जुन ने गीता अध्याय 8 श्लोक 1 में पूछा कि "तत् ब्रह्म" क्या है? इसका उत्तर गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 8 के ही श्लोक 3 में दिया है। कहा है कि वह "परम अक्षर ब्रह्म" है।

❖ गीता अध्याय 8 श्लोक 5 तथा 7 में तो गीता ज्ञान दाता ने अपनी भक्ति करने को कहा है और विश्वास दिलाया है कि मेरी भक्ति से मुझे प्राप्त होगा, मेरी भक्ति से जन्म-मरण, कर्म चक्र बना रहेगा, युद्ध भी करना पड़ेगा, परमशान्ति नहीं हो सकती।

❖ फिर गीता ज्ञान दाता ने तुरन्त गीता अध्याय 8 श्लोक 8, 9, 10 में कहा है कि ''तत् ब्रह्म'' अर्थात् "परम अक्षर ब्रह्म" की भक्ति करने वाला उस

सचिदानन्द घन ब्रह्म अर्थात् मेरे से दूसरे दिव्य परमेश्वर को प्राप्त होगा।

❖ इसी प्रकार परम अक्षर ब्रह्म की महिमा गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में बताई है। गीता अध्याय 15 श्लोक 16 में दो पुरूष बताए हैं, एक क्षर पुरूष। यह गीता ज्ञान दाता है जिसका 21 ब्रह्मण्ड का क्षेत्र है। यह गीता ज्ञान दाता ब्रह्म है।

दूसरा अक्षर पुरूष बताया है जिसका 7 शंख ब्रह्माण्ड का क्षेत्र है। ये दोनों नाशवान बताऐं हैं। इनके लोकों में सर्व जीव भी नाशवान बताए हैं:-

गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में बताया है कि :-

उत्तम पुरूषः तू अन्यः परमात्मा इति उदाहृतः
य: लोक त्रयम् आविश्य विभर्ति अव्ययः ईश्वरः

अनुवाद :- उत्तम पुरूष = पुरूषोत्तम अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म तो ऊपर वर्णित क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष से अन्य है जो परमात्मा कहा जाता है जो तीनों लोकों {क्षर पुरूष के 21 ब्रह्माण्डों के क्षेत्र वाला लोक, दूसरा अक्षर पुरूष के 7 शंख ब्रह्माण्डों वाला लोक, तीसरा ऊपर के चार लोकों (सत्यलोक, अलख लोक, अगम लोक तथा अनामी लोक) इस प्रकार बने तीनों लोकों} में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है, वह वास्तव में अविनाशी परमेश्वर है।

❖ गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में इस परम अक्षर ब्रह्म की प्राप्ति के मन्त्र बताए हैं :-

ऊँ तत् सत् इति निर्देशः ब्रह्मणः त्रिविधः स्मृतः।
ब्राह्मणाः तेन वेदाः यज्ञाः च विहिता पुरा।।

ब्रह्मणः = सच्चिदानन्द घन ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म की भक्ति की साधना के अर्थात् परमेश्वर के उस परमपद को प्राप्त करने के मन्त्र बताए हैं, जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आते हैं। जहाँ परम शान्ति को प्राप्त होते हैं जो सनातन परम धाम है।

ऊँ = "ब्रह्म" अर्थात् "क्षर पुरूष" का मन्त्र है जो प्रत्यक्ष है।

तत् = यह "अक्षर पुरूष" का जाप मन्त्र है। यह मन्त्र सांकेतिक है, वास्तविक मन्त्र सूक्ष्मवेद में बताया है। यह मन्त्र दीक्षा के समय दीक्षार्थी को सार्वजनिक किया जाता है, अन्य को नहीं बताया जाता।

सत् = यह "परम अक्षर पुरूष" की साधना का मन्त्र है। यह भी सांकेतिक है। दीक्षार्थी को दीक्षा के समय बताया जाता है। यथार्थ मन्त्र सूक्ष्मवेद में लिखा है। यही प्रमाण सामवेद के मंत्र सँख्या 822 में भी है कि तीन नाम के जाप से पूर्ण मोक्ष प्राप्त होता है :-

संख्या न. 822 सामवेद उतार्चिक अध्याय 3 खण्ड न. 5 श्लोक न. 8(संत रामपाल दास द्वारा भाषा-भाष्य):-

मनीषिभिः पवते पूर्व्यः कविर्नृभिर्यतः परि कोशां असिष्यदत्।
त्रितस्य नाम जनयन्मधु क्षरन्निन्द्रस्य वायुं सख्याय वर्धयन्।।8।।

मनीषिभिः–पवते–पूर्व्यः–कविर्–नृभिः–यतः–परि–कोशान्–असिष्यदत्–त्रि–तस्य–

नाम—जनयन्—मधु—क्षरनः—न—इन्द्रस्य—वायुम्—सख्याय—वर्धयन्।

शब्दार्थ—(पूर्व्यः) सनातन अर्थात् अविनाशी (कविर नृभिः) कबीर परमेश्वर मानव रूप धारण करके अर्थात् गुरु रूप में प्रकट होकर (मनीषिभिः) हृदय से चाहने वाले श्रद्धा से भक्ति करने वाले भक्तात्मा को (त्रि) तीन (नाम) मन्त्र अर्थात् नाम उपदेश देकर (पवते) पवित्र करके (जनयन्) जन्म व (क्षरनः) मृत्यु से (न) रहित करता है तथा (तस्य) उसके (वायुम्) प्राण अर्थात् जीवन—स्वांसों को जो संस्कारवश गिनती के डाले हुए होते हैं को (कोशान्) अपने भण्डार से (सख्याय) मित्रता के आधार से (परि) पूर्ण रूप से (वर्धयन्) बढ़ाता है। (यतः) जिस कारण से (इन्द्रस्य) परमेश्वर के (मधु) वास्तविक आनन्द को (असिष्यदत्) अपने आशीर्वाद प्रसाद से प्राप्त करवाता है।

भावार्थ :- इस मन्त्र में स्पष्ट किया है कि पूर्ण परमात्मा कविर अर्थात् कबीर मानव शरीर में गुरु रूप में प्रकट होकर प्रभु प्रेमीयों को तीन नाम का जाप देकर सत्य भक्ति कराता है तथा उस मित्र भक्त को पवित्रकरके अपने आर्शिवाद से पूर्ण परमात्मा प्राप्ति करके पूर्ण सुख प्राप्त कराता है। साधक की आयु बढाता है। यही प्रमाण गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में है कि ओम्-तत्-सत् इति निर्देशः ब्रह्मणः त्रिविद्य स्मृतः भावार्थ है कि पूर्ण परमात्मा को प्राप्त करने का ॐ (1) तत् (2) सत् (3) यह मन्त्र जाप स्मरण करने का निर्देश है। इस नाम को तत्वदर्शी संत से प्राप्त करो। तत्वदर्शी संत के विषय में गीता अध्याय 4 श्लोक नं. 34 में कहा है तथा गीता अध्याय नं. 15 श्लोक नं. 1 व 4 में तत्वदर्शी सन्त की पहचान बताई तथा कहा है कि तत्वदर्शी सन्त से तत्वज्ञान जानकर उसके पश्चात् उस परमपद परमेश्वर की खोज करनी चाहिए। जहां जाने के पश्चात् साधक लौट कर संसार में नहीं आते अर्थात् पूर्ण मुक्त हो जाते हैं। उसी पूर्ण परमात्मा से संसार की रचना हुई है।

विशेष :- उपरोक्त विवरण से स्पष्ट हुआ कि पवित्र चारों वेद भी साक्षी हैं कि पूर्ण परमात्मा ही पूजा के योग्य है, उसका वास्तविक नाम कविर्देव (कबीर परमेश्वर) है तथा तीन मंत्र के नाम का जाप करने से ही पूर्ण मोक्ष होता है।

यह तीन मन्त्र का जाप चारों वेदों के सारांश श्री मद्भगवत गीता में प्रमाण है कि इससे वह स्थान प्राप्त होता है, जहाँ जाने के बाद साधक लौटकर कभी संसार में नहीं आते। जो सनातन परम धाम है, जहाँ जाने के पश्चात् परम शान्ति प्राप्त होती है।

वेदों व गीता में यह अनमोल तीन नाम का मन्त्र अस्पष्ट अर्थात् सांकेतिक है। इसलिए चारों वेदों व गीतानुसार साधना करने से वह स्थान व परमात्मा प्राप्त नहीं हो सकता। इसलिए गीता अध्याय 4 श्लोक 32 तथा 34 में गीता ज्ञान दाता ने स्पष्ट किया है कि यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों का यथार्थ ज्ञान (ब्रह्मणः मुखे) सच्चिदानन्द घन ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म अपने मुख-कमल से वाणी बोलकर बताता है, वह सच्चिदानन्द घन ब्रह्म की वाणी कही जाती है, उसे तत्वज्ञान तथा सूक्ष्म वेद भी कहते हैं। उसके जानने के पश्चात् सर्वपापों से मुक्त हो जाता है। जिसमें सम्पूर्ण भक्ति मन्त्र तथा विधि बताई है। (गीता अध्याय 4 श्लोक 32)

❖ गीता अध्याय 4 श्लोक 34 = उस तत्वज्ञान को तू तत्वदर्शी सन्तों के पास जाकर समझ, उनको दण्डवत् प्रणाम करने से, कपट छोड़कर नम्रतापूर्वक प्रश्न करने से वे परमात्मा तत्व को भली-भाँति जानने वाले ज्ञानी महात्मा तुझे तत्वज्ञान का उपदेश करेंगे। (गीता अध्याय 4 श्लोक 34)

सज्जनों ! वह तत्वदर्शी सन्त यह दास (संत रामपाल दास) है। वह तत्वज्ञान मेरे पास है। मेरे अतिरिक्त वर्तमान में किसी के पास नहीं है। विश्व में लगभग 7 अरब मानव आबादी है। इन अरबों मनुष्यों में मेरे अतिरिक्त कोई इस ज्ञान को जानने वाला नहीं है।

गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 तक तो गीता ज्ञान दाता ने तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव जी) की भक्ति करने वाले 1. राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए, 2. मनुष्यों में नीच, 3. दूषित कर्म करने वाले, 4. मूर्ख मेरी भक्ति भी नहीं करते।

फिर गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 7 श्लोक 16 से 18 तक अपनी साधना करने वालों की स्थिति बताई है कि मेरी भक्ति चार प्रकार के (1. आर्त, 2. अथार्थी, 3. जिज्ञासु, 4. ज्ञानी) करते हैं। इनमें केवल ज्ञानी साधक श्रेष्ठ बताया, परंतु वह भी तत्वज्ञान न होने के कारण मेरे वाली अर्थात् ब्रह्म की अनुतम् अर्थात् घटिया गति में ही स्थित रह गया।

❖ गीता अध्याय 7 श्लोक 19 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि मेरी पूजा भी जन्म-जन्मान्तरों के अन्त के जन्म में कोई ज्ञानी आत्मा ठीक से करता है। अन्यथा अन्य उपासना में ही लगे रहते हैं। यह बताने वाला महात्मा तो बहुत दुर्लभ है कि केवल वासुदेव अर्थात् सर्वगतम् ब्रह्म ही सब कुछ है। उसी की भक्ति से परम शान्ति प्राप्त होती है, उसी की भक्ति से सनातन परम धाम प्राप्त होता है। उसी की भक्ति से वह परम पद प्राप्त होता है जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आते, वह परम अक्षर ब्रह्म सर्व का उत्पत्तिकर्ता है, वही संसार रूपी वृक्ष की मूल है जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है, वही पापनाशक है। वही पूर्ण मोक्षदायक है, उसी की भक्ति करनी चाहिए।

प्रिय पाठको! वह तत्वदर्शी सन्त वर्तमान में यह दास (संत रामपाल दास) है। मेरे पास सम्पूर्ण वेद-शास्त्रों का ज्ञान है। वासुदेव भगवान की भक्ति के सम्पूर्ण मन्त्र हैं। अब "वासु" देव की परिभाषा बताते हैं :-

"वासुदेव की परिभाषा"

गीता अध्याय 3 श्लोक 14-15 में कहा है कि सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं। अधिक जानकारी आपको पूर्व में दे रखी है, वहाँ से पढ़े। यहाँ पर केवल इस विषय को लेते हैं।

फिर कहा है कि ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरूष की उत्पत्ति अविनाशी परमात्मा से हुई है जिसके विषय में गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में कहा है। इससे सिद्ध है कि

"सर्वगतम् ब्रह्म" = सर्वव्यापी परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् वासुदेव सदा ही यज्ञों में प्रतिष्ठित है।

विचार करें :- सर्वगतम् ब्रह्म का अर्थ है सर्वव्यापी परम अक्षर परमात्मा। (गीता अध्याय 3 श्लोक 15)

1. श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी तीनों देवता एक ब्रह्माण्ड में बने तीनों लोकों (स्वर्ग लोक, पृथ्वी लोक, पाताल लोक) में केवल एक-एक विभाग अर्थात् गुण के प्रधान हैं। ये सर्वगतम् ब्रह्म अर्थात् वासु देव अर्थात् सर्वव्यापी परमात्मा = वासुदेव नहीं हैं।

2. ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरूष :- यह केवल 21 ब्रह्माण्डों का प्रभु है। यह भी सर्वव्यापी अर्थात् वासु देव नहीं है।

3. अक्षर पुरूष :- यह केवल 7 शंख ब्रह्माण्डों का प्रभु है, यह भी सर्वव्यापी अर्थात् वासुदेव नहीं है।

4. परम अक्षर ब्रह्म :- यह सर्व ब्रह्माण्डों का स्वामी है, सर्व का धारण-पोषण करने वाला है, यह वासुदेव है।

विशेष :- अधिक जानकारी के लिए पढ़ें इसी पुस्तक के "सृष्टि रचना" अध्याय में।

❖ जैसा कि आप जी को पूर्व में बताया है कि परम अक्षर ब्रह्म स्वयं पृथ्वी पर प्रकट होकर अच्छी आत्माओं को मिलते हैं। उनको तत्वज्ञान बताते हैं। इसी विधानानुसार वही परमात्मा सन्त गरीबदास जी को (गाँव = छुड़ानी, जिला-झज्जर, प्रांत-हरियाणा) सन् 1727 में मिले थे। एक जिन्दा महात्मा की वेशभूषा में थे। गरीब दास जी की आत्मा को उस सनातन परम धाम में ले गए थे। फिर ऊपर के सर्व ब्रह्माण्डों तथा प्रभुओं की स्थिति बताकर तत्वज्ञान से परीचित कराकर वापिस शरीर में छोड़ा था। उस समय सन्त गरीब दास जी की आयु 10 वर्ष थी। उस दिन सन्त गरीबदास जी को मृत जानकर चिता पर रखकर अन्तिम संस्कार की तैयारी कर रहे थे। उसी समय उनकी आत्मा को शरीर में प्रवेश करा दिया। जीवित होने पर सर्व कुल के लोगों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसके पश्चात् सन्त गरीबदास जी ने एक अनमोल ग्रन्थ की रचना की। उसमें आँखों देखा तथा स्वयं परमात्मा द्वारा बताए ज्ञान को बताया जो एक गोपाल दास नामक दादू पंथी साधु ने लिखा था। जो वर्तमान में प्रिंट करा रखा है।

❖ पंजाब प्रान्त में लुधियाना शहर के पास एक वासीयर गाँव है। उसमें एक प्रभु प्रेमी व्यक्ति रामराय उर्फ झूमकरा रहता था। उसने सन्त गरीब दास जी की महिमा सुनी तो दर्शनार्थ गाँव छुड़ानी में चला आया। सन्त गरीबदास जी ने यह ज्ञान सुनाया जो इस दास (संत रामपाल दास) को सन्त गरीब दास से प्राप्त हुआ है जो आप जी को इस पुस्तक तथा अन्य पुस्तकों के द्वारा सुनाया है।

उस राम राय ने प्रश्न किया कि हे महात्मा जी! यह ज्ञान तो आज तक किसी ने नहीं बताया। सन्त गरीब दास जी ने वाणी के द्वारा बताया।

तत्वभेद कोई ना कहे राय झूमकरा। पैसे ऊपर नाच सुनो राय झूमकरा।

अनुवाद व भावार्थ :- सन्त गरीबदास जी ने बताया कि यह ज्ञान करोड़ों में किसी के पास नहीं मिलेगा, अरबों में किसी एक के पास मिलेगा। वह संत सर्व ज्ञान सम्पन्न सम्पूर्ण साधना के मन्त्रों से गरक अर्थात् परिपूर्ण होता है। प्रिय पाठको! वह संत वर्तमान में बरवाला जिला-हिसार वाला है। ज्ञान समझो और लाभ उठाओ।

प्रश्न :- प्राचीन काल से चली आ रही भक्ति की साधना को आप गलत कैसे कह सकते हो? जैसे तप सर्व ऋषिजन किया करते थे, हम सर्व हिन्दू समाज में देख रहे हैं - सब हरे कृष्णा, हरे राम, राधे-राधे श्याम मिला दे, ओम नमः शिवाय, ओम नमो भगवते वासुदेवायः नमः, जय सियाराम, राधे श्याम, ओम तत् सत्, में से कोई एक मन्त्र का जाप करते आ रहे हैं। वर्तमान में भी कर रहे हैं। श्री रामचन्द्र जी, श्री कृष्ण जी को हम पूर्ण परमात्मा मानते हैं, इसलिए इनके नाम जपते हैं। आप इन नाम जाप मन्त्रों को व्यर्थ जाप बताते हैं, स्पष्टीकरण दें।

उत्तर :- प्राचीन काल में यदि यह साधना होती और ये मन्त्र होते तो श्री मद्भगवत गीता अध्याय 4 श्लोक 1-2 में गीता ज्ञान दाता ये नहीं कहते कि यह योग अर्थात् जो भक्ति विधि मैं गीता ज्ञान में बता रहा हूँ, यह अब लुप्त प्रायः हो गया है, नष्ट हो गया है। यह ज्ञान तथा भक्ति मैंने सूर्यदेव से कही था, फिर मनु को सूर्य ने, मनु ने अपने पुत्र इक्ष्वाकु को कहा, फिर कुछ राज ऋषियों ने जाना। अब बहुत समय से अर्थात् द्वापर से बहुत समय पहले से ही लुप्त था तथा मनु, इक्ष्वाकु आदि-आदि सर्व सत्ययुग के प्रथम चरण में हुए थे। यदि आप श्री रामचन्द्र जी पुत्र राजा दशरथ तथा श्री कृष्ण चन्द्र पुत्र श्री वासुदेव को पूर्ण परमात्मा मानते हैं। इसलिए इनके नाम हरे राम, हरे कृष्ण, आदि-आदि जाप करते हैं और इन्हीं से मोक्ष मानते हैं तो श्रीमद्भगवत गीता मे वर्णित यथार्थ प्राचीन योग अर्थात् भक्ति की विधि के विपरीत होने से व्यर्थ हैं। शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण हुआ। जिस कारण से उपरोक्त प्रश्न में लिखे अन्य मन्त्र भी शास्त्र प्रमाणित नहीं हैं, इसलिए व्यर्थ हैं। गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में कहा है कि जो पुरूष शास्त्रविधि को त्यागकर मनमाना आचरण करते हैं। उनको न तो सुख प्राप्त होता है, न सिद्धि प्राप्त होती है, न उनकी गति होती है अर्थात् व्यर्थ साधना है। (गीता अध्याय 16 श्लोक 23)

❖ गीता अध्याय 16 श्लोक 24 में कहा है कि इससे तेरे लिए अर्जुन, कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। भावार्थ है कि जो भक्ति की विधि प्रमाणित शास्त्रों में (चारों वेदों = ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद तथा इन्हीं चारों वेदों का सारांश श्री मद्भगवत गीता तथा सूक्ष्मवेद = जो परमात्मा स्वयं ने अपने मुख से बोला था। ये भक्ति के ज्ञान तथा समाधान के प्रमाणित शास्त्र हैं) वर्णित नहीं है, वह शास्त्रविरूद्ध साधना है। इसलिए भक्ति के कौन-से कर्म करने चाहिए और कौन-से नहीं करने चाहिए, उनके लिए शास्त्रों को ही आधार मानों। शास्त्रों में वर्णित भक्ति विधि को अपनाओ और सब त्याग दो।

❖ श्री राम जी का जन्म त्रेतायुग के अन्तिम चरण में हुआ था। श्री कृष्ण जी का जन्म द्वापरयुग के अन्तिम चरण में हुआ था। सत्ययुग से ही मानव भक्ति करता आ रहा है। उस समय कौन राम थे? आप कहोगे कि श्री विष्णु जी तो सत्ययुग से भी पहले के हैं और श्री राम, श्री कृष्ण भी स्वयं श्री विष्णु जी ही थे। सत्ययुग में भी प्रमाण है कि महर्षि बाल्मिकी जी राम-राम नाम जपते थे, वे विष्णु-विष्णु नहीं जपते थे। इससे सिद्ध हुआ कि श्री विष्णु जी, श्री राम, श्री कृष्ण जी से भिन्न कोई "राम" अर्थात् "मालिक" है। उस राम का जाप करना चाहिए जो गीता अध्याय 7 श्लोक 29 में है। जिसके विषय में कहा है कि "तत् ब्रह्म" को जानने वाले केवल जरा अर्थात् वृद्ध अवस्था तथा मृत्यु से छुटकारा पाने के लिए ही भक्ति करते हैं। अर्जुन ने गीता अध्याय 8 श्लोक 1 में प्रश्न किया कि वह "तत् ब्रह्म" क्या है?

गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 8 श्लोक 3 में उत्तर दिया कि वह "परम अक्षर ब्रह्म" है। गीता अध्याय 8 के ही श्लोक 5, 7 में गीता दान दाता ने अपनी भक्ति करने को कहा है जिसका जाप मन्त्र गीता अध्याय 8 के ही श्लोक 13 में बताया है। (ओम् इति एकाक्षरम् ब्रह्म व्यवहारन् माम् अनुस्मरन्.......)

❖ गीता अध्याय 8 के ही श्लोक 8, 9, 10 में गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य उस तत् ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म की भक्ति करने को कहा है। उसकी भक्ति का नाम जाप मन्त्र गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में बताया है:-

ॐ तत् सत् इति निर्देशः ब्रह्मणः त्रिविधः स्मरतः।
ब्राह्मणाः तेन वेदाः च यज्ञाः च विहिताः पुरा।।

सरलार्थ :- ब्रह्मणः = सच्चिदानन्द घन ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म की भक्ति का ॐ, तत्, सत् मन्त्र के स्मरण का (निर्देशः) आदेश है। जो (त्रिविधः) तीन प्रकार से (स्मतः) स्मरण के लिए कहा है (ब्राह्मणाः) विद्वान् अर्थात् तत्वदर्शी सन्त (तेन) उस (वेदाः) ज्ञान के आधार से भक्ति करते थे (च) और (यज्ञाः) धार्मिक यज्ञों का अनुष्ठान (च) और अन्य भक्ति कर्म (पुरा) सृष्टि की आदि अर्थात् सृष्टि के प्रारम्भ में (विहिता) किए जाते थे।

श्रीमद् भगवत गीता से सिद्ध हुआ कि गीता ज्ञान दाता से अन्य कोई पूर्ण परमात्मा है जो श्री विष्णु जी, श्री ब्रह्मा जी तथा श्री शिव जी से भी भिन्न है। जिसके विषय में गीता अध्याय 15 श्लोक 1, 4, 17 में तथा गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में तथा और अनेकों स्थानों पर गीता में कहा गया है, वह पूर्ण परमात्मा है। गीता अध्याय 15 श्लोक 16 में दो पुरूष बताए हैं। दोनों नाशवान भी बताए हैं। उनके अन्तर्गत जितने प्राणी हैं, वे भी नाशवान हैं। (1) (क्षर पुरूष है, यह केवल इक्कीस ब्रह्माण्डों का प्रभु है, (2) अक्षर पुरूष यह 7 शंख ब्रह्माण्ड का प्रभु है। ये दोनों ही पूर्ण परमात्मा नहीं हैं। (गीता अध्याय 15 श्लोक 16)

❖ गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि उत्तमः पुरूषः तूः अन्यः अर्थात पुरूषोतम तो कोई ऊपर वर्णित दोनों पुरूषों (क्षर पुरूष

तथा अक्षर पुरूष) से भिन्न है जिसको (परमात्मा इति उदाहृतः) परमात्मा कहा गया है। (यः लोकत्रयम्) जो तीनों लोकों में (आविश्य विभर्ति) प्रवेश करके धारण-पोषण करता है, (अव्ययः ईश्वरः) अविनाशी परमेश्वर है। (गीता अध्याय 15 श्लोक 17)

❖ पूर्ण परमात्मा परम अक्षर ब्रह्म है सिद्ध हुआ। उसकी भक्ति का मन्त्र ॐ, तत्, सत् है, यह भी सिद्ध हुआ। ॐ, तत्, सत्, जो तीन मन्त्र हैं, ये उपरोक्त तीनों प्रभुओं (ॐ = क्षर पुरुष अर्थात् क्षर ब्रह्म गीता ज्ञान दाता का, तत् = यह सांकेतिक है जो इसी पुस्तक में पूर्व में विवरण है, वहाँ पढ़ें, यह तत् नाम जाप = अक्षर पुरूष का है) सत् = यह भी सांकेतिक है, अधिक विस्तार पूर्व में दिए प्रकरण में इसी पुस्तक में पढ़ें। यह सत् मन्त्र परम अक्षर ब्रह्म) का है। श्री मद्भगवत गीता में ये पूर्ण मोक्ष प्राप्ति के मन्त्र हैं। जो आज तक (सन् 2012 तक) किसी ने नहीं स्पष्ट किए। आप जी जो हरि ओम, तत् सत् जाप करते हैं, वह भी व्यर्थ है क्योंकि आप जी को तत् तथा सत् के वास्तविक मन्त्रों का ज्ञान नहीं है।

उदाहरण :- एक धनी व्यक्ति ने अपने धन को अपने घर में गढ्ढ़ा खोदकर दबा दिया। उस स्थान का केवल धनी व्यक्ति को ही पता था। उस धनी व्यक्ति ने एक बही (पैड) में सांकेतिक स्थान लिख दिया। धनी व्यक्ति की मृत्यु अचानक हो गई। पिता का संस्कार करके पुत्रों ने वह पैड उठाई जिसमें पिता जी कहता था कि इस बही में धन कहाँ है, यह लिखा है। जिसे पिता जी किसी को नहीं दिखाते थे।

धनी व्यक्ति के मकान के आगे आँगन था, उस आंगन के एक कोने में मन्दिर बना था। बही (पैड) में लिखा था कि चाँदनी चौदस रात्रि 2 बजे सारा धन मन्दिर के गुम्बज में दबा रखा है। लड़कों ने मन्दिर का गुम्बज रात्रि के 2 बजे फोड़कर धन खोजा, कुछ नहीं मिला। बच्चों को बड़ा दुःख हुआ। एक दिन उनके पिता का मित्र दूसरे गाँव से शोक व्यक्त करने आया। बच्चों ने यथास्थान पर धन न मिलने की चिंता जताई। उस धनी के मित्र ने वह बही मँगाई और व्याख्या पढ़ी तो कहा कि मन्दिर के गुम्बज का पुनः निर्माण कराओ। वैसा ही कराना। मैं फिर किसी दिन आऊँगा, तब धन वाला स्थान बताऊँगा। वह व्यक्ति चांदनी चौदस को आया। रात्रि के दो बजे जिस स्थान पर मन्दिर के गुम्बज की छाया थी, उस स्थान पर खुदाई कराई। सारा धन जो बही में लिखा था, वह मिल गया। बच्चे खुश तथा धनी हुए।

आप जी जो हरि ॐ तत् सत् का जाप कर रहे हो। आप मन्दिर का गुम्बज खोद रहे हो, कुछ भी हाथ नहीं आएगा। यथास्थान वास्तविक मन्त्र मेरे (सन्त रामपाल दास के) पास हैं। उनको ग्रहण करके भक्ति धनी तथा सुखी होओ।

‘‘आध्यात्मिक शंका समाधान‘‘

प्रश्न :- गीता अध्याय 15 श्लोक 18 में गीता ज्ञान दाता अपने आप को पुरूषोतम = उत्तम पुरूष कहता है, आप गीता ज्ञान दाता से अन्य ”पुरूषोतम“ अर्थात् श्रेष्ठ परमात्मा बताते हैं। स्पष्ट करें।

उत्तर :- गीता की शंका का समाधान गीता से ही करते हैं। जैसे गीता अध्याय 15 श्लोक 16 में गीता ज्ञान दाता ने दो पुरूषों (क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष) की जानकारी दी है। कहा है कि ये दोनों पुरूष तथा इनके अन्तर्गत जितने शरीर धारी प्राणी हैं, वे सब नाशवान हैं परन्तु जीवात्मा अविनाशी है। गीता ज्ञान दाता क्षर पुरूष है। इसने गीता अध्याय 15 के श्लोक 17 में तो स्पष्ट कर ही दिया है कि उत्तम पुरूष तो अन्य है जो गीता ज्ञान दाता से दूसरा है। वह वास्तव में अविनाशी है, वही परमात्मा कहा जाता है। वही तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है। फिर गीता अध्याय 15 श्लोक 18 में अपनी स्थिति बताई है कि मैं उन सब शरीरधारी प्राणियों से अतीत् अर्थात् परे हूँ जो मेरे अन्तर्गत (इक्कीस ब्रह्मण्डों में हैं)। जिस कारण से मैं लोकवेद अर्थात् दन्त कथाओं के आधार से पुरूषोतम प्रसिद्ध हूँ। वास्तव में पुरूषोतम अर्थात् श्रेष्ठ पुरूष तो गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में बता दिया कि वह अविनाशी है, परमात्मा कहा जाता है।

अपने विषय में गीता ज्ञान दाता ने स्पष्ट किया है कि अर्जुन! मेरे और तेरे बहुत जन्म हो चुके हैं, तू नहीं जानता, मैं जानता हूँ। गीता अध्याय 4 श्लोक 5 में फिर गीता अध्याय 2 श्लोक 12 में बताया है कि अर्जुन! तू और मैं तथा ये सब राजा लोग पहले भी जन्में थे तथा आगे भी जन्मेंगे। फिर गीता अध्याय 10 श्लोक 2 में कहा है कि मेरी उत्पत्ति को अर्थात् मेरे जन्म को न ऋषिजन जानते हैं, न देवता लोग क्योंकि ये सब मेरे से उत्पन्न हुए हैं।

विचार करें :- दादा जी पिताजी की जन्म तिथि तक बता देता है। (कृपया पढ़ें सृष्टि रचना में क्षर पुरूष का पिता और देवताओं का पिता और देवताओं का दादा कौन है? इसी पुस्तक में।)

उपरोक्त प्रमाणों से स्पष्ट हुआ कि गीता ज्ञान दाता ने अपने आप को पुरूषात्तम किस आधार से कहा है। यह भी स्पष्ट हुआ कि यह अविनाशी नहीं है, सबका धारण-पोषण करने वाला भी नहीं है और न यह ”परमात्मा“ है। इसकी भक्ति से परम शान्ति नहीं हो सकती तथा न सनातन परम धाम प्राप्त हो सकता जो गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में बताया है। इस श्लोक में गीता ज्ञान दाता ने उसी उत्तम पुरूष (पुरूषोतम) अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म की शरण में जाने को कहा है। कहा है कि उसी की कृपा से परम शान्ति प्राप्त होगी तथा सनातन परम धाम अर्थात् सतलोक को प्राप्त होगा।

गीता ज्ञान दाता की भक्ति से वह परम पद प्राप्त नहीं हो सकता जो गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में बताया है कि ”तत्वदर्शी सन्त से तत्वज्ञान की प्राप्ति के पश्चात् परमेश्वर के उस परम पद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात्

साधक फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आते।" गीता ज्ञान दाता ने यह भी कहा है कि उसी आदि नारायण की भक्ति करो।

गीता ज्ञान दाता तो स्वयं जन्मता-मरता है। इसका स्थान तो सनातन परम धाम है ही नहीं। तो गीता ज्ञान दाता की भक्ति से जीव उस परम पद को प्राप्त नहीं कर सकता जहाँ जाने के पश्चात् कभी संसार में लौटकर नहीं आते अर्थात् कभी जन्म-मृत्यु नहीं होती।

स्पष्ट हुआ कि गीता ज्ञान दाता वास्तव में पुरूषोतम नहीं है। यह तो लोकवेद अर्थात् सुने-सुनाए ज्ञान से दंत कथाओं से पुरूषोत्तम प्रसिद्ध है।

प्रश्न :- राधा जी गाँव-बरसाना (उत्तर प्रदेश) नजदीक वृन्दावन की रहने वाली थी। वहाँ के व्यक्ति "राधे-राधे" नाम जपते हैं। सुबह-सुबह या कभी-कभी आपस में मिलते हैं तो वे राम-राम नहीं बुलाते। वे कहते हैं, चाचा राधे-राधे। चाचा कहता है कि बेटा राधे-राधे। क्या वे मूर्ख हैं?

उत्तर :- तत्वज्ञान के अभाव से लोकवेद को सत्य ज्ञान मानकर यह शास्त्रविरूद्ध मन्त्रों का जाप चल रहा है। वैसे तो आप जी को पूर्व में स्पष्ट कर ही दिया है कि गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में कहा है कि जो शास्त्रविधि को त्यागकर मनमाना आचरण करते हैं अर्थात् जो नाम जाप शास्त्रों में नहीं हैं, उनका जाप करते हैं, उनको न सुख प्राप्त होता है, न सिद्धि प्राप्त होती है, न उनकी गति होती है अर्थात् व्यर्थ जाप साधना है। इससे तेरे लिए अर्जुन कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यह पहले बता चुका हूँ। अब बात है कि चाचा-भतीजा राधे-राधे शब्द क्यों उच्चारण करते हैं। आप जानते हैं कि राधा जी कौन थी? राधा भगवान श्री कृष्ण जी की प्रेमिका थी। उस समय बरसाना गाँव के व्यक्ति राधा जी को कुल्टा, बदचलन, निर्लज आदि-आदि विशेषणों से सम्बोधित करते थे। कहते थे यह दूसरे गाँव के नंद बाबा के लड़के से छिप-छिपकर मिलने जाती है, इसे अपने घर पर भी न आने देना। बेटियों पर गलत प्रभाव पड़ेगा। श्रीमान् जी! अब उसी बरसाना के व्यक्ति राधा जी के लिए स्वयं (स्त्री-पुरूष, युवतियाँ) कहते हैं कि राधे-राधे श्याम मिला दे, जैसा कि आप जी ने पूर्व के प्रश्न में बताया था कि हम यह नाम भी जाप करते हैं। अब न राधा जी हैं और न श्री कृष्ण जी। अब बड़बड़ा रहे हैं सनिपात के ज्वर के रोगी की तरह राधे-राधे श्याम मिला दे। यही स्थिति अन्य मन्त्रों की हैं जो आपने पूर्व प्रश्न में कहे हैं, उनकी जानो। वे भी शास्त्र प्रमाणित न होने से व्यर्थ हैं।

❖ अब आपके इस प्रश्न का उत्तर बताता हूँ कि चाचा भी कहता है राधे-राधे, भतीजा भी कहता है राधे-राधे। आपको भी पता है कि राधा जी श्री कृष्ण जी की प्रेमिका थी। आपको यह भी पता है कि जब रूकमणी जी को श्री कृष्ण जी भगाकर रथ में बैठाकर लाने लगा तो रूकमणी जी का भाई अपनी बहन को छुड़ाने के लिए घोड़े पर सवार होकर पीछे दौड़ा था। श्री कृष्ण जी ने पहले तो उसे पीटा था। फिर रथ के पीछे बाँधकर घसीटा था। रूकमणी जी भी श्री कृष्ण जी की

प्रेमिका थी। उनके बीच में रूकमणी का भाई आया था। उसकी क्या दशा की थी। श्री कृष्ण जी ने रूकमणी की प्रार्थना पर रूकमणी के भाई की जान बख्सी थी। यदि आज भगवान कृष्ण वर्तमान में होते, राधा भी होती और बरसाना वाले चाचा-भतीजा आपस में ये शब्द बोलते कि 'राधे-राधे' तो क्या श्री कृष्ण जी पसन्द करते? कभी नहीं, चाचा-भतीजा दोनों को रथ से बाँधकर घसीटते। यदि आप किसी की प्रेमिका का नाम लेकर बड़बड़ाओगे तो प्रेमी के ऊपर कैसी गुजरेगी? यदि ताकतवर होगा तो मुँह फोड़ देगा, कमजोर होगा तो रोएगा। उसकी जान को कोसेगा, क्या वह प्रसन्न होगा? नहीं। इसलिए ये नाम जो शास्त्र प्रमाणित नहीं हैं, उनका जाप व्यर्थ है। शास्त्र प्रमाणित नाम मेरे पास हैं। आओ और अपना कल्याण कराओ।

प्रश्न :- महर्षि बाल्मिकी जी तो सत्ययुग में हुए थे, वे भी राम-राम जपते थे। क्या यह मन्त्र भी शास्त्र प्रमाणित नहीं हैं?

उत्तर :- पूर्व में बताया है कि गीता अध्याय 4 श्लोक 1-2 में गीता ज्ञान दाता ने बताया है कि यह ज्ञान मैंने सूर्य को सुनाया था। उसने अपने पुत्र मनु जी को सुनाया। फिर कुछेक राजऋषियों को प्राप्त हुआ। सत्ययुग के प्रारम्भ में ही ये सब सूर्य, मनु व राजर्षि हुए हैं। उनके बाद यह ज्ञान नष्ट हो गया था। महर्षि बाल्मिकी जी को सप्त ऋषि मिले थे। उन्होंने तपस्या करके सिद्धियाँ प्राप्त की थी। वही विधि महर्षि बाल्मिकी जी को उन्होंने बता दी। जिस हठ योग तप को महर्षि बाल्मिकी जी ने तन-मन से श्रद्धा से किया। कुछ समय उपरान्त शरीर के ऊपर के भाग (सिर) में से आवाज सुनाई दी थी। वह थी "राम-राम"। उसी शब्द का उच्चारण महर्षि बाल्मिकी जी तपस्या के दौरान करने लगे। सुनने वाले को ऐसा लगता है जैसे ये मरा, मरा बोल रहे हैं, वास्तव में राम-राम का ही उच्चारण करते थे। उनको तपस्या का परिणाम मिला, उनमें सिद्धियाँ प्रवेश हो गईं। उनकी दिव्य दृष्टि खुल गई। जिस कारण से उन्होंने श्री रामचन्द्र जी के जन्म से हजारों वर्ष पूर्व ही रामायण अर्थात् श्री रामचन्द्र जी के जन्म की जीवन की सर्व घटनाऐं लिख दी थी, ग्रन्थ का नाम है "बाल्मिकी रामायण" जो संस्कृत भाषा में लिखी गई थी। राम-राम के जाप से कोई आध्यात्मिक लाभ नहीं होता। परंतु परमात्मा का बोधक शब्द होने से उच्चारण करने से परमात्मा की भूल नहीं पड़ती। इसलिए राम-नाम के उच्चारण का प्रचलन हिन्दू धर्म में प्राचीन समय से है। जैसे स्वामी रामानन्द जी राम-राम शब्द से सम्बोधित करते थे। उसके शिष्य भी एक-दूसरे को राम-राम से सम्बोधित करते थे, परन्तु जाप मन्त्र "ॐ" था। इसी प्रकार हम कबीर पंथी "सत साहेब" बुलाते हैं। हमारा जाप मन्त्र अन्य है। सत्य साधना पूर्व में इसी पुस्तक में बता दी है। उसी भक्ति से भगवान तक जाया जाता है। सूक्ष्म वेद में कहा है :-

सतगुरू मिले तो इच्छा मेटै, पद मिल पदै समाना।
चल हंसा उस लोक पठाऊँ, जो अजर अमर अस्थाना।
चार मुक्ति जहाँ चम्पी करती, माया हो रही दासी।
दास गरीब अभय पद परसै, मिलै राम अविनाशी।।

❖ प्रश्न :- एक ब्रह्मा कुमारी पंथ है, उसको ओउम् शांति पंथ भी कहते हैं। उनका विधान है कि स्त्री सदा स्त्री ही रहेगी चाहे कितने ही जन्म हों और पुरूष सदा पुरूष ही रहेगा, जन्म अनेकों होंगे। उनका यह भी सिद्धांत है कि 5 हजार वर्ष का एक कल्प होता है। उसमें चार युग होते हैं :- सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग तथा कलयुग। प्रत्येक युग का समय 1250 वर्ष है। इसी पंथ वाले एक पाँचवां युग भी बताते हैं उसका नाम शायद 'दिव्य युग' है। ये कहते हैं कि 5 हजार वर्ष पश्चात् सर्व प्राणी नष्ट होकर पुनः जन्म लेंगे और जो उनका सत्ययुग में जो स्थान, गाँव का नाम, अपना नाम, पिता का नाम, देश-प्रदेश वही होगा। वर्तमान में वे कहते हैं कि सत्ययुग चल रहा है। पशु-पशु ही बनेंगे और पक्षी-पक्षी ही बनते रहेंगे, अन्य प्राणी भी जाति में जन्मते रहेंगे। आप इस विधान को सत्य मानते हैं या नहीं?

उत्तर :- पहले तो विचार करते हैं कि ब्रह्मा कुमारी पंथ वाले चार युग बताते हैं, उनका समय भी बता दिया। 1250 वर्ष प्रत्येक का और चारों का कुल योग भी बता दिया 5 हजार वर्ष। फिर पाँचवां युग जिसे दिव्य युग कहा जाता है। उसका समय तो शेष रहा ही नहीं। इनका एक सिद्धांत गलत सिद्ध हुआ।

2. ब्रह्मा कुमारी वाले मानते हैं कि आज अर्थात् वर्तमान में जिसका जो नाम, पिता का नाम, गाँव व देश का नाम है तथा जिसका जैसा शरीर होगा, बहरा, काना, अँधा-गूँगा, लँगड़ा, अधरंगमारा, गंजा, काला-गोरा, स्वस्थ उसका वैसा ही शरीर, गाँव, नाम होगा 5 हजार वर्ष के पश्चात्। विचार करें फिर भक्ति की क्या आवश्यकता शेष रही? इनका यह दूसरा सिद्धांत गलत सिद्ध हुआ।

3. यदि पशु-पशु रहेंगे, मनुष्य-मनुष्य ही रहेंगे, मनुष्यों को रोग से, अंग-भंग से, निर्धनता से बचाव ही नहीं हुआ तो उस भक्ति का क्या लाभ? यह इनका तीसरा सिद्धांत गलत सिद्ध हुआ।

☛ मैंने (लेखक ने) सर्व पंथों का इतिहास गहनता से पढ़ा, समझा तथा सद्ग्रन्थों से जाँचा है। उसी आधार से आप जी को ब्रह्मा कुमारी पंथ का निरर्थक तथा निराधार सिद्धांत बताता हूँ। यहाँ संक्षिप्त में बताऊँगा, विस्तार से आप जी पुस्तक ''परमेश्वर का सार संदेश'' में पढ़ें जो हमारी वेवसाइट पर उपलब्ध है, नाम है :- www.jagatgururampalji.org

❖ ब्रह्मा कुमारी पंथ के प्रवर्तक श्री लेखराज जी सर्राफ थे। वे मुंबई में सुनार का कार्य करते थे। जब वे लगभग 60 वर्ष की आयु के हुए तो एक दिन उनके चाचा के घर सत्संग हो रहा था। वे भी चले गए। कुछ देर पश्चात् वे अचेत हो गए। जब सचेत हुए तो उनकी आँखें लाल अँगार जैसी थीं और यह शब्द बोलने लगे :-शिवो अहम्, अहम् ब्रह्मा अस्मि। मैं शिव हूँ।

इस श्री लेखराज जी में कोई प्रेतात्मा प्रवेश करके बोलने लगी जो कभी ब्रह्मा तथा शिव जी के पद पर रही होगी। वर्तमान में प्रेत योनि भोग रही है। प्रेत तथा पित्तर योनियों को प्राप्त प्राणियों की आयु अब भी हजारों वर्ष होती है। वही प्रेतात्मा श्री लेखराज जी में प्रवेश करके अपना विधान बताती है। जिसे इस पंथ के व्यक्ति

शिव बाबा कहते हैं। ये श्रद्धालु यह भी मानते हैं कि शिव बाबा ने ही गीता का ज्ञान कहा था। ये कहते हैं कि गीता इन्होनें सत्ययुग में कही थी। प्रत्येक सत्ययुग में यानि 5 हजार वर्ष पश्चात् शिव बाबा गीता ज्ञान किसी वृद्ध के शरीर में प्रवेश करके बोलते हैं। वर्तमान में भी शिव बाबा वही गीता का ज्ञान किसी व्यक्ति के शरीर में प्रवेश करके बोल रहा है जिसको ये पंथी ''मुरली'' कहते हैं। जिसका एक शब्द भी वास्तविक गीता से मेल नहीं खाता है। ये ब्रह्मा कुमारी वाले श्रद्धालु किसी नाम का जाप नहीं करते। कहते हैं कि केवल बाबा से मुरली सुनो और उसी का पाठ करो, यही भक्ति है।

विचार करें :- यदि इनकी बात सत्य मानें कि इनका ईष्टदेव बाबा शिव है। बाबा शिव वह है जिसने गीता का ज्ञान दिया। वह तो काल ब्रह्म है। जिसकी जानकारी आपजी को इसी पुस्तक में पूर्व में बताई है तथा ''सृष्टि रचना'' अध्याय में भी विस्तार से लिखी है।

ब्रह्मा कुमारी वाले 'ओम् शांति' केवल बोलते हैं, एक-दूसरे को ये किसी नाम (मंत्र) का (ओम् आदि-आदि का) जाप नहीं करते। फिर भी ओम् का और शांति का तो मेल ही नहीं है। जैसे कम्पास के एक दिशा वाले सिरे अर्थात् North Poll आपस में मिलते नहीं, दूर भागते हैं। कम्पास के North Poll (उत्तरी ध्रुव) पर 'N' लिखा होता है और South Poll (पश्चिमी ध्रुव) पर 'S' लिखा होता है। यदि 'N' वाले सिरे को दूसरे कम्पास के 'N' वाले सिरे के पास लाते हैं तो दोनों दूर भागते हैं। इकट्ठे टिक नहीं सकते। ऐसे ही ॐ (ओउम्) शब्द से शांति हो ही नहीं सकती।

प्रमाण :- गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में गीता ज्ञान दाता जिसको ब्रह्मा कुमारी वाले बाबा शिव कहते हैं। उसने कहा है कि हे भारत! तू सर्वभाव से उस परमेश्वर की शरण में जा, उस परमेश्वर की कृपा से ही तू परम शांति को तथा सनातन परम धाम को प्राप्त होगा। वह परमेश्वर गीता ज्ञान दाता से भिन्न है। वह परम अक्षर ब्रह्म है, उससे परम शांति होगी।

प्रमाण :- गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि मुझ ब्रह्म का ओम् (ॐ) यह एक अक्षर है। इसका जाप करके मेरे से मिलने वाली परमगति को प्राप्त होगा। गीता ज्ञान दाता ने अपनी गति को गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में अनुत्तम अर्थात् घटिया बताया है। फिर गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 8 श्लोक 5 तथा 7 में कहा है कि मेरी भक्ति कर। परंतु युद्ध भी करना पड़ेगा। विचार करो श्रीमान् जी जहाँ युद्ध हो रहा हो, वहाँ शांति नहीं हो सकती। शांति के लिए तो गीता ज्ञान दाता अर्थात् ब्रह्मा कुमारी वालों की मानें तो उनके शिव बाबा ने अपने से अन्य परमेश्वर की शरण में जाने के लिए कहा है।

ब्रह्मा कुमारी पंथ वाले ओम् शांति बोलते हैं तो दोनों 'N' को मिलाने की कुचेष्टा करते हैं। उनके लिए कहा है कि ''वे अज्ञान के आधार से ऐसा ऊवा-बाई का ज्ञान कहा करते हैं। ''पंथ बनाकर बतावें नुक्ता, सब पंथी ऊवा-बाई बकता।''

सन्निपात के ज्वर का रोगी व्यर्थ की बातें बरड़ाया (बड़बड़ाता) करता है, वैसे ही इस ब्रह्मा कुमारी पंथ के भोले श्रद्धालु ज्ञान बता रहे हैं। जैसे किसी को नींद में उठकर चलने और बरड़ाने की बीमारी होती है। ये ऐसे प्रचार करते फिरते हैं।

आपजी ने पूर्व में पढ़ा कि श्री ब्रह्मा जी की मृत्यु 100 दिव्य वर्ष के पश्चात् होती है। एक दिव्य वर्ष का समय = ब्रह्मा जी का एक दिन 1008 चतुर्युग का होता है। {एक चतुर्युग में सत्ययुग जो 17 लाख 28 हजार वर्ष का होता है + त्रेतायुग जो 12 लाख 96 हजार वर्ष का होता है + द्वापरयुग जो 8 लाख 64 हजार मनुष्यों के वर्ष का होता है + कलयुग जो 4 लाख 32 हजार मनुष्यों के वर्ष का होता है। चारों युगों के समय को मिलाकर एक चतुर्युग बनता है। ब्रह्मा जी का एक दिन ऐसे 1008 चतुर्युग का बनता है।}

इतने समय (1008 चतुर्युग) की रात्रि ब्रह्मा जी की है। इस प्रकार 30 दिन-रात ब्रह्मा जी का एक महीना बनता है तथा 12 महीनों का एक वर्ष। ऐसे 100 वर्षों की ब्रह्मा जी की आयु होती है। उसके पश्चात् ब्रह्मा के पद पर विराजमान जीव मृत्यु को प्राप्त होता है। उसके स्थान पर दूसरा जीव ब्रह्मा के पद पर विराजमान कर दिया जाता है। जो ब्रह्मा के पद को भोगकर प्रेत योनि में भटक रहा है, वह जीव Ex सरपंच की तरह होता है। जो सरपंच के पद से हट चुका होता है। गाँव के व्यक्ति उसको खुश करने के लिए और उससे कुछ वस्तु उधार लेने के लिए पम्प मारते हैं। उसको सरपंच साहब कहते हैं। फिर वह भी कहता है कि जा मेरा नाम ले देना शराब के ठेके पर कि सरपंच साहब पृथी ने बोतल मँगाई है। भावार्थ है कि ऐसे ही ब्रह्मा पद से मुक्त वर्तमान प्रेत श्री लेखराज जी में प्रवेश करके इस प्रेत पंथ ब्रह्मा कुमारी पंथ की शुरूआत करके बखेड़ा खड़ा कर रहा है। जैसे ब्रह्मा जी की मृत्यु होती है, वैसे ही श्री विष्णु जी की मृत्यु होती है। 7 ब्रह्मा की मृत्यु के पश्चात् एक विष्णु मरता है। 7 विष्णु की मृत्यु के पश्चात् एक शिव मरता है। ये सब प्रेत योनियों या अन्य प्राणियों की योनियों को प्राप्त होते हैं। नए विष्णु तथा शिव पद ग्रहण करते हैं।

❖ ब्रह्मा कुमारी पंथ का सिद्धान्त सारा ही गलत है। यह एक प्रेत का बताया हुआ है जो किसी शास्त्र से मेल नहीं खाता।

❖ चार युगों का समय ऊपर मेरे द्वारा बताया गया है, यह ठीक है जो सर्व शास्त्रों में प्रमाणित है।

❖ जो सिद्धान्त ब्रह्मा कुमारी पंथ वालों ने बताया है कि स्त्री वाली आत्मा सदा स्त्री ही रहती है तथा पुरूष वाली आत्मा सदा पुरूष ही रहती है। ये स्त्री-पुरूष वाली आत्माऐं अन्य प्राणियों के शरीर प्राप्त नहीं करती। यह पूर्ण रूप से अनुचित है।

प्रमाण :- महाभारत में प्रकरण आता है कि एक शिखंडी नाम का व्यक्ति था जो पूर्व जन्म में स्त्री था।

❖ अन्य प्रमाण :- शिव पुराण में वर्णन है :- एक समय भगवान शिव अपनी पत्नी पार्वती से मिलन कर रहे थे। उस समय कुछ ऋषि अचानक शिव जी से

मिलने वहाँ पहुँच गए। दूर से देखकर ऋषि वापिस चले गए। पार्वती की भी नजर उन पर पड़ी। फिर शंकर भगवान ने भी उनको देखा। पार्वती शर्म के मारे बहुत दुःखी हुई। भगवान शंकर ने कहा कि चिंता मत कर, आगे से ऐसा नहीं होगा। मैं कुछ क्षेत्र को श्राप दे देता हूँ कि जो भी पुरूष इस क्षेत्र में प्रवेश करेगा, वह स्त्री बन जाएगा। एक दिन एक राजा घूमता-घूमता उस क्षेत्र में चला गया। वह स्त्री बन गया। उसका विवाह एक राजा से हुआ, संतान हुई।

❖ अन्य उदाहरण :- एक समय नारद मुनि जी को अभिमान हो गया कि मैनें माया जीत ली। भगवान विष्णु ने कहा कि नारद बेटा! इस दरिया से जल लाना, बड़ी प्यास लगी है। पहले स्नान करना, फिर पानी लाना। स्नान के लिए नारद जी ने नदी में डुबकी लगाई। बाहर निकले तो जवान स्त्री बन गए। एक राजा ने उससे विवाह कर लिया। उस स्त्री ने 72 संतानों को जन्म दिया।

अन्य प्रमाण :- जैन धर्म ग्रन्थ ‘‘आओ जैन धर्म को जानें‘‘ पुस्तक में लिखा है कि महावीर जैन जी का जीव पहले मारीच था। मारीच भरत का पुत्र तथा राजा ऋषभ देव का पोता था। महावीर के जन्म तक पहुँचने से पहले अनेकों जन्म हुए। जिनमें 60 करोड़ बार गधे के जीवन, 30 करोड़ कुत्ते के, 60 लाख बार स्त्री, सैंकड़ों जन्म राजा पुरूषों के, लाखों जन्म देवताओं के, हजारों जन्म वक्षों के, हजारों नपुसंकों (हिजड़ों) के धारण करके फिर महावीर जैन 24वें तीर्थकर हुए।

❖ ब्रह्मा कुमारी वाले कहते हैं कि मानव (स्त्री-पुरूष) मानव ही रहता है। वह पशु-पक्षी आदि-आदि के शरीर को प्राप्त नहीं करता। यह सिद्धान्त भी पूर्ण रूप से मिथ्या है।

प्रमाण :- महाभारत ग्रन्थ में प्रकरण आता है कि एक जड़ भरत नाम का साधक जंगल में साधना करता था। एक दिन एक गर्भवती हिरणी शेर के भय से दौड़ी जा रही थी। जड़ भरत के सामने उसका बच्चा गर्भ से निकल पड़ा। हिरणी भय से भागी चली गई। उस हिरणी के बच्चे पर भरत साधक को दया आ गई। उसको पाला-पौषा। उसके साथ खेलने लगा। कभी-कभी हिरण का बच्चा नहीं आता तो व्याकुल हो जाता, भोजन भी नहीं खाता। जब हिरण का बच्चा दिखाई देता तो खुश होता। उस हिरण के बच्चे में मोह हो गया। जिस कारण से जड़भरत मनुष्य शरीर छोड़कर हिरणी से जन्म लेकर हिरण की योनि में गया। फिर हिरण का शरीर पूरा भोगकर मनुष्य शरीर पाया और फिर भक्ति की।

अन्य प्रमाण :- पुराणों में कथा है कि एक समय नल तथा कुबर जो कुबेर देवता के पुत्र हैं, गंगा नदी के किनारे शराब पीकर नंगे नाच रहे थे। उसी नदी पर देवागनाऐं (देवताओं की पत्नियाँ) भी वस्त्र आदि साफ कर रहीं थी। ऋषि नारद कहीं जा रहा था। नल तथा कुबर ने ऋषि नारद की भी शर्म नहीं की, वैसे ही उत्पात करते रहे। नारद जी ने नल तथा कुबर को श्राप दे दिया कि तुमने स्वर्ग लोक में निंदनीय कार्य किया है, तुम दोनों कालीदह झील के किनारे वृक्ष योनि को प्राप्त हो, ऐसा ही हुआ। उनके पिता कुबेर जी ने नारद जी से क्षमा याचना की।

तब बताया कि द्वापर युग में भगवान विष्णु अवतार धारकर श्री कृष्ण नाम से पृथ्वी पर जाऐंगे। तब उनके चरणों को छूकर दोनों वृक्ष नष्ट हो जाएंगे और तेरे दोनों पुत्र पुनः देव शरीर प्राप्त करके स्वर्ग में आएंगे। ऐसा ही हुआ। अपने प्रमाणित ग्रन्थों में प्रमाण है।

अन्य प्रमाण :- हाहा तथा हूहू नाम के तपस्वी थे। उनको मतंग ऋषि ने किसी कारण से श्राप दे दिया था। जिस कारण से वे हाथी तथा मगरमच्छ की योनि पाई थी। दस हजार वर्ष तक आपस में युद्ध करते रहे। फिर भगवान ने उनकी वह योनि छुड़वाई। फिर दोनों को पुनः देव शरीर प्राप्त हुआ। अपनी गलती की क्षमा याचना की।

श्रीमान् जी! समझदार को संकेत ही काफी होता है। परंतु आप जी को प्रमाणों के गॉर्टर से टेककर प्रमाणित कर दिया कि ब्रह्मा कुमारी वाले पंथ के सर्व सिद्धांत निराधार-कपोलकल्पित हैं।

इनकी भक्तिविधि शास्त्रविधि को त्यागकर मनमाना आचरण है। जिनके विषय में श्रीमद् भगवत गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में कहा है कि शास्त्रविधि को त्यागकर जो मनमाना आचरण करते हैं, उनको न सुख होता है, न सिद्धि प्राप्त होती है तथा न उनकी गति होती है अर्थात् उनको मोक्ष भी प्राप्त नहीं होता।

देखें फोटोकॉपी वेदमन्त्रों की

(प्रमाण ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 86 मन्त्र 26-27)

इन्दुः पुनानो अति गाहते मृधो विश्वानि कृण्वन्त्सुपथानि यज्यवे ।
गाः कृण्वानो निर्णिजं हर्यतः कविरत्यो न क्रीळन्परि वारमर्षति ॥२६॥

पदार्थः—(**यज्यवे**) यज्ञ करने वाले यजमानों के लिये परमात्मा (**विश्वानि सुपथानि**) सब रास्तों को (**कृण्वन्**) सुगम करता हुआ (**मृधः**) उनके विघ्नों को (**अतिगाहते**) मर्द्दन करता है। और (**पुनानः**) उनको पवित्र करता हुआ और (**निर्णिजं**) अपने रूप को (**गाः कृण्वानः**) सरल करता हुआ (**हर्य्यतः**) वह कान्तिमय परमात्मा (**कविः**) सर्वज्ञ (**अत्यो न**) विद्युत् के समान (**क्रीळन्**) क्रीड़ा करता हुआ (**वारं**)वरणीय पुरुष को (**पर्य्यषति**) प्राप्त होता है ॥२६॥

विवेचन :- यह फोटोकापी ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 मन्त्र 26 की है जो आर्यसमाज के आचार्यों व महर्षि दयानन्द के चेलों द्वारा अनुवादित है जिसमें स्पष्ट है कि यज्ञ करने वाले अर्थात् धार्मिक अनुष्ठान करने वाले यजमानों अर्थात् भक्तों के लिए परमात्मा सब रास्तों को सुगम करता हुआ अर्थात् जीवन रूपी सफर के मार्ग को दुःखों रहित करके सुगम बनाता हुआ उनके विघ्नों अर्थात् संकटों को मर्दन करता है अर्थात् संकटों को समाप्त करता है। भक्तों को पवित्र अर्थात् पाप

रहित, विकार रहित करता है। जैसा की अगले मन्त्र 27 में कहा है कि ''जो परमात्मा द्यूलोक अर्थात् सत्यलोक के तीसरे पृष्ठ पर विराजमान है, वहाँ पर परमात्मा के शरीर का प्रकाश बहुत अधिक है।'' उदाहरण के लिए परमात्मा के एक रोम (शरीर के बाल = जिसे रूंए भी कहते हैं) का प्रकाश करोड़ सूर्य तथा इतने ही चन्द्रमाओं के मिले-जुले प्रकाश से भी अधिक है। यदि वह परमात्मा उसी प्रकाश युक्त शरीर से पृथ्वी पर प्रकट हो जाए तो हमारी चर्म दृष्टि उन्हें देख नहीं सकती। जैसे उल्लु पक्षी दिन में सूर्य के प्रकाश के कारण कुछ भी नहीं देख पाता है। यही दशा मनुष्यों की हो जाए। इसलिए वह परमात्मा अपने रूप अर्थात् शरीर के प्रकाश को सरल करता हुआ उस स्थान से जहाँ परमात्मा ऊपर रहता है, वहाँ से गति करके बिजली के समान क्रीड़ा अर्थात् लीला करता हुआ चलकर आता है, श्रेष्ठ पुरूषों को मिलता है। यह भी स्पष्ट है कि आप कविः अर्थात् कविर्देव हैं। हम कबीर साहब कहते हैं।

असश्चतः शतधारा अभिश्रियो हरिं नवन्तेऽव ता उदन्युवः।
क्षिपो मृजन्ति परि गोभिरावृतं तृतीये पृष्ठे अधि रोचने दिवः ॥२७॥

पदार्थः—(उदन्युवः) प्रेम की (ताः) वे (शतधाराः) सैंकड़ों धाराए (असश्चतः) जो नानारूपों में (अभिश्रियः) स्थिति को लाभ कर रही हैं। वे (हरिं) परमात्मा को (अवनवन्ते) प्राप्त होती हैं। (गोभिरावृतं) प्रकाशपुञ्ज परमात्मा को (क्षिपः) बुद्धिवृत्तियां (मृजन्ति) विषय करती हैं। जो परमात्मा (दिवस्तृतीये पृष्ठे) द्युलोक के तीसरे पृष्ठ पर विराजमान है और (रोचने) प्रकाशस्वरूप है उसको बुद्धिवृत्तियाँ प्रकाशित करती हैं ॥२७॥

विवेचन :- यह फोटोकापी ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 के मन्त्र 27 की है। इसमें स्पष्ट है कि ''परमात्मा द्यूलोक अर्थात् अमर लोक के तीसरे पृष्ठ अर्थात् भाग पर विराजमान है। सत्यलोक अर्थात् शाश्वत् स्थान (गीता अध्याय 18 श्लोक 62) में तीन भाग है। एक भाग में वन-पहाड़-झरने, बाग-बगीचे आदि हैं। यह बाह्य भाग है अर्थात् बाहरी भाग है। (जैसे भारत की राजधानी दिल्ली भी तीन भागों में बँटी है। बाहरी दिल्ली जिसमें गाँव खेत-खलिवान और नहरें हैं, दूसरा बाजार बना है। तीसरा संसद भवन तथा कार्यालय हैं।)

इसके पश्चात् द्यूलोक में बस्तियाँ हैं। सपरिवार मोक्ष प्राप्त हंसात्माऐं रहती हैं। (पृथ्वी पर जैसे भक्त आत्मा कहते हैं, इसी प्रकार सत्यलोक में हंसात्मा कहलाते हैं।) तीसरे भाग में सर्वोपरि परमात्मा का सिंहासन है। उसके आस-पास केवल नर आत्माऐं रहती हैं, वहाँ स्त्री-पुरूष का जोड़ा नहीं है। वे यदि अपना परिवार चाहते हैं तो शब्द (वचन) से केवल पुत्र उत्पन्न कर लेते हैं। इस प्रकार शाश्वत् स्थान अर्थात् सत्यलोक तीन भागों में परमात्मा ने बाँट रखा है। वहाँ वृद्धावस्था नहीं है, वहाँ मृत्यु नहीं है। इसीलिए गीता अध्याय 7 श्लोक 29 में कहा है कि जो जरा

अर्थात् वृद्ध अवस्था तथा मरण अर्थात् मृत्यु से छूटने का प्रयत्न करते हैं, वे तत् ब्रह्म अर्थात् अक्षर ब्रह्म को जानते हैं। सत्यलोक में सत्यपुरूष रहता है, वहाँ पर जरा-मरण नहीं है, बच्चे फिर सदा युवा रहते हैं।

(प्रमाण ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 82 मन्त्र 1-2)

असावि सोमो अरुषो वृषा हरी राजेव दस्मो अभि गा अचिक्रदत्।
पुनानो वारं पर्येत्यव्ययं श्येनो न योनिं घृतवन्तमासदम् ॥१॥

पदार्थः—(सोमः) जो सर्वोत्पादक प्रभु (अरुषः) प्रकाशस्वरूप (वृषा) सद्गुणों की वृष्टि करने वाला (हरिः) पापों के हरण करने वाला है, वह (राजेव) राजा के समान (दस्मः) दर्शनीय है। और वह (गाः) पृथिव्यादि लोक-लोकान्तरों के चारों ओर (अभि अचिक्रदत्) शब्दायमान हो रहा है। वह (वारं) वरणीय पुरुष को जो (अव्ययं) दृढ़भक्त है उसको (पुनानः) पवित्र करता हुआ (पर्येति) प्राप्त होता है। (न) जिस प्रकार (श्येनः) विद्युत् (घृतवन्तं) स्नेहवाले (आसदं) स्थानों को (योनिं) आधार बनाकर प्राप्त होता है। इसी प्रकार उक्त गुण वाले परमात्मा ने (असावि) इस ब्रह्माण्ड को उत्पन्न किया ॥१॥

कविर्वेधस्या पर्येषि माहिनमत्यो न मृष्टो अभि वाजमर्षसि।
अपसेधन्दुरिता सोम मृळय घृतं वसानः परि यासि निर्णिजम् ॥२॥

पदार्थः—हे परमात्मन्! (वेधस्या) उपदेश करने की इच्छा से आप (माहिनं) महापुरुषों को (पर्येषि) प्राप्त होते हो। और आप (अत्यः) अत्यन्त गतिशील पदार्थ के (न) समान (अभिवाजं) हमारे आध्यात्मिक यज्ञ को (अभ्यर्षसि) प्राप्त होते हैं। आप (कविः) सर्वज्ञ हैं (मृष्टः) शुद्ध स्वरूप हैं (दुरिता) हमारे पापों को (अपसेधन्) दूर करके (सोम) हे सोम! (मृळय) आप हमको सुख दें। और (घृतं वसानः) प्रेम-भाव को उत्पन्न करते हुए (निर्निजं) पवित्रता को (परियासि) उत्पन्न करें ॥२॥

विवेचन :- ऊपर ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 82 मन्त्र 1-2 की फोटोकापी हैं, यह अनुवाद महर्षि दयानन्द जी के दिशा-निर्देश से उन्हीं के चेलों ने किया है और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली से प्रकाशित है।

इनमें स्पष्ट है कि :- मन्त्र 1 में कहा है ''सर्व की उत्पत्ति करने वाला परमात्मा तेजोमय शरीर युक्त है, पापों को नाश करने वाला और सुखों की वर्षा करने वाला अर्थात् सुखों की झड़ी लगाने वाला है, वह ऊपर सत्यलोक में सिंहासन पर बैठा है जो देखने में राजा के समान है।

यही प्रमाण सूक्ष्मवेद में है कि :-

अर्श कुर्श पर सफेद गुमट है, जहाँ परमेश्वर का डेरा।

श्वेत छत्र सिर मुकुट विराजे, देखत न उस चेहरे नूं।।

यही प्रमाण बाईबल ग्रन्थ तथा कुर्आन् शरीफ में है कि परमात्मा ने छः दिन में सृष्टि रची और सातवें दिन ऊपर आकाश में तख्त अर्थात् सिंहासन पर जा विराजा। (बाईबल के उत्पत्ति ग्रन्थ 2/26-30 तथा कुर्आन् शरीफ की ''सूरत फुर्कानि 25 आयत 52 से 59 में है।)

वह परमात्मा अपने अमर धाम से चलकर पृथ्वी पर शब्द वाणी से ज्ञान सुनाता है। वह वर्णीय अर्थात् आदरणीय श्रेष्ठ व्यक्तियों को प्राप्त होता है, उनको मिलता है। {जैसे 1. सन्त धर्मदास जी बांधवगढ(मध्य प्रदेश वाले को मिले) 2. सन्त मलूक दास जी को मिले, 3. सन्त दादू दास जी को आमेर (राजस्थान) में मिले 4. सन्त नानक देव जी को मिले 5. सन्त गरीब दास जी गाँव छुड़ानी जिला झज्जर हरियाणा वाले को मिले 6. सन्त घीसा दास जी गाँव खेखड़ा जिला बागपत (उत्तर प्रदेश) वाले को मिले 7. सन्त जम्भेश्वर जी (बिश्नोई धर्म के प्रवर्तक) को गाँव समराथल राजस्थान वाले को मिले}

वह परमात्मा अच्छी आत्माओं को मिलते हैं। जो परमात्मा के दृढ़ भक्त होते हैं, उन पर परमात्मा का विशेष आकर्षण होता है। उदाहरण भी बताया है कि जैसे विद्युत अर्थात् आकाशीय बिजली स्नेह वाले स्थानों को आधार बनाकर गिरती है। जैसे कांशी धातु पर बिजली गिरती है, पहले कांशी धातु के कटोरे, गिलास-थाली, बेले आदि-आदि होते थे। वर्षा के समय तुरन्त उठाकर घर के अन्दर रख करते थे। वृद्ध कहते थे कि कांशी के बर्तन पर बिजली अमूमन गिरती है, इसी प्रकार परमात्मा अपने प्रिय भक्तों पर आकर्षित होकर मिलते हैं।

मन्त्र नं. 2 में तो यह भी स्पष्ट किया है कि परमात्मा उन अच्छी आत्माओं को उपदेश करने की इच्छा से खुद महापुरूषों को मिलते हैं। उपदेश का भावार्थ है कि परमात्मा तत्वज्ञान बताकर उनको दीक्षा भी देते हैं। उनके सतगुरू भी होते हैं स्वयं परमात्मा। यह भी स्पष्ट किया है कि परमात्मा अत्यन्त गतिशील पदार्थ अर्थात् बिजली के समान तीव्रगामी होकर हमारे धार्मिक अनुष्ठानों में आप पहुँचते हैं। आप आगे पढ़ेंगे कि सन्त धर्मदास को परमात्मा ने यही कहा था कि मैं वहाँ पर अवश्य जाता हूँ जहाँ धार्मिक अनुष्ठान होते हैं क्योंकि मेरी अनुस्थिति में काल कुछ भी उपद्रव कर देता है। जिससे साधकों की आस्था परमात्मा से छूट जाती है। मेरे रहते वह ऐसी गड़बड़ नहीं कर सकता। इसीलिए गीता अध्याय 3 श्लोक 15 में कहा है कि वह अविनाशी परमात्मा जिसने ब्रह्म को भी उत्पन्न किया, सदा ही यज्ञों में प्रतिष्ठित है अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों में उसी को ईष्ट रूप में मानकर आरती स्तुति करनी चाहिए।

इस ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 82 मन्त्र 2 में यह भी स्पष्ट किया है कि आप (कविर्वेधस्य) कविर्देव है जो सर्व को उपदेश देने की इच्छा से आते हो, आप पवित्र परमात्मा हैं। हमारे पापों को छुड़वाकर अर्थात् नाश करके हे अमर परमात्मा! आप हम को सुःख दें और (द्युतम् वसानः निर्निजम् परियसि) हम आप की सन्तान हैं।

हमारे प्रति वह वात्सल्य वाला प्रेम भाव उत्पन्न करते हुए उसी (निर्निजम्) सुन्दर रूप को (परियासि) उत्पन्न करें अर्थात् हमारे को अपने बच्चे जानकर जैसे पहले और जब चाहें तब आप अपनी प्यारी आत्माओं को अपने बच्चे जानकर जैसे पहले और जब चाहें तब आप अपनी प्यारी आत्माओं को प्रकट होकर मिलते हैं, उसी तरह हमें भी दर्शन दें।

(प्रमाण ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 96 मन्त्र 16 से 20)

स्वायुधः सोतृभिः पूयमानोऽभ्यर्ष गुह्यं चारु नाम ।
अभि वाजं सप्तिरिव श्रवस्याभि वायुमभि गा देव सोम ॥१६॥

पदार्थः—हे परमात्मन् ! (**गुह्यम्**) सर्वोपरि रहस्य (**चारु**) श्रेष्ठ (**नाम**) जो तुम्हारी संज्ञा है। (**अभ्यर्ष**) उसका ज्ञान करायें। आप (**सोतृभिः, पूयमानः**) उपासक लोगों से स्तूयमान हैं। (**स्वायुधः**) स्वाभाविक शक्ति से युक्त हैं और (**सप्तिरिव**) विद्युत् के समान (**श्रवस्याभि**) ऐश्वर्य के सम्मुख प्राप्त कराइये और (**वायुमभि**) हमको प्राणों की विद्या का वेत्ता बनाइये। (**देव**) हे सर्वशक्ति-सम्पन्न परमेश्वर ! हमको (**गाः**) इन्द्रियों के (**अभिगमय**) नियमन का ज्ञाता बनाइये ॥१६॥

शिशुं जज्ञानं हर्यतं मृजन्ति शुम्भन्ति वह्निं मरुतो गणेन ।
कविर्गीर्भिः काव्येना कविः सन्त्सोमः पवित्रमत्येति रेभन् ।१७॥

पदार्थः—(**शिशुम्**) "श्यति सूक्ष्मं करोति प्रलयकाले जगदिति शिशुः परमात्मा" उस परमात्मा को (**जज्ञानम्**) जो सदा प्रकट है, (**हर्यतः**) जो अत्यन्त कमनीय है, उसको उपासक लोग (**मृजन्ति**) बुद्धिविषय करते हैं और (**शुंभन्ति**) उसकी स्तुति द्वारा उसके गुणों का वर्णन करते हैं और (**मरुतः**) विद्वान् लोग (**वह्निम्**) उस गतिशील परमात्मा का (**गणेन**) गुणों के गणों द्वारा वर्णन करते हैं और (**कविः**) कवि लोग (**गीर्भिः**) वाणी द्वारा और (**काव्येन**) कवित्व से उसकी स्तुति करते हैं। (**सोमः**) सोमस्वरूप (**पवित्रम्**) पवित्र वह परमात्मा कारणावस्था में अतिसूक्ष्म प्रकृति को (**रेभन्, सन्**) गर्जता हुआ (**अत्येति**) अतिक्रमण करता है ॥१७॥

केवल हिन्दी :- (शिशुम् जज्ञानम् हर्यन्तम्) परमेश्वर जान-बूझकर तत्वज्ञान बताने के उद्देश्य से शिशु रूप में प्रकट होता है, उनके ज्ञान को सुनकर (मरूतो गणेन) भक्तों का बहुत बड़ा समूह उस परमात्मा का अनुयाई बन जाता है। (मृजन्ति शुम्यन्ति वहिन्)

वह ज्ञान बुद्धिजीवी लोगों को समझ आता है, वे उस परमेश्वर की स्तुति भक्ति तत्वज्ञान के आधार से करते हैं, वह भक्ति (वहिन्) शीघ्र लाभ देने वाली होती है। वह परमात्मा अपने तत्वज्ञान को (काव्येना) कवित्व से अर्थात् कवियों की तरह दोहों, शब्दों, लोकोक्तियों, चौपाईयों द्वारा (कविर् गीर्भिः) कविर् वाणी द्वारा अर्थात्

कबीर वाणी द्वारा (पवित्रम् अतिरेमन्) शुद्ध ज्ञान को उच्चे स्वर में गर्ज-गर्जकर बोलते हैं। वे (कविः) कवि की तरह आचरण करने वाला कविर्देव (सन्त्) सन्त रूप में प्रकट (सोम) अमर परमात्मा होता है। (ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 17)
विशेष :- इस मन्त्र के मूल पाठ में दो बार ''कविः'' शब्द है, आर्य समाज के अनुवादकर्ताओं ने एक (कविः) का अर्थ ही नहीं किया है।

ऋषिमना य ऋषिकृत्स्वर्षाः सहस्रणीथः पदवीः कवीनाम् ।
तृतीयं धाम महिषः सिषासन्त्सोमो विराजमनु राजति ष्टुप् ।।१८।।

पदार्थः—(**सोमः**) सोमस्वरूप परमात्मा (**सिसासन्**) पालन की इच्छा करता हुआ (**महिषः**) जो महान् है वह परमात्मा (**तृतीयं, धाम**) देवयान और पितृयान इन दोनों से पृथक तीसरा जो मुक्तिधाम है। उसमें (**विराजम्**) विराजमान जो ज्ञानयोगी है उसको (**अनुराजति**) प्रकाश करने वाला है और (**स्तुप**) स्तूयमान है। (**कवीनाम्, पदवीः**) जो क्रान्तदर्शियों की पदवी अर्थात् मुख्य स्थान है और (**सहस्रनीथः**) अनन्त प्रकार से स्तवनीय है, (**ऋषिमनाः**) सर्वज्ञान के साधनरूप मनवाला वह परमात्मा (**यः**) जो (**ऋषिकृत**) सब ज्ञानों का प्रदाता (**स्वर्षाः**) सूर्यादिकों को प्रकाशक है। वह जिज्ञासु के लिए उपासनीय है ।।१८।।

विवेचन :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 18 पर विवेचन करते हैं। इसके अनुवाद में भी बहुत-सी गलतियाँ हैं। हम संस्कृत भी समझ सकते हैं, विवेचन करता हूँ तथा यथार्थ अनुवाद व भावार्थ स्पष्ट करता हूँ। मन्त्र 17 में कहा है कि ऋषि या सन्त रूप में प्रकट होकर परमात्मा अमृतवाणी अपने मुख कमल से बोलता है और उस ज्ञान को समझकर अनेकों अनुयाईयों का समूह बन जाता है। (य) जो वाणी परमात्मा तत्वज्ञान की सुनाता है, वे (ऋषिकृत्) ऋषि रूप में प्रकट परमात्मा कृत (संहस्रणीयः) हजारों वाणियाँ अर्थात् कबीर वाणियाँ (ऋषिमना) ऋषि स्वभाव वाले भक्तों के लिए (स्वर्षाः) आनन्ददायक होती हैं। (कविनाम पदवीः) कवित्व से दोहों, चौपाईयों में वाणी बोलने के कारण वह परमात्मा प्रसिद्ध कवि की भी पदवी प्राप्त करता है। वह (सोम) अमर परमात्मा (सिवासन्) सर्व की पालन की इच्छा करता हुआ प्रथम स्थिति में (महिवः) बड़ी पृथ्वी अर्थात् ऊपर के लोकों में (तृतीयम् धाम) तीसरे धाम अर्थात् सत्यलोक के तीसरे पृष्ठ पर (अनुराजति) तेजोमय शरीर युक्त (स्तुप) गुम्बज में (विराजम्) विराजमान है, वहाँ बैठा है। यही प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 54 मन्त्र 3 में है कि परमात्मा सर्व लोकों के ऊपर के लोक में विराजमान है, (तिष्ठन्ति) बैठा है।

चमूषच्छ्येनः शकुनो विभृत्वा गोविन्दुर्द्रप्स आयुधानि बिभ्रत् ।
अपामूर्मिं सचमानः समुद्रं तुरीयं धाम महिषो विवक्ति ॥१९।

पदार्थः—(अपामूर्मिम्) प्रकृति की सूक्ष्म से सूक्ष्म शक्तियों के साथ (सचमानः) जो संगत है और (समुद्रम्) "सम्यक् द्रवन्ति भूतानि यस्मात् स समुद्रः" जिससे सब भूतों की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय होता है। वह (तुरीयम्) चौथा (धाम) परमपद परमात्मा है। उसको (महिषः) मह्यते इति महिषः महिष इति महन्नामसु पठितम् नि० ३—१३। महापुरुष उक्त तुरीय परमात्मा का (विवक्ति) वर्णन करता है। वह परमात्मा (चमूसत्) जो प्रत्येक बल में स्थित है (श्येनः) सर्वोपरि प्रशंसनीय है और (शकुनः) सर्वशक्तिमान् है। (गोविन्दुः) यजमानों को तृप्त करके जो (द्रप्सः) शीघ्रगति वाला है (आयुधानि, बिभ्रत्) अनन्त शक्तियों को धारण करता हुआ इस सम्पूर्ण संसार का उत्पादक है ॥१९॥

विवेचन :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 19 का भी आर्य समाज के विद्वानों ने अनुवाद किया है। इसमें भी बहुत सारी गलतियाँ है। पुस्तक विस्तार के कारण केवल अपने मतलब की जानकारी प्राप्त करते हैं। इस मन्त्र में चौथे धाम का वर्णन है जो आप जी सृष्टि रचना में पढ़ेंगे, उससे पूर्ण जानकारी होगी। पढ़ें इसी पुस्तक के पृष्ठ 101 पर।

परमात्मा ने ऊपर के चार लोक अजर-अमर रचे हैं। 1. अनामी लोक जो सबसे ऊपर है। 2. अगम लोक 3. अलख लोक 4. सत्यलोक। हम पृथ्वी लोक पर हैं, यहाँ से ऊपर के लोकों की गिनती करेंगे तो 1. सत्यलोक 2. अलख लोक 3. अगम लोक तथा चौथा अनामी लोक उस चौथे धाम में बैठकर परमात्मा ने सर्व ब्रह्माण्डों व लोकों की रचना की। शेष रचना सत्यलोक में बैठकर की थी। आर्य समाज के अनुवादकों ने तुरिया परमात्मा अर्थात् चौथे परमात्मा का वर्णन किया है। यह चौथा धाम है। उसमें मूल पाठ मन्त्र 19 का भावार्थ है कि तत्वदर्शी सन्त चौथे धाम तथा चौथे परमात्मा का (विवक्ति) भिन्न-भिन्न वर्णन करता है। पाठक जन कृपया पढ़ें सृष्टि रचना इसी पुस्तक के पृष्ठ 101 पर जिससे आप जी को ज्ञान होगा कि लेखक (संत रामपाल दास) ही वह तत्वदर्शी संत है जो तत्वज्ञान से परीचित है।

मर्यो न शुभ्रस्तन्वं मृजानोऽत्यो न सृत्वा सनये धनानाम् ।
वृषेव यूथा परि कोशमर्षन्कनिक्रदच्चम्वोरा विवेश ॥२०॥

पदार्थः—वह परमात्मा (यूथा, वृषेव) जिस प्रकार एक संघ को उसका सेनापति प्राप्त होता है, इसी प्रकार (कोशम्) इस ब्रह्माण्डरूपी कोश को (अर्षन्) प्राप्त होकर (कनिक्रदत्) उच्च स्वर से गर्जता हुआ (चम्वोः) इस ब्रह्माण्ड रूपी विस्तृत प्रकृति-खण्ड में (पर्याविवेश) भली-भांति प्रविष्ट होता है और (न) जैसे कि (मर्यः) मनुष्य (शुभ्रस्तन्वं, मृजानः) शुभ्र शरीर को धारण करता हुआ (अत्योन) अत्यन्त गतिशील पदार्थों के समान (सनये) प्राप्ति के लिए (सृत्वा) गतिशील होता हुआ (धनानाम्) धनों के लिए कटिबद्ध होता है; इसी प्रकार प्रकृतिरूपी ऐश्वर्य को धारण करने के लिए परमात्मा सदैव उद्यत है ॥२०॥

विवेचन :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 20 का यथार्थ ज्ञान जानते हैं:-

इस मन्त्र का अनुवाद महर्षि दयानन्द के चेलों द्वारा किया गया है, इनका दृष्टिकोण यह रहा है कि परमात्मा निराकार है क्योंकि महर्षि दयानन्द जी ने यह बात दृढ़ की है कि परमात्मा निराकार है। इसलिए अनुवादक ने सीधे मन्त्र का अनुवाद घुमा-फिराकर किया है। जैसे मूल पाठ में लिखा है:-

मर्य न शभ्रः तन्वा मृजानः अत्यः न सृत्वा सनये धनानाम्।
वृर्षेव यूथा परि कोशम अर्षन् कनिक्रदत् चम्वोः आविवेश।।

अनुवाद :- (न) जैसे (मर्यः) मनुष्य सुन्दर वस्त्र धारण करता है, ऐसे परमात्मा (शुभ्रः तन्व) सुन्दर शरीर (मृजानः) धारण करके (अत्यः) अत्यन्त गति से चलता हुआ (सनये धनानाम्) भक्ति धन के धनियों अर्थात् पुण्यात्माओं को (सनये) प्राप्ति के लिए आता है। (यूथा वृषेव) जैसे एक समुदाय को उसका सेनापति प्राप्त होता है, ऐसे वह परमात्मा संत व ऋषि रूप में प्रकट होता है तो उसके बहुत सँख्या में अनुयाई बन जाते हैं और परमात्मा उनका गुरू रूप में मुखिया होता है। वह परमात्मा (कोशम्) अर्थात् (परि कोशम्) प्रथम ब्रह्माण्ड में (अर्षन्) प्राप्त होकर अर्थात् आकर (कनिक्रदत्) ऊँचे स्वर में सत्यज्ञान उच्चारण करता हुआ (चम्वोः) पृथ्वी खण्ड में (अविवेश) प्रविष्ट होता है।

भावार्थ :- जैसे पूर्व में वेद मन्त्रों में कहा है कि परमात्मा ऊपर के लोक में रहता है, वहाँ से गति करके पृथ्वी पर आता है, अपने रूप को अर्थात् शरीर के तेज को सरल करके आता है। इस ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 20 में उसी की पुष्टि की है। कहा है कि परमात्मा ऐसे अन्य शरीर धारण करके पृथ्वी पर आता है जैसे मनुष्य वस्त्र धारण करता है और (धनानाम्) दृढ़ भक्तों (अच्छी पुण्यात्माओं) को प्राप्त होता है, उनको वाणी उच्चारण करके तत्वज्ञान सुनाता है।

विवेचन :- ये ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 16 से 20 की फोटोकापियाँ हैं, जिनका हिन्दी अनुवाद महर्षि दयानन्द सरस्वती आर्यसमाज प्रवर्तक के दिशा-निर्देश से उनके आर्यसमाजी चेलों ने किया है। यह अनुवाद कुछ-कुछ ठीक है, अधिक गलत है। पहले अधिक ठीक या कुछ-कुछ गलत था जो मेरे द्वारा शुद्ध करके विवेचन में लिख दिया है। अब अधिक गलत को शुद्ध करके लिखता हूँ।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 16 में कहा है कि :-

हे परमात्मा! आपका जो गुप्त वास्तविक (चारू) श्रेष्ठ (नाम) नाम है, उसका ज्ञान कराऐं। प्रिय पाठको! जैसे भारत के राजा को प्रधानमन्त्री कहते हैं, यह उनकी पदवी का प्रतीक है। उनका वास्तविक नाम कोई अन्य ही होता है। जैसे पहले प्रधानमन्त्री जी पंडित जवाहर लाल नेहरू जी थे। ''जवाहरलाल'' उनका वास्तविक नाम है। आपका जो वास्तविक नाम है वह (सोतृमिः) उपासना करने का (स्व आयुधः) स्वचलित शस्त्र के समान (पूयमानः) अज्ञान रूपी गन्द को नाश करके पापनाशक है। आप अपने उस सत्य मन्त्र का हमें ज्ञान कराऐं। (देव सोम) हे अमर परमेश्वर! आपका वह मन्त्र श्वांसों द्वारा नाक आदि (गाः) इन्द्रियों से (वासुम् अभि)

श्वांस-उश्वांस से जपने से (सप्तिरिव = सप्तिः इव) विद्युत् जैसी गति से अर्थात् शीघ्रता से (अभिवाजं) भक्ति धन से परिपूर्ण करके (श्रवस्यामी) ऐश्वर्य को तथा मोक्ष को प्राप्त कराईये।

प्रिय पाठकों से निवेदन है कि इस ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 16 के अनुवाद में बहुत-सी गलतियाँ थी जो शुद्ध कर दी हैं। प्रमाण के लिए मूल पाठ मे ''वाजं अभी'' शब्द है इसका अनुवाद नहीं किया गया है। इसके स्थान पर ''अभिगमय'' शब्द का अर्थ जोड़ा है जो मूल पाठ में नहीं है।

विवेचन :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 17 के अनुवाद में भी बहुत गलतियाँ हैं जो आर्यसमाजियों द्वारा अनुवादित है। अब शुद्ध करके लिखता हूँ:-

जैसा कि पूर्वोक्त ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 तथा 82 के मन्त्रों में प्रमाण है कि परमात्मा अपने शाश्वत् स्थान से जो द्यूलोक के तीसरे स्थान पर विराजमान है, वहाँ से चलकर पृथ्वी पर जान-बूझकर किसी खास उद्देश्य से प्रकट होता है। परमात्मा सर्व ब्रह्माण्डों में बसे प्राणियों की परवरिश तीन स्थिति में करते हैं। 1. परमात्मा ऊपर सत्यलोक अर्थात् अविनाशी धाम में सिंहासन (तख्त) पर बैठकर सर्व ब्रह्माण्डों का संचालन करते हैं। 2. जब चाहें साधु सन्त के रूप में अपने शरीर का तेज सरल करके अच्छी आत्माओं को मिलते हैं। 3. प्रत्येक युग में किसी जलाश्य में खिले कमल के फूल पर नवजात शिशु का रूप बनाकर प्रकट होते हैं, वहाँ से निःसन्तान दम्पति अपने घर ले जाते हैं। बचपन से ही वह परमात्मा अपना वास्तविक भक्ति ज्ञान जिसे तत्वज्ञान भी कहते हैं, चोपाइयों, दोहों, साखियों व कविताओं के रूप मे सुनाते हैं। जैसे सन् 1398 वि.सं. 1455 में परमात्मा अपने निज स्थान से चलकर भारत वर्ष के काशी शहर के बाहर लहरतारा नामक जलाश्य में कमल के फूल पर शिशु रूप धारण करके प्रकट हुए थे। वहाँ से नीरू-नीमा जुलाहा दम्पति अपने घर ले गए थे। धीरे-धीरे परमात्मा बड़े हुए। कबीर वाणी बोलकर ज्ञान सुनाया था। प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 1 मन्त्र 9 में है जो आर्य समाज के आचार्यों द्वारा अनुवादित है। उसमें भी कुछ गलती है, अधिक नहीं। कृप्या पढ़ें यह ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 1 मन्त्र 9 की फोटोकापी:--

अभी३ममघ्न्या उत श्रीणन्ति धेनवः शिशुम्।
सोममिन्द्राय पातवे ॥९॥

पदार्थः—(इमं) उस (सोमं) सौम्यस्वभाव वाले श्रद्धालु पुरुष को (शिशुं) कुमारावस्था में ही (अभि) सब प्रकार से (अघ्न्याः) अहिंसनीय (धेनवः) गौवें (श्रीणन्ति) तृप्त करती हैं (इन्द्राय) ऐश्वर्य्यं की (पातवे) वृद्धि के लिये। (उत) अथवा उक्त श्रद्धालु पुरुष को अहिंसनीय वाणियें ऐश्वर्य्यं की प्राप्ति के लिये संस्कृत करती हैं ॥९॥

विवेचन :- यह फोटो कापी ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 1 मन्त्र 9 की है इसमें स्पष्ट

है कि (सोम) अमर परमात्मा जब शिशु रूप में प्रकट होता है तो उसकी परवरिश की लीला कंवारी गायों (अभि अध्न्या धेनुवः) द्वारा होती है। यही प्रमाण कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' में है कि जिस परमेश्वर कबीर जी को नीरू-नीमा अपने घर ले गए। तब शिशु रूपधारी परमात्मा ने न अन्न खाया, न दूध पीया। फिर स्वामी रामानन्द जी के बताने पर एक कंवारी गाय अर्थात् एक बछिया नीरू लाया, उसने तत्काल दूध दिया। उस कंवारी गाय के दूध से परमेश्वर की परवरिश की लीला हुई थी। कबीर सागर लगभग 600 (छः सौ) वर्ष पहले का लिखा हुआ है।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 1 मन्त्र 9 के अनुवाद में कुछ गलती की है। जैसे (अभिअध्न्या) का अर्थ अहिंसनीय कर दिया जो गलत है। हरियाणा प्रान्त के जिला रोहतक में गाँव धनाना में लेखक का जन्म हुआ जो वर्तमान में जिला सोनीपत में है। इस क्षेत्र में जिस गाय ने गर्भ धारण न किया हो तो कहते हैं कि यह धनाई नहीं है, यह बिना धनाई है। यह अभ्रंस शब्द है जो ''अध्न्य'' का अर्थ है पूर्ण रूप से बिना धनायी अर्थात् कंवारी गाय अर्थात् बछिया।

अब ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 17 का शुद्ध अनुवाद करता हूँ:-

केवल हिन्दी :- (शिशुम् जज्ञानम् हर्यन्तम्) परमेश्वर जान-बूझकर तत्वज्ञान बताने के उद्देश्य से शिशु रूप में प्रकट होता है, उनके ज्ञान को सुनकर (मरूतो गणेन) भक्तों का बहुत बड़ा समूह उस परमात्मा का अनुयाई बन जाता है। (मृजन्ति शुम्यन्ति वहिन्)

वह ज्ञान बुद्धिजीवी लोगों को समझ आता है। वे उस परमेश्वर की स्तुति-भक्ति तत्वज्ञान के आधार से करते हैं, वह भक्ति (वहिन्) शीघ्र लाभ देने वाली होती है। वे परमात्मा अपने तत्वज्ञान को (काव्येना) कवित्व से अर्थात् कवियों की तरह दोहों, शब्दों, लोकोक्तियों, चौपाईयों द्वारा (कविर् गीर्भिः) कविर् वाणी द्वारा अर्थात् कबीर वाणी द्वारा (पवित्रम् अतिरेमन्) शुद्ध ज्ञान को ऊँचे स्वर में गर्ज-गर्जकर बोलते हैं। वह (कविः) कवि की तरह आचरण करने वाला कविर्देव (सन्त्) सन्त रूप में प्रकट (सोम) अमर परमात्मा होता है। (ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 17) विशेष :- इस मन्त्र के मूल पाठ में दो बार ''कविः'' शब्द है, आर्य समाज के अनुवादकर्ताओं ने एक (कविः) का अर्थ ही नहीं किया है।

विवेचन :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 18 पर विवेचन करते हैं। इसके अनुवाद में भी बहुत-सी गलतियाँ है। हम संस्कृत भी समझ सकते हैं। विवेचन करता हूँ तथा यथार्थ अनुवाद व भावार्थ स्पष्ट करता हूँ। मन्त्र 17 में कहा कि ऋषि या सन्त रूप में प्रकट होकर परमात्मा अमृतवाणी अपने मुख कमल से बोलता है और उस ज्ञान को समझकर अनेकों अनुयाईयों का समूह बन जाता है। (य) जो वाणी परमात्मा तत्वज्ञान को सुनाता है। वे (ऋषिकृत्) ऋषि रूप में प्रकट परमात्मा कृत (सहस्रणीयः) हजारों वाणियाँ अर्थात् कबीर वाणियाँ (ऋषिमना) ऋषि स्वभाव वाले भक्तों के लिए (स्वर्षाः) आनन्ददायक होती हैं। (कविनाम पदवीः) कवित्व से दोहों, चौपाईयों में वाणी बोलने के कारण वह परमात्मा प्रसिद्ध कवि की भी पदवी

प्राप्त करता है। वह (सोम) अमर परमात्मा (सिवासन्) सर्व की पालन की इच्छा करता हुआ प्रथम स्थिति में (महिवः) बड़ी पृथ्वी अर्थात् ऊपर के लोकों में (तृतीयम् धाम) तीसरे धाम अर्थात् सत्यलोक के तीसरे पृष्ठ पर (अनुराजति) तेजोमय शरीर युक्त (स्तुप) गुम्बज में (विराजम्) विराजमान है, वहाँ बैठा है। यही प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 54 मन्त्र 3 में है कि परमात्मा सर्व लोकों के ऊपर के लोक में विराजमान है, (तिष्ठन्ति) बैठा है।

विवेचन :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 19 का भी आर्यसमाज के विद्वानों ने अनुवाद किया है। इसमें भी बहुत सारी गलतियाँ हैं। पुस्तक विस्तार के कारण केवल अपने मतलब की जानकारी प्राप्त करते हैं।

इस मन्त्र में चौथे धाम का वर्णन है। आप जी सृष्टि रचना में पढ़ेंगे, उससे पूर्ण जानकारी होगी। पढ़ें इसी पुस्तक के पृष्ठ 101 पर।

परमात्मा ने ऊपर के चार लोक अजर-अमर रचे हैं। 1. अनामी लोक जो सबसे ऊपर है 2. अगम लोक 3. अलख लोक 4. सत्य लोक।

हम पृथ्वी लोक पर हैं, यहाँ से ऊपर के लोकों की गिनती करेंगे तो 1. सत्यलोक 2. अलख लोक 3. अगम लोक तथा चौथा अनामी लोक उस चौथे धाम में बैठकर परमात्मा ने सर्व ब्रह्माण्डों व लोकों की रचना की। शेष रचना सत्यलोक में बैठकर की थी। आर्यसमाज के अनुवादकों ने तुरिया परमात्मा अर्थात् चौथे परमात्मा का वर्णन किया है। यह चौथा धाम है। उसमें मूल पाठ मन्त्र 19 का भावार्थ है कि तत्वदर्शी सन्त चौथे धाम तथा चौथे परमात्मा का (विवक्ति) भिन्न-भिन्न वर्णन करता है। पाठकजन कृपया पढ़ें सृष्टि रचना इसी पुस्तक के पृष्ठ 101 पर जिससे आप जी को ज्ञान होगा कि लेखक (संत रामपाल दास) ही वह तत्वदर्शी संत है जो तत्वज्ञान से परीचित है।

विवेचन :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 20 का यथार्थ जानते हैं:-

इस मन्त्र का अनुवाद महर्षि दयानन्द के चेलों द्वारा किया गया है। इनका दृष्टिकोण यह रहा है कि परमात्मा निराकार है क्योंकि महर्षि दयानन्द जी ने यह बात दृढ़ की है कि परमात्मा निराकार है। इसलिए अनुवादक ने सीधे मन्त्र का अनुवाद घुमा-फिराकर किया है। जैसे मूल पाठ में लिखा है:-

मर्य न शभ्रः तन्वा मृजानः अत्यः न सृत्वा सनये धनानाम्।
वृर्षेव यूथा परि कोशम अर्षन् कनिक्रदत् चम्वोः आविवेश।।

अनुवाद :- (न) जैसे (मर्यः) मनुष्य सुन्दर वस्त्र धारण करता है, ऐसे परमात्मा (शुभ्रः तन्व) सुन्दर शरीर (मृजानः) धारण करके (अत्यः) अत्यन्त गति से चलता हुआ (सनये धनानाम्) भक्ति धन के धनियों अर्थात् पुण्यात्माओं को (सनये) प्राप्ति के लिए आता है (यूथा वृषेव) जैसे एक समुदाय को उसका सनापति प्राप्त होता है। ऐसे वह परमात्मा संत व ऋषि रूप में प्रकट होता है तो उसके बहुत सँख्या में अनुयाई बन जाते हैं और परमात्मा उनका गुरू रूप में मुखिया होता है। वह परमात्मा (कोशम्) अर्थात् (परि कोशम्) प्रथम ब्रह्माण्ड में (अर्षन्) प्राप्त होकर अर्थात् आकर (कनिक्रदत्) ऊँचे स्वर में सत्यज्ञान उच्चारण करता हुआ (चम्वौ)

पृथ्वी खण्ड में (अविवेश) प्रविष्ट होता है।

भावार्थ :- जैसे पूर्व में वेद मन्त्रों में कहा है कि परमात्मा ऊपर के लोक में रहता है, वहाँ से गति करके पृथ्वी पर आता है, अपने रूप को अर्थात् शरीर के तेज को सरल करके आता है। इस ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 20 में उसी की पुष्टि की है। कहा है कि परमात्मा ऐसे अन्य शरीर धारण करके पृथ्वी पर आता है। जैसे मनुष्य वस्त्र धारण करता है और (धनानाम्) दृढ़ भक्तों (अच्छी पुण्यात्माओं) को प्राप्त होता है, उनको वाणी उच्चारण करके तत्वज्ञान सुनाता है।

(प्रमाण ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 95 मन्त्र 2)

हरिः सृजानः पथ्यामृतस्येयर्ति वाचमरितेव नावम् ।
देवो देवानां गुह्यानि नामाविष्कृणोति बर्हिषि प्रवाचे ॥२॥

पदार्थः—(हरिः) वह पूर्वोक्त परमात्मा (सृजानः) साक्षात्कार को प्राप्त हुआ (ऋतस्य पथ्यां) वाक् द्वारा मुक्ति मार्ग की (इर्यति) प्रेरणा करता है। (अरितेव नावम्) जैसा कि नौका के पार लगाने के समय में नाविक प्रेरणा करता है और (देवानां देवः) सब देवों का देव (गुह्यानि) गुप्त (नामाविष्कृणोति) संज्ञाओं को प्रकट करता है (बर्हिषि प्रवाचे) वाणीरूप यज्ञ के लिए ॥२॥

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 95 मन्त्र 2 का अनुवाद महर्षि दयानन्द के चेलों ने किया है जो बहुत ठीक किया है।

इसका भावार्थ है कि पूर्वोक्त परमात्मा अर्थात् जिस परमात्मा के विषय में पहले वाले मन्त्रों में ऊपर कहा गया है, वह (सृजानः) अपना शरीर धारण करके (ऋतस्य पश्याम्) सत्यभक्ति का मार्ग अर्थात् यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान अपनी अमृतमयी वाक् अर्थात् वाणी द्वारा मुक्ति मार्ग की प्रेरणा करता है।

वह मन्त्र ऐसा है जैसे (अतितेव नावम्) नाविक नौका में बैठाकर पार कर देता है, ऐसे ही परमात्मा सत्यभक्ति मार्ग साधक को संसार रूपी दरिया के पार करता है। वह (देवानाम् देवः) सब देवों का देव अर्थात् सब प्रभुओं का प्रभु परमेश्वर (वर्हिषि प्रवाचे) वाणी रूपी ज्ञान यज्ञ के लिए (गुह्यानि) गुप्त (नामा आविष्कृणोति) नामों का अविष्कार करता है अर्थात् जैसे गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में ''ऊँ तत् सत्'' ये गुप्त मन्त्र हैं जो उसी परमेश्वर ने मुझे (संत रामपाल दास) को बताऐ हैं। उनसे ही पूर्ण मोक्ष सम्भव है।

सूक्ष्मवेद में परमेश्वर ने कहा है कि :-

''सोहं'' शब्द हम जग में लाए, सारशब्द हम गुप्त छिपाए।

भावार्थ :- परमेश्वर ने स्वयं ''सोहं'' शब्द भक्ति के लिए बताया है। यह सोहं मन्त्र किसी भी प्रचीन ग्रन्थ (वेद, गीता, कुर्आन, पुराण तथा बाईबल) में नहीं है। फिर सूक्ष्म वेद में कहा है कि :-

सोहं ऊपर और है, सत्य सुकृत एक नाम।
सब हंसो का जहाँ बास है, बस्ती है बिन ठाम।।

भावार्थ :- सोहं नाम तो परमात्मा ने प्रकट कर दिया, आविष्कार कर दिया परन्तु सार शब्द को गुप्त रखा था। अब मुझे (लेखक संत रामपाल को) बताया है जो साधकों को दीक्षा के समय बताया जाता है। इसका गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में कहे ''ऊँ तत् सत्'' से सम्बन्ध है।

(प्रमाण ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 94 मन्त्र 1)

अधि यदस्मिन्वाजिनीव शुभः स्पर्धन्ते धियः सूर्ये न विशः ।
अपो वृणानः पवते कवीयन्व्रजं न पशुवर्धनाय मन्म ।।१।।

पदार्थः—(सूर्य्ये) सूर्य के विषय में (न) जैसे (विशः) रश्मियां प्रकाशित करती हैं। उसी प्रकार (धियः) मनुष्यों की बुद्धियां (स्पर्धन्ते) अपनी-अपनी उत्कट शक्ति से विषय करती हैं। (अस्मिन् अधि) जिस परमात्मा में (वाजिनीव) सर्वोपरि बलों के समान (शुभः) शुभ बल है वह परमात्मा (अपोवृणानः) कर्मों का अध्यक्ष होता हुआ (पवते) सबको पवित्र करता हैं। (कवीयन्) कवियों की तरह आचरण करता हुआ (पशुवर्धनाय) सर्वद्रष्टृत्व पद के लिए (व्रजं, न) इन्द्रियों के अधिकरण मन के समान 'व्रजन्ति इन्द्रियाणि यस्मिन् तद्व्रजम्' (मन्म) जो अधिकरणरूप है वही श्रेय का धाम है ।।१।।

विवेचन :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 94 मन्त्र 1 का अनुवाद भी आर्यसमाज के विद्वानों द्वारा किया गया है।

विवेचन :- पुस्तक विस्तार को ध्यान में रखते हुए उन्हीं के अनुवाद से अपना मत सिद्ध करते हैं। जैसे पूर्व में लिखे वेदमन्त्रों में बताया गया है कि परमात्मा अपने मुख कमल से वाणी उच्चारण करके तत्वज्ञान बोलता है, लोकोक्तियों के माध्यम से, कवित्व से दोहों, शब्दों, साखियों, चौपाईयों के द्वारा वाणी बोलने से प्रसिद्ध कवियों में से भी एक कवि की उपाधि प्राप्त करता है। उसका नाम कविर्देव अर्थात् कबीर साहेब है।

इस ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 94 मन्त्र 1 में भी यही कहा है कि जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर है, वह (कवियन् व्रजम् न) कवियों की तरह आचरण करता हुआ पृथ्वी पर विचरण करता है।

(प्रमाण ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 20 मन्त्र 1)

प्र कविर्देववीतयेऽव्यो वारेभिरर्षति ।
साह्वान्विश्वा अभि स्पृधः ।।१।।

पदार्थः—वह परमात्मा (कविः) मेधावी है और (अव्यः) सबका रक्षक है (देववीतये) विद्वानों की तृप्ति के लिये (अर्षति) ज्ञान देता है (साह्वान्) सहनशील है (विश्वाः, स्पृधः) सम्पूर्ण दुष्टों को संग्रामों में (अभि) तिरस्कृत करता है ।।१।।

विवेचन :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 20 मन्त्र 1 का अनुवाद भी आर्यसमाज के विद्वानों ने किया है। इसका अनुवाद ठीक कम गलत अधिक है। इसमें मूल पाठ में लिखा है:-

'प्र कविर्देव वीतये अव्यः वारेभिः अर्षति साह्वान् बिश्वाः अभि स्पृस्धः

सरलार्थ :- (प्र) वेद ज्ञान दाता से जो दूसरा (कविर्देव) कविर्देव कबीर परमेश्वर है, वह विद्वानों अर्थात् जिज्ञासुओं को, (वीतये) ज्ञान धन की तृप्ति के लिए (वारेभिः) श्रेष्ठ आत्माओं को (अर्षति) ज्ञान देता है। वह (अव्यः) अविनाशी है, रक्षक है, (साह्वान्) सहनशील (विश्वाः) तत्वज्ञान हीन सर्व दुष्टों को (स्पृधः) आध्यात्म ज्ञान की कृपा स्पृधा अर्थात् ज्ञान गोष्टी रूपी वाक् युद्ध में (अभि) पूर्ण रूप से तिरस्कृत करता है, उनको फिट्टे मुँह कर देता है।

विशेष :- (क) इस मन्त्र के अनुवाद में आप फोटोकापी में देखेंगे तो पता चलेगा कि कई शब्दों के अर्थ आर्य विद्वानों ने छोड़ रखे हैं जैसे = ''प्र'' ''वारेभिः'' जिस कारण से वेदों का यथार्थ भाव सामने नहीं आ सका।

(ख) मेरे अनुवाद से स्पष्ट है कि वह परमात्मा अच्छी आत्माओं (दृढ़ भक्तों) को ज्ञान देता है, उसका नाम भी लिखा है ''कविर्देव'', हम कबीर परमेश्वर कहते हैं।

(प्रमाण ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 54 मन्त्र 3)

अयं विश्वानि तिष्ठति पुनानो भुवनोपरि ।
सोमो देवो न सूर्यः ॥३॥

पदार्थः—(सूर्यः, न) सूर्य के समान जगत्प्रेरक (**अयम्**) यह परमात्मा (**सोमः, देवः**) सौम्य स्वभाव वाला और जगत्प्रकाशक है और (**विश्वानि, पुनानः**) सब लोकों को पवित्र करता हुआ (**भुवनोपरि, तिष्ठति**) सम्पूर्ण ब्रह्माण्डों के ऊर्ध्व भाग में भी वर्तमान है ॥३॥

विवेचनः- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 54 मन्त्र 3 की फोटोकापी में आप देखें, इसका अनुवाद आर्यसमाज के विद्वानों ने किया है। उनके अनुवाद में भी स्पष्ट है कि वह परमात्मा (भूवनोपरि) सम्पूर्ण ब्रह्माण्डों के ऊर्ध्व अर्थात् ऊपर (तिष्ठति) विराजमान है, ऊपर बैठा है:-

इसका यथार्थ अनुवाद इस प्रकार है :-

(अयं) यह (सोमः देव) अमर परमेश्वर (सूर्यः) सूर्य के (न) समान (विश्वानि) सर्व को (पुनानः) पवित्र करता हुआ (भूवनोपरि) सर्व ब्रह्माण्डों के ऊर्ध्व अर्थात् ऊपर (तिष्ठति) बैठा है।

भावार्थ :- जैसे सूर्य ऊपर है और अपना प्रकाश तथा उष्णता से सर्व को लाभ दे रहा है। इसी प्रकार यह अमर परमेश्वर जिसका ऊपर के मन्त्रों में वर्णन किया है। सर्व ब्रह्माण्डों के ऊपर बैठकर अपनी निराकार शक्ति से सर्व प्राणियों को लाभ दे रहा है तथा सर्व ब्रह्माण्डों का संचालन कर रहा है।

तर्क :- महर्षि दयानन्द का अर्थात् आर्यसमाजियों का मत है कि परमात्मा किसी एक स्थान पर किसी लोक विशेष में नहीं रहता।

प्रमाण :- सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास (Chapter) नं. 7 पृष्ठ 148 पर (आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट 427 गली मन्दिर वाली नया बांस दिल्ली-78वां संस्करण)

किसी ने प्रश्न किया:- ईश्वर व्यापक है वा किसी देश विशेष में रहता है?

उत्तर (महर्षि दयानन्द जी का) :- व्यापक है क्योंकि जो एक देश में रहता तो सर्व अन्तर्यामी, सर्वज्ञ, सर्वनियन्ता, सब का सृष्टा, सब का धर्ता और प्रलयकर्ता नहीं हो सकता। अप्राप्त देश में कर्ता की क्रिया का होना असम्भव है। (सत्यार्थ प्रकाश से लेख समाप्त)

महर्षि दयानन्द जी नहीं मानते थे कि परमात्मा किसी देश अर्थात् स्थान विशेष पर रहता है। महर्षि दयानन्द जी वेद ज्ञान को सत्य ज्ञान मानते थे।

आप जी ने ऊपर अनेकों वेदमन्त्रों में अपनी आँखों पढ़ा कि परमेश्वर ऊपर एक स्थान पर रहता है। वहाँ से गति करके यहाँ भी प्रकट होता है।

महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाजी परमात्मा को निराकार मानते हैं।

प्रमाण :- सत्यार्थ प्रकाश के समुल्लास नं. 9 पृष्ठ 176, समुल्लास 7 पृष्ठ 149 समुल्लास 11 पृष्ठ 251 पर कहा है कि परमात्मा निराकार है।

प्रिय पाठकों ने अनेकों वेदमंत्रों में पढ़ा कि परमात्मा साकार है, वह मनुष्य जैसा है। ऊपर के लोक में रहता है, वहाँ से गति करके चलकर आता है, प्रकट होता है। अच्छी आत्माओं को जो दृढ़ भक्त होते हैं, उनको मिलता है। उनको तत्वज्ञान अपने मुख कमल से बोलकर सुनाता है, कवियों की तरह आचरण करता है। पृथ्वी पर विचरण करके आध्यात्म ज्ञान ऊँचे स्वर में उच्चारण करके सुनाता है।

गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में भी यही प्रमाण है।

प्रिय पाठको! आप स्वंय निर्णय करें किसको कितना आध्यात्म ज्ञान था। विशेष आश्चर्य यह है कि वेद मन्त्रों का अनुवाद भी महर्षि दयानन्द जी तथा उनके चेलों आर्यसमाजियों ने किया हुआ है। जिसमें उनके मत का विरोध है।

निवेदन :- वेद मन्त्रों की फोटोकापियाँ लगाने का उद्देश्य यह है कि यदि मैं (लेखक) अनुवाद करके पुस्तक में लगाता तो अन्य व्यक्ति यह कह देते कि संत रामपाल को संस्कृत भाषा का ज्ञान नहीं है। इसलिए इनके अनुवाद पर विश्वास नहीं किया जा सकता। अब यह शंका उत्पन्न नहीं हो सकती। अब तो यह दृढ़ता आएगी कि संत रामपाल दास ने जो वेद मन्त्रों का अनुवाद किया है, वह यथार्थ है।

''सृष्टि रचना''

(सूक्ष्म वेद से निष्कर्ष रूप सृष्टि रचना का वर्णन)

प्रभु प्रेमी आत्माऐं प्रथम बार निम्न सृष्टि की रचना को पढेंगे तो ऐसे लगेगा जैसे दन्त कथा हो, परन्तु सर्व पवित्र सद्ग्रन्थों के प्रमाणों को पढ़कर दाँतों तले उँगली दबाऐंगे कि यह वास्तविक अमृत ज्ञान कहाँ छुपा था? कृप्या धैर्य के साथ पढ़ते रहिए तथा इस अमृत ज्ञान को सुरक्षित रखिए। आप की एक सौ एक पीढ़ी तक काम आएगा। पवित्रात्माऐं कृप्या सत्यनारायण (अविनाशी प्रभु/सतपुरुष) द्वारा रची सृष्टि रचना का वास्तविक ज्ञान पढ़ें।

1. पूर्ण ब्रह्म :- इस सृष्टि रचना में सतपुरुष-सतलोक का स्वामी (प्रभु), अलख पुरुष-अलख लोक का स्वामी (प्रभु), अगम पुरुष-अगम लोक का स्वामी (प्रभु) तथा अनामी पुरुष-अनामी अकह लोक का स्वामी (प्रभु) तो एक ही पूर्ण ब्रह्म है, जो वास्तव में अविनाशी प्रभु है जो भिन्न-2 रूप धारण करके अपने चारों लोकों में रहता है। जिसके अन्तर्गत असंख्य ब्रह्मण्ड आते हैं।

2. परब्रह्म :- यह केवल सात संख ब्रह्मण्ड का स्वामी (प्रभु) है। यह अक्षर पुरुष भी कहलाता है। परन्तु यह तथा इसके ब्रह्मण्ड भी वास्तव में अविनाशी नहीं है।

3. ब्रह्म :- यह केवल इक्कीस ब्रह्मण्ड का स्वामी (प्रभु) है। इसे क्षर पुरुष, ज्योति निरंजन, काल आदि उपमा से जाना जाता है। यह तथा इसके सर्व ब्रह्मण्ड नाशवान हैं।

(उपरोक्त तीनों पुरूषों (प्रभुओं) का प्रमाण पवित्र श्री मद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में भी है।)

4. ब्रह्मा :- ब्रह्मा इसी ब्रह्म का ज्येष्ठ पुत्र है, विष्णु मध्य वाला पुत्र है तथा शिव अंतिम तीसरा पुत्र है। ये तीनों ब्रह्म के पुत्र केवल एक ब्रह्मण्ड में एक विभाग (गुण) के स्वामी (प्रभु) हैं तथा नाशवान हैं। विस्तृत विवरण के लिए कृप्या पढ़ें निम्न लिखित सृष्टि रचना :-

{कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने सूक्ष्मवेद अर्थात् कबिर्बाणी में अपने द्वारा रची सृष्टि का ज्ञान स्वयं ही बताया है जो निम्नलिखित है।}

सर्व प्रथम केवल एक स्थान 'अनामी (अनामय) लोक' था। जिसे अकह लोक भी कहा जाता है, पूर्ण परमात्मा उस अनामी लोक में कमल के फूल पर अकेला रहता था। अनामी लोक में एक मानसरोवर था। जिसमें कमल का फूल खिला था। इस लोक में शेष रचना बाद में अन्य तीनों लोकों (अगम लोक, अलख लोक तथा सतलोक) के साथ की थी। जल में कमल पर विराजमान होने के कारण परमेश्वर को नारायण कहा जाता है। उस परमात्मा का वास्तविक नाम कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर है। सभी आत्माऐं उस पूर्ण धनी के शरीर में समाई हुई थी। इसी कविर्देव का उपमात्मक (पदवी का) नाम अनामी पुरुष है (पुरुष का अर्थ प्रभु होता है। प्रभु ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप में बनाया है, इसलिए मानव का नाम भी

परमेश्वर कबीर साहेब के असंख्य ब्रह्मण्डों का लघु चित्र

अनामी लोक : इस लोक में आत्मा और परमात्मा एक रूप होकर कबीर साहेब ही अनामी रूप में है। जैसे मिट्टी के ढले (छोटे–छोटे टुकड़े) हो जाते हैं। फिर वर्षा होने पर एक पृथ्वी बन जाती है, अलग आस्तित्व नहीं रहता।

अगम लोक : इस लोक में भी कबीर साहेब अगम पुरूष रूप में रहते हैं।

अलख लोक : इस लोक में भी कबीर साहेब अलख पुरूष रूप में रहते हैं।
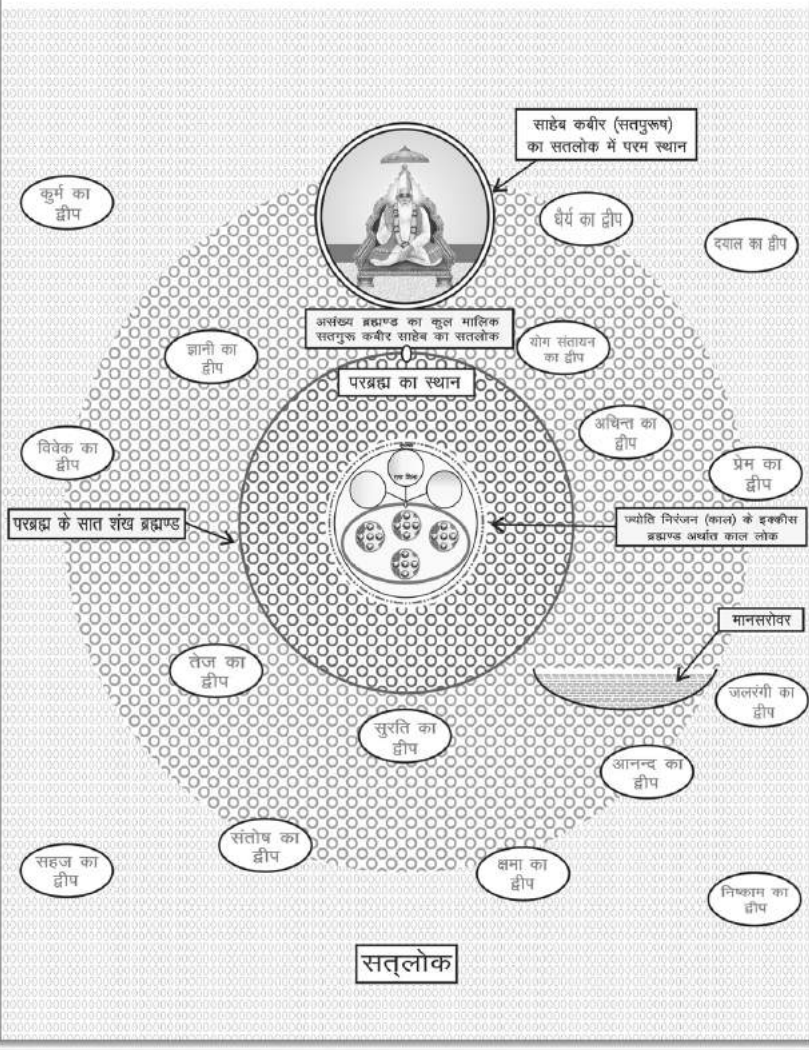
पुरुष ही पड़ा है।) अनामी पुरूष के एक रोम कूप का प्रकाश संख सूर्यों की रोशनी से भी अधिक है।

विशेष :- जैसे किसी देश के आदरणीय प्रधान मंत्री जी का शरीर का नाम तो अन्य होता है तथा पद का उपमात्मक (पदवी का) नाम प्रधानमंत्री होता है। कई बार प्रधानमंत्री जी अपने पास कई विभाग भी रख लेते हैं। तब जिस भी विभाग के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करते हैं तो उस समय उसी पद को लिखते हैं। जैसे गृहमंत्रालय के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करेगें तो अपने को गृह मंत्री लिखेगें। वहाँ उसी व्यक्ति के हस्ताक्षर की शक्ति कम होती है। इसी प्रकार कबीर परमेश्वर (कविर्देव) की रोशनी में अंतर भिन्न-2 लोकों में होता जाता है।

ठीक इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने नीचे के तीन और लोकों (अगमलोक, अलख लोक, सतलोक) की रचना शब्द(वचन) से की। यही पूर्णब्रह्म परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ही अगम लोक में प्रकट हुआ तथा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) अगम लोक का भी स्वामी है तथा वहाँ इनका उपमात्मक (पदवी का) नाम अगम पुरुष अर्थात् अगम प्रभु है। इसी अगम प्रभु का मानव सदृश शरीर बहुत तेजोमय है जिसके एक रोम कूप की रोशनी खरब सूर्य की रोशनी से भी अधिक है।

यह पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबिर देव=कबीर परमेश्वर) अलख लोक में प्रकट हुआ तथा स्वयं ही अलख लोक का भी स्वामी है तथा उपमात्मक (पदवी का) नाम अलख पुरुष भी इसी परमेश्वर का है तथा इस पूर्ण प्रभु का मानव सदृश शरीर तेजोमय (स्वर्ज्योति) स्वयं प्रकाशित है। एक रोम कूप की रोशनी अरब सूर्यों के प्रकाश से भी ज्यादा है।

यही पूर्ण प्रभु सतलोक में प्रकट हुआ तथा सतलोक का भी अधिपति यही है। इसलिए इसी का उपमात्मक (पदवी का) नाम सतपुरुष (अविनाशी प्रभु)है। इसी का नाम अकालमूर्ति - शब्द स्वरूपी राम - पूर्ण ब्रह्म - परम अक्षर ब्रह्म आदि हैं। इसी सतपुरुष कविर्देव (कबीर प्रभु) का मानव सदृश शरीर तेजोमय है। जिसके एक रोमकूप का प्रकाश करोड़ सूर्यों तथा इतने ही चन्द्रमाओं के प्रकाश से भी अधिक है।

इस कविर्देव (कबीर प्रभु) ने सतपुरुष रूप में प्रकट होकर सतलोक में विराजमान होकर प्रथम सतलोक में अन्य रचना की।

एक शब्द (वचन) से सोलह द्वीपों की रचना की। फिर सोलह शब्दों से सोलह पुत्रों की उत्पत्ति की। एक मानसरोवर की रचना की जिसमें अमृत भरा। सोलह पुत्रों के नाम हैं :-(1) ''कूर्म'', (2)''ज्ञानी'', (3) ''विवेक'', (4) ''तेज'', (5) ''सहज'', (6) ''सन्तोष'', (7)''सुरति'', (8) ''आनन्द'', (9) ''क्षमा'', (10) ''निष्काम'', (11) 'जलरंगी' (12)''अचिन्त'', (13) ''प्रेम'', (14) ''दयाल'', (15) ''धैर्य'' (16) ''योग संतायन'' अर्थात् ''योगजीत''।

सतपुरुष कविर्देव ने अपने पुत्र अचिन्त को सत्यलोक की अन्य रचना का भार

सौंपा तथा शक्ति प्रदान की। अचिन्त ने अक्षर पुरुष (परब्रह्म) की शब्द से उत्पत्ति की तथा कहा कि मेरी मदद करना। अक्षर पुरुष स्नान करने मानसरोवर पर गया, वहाँ आनन्द आया तथा सो गया। लम्बे समय तक बाहर नहीं आया। तब अचिन्त की प्रार्थना पर अक्षर पुरुष को नींद से जगाने के लिए कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने उसी मानसरोवर से कुछ अमृत जल लेकर एक अण्डा बनाया तथा उस अण्डे में एक आत्मा प्रवेश की तथा अण्डे को मानसरोवर के अमृत जल में छोड़ा। अण्डे की गड़गड़ाहट से अक्षर पुरुष की निंद्रा भंग हुई। उसने अण्डे को क्रोध से देखा जिस कारण से अण्डे के दो भाग हो गए। उसमें से ज्योति निंरजन (क्षर पुरुष) निकला जो आगे चलकर 'काल' कहलाया। इसका वास्तविक नाम ''कैल'' है। तब सतपुरुष (कविर्देव) ने आकाशवाणी की कि आप दोनों बाहर आओ तथा अचिंत के द्वीप में रहो। आज्ञा पाकर अक्षर पुरुष तथा क्षर पुरुष (कैल) दोनों अचिंत के द्वीप में रहने लगे (बच्चों की नालायकी उन्हीं को दिखाई कि कहीं फिर प्रभुता की तड़फ न बन जाए, क्योंकि समर्थ बिन कार्य सफल नहीं होता) फिर पूर्ण धनी कविर्देव ने सर्व रचना स्वयं की। अपनी शब्द शक्ति से एक राजेश्वरी (राष्ट्री) शक्ति उत्पन्न की, जिससे सर्व ब्रह्मण्डों को स्थापित किया। इसी को पराशक्ति परानन्दनी भी कहते हैं। पूर्ण ब्रह्म ने सर्व आत्माओं को अपने ही अन्दर से अपनी वचन शक्ति से अपने मानव शरीर सदृश उत्पन्न किया। प्रत्येक हंस आत्मा का परमात्मा जैसा ही शरीर रचा जिसका तेज 16 (सोलह) सूर्यों जैसा मानव सदृश ही है। परन्तु परमेश्वर के शरीर के एक रोम कूप का प्रकाश करोड़ों सूर्यों से भी ज्यादा है। बहुत समय उपरान्त क्षर पुरुष (ज्योति निरंजन) ने सोचा कि हम तीनों (अचिन्त - अक्षर पुरुष - क्षर पुरुष) एक द्वीप में रह रहे हैं तथा अन्य एक-एक द्वीप में रह रहे हैं। मैं भी साधना करके अलग द्वीप प्राप्त करूँगा। उसने ऐसा विचार करके एक पैर पर खड़ा होकर सत्तर (70) युग तक तप किया।

"आत्माऐं काल के जाल में कैसे फंसी ?"

विशेष :- जब ब्रह्म (ज्योति निरंजन) तप कर रहा था हम सभी आत्माऐं, जो आज ज्योति निरंजन के इक्कीस ब्रह्मण्डों में रहते हैं इसकी साधना पर आसक्त हो गए तथा अन्तरात्मा से इसे चाहने लगे। अपने सुखदाई प्रभु सत्य पुरूष से विमुख हो गए। जिस कारण से पतिव्रता पद से गिर गए। पूर्ण प्रभु के बार-बार सावधान करने पर भी हमारी आसक्ति क्षर पुरुष से नहीं हटी। {यही प्रभाव आज भी काल सृष्टि में विद्यमान है। जैसे नौजवान बच्चे फिल्म स्टारों (अभिनेताओं तथा अभिनेत्रियों) की बनावटी अदाओं तथा अपने रोजगार उद्देश्य से कर रहे भूमिका पर अति आसक्त हो जाते हैं, रोकने से नहीं रूकते। यदि कोई अभिनेता या अभिनेत्री निकटवर्ती शहर में आ जाए तो देखें उन नादान बच्चों की भीड़ केवल दर्शन करने के लिए बहु संख्या में एकत्रित हो जाती हैं। 'लेना एक न देने दो' रोजी रोटी अभिनेता कमा रहे हैं, नौजवान बच्चे लुट रहे हैं। माता-पिता कितना ही समझाऐं किन्तु बच्चे नहीं मानते। कहीं न कहीं, कभी न कभी, लुक-छिप कर जाते ही रहते हैं।}

पूर्ण ब्रह्म कविर्देव (कबीर प्रभु) ने क्षर पुरुष से पूछा कि बोलो क्या चाहते हो? उसने कहा कि पिता जी यह स्थान मेरे लिए कम है, मुझे अलग से द्वीप प्रदान करने की कृपा करें। हक्का कबीर (सत् कबीर) ने उसे 21 (इक्कीस) ब्रह्मण्ड प्रदान कर दिए। कुछ समय उपरान्त ज्योति निरंजन ने सोचा इस में कुछ रचना करनी चाहिए। खाली ब्रह्मण्ड(प्लाट) किस काम के। यह विचार कर 70 युग तप करके पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर प्रभु) से रचना सामग्री की याचना की। सतपुरुष ने उसे तीन गुण तथा पाँच तत्व प्रदान कर दिए, जिससे ब्रह्म (ज्योति निरंजन) ने अपने ब्रह्मण्डों में कुछ रचना की। फिर सोचा कि इसमें जीव भी होने चाहिए, अकेले का दिल नहीं लगता। यह विचार करके 64 (चौसठ) युग तक फिर तप किया। पूर्ण परमात्मा कविर् देव के पूछने पर बताया कि मुझे कुछ आत्मा दे दो, मेरा अकेले का दिल नहीं लग रहा। तब सतपुरुष कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) ने कहा कि ब्रह्म तेरे तप के प्रतिफल में मैं तुझे और ब्रह्मण्ड दे सकता हूँ, परन्तु मेरी आत्माओं को किसी भी जप-तप साधना के फल रूप में नहीं दे सकता। हाँ, यदि कोई स्वेच्छा से तेरे साथ जाना चाहे तो वह जा सकता है। युवा कविर् (समर्थ कबीर) के वचन सुन कर ज्योति निरंजन हमारे पास आया। हम सभी हंस आत्मा पहले से ही उस पर आसक्त थे। हम उसे चारों तरफ से घेर कर खड़े हो गए। ज्योति निंरजन ने कहा कि मैंने पिता जी से अलग 21 ब्रह्मण्ड प्राप्त किए हैं। वहाँ नाना प्रकार के रमणीय स्थल बनाए हैं। क्या आप मेरे साथ चलोगे? हम सभी हंसों ने जो आज 21 ब्रह्मण्डों में परेशान हैं, कहा कि हम तैयार हैं यदि पिता जी आज्ञा दें तब क्षर पुरुष पूर्ण ब्रह्म महान् कविर् (समर्थ कबीर प्रभु) के पास गया तथा सर्व वार्ता कही। तब कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) ने कहा कि मेरे सामने स्वीकृति देने वाले को आज्ञा दूंगा। क्षर पुरुष तथा परम अक्षर पुरुष (कविरमितौजा) दोनों हम सभी हंसात्माओं के पास आए। सत् कविर्देव ने कहा कि जो हंस आत्मा ब्रह्म के साथ जाना चाहता है हाथ ऊपर करके स्वीकृति दे। अपने पिता के सामने किसी की हिम्मत नहीं हुई। किसी ने स्वीकृति नहीं दी। बहुत समय तक सन्नाटा छाया रहा। तत्पश्चात् एक हंस आत्मा ने साहस किया तथा कहा कि पिता जी मैं जाना चाहता हूँ। फिर तो उसकी देखा-देखी (जो आज काल (ब्रह्म) के इक्कीस ब्रह्मण्डों में फंसी हैं) हम सभी आत्माओं ने स्वीकृति दे दी। परमेश्वर कबीर जी ने ज्योति निरंजन से कहा कि आप अपने स्थान पर जाओ। जिन्होंने तेरे साथ जाने की स्वीकृति दी है मैं उन सर्व हंस आत्माओं को आपके पास भेज दूंगा। ज्योति निरंजन अपने 21 ब्रह्मण्डों में चला गया। उस समय तक यह इक्कीस ब्रह्मण्ड सतलोक में ही थे।

तत् पश्चात् पूर्ण ब्रह्म ने सर्व प्रथम स्वीकृति देने वाले हंस को लड़की का रूप दिया परन्तु स्त्री इन्द्री नहीं रची तथा सर्व आत्माओं को (जिन्होंने ज्योति निरंजन (ब्रह्म) के साथ जाने की सहमति दी थी) उस लड़की के शरीर में प्रवेश कर दिया तथा उसका नाम आष्ट्रा (आदि माया/ प्रकृति देवी/ दुर्गा) पड़ा तथा सत्य पुरूष ने कहा कि पुत्री मैंने तेरे को शब्द शक्ति प्रदान कर दी है जितने जीव ब्रह्म कहे

आप उत्पन्न कर देना। पूर्ण ब्रह्म कविर्देव (कबीर साहेब) अपने पुत्र सहज दास के द्वारा प्रकृति को क्षर पुरुष के पास भिजवा दिया। सहज दास जी ने ज्योति निरंजन को बताया कि पिता जी ने इस बहन के शरीर में उन सर्व आत्माओं को प्रवेश कर दिया है जिन्होंने आपके साथ जाने की सहमति व्यक्त की थी तथा इसको पिता जी ने वचन शक्ति प्रदान की है, आप जितने जीव चाहोगे प्रकृति अपने शब्द से उत्पन्न कर देगी। यह कह कर सहजदास वापिस अपने द्वीप में आ गया।

युवा होने के कारण लड़की का रंग-रूप निखरा हुआ था। ब्रह्म के अन्दर विषय-वासना उत्पन्न हो गई तथा प्रकृति देवी के साथ अभद्र गति विधि प्रारम्भ की। तब दुर्गा ने कहा कि ज्योति निरंजन मेरे पास पिता जी की प्रदान की हुई शब्द शक्ति है। आप जितने प्राणी कहोगे मैं वचन से उत्पन्न कर दूँगी। आप मैथुन परम्परा शुरु मत करो। आप भी उसी पिता के शब्द से अण्डे से उत्पन्न हुए हो तथा मैं भी उसी परमपिता के वचन से ही बाद में उत्पन्न हुई हूँ। आप मेरे बड़े भाई हो, बहन-भाई का यह योग महापाप का कारण बनेगा। परन्तु ज्योति निरंजन ने प्रकृति देवी की एक भी प्रार्थना नहीं सुनी तथा अपनी शब्द शक्ति द्वारा नाखुनों से स्त्री इन्द्री (भग) प्रकृति को लगा दी तथा बलात्कार करने की ठानी। उसी समय दुर्गा ने अपनी इज्जत रक्षा के लिए कोई और चारा न देख सुक्ष्म रूप बनाया तथा ज्योति निरंजन के खुले मुख के द्वारा पेट में प्रवेश करके पूर्णब्रह्म कविर् देव से अपनी रक्षा के लिए याचना की। उसी समय कविर्देव (कविर् देव) अपने पुत्र योग संतायन अर्थात् जोगजीत का रूप बनाकर वहाँ प्रकट हुए तथा कन्या को ब्रह्म के उदर से बाहर निकाला तथा कहा कि ज्योति निरंजन आज से तेरा नाम 'काल' होगा। तेरे जन्म-मृत्यु होते रहेंगे। इसीलिए तेरा नाम क्षर पुरुष होगा तथा एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों को प्रतिदिन खाया करेगा व सवा लाख उत्पन्न किया करेगा। आप दोनों को इक्कीस ब्रह्मण्ड सहित निष्कासित किया जाता है। इतना कहते ही इक्कीस ब्रह्मण्ड विमान की तरह चल पड़े। सहज दास के द्वीप के पास से होते हुए सतलोक से सोलह संख कोस (एक कोस लगभग 3 कि. मी. का होता है) की दूरी पर आकर रूक गए।

विशेष विवरण - अब तक तीन शक्तियों का विवरण आया है।

1. पूर्णब्रह्म जिसे अन्य उपमात्मक नामों से भी जाना जाता है, जैसे सतपुरुष, अकालपुरुष, शब्द स्वरूपी राम, परम अक्षर ब्रह्म/आदि पुरुष। यह पूर्णब्रह्म असंख्य ब्रह्मण्डों का स्वामी है तथा वास्तव में अविनाशी है।

2. परब्रह्म जिसे अक्षर पुरुष भी कहा जाता है। यह वास्तव में अविनाशी नहीं है। यह सात शंख ब्रह्मण्डों का स्वामी है।

3. ब्रह्म जिसे ज्योति निरंजन, काल, कैल, क्षर पुरुष तथा धर्मराय आदि नामों से जाना जाता है, जो केवल इक्कीस ब्रह्मण्ड का स्वामी है। अब आगे इसी ब्रह्म (काल) की सृष्टि के एक ब्रह्मण्ड का परिचय दिया जाएगा, जिसमें तीन और नाम आपके पढ़ने में आयेंगे - ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव।

एक ब्रह्मण्ड का लघु चित्र
महाविष्णु रूप में काल (ब्रह्म)
शुन्य स्थान
जटा कुण्डली झील
महाशिव रूप में काल
परमेश्वर का राजदूत भवन
महाब्रह्मा रूप में काल
सतोगुण प्रधान क्षेत्र
तमोगुण प्रधान क्षेत्र
रजोगुण प्रधान क्षेत्र
ब्रह्म लोक
सप्तपुरी
दुर्गा लोक
अठासी हजार द्वीप
नकली अनामी लोक
नकली अगम लोक
नकली अलख लोक
नकली सतलोक
महाइन्द्र का द्वीप
धर्मराय का लोक
मीठे जल का समुद्र
मानसरोवर
महास्वर्ग
सुमेरू पर्वत
स्वर्ग
नरक
फलदार वृक्षों का वन
जटा कुण्डली झील
विष्णु लोक
शिव लोक
इन्द्र का लोक
सूर्य
ब्रह्मा लोक
पृथ्वी
चन्द्रमा
वितल
महातल
अतल
सूतल
तलातल
रसातल
पाताल लोक
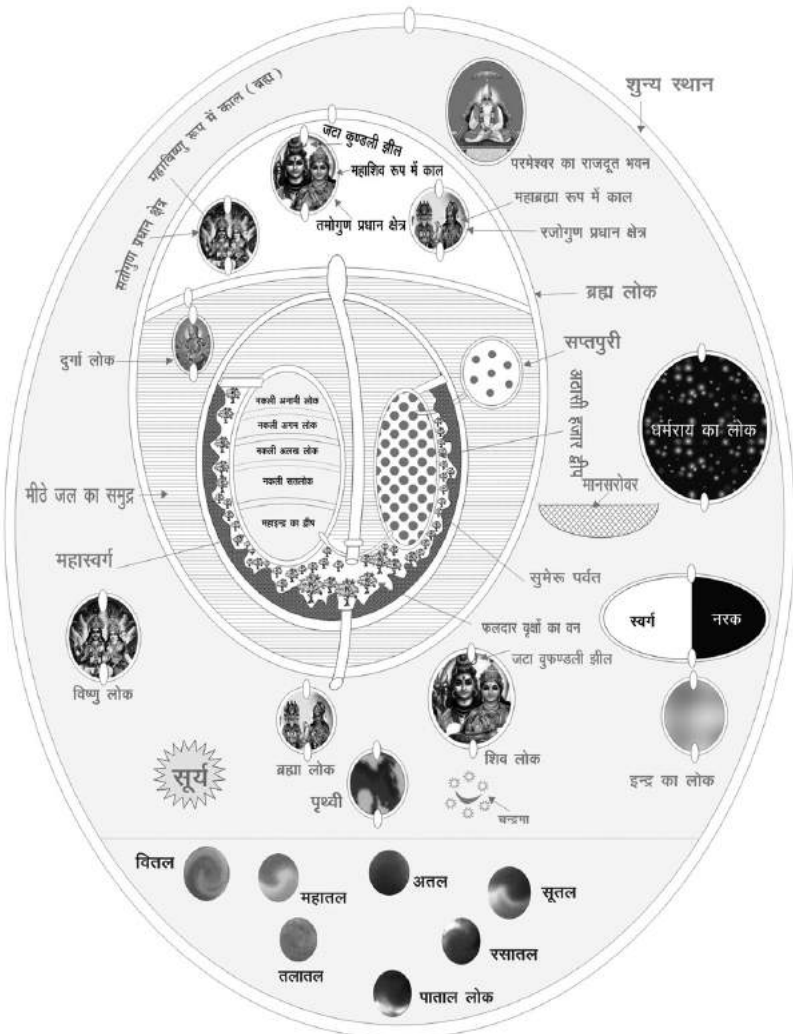
<u>ब्रह्म तथा ब्रह्मा में भेद</u> - एक ब्रह्मण्ड में बने सर्वोपरि स्थान पर ब्रह्म (क्षर पुरुष) स्वयं तीन गुप्त स्थानों की रचना करके ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव रूप में रहता है तथा अपनी पत्नी प्रकृति (दुर्गा) के सहयोग से तीन पुत्रों की उत्पत्ति करता है। उनके नाम भी ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव ही रखता है। जो ब्रह्म का पुत्र ब्रह्मा है वह एक ब्रह्मण्ड में केवल तीन लोकों (पृथ्वी लोक, स्वर्ग लोक तथा पाताल लोक) में एक रजोगुण विभाग का मंत्री (स्वामी) है। इसे त्रिलोकीय ब्रह्मा कहा है तथा ब्रह्म जो ब्रह्मलोक में ब्रह्मा रूप में रहता है उसे महाब्रह्मा व ब्रह्मलोकीय ब्रह्मा कहा है। इसी ब्रह्म (काल) को सदाशिव, महाशिव, महाविष्णु भी कहा है।

श्री विष्णु पुराण में प्रमाण :- चतुर्थ अंश अध्याय 1 पृष्ठ 230-231 पर श्री ब्रह्मा जी ने कहा :- जिस अजन्मा, सर्वमय विधाता परमेश्वर का आदि, मध्य, अन्त, स्वरूप, स्वभाव और सार हम नहीं जान पाते (श्लोक 83)

जो मेरा रूप धारण कर संसार की रचना करता है, स्थिति के समय जो पुरूष रूप है तथा जो रूद्र रूप से विश्व का ग्रास कर जाता है, अनन्त रूप से सम्पूर्ण जगत् को धारण करता है। (श्लोक 86)

"श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी व श्री शिव जी के माता-पिता कौन हैं"

काल (ब्रह्म) ने प्रकृति (दुर्गा) से कहा कि अब मेरा कौन क्या बिगाडेगा? मन मानी करूंगा प्रकृति ने फिर प्रार्थना की कि आप कुछ शर्म करो। प्रथम तो आप मेरे बड़े भाई हो, क्योंकि उसी पूर्ण परमात्मा (कविर्देव) की वचन शक्ति से आप की (ब्रह्म की) अण्डे से उत्पत्ति हुई तथा बाद में मेरी उत्पत्ति उसी परमेश्वर के वचन से हुई है। दूसरे मैं आपके पेट से बाहर निकली हूँ, मैं आपकी बेटी हुई तथा आप मेरे पिता हुए। इन पवित्र नातों में बिगाड़ करना महापाप होगा। मेरे पास पिता की प्रदान की हुई शब्द शक्ति है, जितने प्राणी आप कहोगे मैं वचन से उत्पन्न कर दूंगी। ज्योति निरंजन ने दुर्गा की एक भी विनय नहीं सुनी तथा कहा कि मुझे जो सजा मिलनी थी मिल गई, मुझे सतलोक से निष्कासित कर दिया। अब मनमानी करूंगा। यह कह कर काल पुरूष (क्षर पुरूष) ने प्रकृति के साथ जबरदस्ती शादी की तथा तीन पुत्रों (रजगुण युक्त - ब्रह्मा जी, सतगुण युक्त - विष्णु जी तथा तमगुण युक्त - शिव शंकर जी) की उत्पत्ति की। जवान होने तक तीनों पुत्रों को दुर्गा के द्वारा अचेत करवा देता है, फिर युवा होने पर श्री ब्रह्मा जी को कमल के फूल पर, श्री विष्णु जी को शेष नाग की शैय्या पर तथा श्री शिव जी को कैलाश पर्वत पर सचेत करके इक्ट्ठे कर देता है। तत्पश्चात् प्रकृति (दुर्गा) द्वारा इन तीनों का विवाह कर दिया जाता है तथा एक ब्रह्माण्ड में तीनों लोकों (स्वर्ग लोक, पृथ्वी लोक तथा पाताल लोक) में एक-एक विभाग के मंत्री (प्रभु) नियुक्त कर देता है। जैसे श्री ब्रह्मा जी को रजोगुण विभाग का तथा विष्णु जी को सत्तोगुण विभाग का तथा श्री शिव शंकर जी को तमोगुण विभाग का तथा स्वयं गुप्त (महाब्रह्मा - महाविष्णु - महाशिव) रूप में मुख्य मंत्री पद को संभालता है। एक ब्रह्मण्ड में एक ब्रह्मलोक की रचना की है। आप जी एक ब्रह्माण्ड के चित्र में देखें। उसी में तीन

गुप्त स्थान बनाए हैं। एक रजोगुण प्रधान स्थान है जहाँ पर यह ब्रह्म (काल) स्वयं महाब्रह्मा (मुख्यमंत्री) रूप में रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महासावित्री रूप में रखता है। इन दोनों के संयोग से जो पुत्र इस स्थान पर उत्पन्न होता है वह स्वतः ही रजोगुणी अर्थात् रजोगुण युक्त बन जाता है। दूसरा स्थान सतोगुण प्रधान स्थान बनाया है। वहाँ पर यह क्षर पुरुष स्वयं महाविष्णु रूप बना कर रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महालक्ष्मी रूप में रख कर जो पुत्र उत्पन्न करता है उसका नाम विष्णु रखता है, वह बालक सतोगुण युक्त हो जाता तथा तीसरा इसी काल ने वहीं पर एक तमोगुण प्रधान क्षेत्र बनाया है। उसमें यह स्वयं सदाशिव रूप बनाकर रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महापार्वती रूप में रखता है। इन दोनों के पति-पत्नी व्यवहार से जो पुत्र उत्पन्न होता है उसका नाम शिव रख देते हैं तथा तमोगुण युक्त कर देते हैं। (प्रमाण के लिए देखें पवित्र श्री शिव महापुराण, विद्यवेश्वर संहिता पृष्ठ 24-26 जिस में ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र तथा महेश्वर से अन्य सदाशिव है तथा रूद्र संहिता अध्याय 6 तथा 7, 9 पृष्ठ नं. 100 से, 105 तथा 110 पर अनुवाद कर्ता श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, गीता प्रैस गोरख पुर से प्रकाशित तथा पवित्र श्रीमद्देवीमहापुराण तीसरा स्कंद पृष्ठ नं. 114 से 123 तक, गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, जिसके अनुवाद कर्ता हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार चिमन लाल गोस्वामी) फिर इन्हीं को धोखे में रख कर अपने खाने के लिए जीवों की उत्पत्ति श्री ब्रह्मा जी द्वारा तथा स्थिति (एक-दूसरे को मोह-ममता में रख कर काल जाल में रखना) श्री विष्णु जी से तथा श्री शिव जी से संहार द्वारा करवाता है। (क्योंकि काल पुरुष को शापवश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों के सूक्ष्म शरीर से मैल निकाल कर खाना होता है उसके लिए इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में एक तप्तशिला है जो स्वतः गर्म रहती है, उस पर गर्म करके मैल पिंघला कर खाता है, जीव मरते नहीं परन्तु कष्ट असहनीय होता है, फिर प्राणियों को कर्म आधार पर अन्य शरीर प्रदान करता है) जैसे किसी मकान में तीन कमरे बने हों। एक कमरे में अश्लील चित्र लगे हों। उस कमरे में जाते ही मन में वैसे ही मलिन विचार उत्पन्न हो जाते हैं। दूसरे कमरे में साधु-सन्तों, भक्तों के चित्र लगे हों तो मन में अच्छे विचार, प्रभु का चिन्तन ही बना रहता है। तीसरे कमरे में देश भक्तों व शहीदों के चित्र लगे हों तो मन में वैसे ही जोशीले विचार उत्पन्न हो जाते हैं। ठीक इसी प्रकार ब्रह्म (काल) ने अपनी सूझ-बूझ से उपरोक्त तीनों गुण प्रधान स्थानों की रचना की हुई है।

''तीनों गुण ही श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी हैं''

''तीनों गुण रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी हैं। ब्रह्म (काल) तथा प्रकृति (दुर्गा) से उत्पन्न हुए हैं तथा तीनों नाशवान हैं''

प्रमाण :- गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्री शिव महापुराण जिसके सम्पादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार पृष्ठ सं. 24 से 26 विद्यवेश्वर संहिता तथा पृष्ठ 110 अध्याय 9 रूद्र संहिता ''इस प्रकार ब्रह्मा-विष्णु तथा शिव तीनों देवताओं में गुण हैं,

परन्तु शिव (ब्रह्म-काल) गुणातीत कहा गया है।

दूसरा प्रमाण :- गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्रीमद् देवीभागवत पुराण जिसके सम्पादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार चिमन लाल गोस्वामी, तीसरा स्कंद, अध्याय 5 पृष्ठ 123 :- भगवान विष्णु ने दुर्गा की स्तुति की : कहा कि मैं (विष्णु), ब्रह्मा तथा शंकर तुम्हारी कृपा से विद्यमान हैं। हमारा तो आविर्भाव (जन्म) तथा तिरोभाव (मृत्यु) होती है। हम नित्य (अविनाशी) नहीं हैं। तुम ही नित्य हो, जगत् जननी हो, प्रकृति और सनातनी देवी हो। भगवान शंकर ने कहा : यदि भगवान ब्रह्मा तथा भगवान विष्णु तुम्हीं से उत्पन्न हुए हैं तो उनके बाद उत्पन्न होने वाला मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या तुम्हारी संतान नहीं हुआ ? अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम ही हों। इस संसार की सृष्टि-स्थिति-संहार में तुम्हारे गुण सदा सर्वदा हैं। इन्हीं तीनों गुणों से उत्पन्न हम, ब्रह्मा-विष्णु तथा शंकर नियमानुसार कार्य में तत्त्पर रहते हैं।

उपरोक्त यह विवरण केवल हिन्दी में अनुवादित श्री देवीमहापुराण से है, जिसमें कुछ तथ्यों को छुपाया गया है। इसलिए यही प्रमाण देखें श्री मद्देवीभागवत महापुराण सभाषटिकम् समहात्यम्, खेमराज श्री कृष्ण दास प्रकाशन मुम्बई, इसमें संस्कृत सहित हिन्दी अनुवाद किया है। तीसरा स्कंद अध्याय 4 पृष्ठ 10, श्लोक 42 :-

ब्रह्मा - अहम् ईश्वरः फिल ते प्रभावात्सर्वे वयं जनि युता न यदा तू नित्याः, के अन्ये सुराः शतमख प्रमुखाः च नित्या नित्या त्वमेव जननी प्रकृतिः पुराणा। (42)

हिन्दी अनुवाद :- हे मात! ब्रह्मा, मैं तथा शिव तुम्हारे ही प्रभाव से जन्मवान हैं, नित्य नही हैं अर्थात् हम अविनाशी नहीं हैं, फिर अन्य इन्द्रादि दूसरे देवता किस प्रकार नित्य हो सकते हैं। तुम ही अविनाशी हो, प्रकृति तथा सनातनी देवी हो। (42)

पृष्ठ 11-12, अध्याय 5, श्लोक 8 :- यदि दयार्द्रमना न सदांऽबिके कथमहं विहितः च तमोगुणः कमलजश्च रजोगुणसंभवः सुविहितः किमु सत्वगुणों हरिः।(8)

अनुवाद :- भगवान शंकर बोले :-हे मात! यदि हमारे ऊपर आप दयायुक्त हो तो मुझे तमोगुण क्यों बनाया, कमल से उत्पन्न ब्रह्मा को रजोगुण किस लिए बनाया तथा विष्णु को सतगुण क्यों बनाया? अर्थात् जीवों के जन्म-मृत्यु रूपी दुष्कर्म में क्यों लगाया?

श्लोक 12 :- रमयसे स्वपतिं पुरुषं सदा तव गतिं न हि विह विद्म शिवे (12)

हिन्दी - अपने पति पुरुष अर्थात् काल भगवान के साथ सदा भोग-विलास करती रहती हो। आपकी गति कोई नहीं जानता।

निष्कर्ष :- उपरोक्त प्रमाणों से प्रमाणित हुआ की रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव है। ये तीनों नाशवान हैं। दुर्गा का पति ब्रह्म (काल) है यह उसके साथ भोग-विलास करता है।

"ब्रह्म (काल) की अव्यक्त रहने की प्रतिज्ञा"

सूक्ष्मवेद से शेष सृष्टि रचना-------

तीनों पुत्रों की उत्पत्ति के पश्चात् काल ब्रह्म ने अपनी पत्नी दुर्गा जी (प्रकृति) से कहा मैं प्रतिज्ञा करता हुँ कि भविष्य में मैं किसी को अपने वास्तविक रूप में दर्शन नहीं दूंगा। जिस कारण से मैं अव्यक्त माना जाऊँगा। दुर्गा जी से कहा कि आप मेरा भेद किसी को मत देना। मैं गुप्त रहूँगा। दुर्गा जी ने पूछा कि क्या आप अपने पुत्रों को भी दर्शन नहीं दोगे? ब्रह्म ने कहा मैं अपने पुत्रों को तथा अन्य को किसी भी साधना से दर्शन नहीं दूंगा, यह मेरा अटल नियम रहेगा। दुर्गा जी ने कहा यह तो आपका उत्तम नियम नहीं है जो आप अपनी संतान से भी छुपे रहोगे। तब काल ने कहा दुर्गा मेरी विवशता है। मुझे एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों का आहार करने का शाप लगा है। यदि मेरे पुत्रों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) को पता लग गया तो ये उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार का कार्य नहीं करेंगे। इसलिए यह मेरा अनुत्तम नियम सदा रहेगा। जब ये तीनों कुछ बड़े हो जाऐं तो इन्हें अचेत कर देना। मेरे विषय में नहीं बताना, नहीं तो मैं तुझे भी दण्ड दूंगा, दुर्गा इस डर के मारे वास्तविकता नहीं बताती। इसीलिए गीता अध्याय 7 श्लोक 24 में कहा है कि यह बुद्धिहीन जन समुदाय मेरे अनुत्तम नियम से अपिरिचित हैं कि मैं कभी भी किसी के सामने प्रकट नहीं होता अपनी योग माया से छुपा रहता हूँ। इसलिए मुझ अव्यक्त को मनुष्य रूप में आया हुआ अर्थात् कृष्ण मानते हैं।

(अबुद्धयः) बुद्धि हीन (मम्) मेरे (अनुत्तमम्) अनुत्तम अर्थात् घटिया (अव्ययम्) अविनाशी (परम् भावम्) विशेष भाव को (अजानन्तः) न जानते हुए (माम् अव्यक्तम्) मुझ अव्यक्त को (व्यक्तिम्) मनुष्य रूप में (आपन्नम) आया (मन्यन्ते) मानते हैं अर्थात् मैं कृष्ण नहीं हूँ। (गीता अध्याय 7 श्लोक 24)

गीता अध्याय 11 श्लोक 47 तथा 48 में कहा है कि यह मेरा वास्तविक काल रूप है। इसके दर्शन अर्थात् ब्रह्म प्राप्ति न वेदों में वर्णित विधि से, न जप से, न तप से तथा न किसी यज्ञ अर्थात् धार्मिक क्रिया से हो सकती है।

जब तीनों बच्चे युवा हो गए तब माता भवानी (प्रकृति, अष्टंगी) ने कहा कि तुम सागर मन्थन करो। प्रथम बार सागर मन्थन किया तो (ज्योति निरंजन ने अपने श्वांसों द्वारा चार वेद उत्पन्न किए। उनको गुप्त वाणी द्वारा आज्ञा दी कि सागर में निवास करो) चारों वेद निकले वह ब्रह्मा ने लिए। वस्तु लेकर तीनों बच्चे माता के पास आए तब माता ने कहा कि चारों वेदों को ब्रह्मा रखे व पढ़े।

नोट :- वास्तव में पूर्णब्रह्म ने, ब्रह्म अर्थात काल को पाँच वेद प्रदान किए थे। लेकिन ब्रह्म ने केवल चार वेदों को प्रकट किया। पाँचवां वेद छुपा दिया। जो पूर्ण परमात्मा ने स्वयं प्रकट होकर कविर्गिर्भीः अर्थात् कविर्वाणी (कबीर वाणी) द्वारा लोकोक्तियों व दोहों के माध्यम से प्रकट किया है।

दूसरी बार सागर मन्थन किया तो तीन कन्याऐं मिली। माता ने तीनों को बांट दिया। प्रकृति (दुर्गा) ने अपने ही अन्य तीन रूप (सावित्री,लक्ष्मी तथा पार्वती) धारण किए तथा समुन्द्र में छुपा दी। सागर मन्थन के समय बाहर आ गई। वही प्रकृति तीन

रूप हुई तथा भगवान ब्रह्मा को सावित्री, भगवान विष्णु को लक्ष्मी, भगवान शंकर को पार्वती पत्नी रूप में दी। तीनों ने भोग विलास किया, सुर तथा असुर दोनों उत्पन्न हुए।

{जब तीसरी बार सागर मन्थन किया तो चौदह रत्न ब्रह्मा को तथा अमृत विष्णु को व देवताओं को, मद्य(शराब) असुरों को तथा विष परमार्थ शिव ने अपने कंठ में ठहराया। यह तो बहुत बाद की बात है।} जब ब्रह्मा वेद पढ़ने लगा तो पता चला कि कोई सर्व ब्रह्मण्डों की रचना करने वाला कुल का मालिक पुरूष (प्रभु) और है। तब ब्रह्मा जी ने विष्णु जी व शंकर जी को बताया कि वेदों में वर्णन है कि सृजनहार कोई और प्रभु है परन्तु वेद कहते हैं कि भेद हम भी नहीं जानते, उसके लिए संकेत है कि किसी तत्वदर्शी संत से पूछो। तब ब्रह्मा माता के पास आया और सब वृतांत कह सुनाया। माता कहा करती थी कि मेरे अतिरिक्त और कोई नहीं है। मैं ही कर्ता हूँ। मैं ही सर्वशक्तिमान हूँ परन्तु ब्रह्मा ने कहा कि वेद ईश्वर कृत हैं यह झूठ नहीं हो सकते। दुर्गा ने कहा कि तेरा पिता तुझे दर्शन नहीं देगा, उसने प्रतिज्ञा की हुई है। तब ब्रह्मा ने कहा माता जी अब आप की बात पर अविश्वास हो गया है। मैं उस पुरूष (प्रभु) का पता लगाकर ही रहूँगा। दुर्गा ने कहा कि यदि वह तुझे दर्शन नहीं देगा तो तुम क्या करोगे? ब्रह्मा ने कहा कि मैं आपको शक्ल नहीं दिखाऊँगा। दूसरी तरफ ज्योति निरंजन ने कसम खाई है कि मैं अव्यक्त रहूँगा किसी को दर्शन नहीं दूंगा अर्थात् 21 ब्रह्मण्ड में कभी भी अपने वास्तविक काल रूप में आकार में नहीं आऊँगा।

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 24

अव्यक्तम्, व्यक्तिम्, आपन्नम्, मन्यन्ते, माम्, अबुद्धयः।
परम्, भावम्, अजानन्तः, मम, अव्ययम्, अनुत्तमम्।।24।।

अनुवाद : (अबुद्धयः) बुद्धिहीन लोग (मम्) मेरे (अनुतमम्) अश्रेष्ठ (अव्ययम्) अटल (परम्) परम (भावम्) भावको (अजानन्तः) न जानते हुए (अव्यक्तम्) अदृश्यमान (माम्) मुझ कालको (व्यक्तिम्) आकार में कृष्ण अवतार (आपन्नम्) प्राप्त हुआ (मन्यन्ते) मानते हैं।

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 25

न, अहम्, प्रकाशः, सर्वस्य, योगमायासमावृतः।
मूढः, अयम्, न, अभिजानाति, लोकः, माम्, अजम्, अव्ययम्।।25।।

अनुवाद : (अहम्) मैं (योगमाया समावृतः) योगमायासे छिपा हुआ (सर्वस्य) सबके (प्रकाशः) प्रत्यक्ष (न) नहीं होता अर्थात् अदृश्य अर्थात् अव्यक्त रहता हूँ इसलिये (अजम्) जन्म न लेने वाले (अव्ययम्) अविनाशी अटल भावको (अयम्) यह (मूढः) अज्ञानी (लोकः) जनसमुदाय संसार (माम्) मुझे (न) नहीं (अभिजानाति) जानता अर्थात् मुझको अवतार रूप में आया समझता है। क्योंकि ब्रह्म अपनी शब्द शक्ति से अपने नाना रूप बना लेता है, यह दुर्गा का पति है इसलिए इस मंत्र में कह रहा है कि मैं श्री कृष्ण आदि की तरह दुर्गा से जन्म नहीं लेता।

"ब्रह्मा का अपने पिता (काल/ब्रह्म) की प्राप्ति के लिए प्रयत्न"

तब दुर्गा ने ब्रह्मा जी से कहा कि अलख निरंजन तुम्हारा पिता है परन्तु वह तुम्हें दर्शन नहीं देगा। ब्रह्मा ने कहा कि मैं दर्शन करके ही लौटूंगा। माता ने पूछा कि

यदि तुझे दर्शन नहीं हुए तो क्या करेगा ? ब्रह्मा ने कहा मैं प्रतिज्ञा करता हूँ। यदि पिता के दर्शन नहीं हुए तो मैं आपके समक्ष नहीं आऊंगा। यह कह कर ब्रह्मा जी व्याकुल होकर उत्तर दिशा की तरफ चल दिया जहाँ अन्धेरा ही अन्धेरा है। वहाँ ब्रह्मा ने चार युग तक ध्यान लगाया परन्तु कुछ भी प्राप्ति नहीं हुई। काल ने आकाशवाणी की कि दुर्गा सृष्टि रचना क्यों नहीं की ? भवानी ने कहा कि आप का ज्येष्ठ पुत्र ब्रह्मा जिद्द करके आप की तलाश में गया है। ब्रह्म (काल) ने कहा उसे वापिस बुला लो। मैं उसे दर्शन नहीं दूँगा। ब्रह्मा के बिना जीव उत्पति का सब कार्य असम्भव है। तब दुर्गा (प्रकृति) ने अपनी शब्द शक्ति से गायत्री नाम की लड़की उत्पन्न की तथा उसे ब्रह्मा को लौटा लाने को कहा। गायत्री ब्रह्मा जी के पास गई परंतु ब्रह्मा जी समाधि लगाए हुए थे उन्हें कोई आभास ही नहीं था कि कोई आया है। तब आदि कुमारी (प्रकृति) ने गायत्री को ध्यान द्वारा बताया कि इस के चरण स्पर्श कर। तब गायत्री ने ऐसा ही किया। ब्रह्मा जी का ध्यान भंग हुआ तो क्रोध वश बोले कि कौन पापिन है जिसने मेरा ध्यान भंग किया है। मैं तुझे शॉप दूँगा। गायत्री कहने लगी कि मेरा दोष नहीं है पहले मेरी बात सुनो तब शाप देना। मेरे को माता ने तुम्हें लौटा लाने को कहा है क्योंकि आपके बिना जीव उत्पत्ति नहीं हो सकती। ब्रह्मा ने कहा कि मैं कैसे जाऊँ? पिता जी के दर्शन हुए नहीं, ऐसे जाऊँ तो मेरा उपहास होगा। यदि आप माता जी के समक्ष यह कह दें कि ब्रह्मा ने पिता (ज्योति निरंजन) के दर्शन हुए हैं, मैंने अपनी आँखो से देखा है तो मैं आपके साथ चलूं। तब गायत्री ने कहा कि आप मेरे साथ संभोग (सैक्स) करोगे तो मैं आपकी झूठी साक्षी (गवाही) भरूंगी। तब ब्रह्मा ने सोचा कि पिता के दर्शन हुए नहीं, वैसे जाऊँ तो माता के सामने शर्म लगेगी और चारा नहीं दिखाई दिया, फिर गायत्री से रति क्रिया (संभोग) की।

तब गायत्री ने कहा कि क्यों न एक गवाह और तैयार किया जाए। ब्रह्मा ने कहा बहुत ही अच्छा है। तब गायत्री ने शब्द शक्ति से एक लड़की (पुहपवति नाम की) पैदा की तथा उससे दोनों ने कहा कि आप गवाही देना कि ब्रह्मा ने पिता के दर्शन किए हैं। तब पुहपवति ने कहा कि मैं क्यों झूठी गवाही दूँ ? हाँ, यदि ब्रह्मा मेरे से रति क्रिया (संभोग) करे तो गवाही दे सकती हूँ। गायत्री ने ब्रह्मा को समझाया (उकसाया) कि और कोई चारा नहीं है तब ब्रह्मा ने पुहपवति से संभोग किया तो तीनों मिलकर आदि माया (प्रकृति) के पास आए। दोनों देवियों ने उपरोक्त शर्त इसलिए रखी थी कि यदि ब्रह्मा माता के सामने हमारी झूठी गवाही को बता देगा तो माता हमें शाप दे देगी। इसलिए उसे भी दोषी बना लिया।

(यहाँ महाराज गरीबदास जी कहते हैं कि – ''दास गरीब यह चूक धुरों धुर'')

''माता (दुर्गा) द्वारा ब्रह्मा को शाप देना''

तब माता ने ब्रह्मा से पूछा क्या तुझे तेरे पिता के दर्शन हुए? ब्रह्मा ने कहा हाँ मुझे पिता के दर्शन हुए हैं। दुर्गा ने कहा साक्षी बता। तब ब्रह्मा ने कहा इन दोनों के समक्ष साक्षात्कार हुआ है। देवी ने उन दोनों लड़कियों से पूछा क्या तुम्हारे सामने ब्रह्मा का साक्षात्कार हुआ है तब दानों ने कहा कि हाँ, हमने अपनी आँखों से देखा है। फिर

भवानी (प्रकृति) को संशय हुआ कि मुझे तो ब्रह्म ने कहा था कि मैं किसी को दर्शन नहीं दूंगा, परन्तु ये कहते हैं कि दर्शन हुए हैं। तब अष्टंगी ने ध्यान लगाया और काल/ज्योति निरंजन से पूछा कि यह क्या कहानी है? ज्योति निंरजन जी ने कहा कि ये तीनों झूठ बोल रहे हैं। तब माता ने कहा तुम झूठ बोल रहे हो। आकाशवाणी हुई है कि इन्हें कोई दर्शन नहीं हुए। यह बात सुनकर ब्रह्मा ने कहा कि माता जी मैं सौगंध खाकर पिता की तलाश करने गया था। परन्तु पिता (ब्रह्म) के दर्शन हुए नहीं। आप के पास आने में शर्म लग रही थी। इसलिए हमने झूठ बोल दिया। तब माता (दुर्गा) ने कहा कि अब मैं तुम्हें शाप देती हूँ।

ब्रह्मा को शाप :- तेरी पूजा जग में नहीं होगी। आगे तेरे वंशज होंगे वे बहुत पाखण्ड करेंगे। झूठी बात बना कर जग को ठगेंगे। ऊपर से तो कर्म काण्ड करते दिखाई देंगे अन्दर से विकार करेंगे। कथा पुराणों को पढ़कर सुनाया करेंगे, स्वयं को ज्ञान नहीं होगा कि सद्ग्रन्थों में वास्तविकता क्या है, फिर भी मान वश तथा धन प्राप्ति के लिए गुरु बन कर अनुयाइयों को लोकवेद (शास्त्र विरुद्ध दंत कथा) सुनाया करेंगे। देवी-देवों की पूजा करके तथा करवाके, दूसरों की निन्दा करके कष्ट पर कष्ट उठायेंगे। जो उनके अनुयाई होंगे उनको परमार्थ नहीं बताएंगे। दक्षिणा के लिए जगत को गुमराह करते रहेंगे। अपने आपको सबसे अच्छा मानेंगे, दूसरों को नीचा समझेंगे। जब माता के मुख से यह सुना तो ब्रह्मा मुर्छित होकर जमीन पर गिर गया। बहुत समय उपरान्त होश में आया।

गायत्री को शाप :- तेरे कई सांड पति होंगे। तू मृतलोक में गाय बनेगी।

पुहपवति को शाप :- तेरी जगह गंदगी में होगी। तेरे फूलों को कोई पूजा में नहीं लाएगा। इस झूठी गवाही के कारण तुझे यह नरक भोगना होगा। तेरा नाम केवड़ा केतकी होगा। {हरियाणा में कुसोंधी कहते हैं। यह गंदगी (कुरड़ियों) वाली जगह पर होती है।}

इस प्रकार तीनों को शाप देकर माता भवानी बहुत पछताई। {इस प्रकार पहले तो जीव बिना सोचे मन (काल निरंजन) के प्रभाव से गलत कार्य कर देता है परन्तु जब आत्मा (सतपुरूष अंश) के प्रभाव से उसे ज्ञान होता है तो पीछे पछताना पड़ता है। जिस प्रकार माता-पिता अपने बच्चों को छोटी सी गलती के कारण ताड़ते हैं (क्रोधवश होकर) परन्तु बाद में बहुत पछताते हैं। यही प्रक्रिया मन (काल-निंरजन) के प्रभाव से सर्व जीवों में क्रियावान हो रही है।} हाँ, यहाँ एक बात विशेष है कि निरंजन (काल-ब्रह्म) ने भी अपना कानून बना रखा है कि यदि कोई जीव किसी दुर्बल जीव को सताएगा तो उसे उसका बदला देना पड़ेगा। जब आदि भवानी (प्रकृति, अष्टंगी) ने ब्रह्मा, गायत्री व पुहपवति को शाप दिया तो अलख निंरजन (ब्रह्म-काल) ने कहा कि हे भवानी (प्रकृति/अष्टंगी) यह आपने अच्छा नहीं किया। अब मैं (निरंजन) आपको शाप देता हूँ कि द्वापर युग में तेरे भी पाँच पति होंगे। (द्रोपदी ही आदिमाया का अवतार हुई है।) जब यह आकाश वाणी सुनी तो आदि माया ने कहा कि हे ज्योति निंरजन (काल) मैं तेरे वश पड़ी हूँ जो चाहे सो कर ले।

"विष्णु का अपने पिता (काल/ब्रह्म) की प्राप्ति के लिए प्रस्थान व माता का आशीर्वाद पाना"

इसके बाद विष्णु से प्रकृति ने कहा कि पुत्र तू भी अपने पिता का पता लगा ले। तब विष्णु अपने पिता जी काल (ब्रह्म) का पता करते-करते पाताल लोक में चले गए, जहाँ शेषनाग था। उसने विष्णु को अपनी सीमा में प्रविष्ट होते देख कर क्रोधित हो कर जहर भरा फुंकारा मारा। उसके विष के प्रभाव से विष्णु जी का रंग सांवला हो गया, जैसे स्प्रे पेंट हो जाता है। तब विष्णु ने चाहा कि इस नाग को मजा चखाना चाहिए। तब ज्योति निरंजन (काल) ने देखा कि अब विष्णु को शांत करना चाहिए। तब आकाशवाणी हुई कि विष्णु अब तू अपनी माता जी के पास जा और सत्य-सत्य सारा विवरण बता देना तथा जो कष्ट आपको शेषनाग से हुआ है, इसका प्रतिशोध द्वापर युग में लेना। द्वापर युग में आप (विष्णु) तो कृष्ण अवतार धारण करोगे और कालीदह में कालिन्द्री नामक नाग, शेष नाग का अवतार होगा।

ऊँच होई के नीच सतावै, ताकर ओएल (बदला) मोही सों पावै।
जो जीव देई पीर पुनी काँहु, हम पुनि ओएल दिवावें ताहूँ।।

तब विष्णु जी माता जी के पास आए तथा सत्य-सत्य कह दिया कि मुझे पिता के दर्शन नहीं हुए। इस बात से माता (प्रकृति) बहुत प्रसन्न हुई और कहा कि पुत्र तू सत्यवादी है। अब मैं अपनी शक्ति से आपको तेरे पिता से मिलाती हूँ तथा तेरे मन का संशय खत्म करती हूँ।

कबीर देख पुत्र तोहि पिता भीटाऊँ, तौरे मन का धोखा मिटाऊँ।
मन स्वरूप कर्ता कह जानों, मन ते दूजा और न मानो।
स्वर्ग पाताल दौर मन केरा, मन अस्थीर मन अहै अनेरा।
निंरकार मन ही को कहिए, मन की आस निश दिन रहिए।
देख हूँ पलटि सुन्य मह ज्योति, जहाँ पर झिलमिल झालर होती।।

इस प्रकार माता (अष्टंगी, प्रकृति) ने विष्णु से कहा कि मन ही जग का कर्ता है, यही ज्योति निरंजन है। ध्यान में जो एक हजार ज्योतियाँ नजर आती हैं वही उसका रूप है। जो शंख, घण्टा आदि का बाजा सुना, यह महास्वर्ग में निरंजन का ही बज रहा है। तब माता (अष्टंगी, प्रकृति) ने कहा कि हे पुत्र तुम सब देवों के सरताज हो और तेरी हर कामना व कार्य मैं पूर्ण करूंगी। तेरी पूजा सर्व जग में होगी। आपने मुझे सच-सच बताया है। काल के इक्कीस ब्रह्मण्ड़ों के प्राणियों की विशेष आदत है कि अपनी व्यर्थ महिमा बनाता है। जैसे दुर्गा जी श्री विष्णु जी को कह रही है कि तेरी पूजा जग में होगी। मैंने तुझे तेरे पिता के दर्शन करा दिए। दुर्गा ने केवल प्रकाश दिखा कर श्री विष्णु जी को बहका दिया। श्री विष्णु जी भी प्रभु की यही स्थिति अपने अनुयाइयों को समझाने लगे कि परमात्मा का केवल प्रकाश दिखाई देता है। परमात्मा निराकार है। इसके बाद आदि भवानी रूद्र(महेश जी) के पास गई तथा कहा कि महेश तू भी कर ले अपने पिता की खोज तेरे दोनों भाइयों को तो तुम्हारे पिता के दर्शन नहीं हुए

उनको जो देना था वह प्रदान कर दिया है अब आप माँगो जो माँगना है। तब महेश ने कहा कि हे जननी ! मेरे दोनों बड़े भाईयों को पिता के दर्शन नहीं हुए फिर प्रयत्न करना व्यर्थ है। कृपा मुझे ऐसा वर दो कि मैं अमर (मृत्युंजय) हो जाऊँ। तब माता ने कहा कि यह मैं नहीं कर सकती। हाँ युक्ति बता सकती हूँ, जिससे तेरी आयु सबसे लम्बी बनी रहेगी। विधि योग समाधि है (इसलिए महादेव जी ज्यादातर समाधि में ही रहते हैं)। इस प्रकार माता (अष्टंगी, प्रकृति) ने तीनों पुत्रों को विभाग बांट दिए : --

भगवान ब्रह्मा जी को काल लोक में लख चौरासी के चोले (शरीर) रचने (बनाने) का अर्थात् रजोगुण प्रभावित करके संतान उत्पत्ति के लिए विवश करके जीव उत्पत्ति कराने का विभाग प्रदान किया।

भगवान विष्णु जी को इन जीवों के पालन पोषण (कर्मानुसार) करने, तथा मोह-ममता उत्पन्न करके स्थिति बनाए रखने का विभाग दिया।

भगवान शिव शंकर (महादेव) को संहार करने का विभाग प्रदान किया क्योंकि इनके पिता निरंजन को एक लाख मानव शरीर धारी जीव प्रतिदिन खाने पड़ते हैं।

यहां पर मन में एक प्रश्न उत्पन्न होगा कि ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर जी से उत्पत्ति, स्थिति और संहार कैसे होता है। ये तीनों अपने-2 लोक में रहते हैं। जैसे आजकल संचार प्रणाली को चलाने के लिए उपग्रहों को ऊपर आसमान में छोड़ा जाता है और वे नीचे पृथ्वी पर संचार प्रणाली को चलाते हैं। ठीक इसी प्रकार ये तीनों देव जहां भी रहते हैं इनके शरीर से निकलने वाले सूक्ष्म गुण की तरंगें तीनों लोकों में अपने आप हर प्राणी पर प्रभाव बनाए रहती है।

उपरोक्त विवरण एक ब्रह्मण्ड में ब्रह्म (काल) की रचना का है। ऐसे-ऐसे क्षर पुरुष (काल) के इक्कीस ब्रह्मण्ड हैं।

परन्तु क्षर पुरूष (काल) स्वयं व्यक्त अर्थात् वास्तविक शरीर रूप में सबके सामने नहीं आता। उसी को प्राप्त करने के लिए तीनों देवों (ब्रह्मा जी, विष्णु जी, शिव जी) को वेदों में वर्णित विधि अनुसार भरसक साधना करने पर भी ब्रह्म (काल) के दर्शन नहीं हुए। बाद में ऋषियों ने वेदों को पढ़ा। उसमें लिखा है कि 'अग्नेः तनूर् असि' (पवित्र यजुर्वेद अ. 1 मंत्र 15) परमेश्वर सशरीर है तथा पवित्र यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 1 में लिखा है कि 'अग्नेः तनूर् असि विष्णवे त्वा सोमस्य तनूर् असि'। इस मंत्र में दो बार वेद गवाही दे रहा है कि सर्वव्यापक, सर्वपालन कर्ता सतपुरुष सशरीर है। पवित्र यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 8 में कहा है कि (कविर् मनिषी) जिस परमेश्वर की सर्व प्राणियों को चाह है, वह कविर् अर्थात् कबीर है। उसका शरीर बिना नाड़ी (अस्नाविरम्) का है, (शुक्रम्) वीर्य से बनी पाँच तत्व से बनी भौतिक (अकायम्) काया रहित है। वह सर्व का मालिक सर्वोपरि सत्यलोक में विराजमान है, उस परमेश्वर का तेजपुंज का (स्वर्ज्योति) स्वयं प्रकाशित शरीर है जो शब्द रूप अर्थात् अविनाशी है। वही कविर्देव (कबीर परमेश्वर) है जो सर्व ब्रह्मण्डों की रचना करने वाला (व्यदधाता) सर्व ब्रह्मण्डों का रचनहार (स्वयम्भूः) स्वयं प्रकट होने वाला (यथा तथ्य अर्थान्) वास्तव में (शाश्वत्) अविनाशी है (गीता अध्याय 15 श्लोक 17

में भी प्रमाण है।) भावार्थ है कि पूर्ण ब्रह्म का शरीर का नाम कबीर (कविर देव) है। उस परमेश्वर का शरीर नूर तत्व से बना है। परमात्मा का शरीर अति सूक्ष्म है जो उस साधक को दिखाई देता है जिसकी दिव्य दृष्टि खुल चुकी है। इस प्रकार जीव का भी सुक्ष्म शरीर है जिसके ऊपर पाँच तत्व का खोल (कवर) अर्थात् पाँच तत्व की काया चढ़ी होती है जो माता-पिता के संयोग से (शुक्रम) वीर्य से बनी है। शरीर त्यागने के पश्चात् भी जीव का सुक्ष्म शरीर साथ रहता है। वह शरीर उसी साधक को दिखाई देता है जिसकी दिव्य दृष्टि खुल चुकी है। इस प्रकार परमात्मा व जीव की स्थिति को समझें। वेदों में ओउम् नाम के स्मरण का प्रमाण है जो केवल ब्रह्म साधना है। इस उद्देश्य से ओउम् नाम के जाप को पूर्ण ब्रह्म का मान कर ऋषियों ने भी हजारों वर्ष हठयोग (समाधि लगा कर) करके प्रभु प्राप्ति की चेष्टा की, परन्तु प्रभु दर्शन नहीं हुए, सिद्धियाँ प्राप्त हो गई। उन्हीं सिद्धी रूपी खिलौनों से खेल कर ऋषि भी जन्म-मृत्यु के चक्र में ही रह गए तथा अपने अनुभव के शास्त्रों में परमात्मा को निराकार लिख दिया। ब्रह्म (काल) ने कसम खाई है कि मैं अपने वास्तविक रूप में किसी को दर्शन नहीं दूँगा। मुझे अव्यक्त जाना करेंगे (अव्यक्त का भावार्थ है कि कोई आकार में है परन्तु व्यक्तिगत रूप से स्थूल रूप में दर्शन नहीं देता। जैसे आकाश में बादल छा जाने पर दिन के समय सूर्य अदृश हो जाता है। वह दृश्यमान नहीं है, परन्तु वास्तव में बादलों के पार ज्यों का त्यों है, इस अवस्था को अव्यक्त कहते हैं।))। (प्रमाण के लिए गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25, अध्याय 11 श्लोक 48 तथा 32)

पवित्र गीता जी बोलने वाला ब्रह्म (काल) श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रेतवत प्रवेश करके कह रहा है कि अर्जुन मैं बढ़ा हुआ काल हूँ और सर्व को खाने के लिए आया हूँ। (गीता अध्याय 11 का श्लोक नं. 32) यह मेरा वास्तविक रूप है, इसको तेरे अतिरिक्त न तो कोई पहले देख सका तथा न कोई आगे देख सकता है अर्थात् वेदों में वर्णित यज्ञ-जप-तप तथा ओउम् नाम आदि की विधि से मेरे इस वास्तविक स्वरूप के दर्शन नहीं हो सकते। (गीता अध्याय 11 श्लोक नं 48) मैं कृष्ण नहीं हूँ, ये मूर्ख लोग कृष्ण रूप में मुझ अव्यक्त को व्यक्त (मनुष्य रूप) मान रहे हैं। क्योंकि ये मेरे घटिया नियम से अपरिचित हैं कि मैं कभी वास्तविक इस काल रूप में सबके सामने नहीं आता। अपनी योग माया से छुपा रहता हूँ (गीता अध्याय 7 श्लोक नं. 24-25) विचार करें :- अपने छुपे रहने वाले विधान को स्वयं अश्रेष्ठ (अनुत्तम) क्यों कह रहे हैं?

ब्रह्म लोक का लघु चित्र
महाविष्णु रूप में काल
जटा कुण्डली झील
महाब्रह्मा रूप में काल
महाशिव रूप में काल
सतोगुण प्रधान क्षेत्र
तमोगुण प्रधान क्षेत्र
रजोगुण प्रधान क्षेत्र
शुन्य स्थान
दुर्गा लोक
सप्तपुरी
अठासी हजार द्वीप
नकली अनामी लोक
नकली अगम लोक
नकली अलख लोक
नकली सतलोक
महाइन्द्र का द्वीप
मीठे जल का समुद्र
महास्वर्ग
त्रिवेणी
फलदार वृक्षों का वन
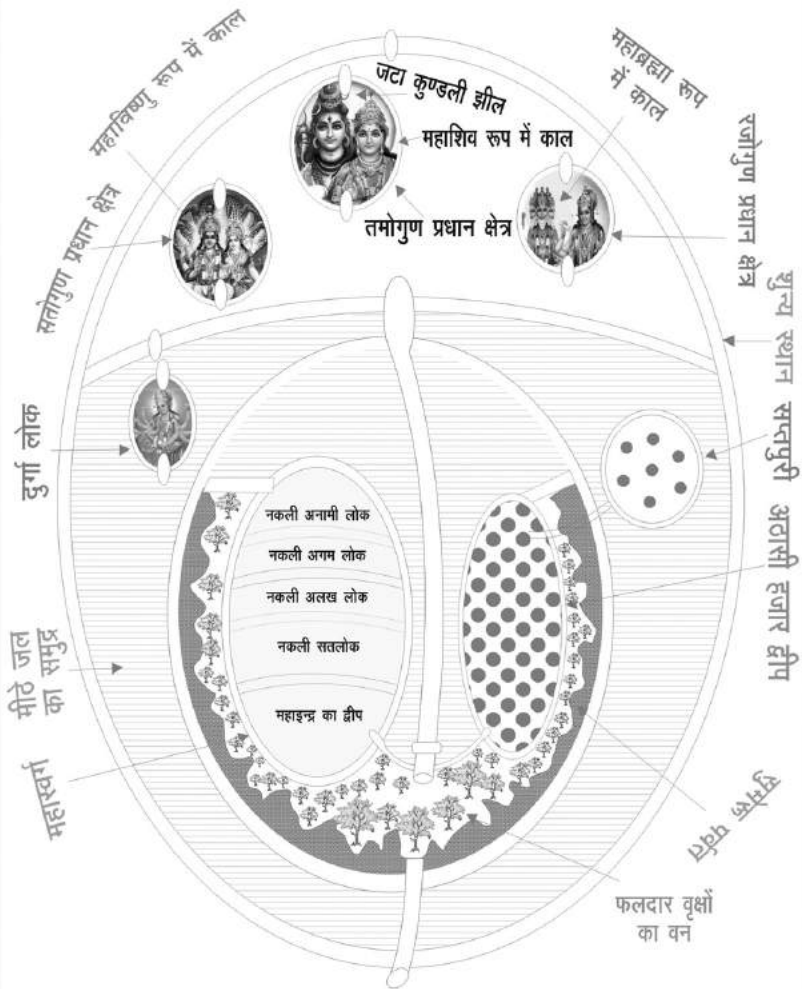
ज्योति निरंजन (काल) ब्रह्म के लोक (21 ब्रह्मण्ड) का लघु चित्र
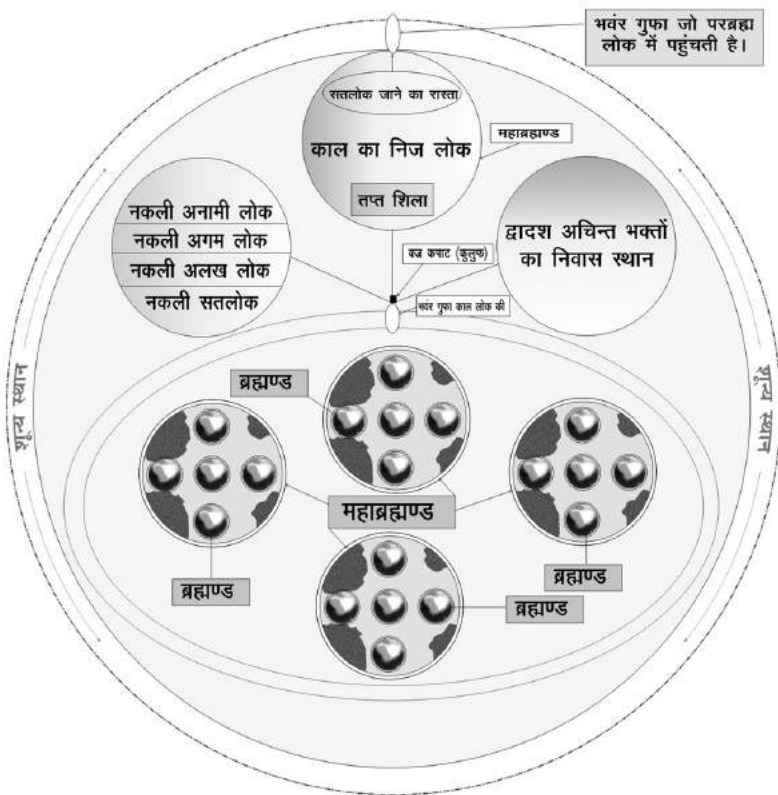
यदि पिता अपनी सन्तान को भी दर्शन नहीं देता तो उसमें कोई त्रुटि है जिस कारण से छुपा है तथा सुविधाएं भी प्रदान कर रहा है। काल (ब्रह्म) को शापवश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों का आहार करना पड़ता है तथा 25 प्रतिशत प्रतिदिन जो ज्यादा उत्पन्न होते हैं उन्हें ठिकाने लगाने के लिए तथा कर्म भोग का दण्ड देने के लिए चौरासी लाख योनियों की रचना की हुई है। यदि सबके सामने बैठ कर किसी की पुत्री, किसी की पत्नी, किसी के पुत्र, माता-पिता को खाए तो सर्व को ब्रह्म से घृणा हो जाए तथा जब भी कभी पूर्ण परमात्मा कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) स्वयं आए या अपना कोई संदेशवाहक (दूत) भेंजे तो सर्व प्राणी सत्यभक्ति करके काल के जाल से निकल जाएं। इसलिए धोखा देकर रखता है तथा पवित्र गीता अध्याय 7 श्लोक 18,24,25 में अपनी साधना से होने वाली मुक्ति (गति) को भी (अनुत्तमाम्) अति अश्रेष्ठ कहा है तथा अपने विधान (नियम)को भी (अनुत्तम) अश्रेष्ठ कहा है।

प्रत्येक ब्रह्मण्ड में बने ब्रह्मलोक में एक महास्वर्ग बनाया है। महास्वर्ग में एक स्थान पर नकली सतलोक - नकली अलख लोक - नकली अगम लोक तथा नकली अनामी लोक की रचना प्राणियों को धोखा देने के लिए प्रकृति (दुर्गा/आदि माया) द्वारा करवा रखी है। कबीर साहेब का एक शब्द है 'कर नैनों दीदार महल में प्यारा है' में वाणी है कि 'काया भेद किया निरवारा, यह सब रचना पिण्ड मंझारा है। माया अविगत जाल पसारा, सो कारीगर भारा है। आदि माया किन्ही चतुराई, झूठी बाजी पिण्ड दिखाई, अविगत रचना रचि अण्ड माहि वाका प्रतिबिम्ब डारा है।'

एक ब्रह्मण्ड में अन्य लोकों की भी रचना है, जैसे श्री ब्रह्मा जी का लोक, श्री विष्णु जी का लोक, श्री शिव जी का लोक। जहाँ पर बैठकर तीनों प्रभु नीचे के तीन लोकों (स्वर्गलोक अर्थात् इन्द्र का लोक - पृथ्वी लोक तथा पाताल लोक) पर एक - एक विभाग के मालिक बन कर प्रभुता करते हैं तथा अपने पिता काल के खाने के लिए प्राणियों की उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार का कार्यभार संभालते हैं। तीनों प्रभुओं की भी जन्म व मृत्यु होती है। तब काल इन्हें भी खाता है। इसी ब्रह्मण्ड {इसे अण्ड भी कहते हैं क्योंकि ब्रह्मण्ड की बनावट अण्डाकार है, इसे पिण्ड भी कहते हैं क्योंकि शरीर (पिण्ड) में एक ब्रह्मण्ड की रचना कमलों में टी.वी. की तरह देखी जाती है} में एक मानसरोवर तथा धर्मराय (न्यायधीश) का भी लोक है तथा एक गुप्त स्थान पर पूर्ण परमात्मा अन्य रूप धारण करके रहता है जैसे प्रत्येक देश का राजदूत भवन होता है। वहाँ पर कोई नहीं जा सकता। वहाँ पर वे आत्माऐं रहती हैं जिनकी सत्यलोक की भक्ति अधूरी रहती है। जब भक्ति युग आता है तो उस समय परमेश्वर कबीर जी अपना प्रतिनिधी पूर्ण संत सतगुरु भेजते हैं। इन पुण्यात्माओं को पृथ्वी पर उस समय मानव शरीर प्राप्त होता है तथा ये शीघ्र ही सत भक्ति पर लग जाते हैं तथा सतगुरु से दीक्षा प्राप्त करके पूर्ण मोक्ष प्राप्त कर जाते हैं। उस स्थान पर रहने वाले हंस आत्माओं की निजी भक्ति कमाई खर्च नहीं होती। परमात्मा के भण्डार से सर्व सुविधाऐं उपलब्ध होती हैं। ब्रह्म (काल) के

उपासकों की भक्ति कमाई स्वर्ग-महा स्वर्ग में समाप्त हो जाती है क्योंकि इस काल लोक (ब्रह्म लोक) तथा परब्रह्म लोक में प्राणियों को अपना किया कर्मफल ही मिलता है।

क्षर पुरुष (ब्रह्म) ने अपने 20 ब्रह्मण्डों को चार महाब्रह्मण्डों में विभाजित किया है। एक महाब्रह्मण्ड में पाँच ब्रह्मण्डों का समूह बनाया है तथा चारों ओर से अण्डाकार गोलाई (परिधि) में रोका है तथा चारों महा ब्रह्मण्डों को भी फिर अण्डाकार गोलाई (परिधि) में रोका है। इक्कीसवें ब्रह्मण्ड की रचना एक महाब्रह्मण्ड जितना स्थान लेकर की है। इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में प्रवेश होते ही तीन रास्ते बनाए हैं। इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में भी बांई तरफ नकली सतलोक, नकली अलख लोक, नकली अगम लोक, नकली अनामी लोक की रचना प्राणियों को धोखे में रखने के लिए आदि माया (दुर्गा) से करवाई है तथा दांई तरफ बारह सर्व श्रेष्ठ ब्रह्म साधकों (भक्तों) को रखता है। फिर प्रत्येक युग में उन्हें अपने संदेश वाहक (सन्त सतगुरू) बनाकर पृथ्वी पर भेजता है, जो शास्त्र विधि रहित साधना व ज्ञान बताते हैं तथा स्वयं भी भक्तिहीन हो जाते हैं तथा अनुयाइयों को भी काल जाल में फंसा जाते हैं। फिर वे गुरु जी तथा अनुयाई दोनों ही नरक में जाते हैं। फिर सामने एक ताला (कुलुफ) लगा रखा है। वह रास्ता काल (ब्रह्म) के निज लोक में जाता है। जहाँ पर यह ब्रह्म (काल) अपने वास्तविक मानव सदृश काल रूप में रहता है। इसी स्थान पर एक पत्थर की टुकड़ी तवे के आकार की (चपाती पकाने की लोहे की गोल प्लेट सी होती है) स्वतः गर्म रहती है। जिस पर एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों के सूक्ष्म शरीर को भूनकर उनमें से गंदगी निकाल कर खाता है। उस समय सर्व प्राणी बहुत पीड़ा अनुभव करते हैं तथा हाहाकार मच जाती है। फिर कुछ समय उपरान्त वे बेहोश हो जाते हैं। जीव मरता नहीं। फिर धर्मराय के लोक में जाकर कर्माधार से अन्य जन्म प्राप्त करते हैं तथा जन्म-मृत्यु का चक्कर बना रहता है। उपरोक्त सामने लगा ताला ब्रह्म (काल) केवल अपने आहार वाले प्राणियों के लिए कुछ क्षण के लिए खोलता है। पूर्ण परमात्मा के सत्यनाम व सारनाम से यह ताला स्वयं खुल जाता है। ऐसे काल का जाल पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर साहेब) ने स्वयं ही अपने निजी भक्त धर्मदास जी को समझाया।

“परब्रह्म के सात संख ब्रह्माण्डों की स्थापना”

कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने आगे बताया है कि परब्रह्म (अक्षर पुरुष) ने अपने कार्य में गफलत की क्योंकि यह मानसरोवर में सो गया तथा जब परमेश्वर (मैंनें अर्थात् कबीर साहेब ने) उस सरोवर में अण्डा छोड़ा तो अक्षर पुरुष (परब्रह्म) ने उसे क्रोध से देखा। इन दोनों अपराधों के कारण इसे भी सात संख ब्रह्मण्ड़ों सहित सतलोक से बाहर कर दिया। दूसरा कारण अक्षर पुरुष (परब्रह्म) अपने साथी ब्रह्म (क्षर पुरुष) की विदाई में व्याकुल होकर परमपिता कविर्देव (कबीर परमेश्वर) की याद भूलकर उसी को याद करने लगा तथा सोचा कि क्षर पुरुष (ब्रह्म) तो बहुत आनन्द मना रहा होगा, मैं पीछे रह गया तथा अन्य कुछ आत्माऐं जो परब्रह्म के

साथ सात संख ब्रह्मण्डों में जन्म-मृत्यु का कर्मदण्ड भोग रही हैं, उन हंस आत्माओं की विदाई की याद में खो गई जो ब्रह्म (काल) के साथ इक्कीस ब्रह्मण्डों में फंसी हैं तथा पूर्ण परमात्मा, सुखदाई कविर्देव की याद भुला दी। परमेश्वर कविर् देव के बार-बार समझाने पर भी आस्था कम नहीं हुई। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) ने सोचा कि मैं भी अलग स्थान प्राप्त करूं तो अच्छा रहे। यह सोच कर राज्य प्राप्ति की इच्छा से सारनाम का जाप प्रारम्भ कर दिया। इसी प्रकार अन्य आत्माओं ने (जो परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्डों में फंसी हैं) सोचा कि वे जो ब्रह्म के साथ आत्माऐं गई हैं वे तो वहाँ मौज-मस्ती मनाऐंगे, हम पीछे रह गये। परब्रह्म के मन में यह धारणा बनी कि क्षर पुरुष अलग होकर बहुत सुखी होगा। यह विचार कर अन्तरात्मा से भिन्न स्थान प्राप्ति की ठान ली। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) ने हठ योग नहीं किया, परन्तु केवल अलग राज्य प्राप्ति के लिए सहज ध्यान योग विशेष कसक के साथ करता रहा। अलग स्थान प्राप्त करने के लिए पागलों की तरह विचरने लगा, खाना-पीना भी त्याग दिया। अन्य कुछ आत्माऐं उसके वैराग्य पर आसक्त होकर उसे चाहने लगी। पूर्ण प्रभु के पूछने पर परब्रह्म ने अलग स्थान माँगा तथा कुछ हंसात्माओं के लिए भी याचना की। तब कविर्देव ने कहा कि जो आत्मा आपके साथ स्वेच्छा से जाना चाहें उन्हें भेज देता हूँ। पूर्ण प्रभु ने पूछा कि कौन हंस आत्मा परब्रह्म के साथ जाना चाहता है, सहमति व्यक्त करे। बहुत समय उपरान्त एक हंस ने स्वीकृति दी, फिर देखा-देखी उन सर्व आत्माओं ने भी सहमति व्यक्त कर दी। सर्व प्रथम स्वीकृति देने वाले हंस को स्त्री रूप बनाया, उसका नाम ईश्वरी माया (प्रकृति सुरति) रखा तथा अन्य आत्माओं को उस ईश्वरी माया में प्रवेश करके अचिन्त द्वारा अक्षर पुरुष (परब्रह्म) के पास भेजा। (पतिव्रता पद से गिरने की सजा पाई।) कई युगों तक दोनों सात संख ब्रह्मण्डों में रहे, परन्तु परब्रह्म ने दुर्व्यवहार नहीं किया। ईश्वरी माया की स्वेच्छा से अंगीकार किया तथा अपनी शब्द शक्ति द्वारा नाखुनों से स्त्री इन्द्री (योनि) बनाई। ईश्वरी देवी की सहमति से संतान उत्पन्न की। इस लिए परब्रह्म के लोक (सात संख ब्रह्मण्डों) में प्राणियों को तप्तशिला का कष्ट नहीं है तथा वहाँ पशु-पक्षी भी ब्रह्म लोक के देवों से अच्छे चरित्र युक्त हैं। आयु भी बहुत लम्बी है, परन्तु जन्म - मृत्यु कर्माधार पर कर्मदण्ड तथा परिश्रम करके ही उदर पूर्ति होती है। स्वर्ग तथा नरक भी ऐसे ही बने हैं। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) को सात संख ब्रह्मण्ड उसके इच्छा रूपी भक्ति ध्यान अर्थात् सहज समाधि विधि से की उस की कमाई के प्रतिफल में प्रदान किये तथा सत्यलोक से भिन्न स्थान पर गोलाकार परिधि में बन्द करके सात संख ब्रह्मण्डों सहित अक्षर ब्रह्म व ईश्वरी माया को निष्कासित कर दिया।

पूर्ण ब्रह्म (सतपुरुष) असंख्य ब्रह्मण्डों जो सत्यलोक आदि में हैं तथा ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्मण्डों तथा परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्डों का भी प्रभु (मालिक) है अर्थात् परमेश्वर कविर्देव कुल का मालिक है।

श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी आदि के चार-चार भुजाएं तथा

16 कलाएं हैं तथा प्रकृति देवी (दुर्गा) की आठ भुजाएं हैं तथा 64 कलाएं हैं। ब्रह्म (क्षर पुरुष) की एक हजार भुजाएं हैं तथा एक हजार कलाएं है तथा इक्कीस ब्रह्मण्ड़ों का प्रभु है। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) की दस हजार भुजाएं हैं तथा दस हजार कला हैं तथा सात संख ब्रह्मण्डों का प्रभु है। पूर्ण ब्रह्म (परम अक्षर पुरुष अर्थात् सतपुरुष) की असंख्य भुजाएं तथा असंख्य कलाएं हैं तथा ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्मण्ड व परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्डों सहित असंख्य ब्रह्मण्डों का प्रभु है। प्रत्येक प्रभु अपनी सर्व भुजाओं को समेट कर केवल दो भुजाएं भी रख सकते हैं तथा जब चाहें सर्व भुजाओं को भी प्रकट कर सकते हैं। पूर्ण परमात्मा परब्रह्म के प्रत्येक ब्रह्मण्ड में भी अलग स्थान बनाकर अन्य रूप में गुप्त रहता है। यूं समझो जैसे एक घूमने वाला कैमरा बाहर लगा देते हैं तथा अन्दर टी.वी. (टेलीविजन) रख देते हैं। टी.वी. पर बाहर का सर्व दृश्य नजर आता है तथा दूसरा टी.वी. बाहर रख कर अन्दर का कैमरा स्थाई करके रख दिया जाए, उसमें केवल अन्दर बैठे प्रबन्धक का चित्र दिखाई देता है। जिससे सर्व कर्मचारी सावधान रहते हैं।

इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा अपने सतलोक में बैठ कर सर्व को नियंत्रित किए हुए हैं तथा प्रत्येक ब्रह्मण्ड में भी सतगुरु कविर्देव विद्यमान रहते हैं जैसे सूर्य दूर होते हुए भी अपना प्रभाव अन्य लोकों में बनाए हुए है।

“पवित्र अथर्ववेद में सृष्टि रचना का प्रमाण”

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 1 :–

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्त्ताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः।। 1।।

ब्रह्म–ज–ज्ञानम्–प्रथमम्–पुरस्त्तात्–विसिमतः–सुरुचः–वेनः–आवः–सः–
बुध्न्याः –उपमा–अस्य–विष्ठाः–सतः–च–योनिम्–असतः–च–वि वः

अनुवाद :– (प्रथमम्) प्राचीन अर्थात् सनातन (ब्रह्म) परमात्मा ने (ज) प्रकट होकर (ज्ञानम्) अपनी सूझ–बूझ से (पुरस्त्तात्) शिखर में अर्थात् सतलोक आदि को (सुरुचः) स्वइच्छा से बड़े चाव से स्वप्रकाशित (विसिमतः) सीमा रहित अर्थात् विशाल सीमा वाले भिन्न लोकों को उस (वेनः) जुलाहे ने ताने अर्थात् कपड़े की तरह बुनकर (आवः) सुरक्षित किया (च) तथा (सः) वह पूर्ण ब्रह्म ही सर्व रचना करता है (अस्य) इसलिए उसी (बुध्न्याः) मूल मालिक ने (योनिम्) मूलस्थान सत्यलोक की रचना की है (अस्य) इस के (उपमा) सदृश अर्थात् मिलते जुलते (सतः) अक्षर पुरुष अर्थात् परब्रह्म के लोक कुछ स्थाई (च) तथा (असतः) क्षर पुरुष के अस्थाई लोक आदि (वि वः) आवास स्थान भिन्न (विष्ठाः) स्थापित किए।

भावार्थ :- पवित्र वेदों को बोलने वाला ब्रह्म (काल) कह रहा है कि सनातन परमेश्वर ने स्वयं अनामय (अनामी) लोक से सत्यलोक में प्रकट होकर अपनी सूझ-बूझ से कपड़े की तरह रचना करके ऊपर के सतलोक आदि को सीमा रहित स्वप्रकाशित अजर - अमर अर्थात् अविनाशी ठहराए तथा नीचे के परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्ड तथा ब्रह्म के 21 ब्रह्मण्ड व इनमें छोटी-से छोटी रचना भी उसी

परमात्मा ने अस्थाई की है।

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 2 :—

इयं पित्र्या राष्ट्र्येत्वग्रे प्रथमाय जनुषे भुवनेष्ठाः।
तस्मा एतं सुरुचं ह्वारमह्यं घर्मं श्रीणन्तु प्रथमाय धास्यवे।।2।।

इयम्—पित्र्या—राष्ट्रि—एतु—अग्रे—प्रथमाय—जनुषे—भुवनेष्ठाः—तस्मा—एतम्—सुरुचम् — हवारमह्यम्—धर्मम्—श्रीणान्तु—प्रथमाय—धास्यवे

अनुवाद :— (इयम्) इसी (पित्र्या) जगतपिता परमेश्वर ने (एतु) इस (अग्रे) सर्वोत्तम् (प्रथमाय) सर्व से पहली माया परानन्दनी (राष्ट्रि) राजेश्वरी शक्ति अर्थात् पराशक्ति जिसे आकर्षण शक्ति भी कहते हैं, को (जनुषे) उत्पन्न करके (भुवनेष्ठाः) लोक स्थापना की (तस्मा) उसी परमेश्वर ने (सुरुचम्) बड़े चाव के साथ स्वेच्छा से (एतम्) इस (प्रथमाय) प्रथम उत्पत्ति की शक्ति अर्थात् पराशक्ति के द्वारा (ह्वारमह्यम्) एक दूसरे के वियोग को रोकने अर्थात् आकर्षण शक्ति के (श्रीणान्तु) गुरूत्व आकर्षण को परमात्मा ने आदेश दिया सदा रहो उस कभी समाप्त न होने वाले (धर्मम्) स्वभाव से (धास्यवे) धारण करके ताने अर्थात् कपड़े की तरह बुनकर रोके हुए है।

भावार्थ :- जगतपिता परमेश्वर ने अपनी शब्द शक्ति से राष्ट्री अर्थात् सबसे पहली माया राजेश्वरी उत्पन्न की तथा उसी पराशक्ति के द्वारा एक-दूसरे को आकर्षण शक्ति से रोकने वाले कभी न समाप्त होने वाले गुण से उपरोक्त सर्व ब्रह्मण्डों को स्थापित किया है।

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 3 :—

प्र यो जज्ञे विद्वानस्य बन्धुर्विश्वा देवानां जनिमा विवक्ति।
ब्रह्म ब्रह्मण उज्जभार मध्यान्नीचैरुच्चैः स्वधा अभि प्र तस्थौ।।3।।

प्र—यः—जज्ञे—विद्वानस्य—बन्धुः—विश्वा—देवानाम्—जनिमा—विवक्ति—ब्रह्मः—ब्रह्मणः— उज्जभार—मध्यात्—निचैः—उच्चैः—स्वधा—अभिः—प्रतस्थौ

अनुवाद :— (प्र) सर्व प्रथम (देवानाम्) देवताओं व ब्रह्मण्डों की (जज्ञे) उत्पति के ज्ञान को (विद्वानस्य) जिज्ञासु भक्त का (यः) जो (बन्धुः) वास्तविक साथी अर्थात् पूर्ण परमात्मा ही अपने निज सेवक को (जनिमा) अपने द्वारा सृजन किए हुए को (विवक्ति) स्वयं ही ठीक—ठीक विस्तार पूर्वक बताता है कि (ब्रह्मणः) पूर्ण परमात्मा ने (मध्यात्) अपने मध्य से अर्थात् शब्द शक्ति से (ब्रह्मः) ब्रह्म—क्षर पुरूष अर्थात् काल को (उज्जभार) उत्पन्न करके (विश्वा) सारे संसार को अर्थात् सर्व लोकों को (उच्चैः) ऊपर सत्यलोक आदि (निचैः) नीचे परब्रह्म व ब्रह्म के सर्व ब्रह्मण्ड (स्वधा) अपनी धारण करने वाली (अभिः) आकर्षण शक्ति से (प्र तस्थौ) दोनों को अच्छी प्रकार स्थित किया।

भावार्थ :- पूर्ण परमात्मा अपने द्वारा रची सृष्टि का ज्ञान तथा सर्व आत्माओं की उत्पत्ति का ज्ञान अपने निजी दास को स्वयं ही सही बताता है कि पूर्ण परमात्मा ने अपने मध्य अर्थात् अपने शरीर से अपनी शब्द शक्ति के द्वारा ब्रह्म (क्षर पुरुष/काल) की उत्पत्ति की तथा सर्व ब्रह्मण्डों को ऊपर सतलोक, अलख लोक, अगम लोक, अनामी लोक आदि तथा नीचे परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्ड तथा ब्रह्म

के 21 ब्रह्मण्डों को अपनी धारण करने वाली आकर्षण शक्ति से ठहराया हुआ है।

जैसे पूर्ण परमात्मा कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने अपने निजी सेवक अर्थात् सखा श्री धर्मदास जी, आदरणीय गरीबदास जी आदि को अपने द्वारा रची सृष्टि का ज्ञान स्वयं ही बताया। उपरोक्त वेद मंत्र भी यही समर्थन कर रहा है।

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 4

सः हि दिवः सः पृथिव्या ऋतस्था मही क्षेमं रोदसी अस्कभायत्।
महान् मही अस्कभायद् वि जातो द्यां सद्म पार्थिवं च रजः।।4।।

सः—हि—दिवः—स—पृथिव्या—ऋतस्था—मही—क्षेमम्—रोदसी—अकस्भायत्—महान् —मही—अस्कभायद्—विजातः—धाम्—सदम्—पार्थिवम्—च—रजः

अनुवाद — (सः)उसी सर्वशक्तिमान परमात्मा ने (हि) निःसंदेह (दिवः) ऊपर के चारों दिव्य लोक जैसे सत्य लोक, अलख लोक, अगम लोक तथा अनामी अर्थात् अकह लोक अर्थात् दिव्य गुणों युक्त लोकों को (ऋतस्था) सत्य स्थिर अर्थात् अजर—अमर रूप से स्थिर किए (स) उन्हीं के समान (पृथिव्या) नीचे के पृथ्वी वाले सर्व लोकों जैसे परब्रह्म के सात संख तथा ब्रह्म/काल के इक्कीस ब्रह्मण्ड (मही) पृथ्वी तत्व से (क्षेमम्) सुरक्षा के साथ (अस्कभायत्) ठहराया (रोदसी) आकाश तत्व तथा पृथ्वी तत्व दोनों से ऊपर नीचे के ब्रह्माण्डों को{जैसे आकाश एक सुक्ष्म तत्व है, आकाश का गुण शब्द है, पूर्ण परमात्मा ने ऊपर के लोक शब्द रूप रचे जो तेजपुंज के बनाए हैं तथा नीचे के परब्रह्म (अक्षर पुरूष) के सप्त संख ब्रह्मण्ड तथा ब्रह्म/क्षर पुरूष के इक्कीस ब्रह्मण्डों को पृथ्वी तत्व से अस्थाई रचा} (महान्) पूर्ण परमात्मा ने (पार्थिवम्) पृथ्वी वाले (वि) भिन्न—भिन्न (धाम्) लोक (च) और (सदम्) आवास स्थान (मही) पृथ्वी तत्व से (रजः) प्रत्येक ब्रह्मण्ड में छोटे—छोटे लोकों की (जातः) रचना करके (अस्कभायत्) स्थिर किया।

भावार्थ :- ऊपर के चारों लोक सत्यलोक, अलख लोक, अगम लोक, अनामी लोक, यह तो अजर-अमर स्थाई अर्थात् अविनाशी रचे हैं तथा नीचे के ब्रह्म तथा परब्रह्म के लोकों को अस्थाई रचना करके तथा अन्य छोटे-छोटे लोक भी उसी परमेश्वर ने रच कर स्थिर किए।

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 5

सः बुध्न्यादाष्ट्र जनुषोऽभ्यग्रं बृहस्पतिर्देवता तस्य सम्राट्।
अहर्यच्छुक्रं ज्योतिषो जनिष्टाथ द्युमन्तो वि वसन्तु विप्राः।।5।।

सः—बुध्न्यात्—आष्ट्र—जनुषेः—अभि—अग्रम्—बृहस्पतिः—देवता—तस्य—सम्राट—अहः— यत्—शुक्रम्—ज्योतिषः—जनिष्ट—अथ—द्युमन्तः—वि—वसन्तु—विप्राः

अनुवाद :— (सः) उसी (बुध्न्यात्) मूल मालिक से (अभि—अग्रम्) सर्व प्रथम स्थान पर (आष्ट्र) अष्टँगी माया—दुर्गा अर्थात् प्रकृति देवी (जनुषेः) उत्पन्न हुई क्योंकि नीचे के परब्रह्म व ब्रह्म के लोकों का प्रथम स्थान सतलोक है यह तीसरा धाम भी कहलाता है (तस्य) इस दुर्गा का भी मालिक यही (सम्राट) राजाधिराज (बृहस्पतिः) सबसे बड़ा पति व जगतगुरु (देवता) परमेश्वर है। (यत्) जिस से (अहः) सबका वियोग हुआ (अथ) इसके बाद (ज्योतिषः) ज्योति रूप निरंजन अर्थात् काल के (शुक्रम्) वीर्य अर्थात् बीज शक्ति

से (जनिष्ट) दुर्गा के उदर से उत्पन्न होकर (विप्राः) भक्त आत्माएं (वि) अलग से (द्युमन्तः) मनुष्य लोक तथा स्वर्ग लोक में ज्योति निरंजन के आदेश से दुर्गा ने कहा (वसन्तु) निवास करो, अर्थात् वे निवास करने लगी।

भावार्थ :- पूर्ण परमात्मा ने ऊपर के चारों लोकों में से जो नीचे से सबसे प्रथम अर्थात् सत्यलोक में आष्ट्रा अर्थात् अष्टंगी (प्रकृति देवी/दुर्गा) की उत्पत्ति की। यही राजाधिराज, जगतगुरु, पूर्ण परमेश्वर (सतपुरुष) है जिससे सबका वियोग हुआ है। फिर सर्व प्राणी ज्योति निरंजन (काल) के (वीर्य) बीज से दुर्गा (आष्ट्रा) के गर्भ द्वारा उत्पन्न होकर स्वर्ग लोक व पृथ्वी लोक पर निवास करने लगे।

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 6

नूनं तदस्य काव्यो हिनोति महो देवस्य पूर्व्यस्य धाम।
एष जज्ञे बहुभिः साकमित्था पूर्वे अर्धे विषिते ससन् नु।।6।।

नूनम्—तत्—अस्य—काव्यः—महः—देवस्य—पूर्व्यस्य—धाम—हिनोति—पूर्वे—विषिते—एष— जज्ञे—बहुभिः—साकम्—इत्था—अर्धे—ससन्—नु।

अनुवाद – (नूनम्) निसंदेह (तत्) वह पूर्ण परमेश्वर अर्थात् तत् ब्रह्म ही (अस्य) इस (काव्यः) भक्त आत्मा जो पूर्ण परमेश्वर की भक्ति विधिवत करता है को वापिस (महः) सर्वशक्तिमान (देवस्य) परमेश्वर के (पूर्व्यस्य) पहले के (धाम) लोक में अर्थात् सत्यलोक में (हिनोति) भेजता है।

(पूर्वे) पहले वाले (विषिते) विशेष चाहे हुए (एष) इस परमेश्वर को व (जज्ञे) सृष्टि उत्पति के ज्ञान को जान कर (बहुभिः) बहुत आनन्द (साकम्) के साथ (अर्धे) आधा (ससन्) सोता हुआ (इत्था) विधिवत् इस प्रकार (नु) सच्ची आत्मा से स्तुति करता है।

भावार्थ :- वही पूर्ण परमेश्वर सत्य साधना करने वाले साधक को उसी पहले वाले स्थान (सत्यलोक) में ले जाता है, जहाँ से बिछुड़ कर आए थे। वहाँ उस वास्तविक सुखदाई प्रभु को प्राप्त करके खुशी से आत्म विभोर होकर मस्ती से स्तुति करता है कि हे परमात्मा असंख्य जन्मों के भूले-भटकों को वास्तविक ठिकाना मिल गया। इसी का प्रमाण पवित्र ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 16 में भी है।

आदरणीय गरीबदास जी को इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) स्वयं सत्यभक्ति प्रदान करके सत्यलोक लेकर गए थे, तब अपनी अमृतवाणी में आदरणीय गरीबदास जी महाराज ने आँखों देखकर कहा:-

गरीब, अजब नगर में ले गए, हमकुँ सतगुरु आन।
झिलके बिम्ब अगाध गति, सुते चादर तान।।

ऊपर जड़ नीचे शाखा वाला उल्टा लटका हुआ संसार रूपी वृक्ष का चित्र
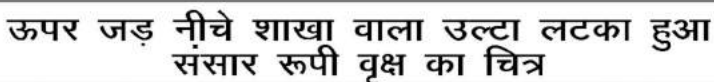
काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 7

योऽथर्वाणं पित्तरं देवबन्धुं बृहस्पतिं नमसाव च गच्छात्।
त्वं विश्वेषां जनिता यथासः कविर्देवो न दभायत् स्वधावान्।।7।।

यः—अथर्वाणम्—पित्तरम्—देवबन्धुम्—बृहस्पतिम्—नमसा—अव—च—गच्छात्—त्वम्— विश्वेषाम्—जनिता—यथा—सः—कविर्देवः—न—दभायत्—स्वधावान्

अनुवाद :— (यः) जो (अथर्वाणम्) अचल अर्थात् अविनाशी (पित्तरम्) जगत पिता (देव बन्धुम्) भक्तों का वास्तविक साथी अर्थात् आत्मा का आधार (बृहस्पतिम्) जगतगुरु (च) तथा (नमसा) विनम्र पुजारी अर्थात् विधिवत् साधक को (अव) सुरक्षा के साथ (गच्छात्) सतलोक गए हुओं को सतलोक ले जाने वाला (विश्वेषाम्) सर्व ब्रह्मण्डों की (जनिता) रचना करने वाला जगदम्बा अर्थात् माता वाले गुणों से भी युक्त (न दभायत्) काल की तरह धोखा न देने वाले (स्वधावान्) स्वभाव अर्थात् गुणों वाला (यथा) ज्यों का त्यों अर्थात् वैसा ही (सः) वह (त्वम्) आप (कविर्देवः/ कविर्देवः) कविर्देव है अर्थात् भाषा भिन्न इसे कबीर परमेश्वर भी कहते हैं।

भावार्थ :- इस मंत्र में यह भी स्पष्ट कर दिया कि उस परमेश्वर का नाम कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर है, जिसने सर्व रचना की है।

जो परमेश्वर अचल अर्थात् वास्तव में अविनाशी (गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में भी प्रमाण है) जगत् गुरु, आत्माधार, जो पूर्ण मुक्त होकर सत्यलोक गए हैं उनको सतलोक ले जाने वाला, सर्व ब्रह्मण्डों का रचनहार, काल (ब्रह्म) की तरह धोखा न देने वाला ज्यों का त्यों वह स्वयं कविर्देव अर्थात् कबीर प्रभु है। यही परमेश्वर सर्व ब्रह्मण्डों व प्राणियों को अपनी शब्द शक्ति से उत्पन्न करने के कारण (जनिता) माता भी कहलाता है तथा (पित्तरम्) पिता तथा (बन्धु) भाई भी वास्तव में यही है तथा (देव) परमेश्वर भी यही है। इसलिए इसी कविर्देव (कबीर परमेश्वर) की स्तुति किया करते हैं। त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव, त्वमेव विद्या च द्रविणंम त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम् देव देव। इसी परमेश्वर की महिमा का पवित्र ऋग्वेद मण्डल नं. 1 सूक्त नं. 24 में विस्तृत विवरण है।

"पवित्र ऋग्वेद में सृष्टि रचना का प्रमाण"

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 1

सहस्रशीर्षा पुरूषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतों वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।1।।

सहस्रशिर्षा—पुरूषः—सहस्राक्षः—सहस्रपात्—स—भूमिम्—विश्वतः—वृत्वा—अत्यातिष्ठत् —दशंगुलम्।

अनुवाद :— (पुरूषः) विराट रूप काल भगवान अर्थात् क्षर पुरूष (सहस्रशिर्षा) हजार सिरों वाला (सहस्राक्षः) हजार आँखों वाला (सहस्रपात्) हजार पैरों वाला है (स) वह काल (भूमिम्) पृथ्वी वाले इक्कीस ब्रह्मण्डों को (विश्वतः) सब ओर से (दशंगुलम्) दसों अंगुलियों से अर्थात् पूर्ण रूप से काबू किए हुए (वृत्वा) गोलाकार घेरे में घेर कर (अत्यातिष्ठत्) इस से बढ़कर अर्थात् अपने काल लोक में सबसे न्यारा भी इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में ठहरा है अर्थात्

रहता है।

भावार्थ :- इस मंत्र में विराट (काल/ब्रह्म) का वर्णन है। (गीता अध्याय 10-11 में भी इसी काल/ब्रह्म का ऐसा ही वर्णन है अध्याय 11 मंत्र नं. 46 में अर्जुन ने कहा है कि हे सहस्राबाहु अर्थात् हजार भुजा वाले आप अपने चतुर्भुज रूप में दर्शन दीजिए)

जिसके हजारों हाथ, पैर, हजारों आँखे, कान आदि हैं वह विराट रूप काल प्रभु अपने आधीन सर्व प्राणियों को पूर्ण काबू करके अर्थात् 20 ब्रह्मण्डों को गोलाकार परिधि में रोककर स्वयं इनसे ऊपर (अलग) इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में बैठा है।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 2

पुरूष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।2।।

पुरूष—एव—इदम्—सर्वम्—यत्—भूतम्—यत्—च—भाव्यम्—उत—अमृतत्वस्य—इशानः—यत्—अन्नेन—अतिरोहति

अनुवाद :— (एव) इसी प्रकार कुछ सही तौर पर (पुरूष) भगवान है वह अक्षर पुरूष अर्थात् परब्रह्म है (च) और (इदम्) यह (यत्) जो (भूतम्) उत्पन्न हुआ है (यत्) जो (भाव्यम्) भविष्य में होगा (सर्वम्) सब (यत्) प्रयत्न से अर्थात् मेहनत द्वारा (अन्नेन) अन्न से (अतिरोहति) विकसित होता है। यह अक्षर पुरूष भी (उत) सन्देह युक्त (अमृतत्वस्य) मोक्ष का (इशानः) स्वामी है अर्थात् भगवान तो अक्षर पुरूष भी कुछ सही है परन्तु पूर्ण मोक्ष दायक नहीं है।

भावार्थ :- इस मंत्र में परब्रह्म (अक्षर पुरुष) का विवरण है जो कुछ भगवान वाले लक्षणों से युक्त है, परन्तु इसकी भक्ति से भी पूर्ण मोक्ष नहीं है, इसलिए इसे संदेहयुक्त मुक्ति दाता कहा है। इसे कुछ प्रभु के गुणों युक्त इसलिए कहा है कि यह काल की तरह तप्तशिला पर भून कर नहीं खाता। परन्तु इस परब्रह्म के लोक में भी प्राणियों को परिश्रम करके कर्माधार पर ही फल प्राप्त होता है तथा अन्न से ही सर्व प्राणियों के शरीर विकसित होते हैं, जन्म तथा मृत्यु का समय भले ही काल (क्षर पुरुष) से अधिक है, परन्तु फिर भी उत्पत्ति प्रलय तथा चौरासी लाख योनियों में यातना बनी रहती है।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 3

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरूषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।3।।

एतावान्—अस्य—महिमा—अतः—ज्यायान्—च—पुरूषः—पादः—अस्य—विश्वा—भूतानि—त्रि—पाद्—अस्य—अमृतम्—दिवि

अनुवाद :— (अस्य) इस अक्षर पुरूष अर्थात् परब्रह्म की तो (एतावान्) इतनी ही (महिमा) प्रभुता है। (च) तथा (पुरूषः) वह परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर तो (अतः) इससे भी (ज्यायान्) बड़ा है (विश्वा) समस्त (भूतानि) क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष तथा इनके लोकों में तथा सत्यलोक तथा इन लोकों में जितने भी प्राणी हैं (अस्य) इस पूर्ण परमात्मा परम अक्षर पुरूष का (पादः) एक पैर है अर्थात् एक अंश मात्र है। (अस्य) इस

परमेश्वर के (त्रि) तीन (दिवि) दिव्य लोक जैसे सत्यलोक–अलख लोक–अगम लोक (अमृतम्) अविनाशी (पाद्) दूसरा पैर है अर्थात् जो भी सर्व ब्रह्मण्डों में उत्पन्न है वह सत्यपुरूष पूर्ण परमात्मा का ही अंश या अंग है।

भावार्थ :- इस ऊपर के मंत्र 2 में वर्णित अक्षर पुरुष (परब्रह्म) की तो इतनी ही महिमा है तथा वह पूर्ण पुरुष कविर्देव तो इससे भी बड़ा है अर्थात् सर्वशक्तिमान है तथा सर्व ब्रह्मण्ड उसी के अंश मात्र पर ठहरे हैं। इस मंत्र में तीन लोकों का वर्णन इसलिए है क्योंकि चौथा अनामी (अनामय) लोक अन्य रचना से पहले का है। यही तीन प्रभुओं (क्षर पुरूष-अक्षर पुरूष तथा इन दोनों से अन्य परम अक्षर पुरूष) का विवरण श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक संख्या 16-17 में है {इसी का प्रमाण आदरणीय गरीबदास साहेब जी कहते हैं कि :- गरीब, जाके अर्ध रूम पर सकल पसारा, ऐसा पूर्ण ब्रह्म हमारा।।

गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड का, एक रति नहीं भार।
सतगुरु पुरुष कबीर हैं, कुल के सृजनहार।।

इसी का प्रमाण आदरणीय दादू साहेब जी कह रहे हैं कि :-

जिन मोकुं निज नाम दिया, सोई सतगुरु हमार।
दादू दूसरा कोए नहीं, कबीर सृजनहार।।

इसी का प्रमाण आदरणीय नानक साहेब जी देते हैं कि :-

यक अर्ज गुफतम पेश तो दर कून करतार। हक्का कबीर करीम तू, बेएब परवरदिगार।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब, पृष्ठ नं. 721, महला 1, राग तिलंग)

कून करतार का अर्थ होता है सर्व का रचनहार, अर्थात् शब्द शक्ति से रचना करने वाला शब्द स्वरूपी प्रभु, हक्का कबीर का अर्थ है सत् कबीर, करीम का अर्थ दयालु, परवरदिगार का अर्थ परमात्मा है।}

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 4

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरूषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्व ङ्व्यक्रामत्साशनानशने अभि।।4।।

त्रि—पाद—ऊर्ध्वः—उदैत्—पुरूषः—पादः—अस्य—इह—अभवत्—पूनः—ततः—विश्वङ्— व्यक्रामत्—सः—अशनानशने—अभि

अनुवाद :— (पुरूषः) यह परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् अविनाशी परमात्मा (ऊर्ध्वः) ऊपर (त्रि) तीन लोक जैसे सत्यलोक–अलख लोक–अगम लोक रूप (पाद) पैर अर्थात् ऊपर के हिस्से में (उदैत्) प्रकट होता है अर्थात् विराजमान है (अस्य) इसी परमेश्वर पूर्ण ब्रह्म का (पादः) एक पैर अर्थात् एक हिस्सा जगत रूप (पुनर्) फिर (इह) यहाँ (अभवत्) प्रकट होता है (ततः) इसलिए (सः) वह अविनाशी पूर्ण परमात्मा (अशनानशने) खाने वाले काल अर्थात् क्षर पुरूष व न खाने वाले परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरूष के भी (अभि)ऊपर (विश्वङ्)सर्वत्र (व्यक्रामत्)व्याप्त है अर्थात् उसकी प्रभुता सर्व ब्रह्माण्डों व सर्व प्रभुओं पर है वह कुल का मालिक है। जिसने अपनी शक्ति को सर्व के ऊपर फैलाया है।

भावार्थ :- यही सर्व सृष्टि रचनहार प्रभु अपनी रचना के ऊपर के हिस्से में

तीनों स्थानों (सतलोक, अलखलोक, अगमलोक) में तीन रूप में स्वयं प्रकट होता है अर्थात् स्वयं ही विराजमान है। यहाँ अनामी लोक का वर्णन इसलिए नहीं किया क्योंकि अनामी लोक में कोई रचना नहीं है तथा अकह (अनामय) लोक शेष रचना से पूर्व का है फिर कहा है कि उसी परमात्मा के सत्यलोक से बिछुड़ कर नीचे के ब्रह्म व परब्रह्म के लोक उत्पन्न होते हैं और वह पूर्ण परमात्मा खाने वाले ब्रह्म अर्थात् काल से (क्योंकि ब्रह्म/काल विराट शाप वश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों को खाता है) तथा न खाने वाले परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरुष से (परब्रह्म प्राणियों को खाता नहीं, परन्तु जन्म-मृत्यु, कर्मदण्ड ज्यों का त्यों बना रहता है) भी ऊपर सर्वत्र व्याप्त है अर्थात् इस पूर्ण परमात्मा की प्रभुता सर्व के ऊपर है, कबीर परमेश्वर ही कुल का मालिक है। जिसने अपनी शक्ति को सर्व के ऊपर फैलाया है जैसे सूर्य अपने प्रकाश को सर्व के ऊपर फैला कर प्रभावित करता है, ऐसे पूर्ण परमात्मा ने अपनी शक्ति रूपी रेंज (क्षमता) को सर्व ब्रह्मण्डों को नियन्त्रित रखने के लिए छोड़ा हुआ है जैसे मोबाईल फोन का टावर एक देशिय होते हुए अपनी शक्ति अर्थात् मोबाइल फोन की रेंज (क्षमता) चहुं ओर फैलाए रहता है। इसी प्रकार पूर्ण प्रभू ने अपनी निराकार शक्ति सर्व व्यापक की है जिससे पूर्ण परमात्मा सर्व ब्रह्मण्डों को एक स्थान पर बैठ कर नियन्त्रित रखता है।

इसी का प्रमाण आदरणीय गरीबदास जी महाराज दे रहे हैं।

(अमृतवाणी राग कल्याण)

तीन चरण चिन्तामणी साहेब, शेष बदन पर छाए।
माता, पिता, कुल न बन्धु, ना किन्हें जननी जाये।।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 5

तस्माद्विराळजायत विराजो अधि पूरूषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।।5।।

तस्मात्–विराट्–अजायत–विराजः–अधि–पुरूषः–स–जातः–अत्यरिच्यत–पश्चात् –भूमिम्–अथः–पुरः।

अनुवाद :– (तस्मात्) उसके पश्चात् उस परमेश्वर सत्यपुरूष की शब्द शक्ति से (विराट्) विराट अर्थात् ब्रह्म, जिसे क्षर पुरूष व काल भी कहते हैं (अजायत) उत्पन्न हुआ है (पश्चात्) इसके बाद (विराजः) विराट पुरूष अर्थात् काल भगवान से (अधि) बड़े (पुरूषः) परमेश्वर ने (भूमिम्) पृथ्वी वाले लोक, काल ब्रह्म तथा परब्रह्म के लोक को (अत्यरिच्यत) अच्छी तरह रचा (अथः) फिर (पुरः) अन्य छोटे–छोटे लोक (स) उस पूर्ण परमेश्वर ने ही (जातः) उत्पन्न किया अर्थात् स्थापित किया।

भावार्थ :- उपरोक्त मंत्र 4 में वर्णित तीनों लोकों (अगमलोक, अलख लोक तथा सतलोक) की रचना के पश्चात् पूर्ण परमात्मा ने ज्योति निरंजन (ब्रह्म) की उत्पत्ति की अर्थात् उसी सर्व शक्तिमान परमात्मा पूर्ण ब्रह्म कविर्देव (कबीर प्रभु) से ही विराट अर्थात् ब्रह्म (काल) की उत्पत्ति हुई। यही प्रमाण गीता अध्याय 3 मन्त्र 15 में है कि अक्षर पुरूष अर्थात् अविनाशी प्रभु से ब्रह्म उत्पन्न हुआ यही प्रमाण

अर्थववेद काण्ड 4 अनुवाक 1 सुक्त 3 में है कि पूर्ण ब्रह्म से ब्रह्म की उत्पत्ति हुई उसी पूर्ण ब्रह्म ने (भूमिम्) भूमि आदि छोटे-बड़े सर्व लोकों की रचना की। वह पूर्णब्रह्म इस विराट भगवान अर्थात् ब्रह्म से भी बड़ा है अर्थात् इसका भी मालिक है।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 15

सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरूषं पशुम्।।15।।

सप्त—अस्य—आसन्—परिधयः—त्रिसप्त—समिधः—कृताः
देवा—यत्—यज्ञम्— तन्वानाः— अबध्नन्—पुरूषम्—पशुम्।

अनुवाद :— (सप्त) सात संख ब्रह्मण्ड तो परब्रह्म के तथा (त्रिसप्त) इक्कीस ब्रह्मण्ड काल ब्रह्म के (समिधः) कर्मदण्ड दुःख रूपी आग से दुःखी (कृताः) करने वाले (परिधयः) गोलाकार घेरा रूप सीमा में (आसन्) विद्यमान हैं (यत्) जो (पुरूषम्) पूर्ण परमात्मा की (यज्ञम्) विधिवत् धार्मिक कर्म अर्थात् पूजा करता है (पशुम्) बलि के पशु रूपी काल के जाल में कर्म बन्धन में बंधे (देवा) भक्तात्माओं को (तन्वानाः) काल के द्वारा रचे अर्थात् फैलाये पाप कर्म बंधन जाल से (अबध्नन्) बन्धन रहित करता है अर्थात् बन्दी छुड़ाने वाला बन्दी छोड़ है।

भावार्थ :- सात संख ब्रह्मण्ड परब्रह्म के तथा इक्कीस ब्रह्मण्ड ब्रह्म के हैं जिन में गोलाकार सीमा में बंद पाप कर्मों की आग में जल रहे प्राणियों को वास्तविक पूजा विधि बता कर सही उपासना करवाता है जिस कारण से बलि दिए जाने वाले पशु की तरह जन्म-मृत्यु के काल (ब्रह्म) के खाने के लिए तप्त शिला के कष्ट से पीड़ित भक्तात्माओं को काल के कर्म बन्धन के फैलाए जाल को तोड़कर बन्धन रहित करता है अर्थात् बंधन छुड़वाने वाला बन्दी छोड़ है। इसी का प्रमाण पवित्र यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 32 में है कि कविरंघारिसि (कविर्) कबिर परमेश्वर (अंघ) पाप का (अरि) शत्रु (असि) है अर्थात् पाप विनाशक कबीर है। बम्भारिसि (बम्भारि) बन्धन का शत्रु अर्थात् बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर (असि) है।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 16

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।16।।

यज्ञेन—यज्ञम्—अ—यजन्त—देवाः—तानि—धर्माणि—प्रथमानि— आसन्—ते—ह—नाकम्— महिमानः— सचन्त— यत्र—पूर्वे—साध्याः—सन्ति देवाः।

अनुवाद :— जो (देवाः) निर्विकार देव स्वरूप भक्तात्माएं (अयज्ञम्) अधूरी गलत धार्मिक पूजा के स्थान पर (यज्ञेन) सत्य भक्ति धार्मिक कर्म के आधार पर (अयजन्त) पूजा करते हैं (तानि) वे (धर्माणि) धार्मिक शक्ति सम्पन्न (प्रथमानि) मुख्य अर्थात् उत्तम (आसन्) हैं (ते ह) वे ही वास्तव में (महिमानः) महान भक्ति शक्ति युक्त होकर (साध्याः) सफल भक्त जन (नाकम्) पूर्ण सुखदायक परमेश्वर को (सचन्त) भक्ति निमित कारण अर्थात् सत्भक्ति की कमाई से प्राप्त होते हैं, वे वहाँ चले जाते हैं। (यत्र) जहाँ पर (पूर्वे) पहले वाली सृष्टि के (देवाः) पापरहित देव स्वरूप भक्त आत्माएं (सन्ति) रहती हैं।

भावार्थ :- जो निर्विकार (जिन्होने मांस,शराब, तम्बाकू सेवन करना त्याग

दिया है तथा अन्य बुराईयों से रहित है वे) देव स्वरूप भक्त आत्माएं शास्त्र विधि रहित पूजा को त्याग कर शास्त्रानुकूल साधना करते हैं वे भक्ति की कमाई से धनी होकर काल के ऋण से मुक्त होकर अपनी सत्य भक्ति की कमाई के कारण उस सर्व सुखदाई परमात्मा को प्राप्त करते हैं अर्थात् सत्यलोक में चले जाते हैं जहाँ पर सर्व प्रथम रची सृष्टि के देव स्वरूप अर्थात् पाप रहित हंस आत्माएं रहती हैं।

जैसे कुछ आत्माएं तो काल (ब्रह्म) के जाल में फंस कर यहाँ आ गई, कुछ परब्रह्म के साथ सात संख ब्रह्मण्डों में आ गई, फिर भी असंख्य आत्माएं जिनका विश्वास पूर्ण परमात्मा में अटल रहा, जो पतिव्रता पद से नहीं गिरी वे वहीं रह गई, इसलिए यहाँ वही वर्णन पवित्र वेदों ने भी सत्य बताया है। यही प्रमाण गीता अध्याय 8 के श्लोक संख्या 8 से 10 में वर्णन है कि जो साधक पूर्ण परमात्मा की सतसाधना शास्त्रविधी अनुसार करता है वह भक्ति की कमाई के बल से उस पूर्ण परमात्मा को प्राप्त होता है अर्थात् उसके पास चला जाता है। इससे सिद्ध हुआ कि तीन प्रभु हैं ब्रह्म - परब्रह्म - पूर्णब्रह्म। इन्हीं को 1. ब्रह्म - ईश - क्षर पुरुष 2. परब्रह्म - अक्षर पुरुष/अक्षर ब्रह्म ईश्वर तथा 3. पूर्ण ब्रह्म - परम अक्षर ब्रह्म - परमेश्वर - सतपुरुष आदि पर्यायवाची शब्दों से जाना जाता है।

यही प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 17 से 20 में स्पष्ट है कि पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) शिशु रूप धारण करके प्रकट होता है तथा अपना निर्मल ज्ञान अर्थात् तत्वज्ञान (कविर्गीर्भिः) कबीर वाणी के द्वारा अपने अनुयाइयों को बोल-बोल कर वर्णन करता है। वह कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ब्रह्म (क्षर पुरुष) के धाम तथा परब्रह्म (अक्षर पुरुष) के धाम से भिन्न जो पूर्ण ब्रह्म (परम अक्षर पुरुष) का तीसरा ऋतधाम (सतलोक) है, उसमें आकार में विराजमान है तथा सतलोक से चौथा अनामी लोक है, उसमें भी यही कविर्देव (कबीर परमेश्वर) अनामी पुरुष रूप में मनुष्य सदृश आकार में विराजमान है।

''पवित्र श्रीमद्देवी महापुराण में सृष्टि रचना का प्रमाण''

''ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव के माता-पिता''

(दुर्गा और ब्रह्म के योग से ब्रह्मा, विष्णु और शिव का जन्म)

पवित्र श्रीमद्देवी महापुराण तीसरा स्कन्द अध्याय 1-3(गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, अनुवादकर्ता श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार तथा चिमन लाल गोस्वामी जी, पृष्ठ नं. 114 से)

पृष्ठ नं. 114 से 118 तक विवरण है कि कितने ही आचार्य भवानी को सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण करने वाली बताते हैं। वह प्रकृति कहलाती है तथा ब्रह्म के साथ अभेद सम्बन्ध है जैसे पत्नी को अर्धांगनी भी कहते हैं अर्थात् दुर्गा ब्रह्म (काल) की पत्नी है। एक ब्रह्मण्ड की सृष्टि रचना के विषय में राजा श्री परीक्षित के पूछने पर श्री व्यास जी ने बताया कि मैंने श्री नारद जी से पूछा था कि हे देवर्षे ! इस ब्रह्मण्ड की रचना कैसे हुई? मेरे इस प्रश्न के उत्तर में श्री नारद जी ने कहा कि मैंने अपने पिता श्री ब्रह्मा जी से पूछा था कि हे पिता श्री इस ब्रह्मण्ड की रचना आपने की या श्री विष्णु जी इसके

रचयिता हैं या शिव जी ने रचा है? सच-सच बताने की कृपा करें। तब मेरे पूज्य पिता श्री ब्रह्मा जी ने बताया कि बेटा नारद, मैंने अपने आपको कमल के फूल पर बैठा पाया था, मुझे नहीं मालूम इस अगाध जल में मैं कहाँ से उत्पन्न हो गया। एक हजार वर्ष तक पृथ्वी का अन्वेषण करता रहा, कहीं जल का ओर-छोर नहीं पाया। फिर आकाशवाणी हुई कि तप करो। एक हजार वर्ष तक तप किया। फिर सृष्टि करने की आकाशवाणी हुई। इतने में मधु और कैटभ नाम के दो राक्षस आए, उनके भय से मैं कमल का डण्ठल पकड़ कर नीचे उतरा। वहाँ भगवान विष्णु जी शेष शैय्या पर अचेत पड़े थे। उनमें से एक स्त्री (प्रेतवत प्रविष्ट दुर्गा) निकली। वह आकाश में आभूषण पहने दिखाई देने लगी। तब भगवान विष्णु होश में आए। अब मैं तथा विष्णु जी दो थे। इतने में भगवान शंकर भी आ गए। देवी ने हमें विमान में बैठाया तथा ब्रह्म लोक में ले गई। वहाँ एक ब्रह्मा, एक विष्णु तथा एक शिव और देखा फिर एक देवी देखी,उसे देख कर विष्णु जी ने विवेक पूर्वक निम्न वर्णन किया (ब्रह्म काल ने भगवान विष्णु को चेतना प्रदान कर दी, उसको अपने बाल्यकाल की याद आई तब बचपन की कहानी सुनाई)।

पृष्ठ नं. 119-120 पर भगवान विष्णु जी ने श्री ब्रह्मा जी तथा श्री शिव जी से कहा कि यह हम तीनों की माता है, यही जगत् जननी प्रकृति देवी है। मैंने इस देवी को तब देखा था जब मैं छोटा सा बालक था, यह मुझे पालने में झुला रही थी।

तीसरा स्कंद पृष्ठ नं. 123 पर श्री विष्णु जी ने श्री दुर्गा जी की स्तुति करते हुए कहा - तुम शुद्ध स्वरूपा हो, यह सारा संसार तुम्हीं से उद्भाषित हो रहा है, मैं (विष्णु), ब्रह्मा और शंकर हम सभी तुम्हारी कृपा से ही विद्यमान हैं। हमारा आविर्भाव (जन्म) और तिरोभाव (मृत्यु) हुआ करता है अर्थात् हम तीनों देव नाशवान हैं, केवल तुम ही नित्य (अविनाशी) हो, जगत जननी हो, प्रकृति देवी हो।

भगवान शंकर बोले - देवी यदि महाभाग विष्णु तुम्हीं से प्रकट (उत्पन्न) हुए हैं तो उनके बाद उत्पन्न होने वाले ब्रह्मा भी तुम्हारे ही बालक हुए। फिर मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या तुम्हारी संतान नहीं हुआ अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम्हीं हो।

विचार करें :- उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी नाशवान हैं। मृत्युंजय (अजर-अमर) व सर्वेश्वर नहीं हैं तथा दुर्गा (प्रकृति) के पुत्र हैं तथा ब्रह्म (काल-सदाशिव) इनका पिता है।

तीसरा स्कंद पृष्ठ नं. 125 पर ब्रह्मा जी के पूछने पर कि हे माता! वेदों में जो ब्रह्म कहा है वह आप ही हैं या कोई अन्य प्रभु है ? इसके उत्तर में यहाँ तो दुर्गा कह रही है कि मैं तथा ब्रह्म एक ही हैं। फिर इसी स्कंद अ. 6 के पृष्ठ नं. 129 पर कहा है कि अब मेरा कार्य सिद्ध करने के लिए विमान पर बैठ कर तुम लोग शीघ्र पधारो (जाओ)। कोई कठिन कार्य उपस्थित होने पर जब तुम मुझे याद करोगे, तब मैं सामने आ जाऊँगी। देवताओं मेरा (दुर्गा का) तथा ब्रह्म का ध्यान तुम्हें सदा करते रहना चाहिए। हम दोनों का स्मरण करते रहोगे तो तुम्हारे कार्य सिद्ध होने में तनिक भी

संदेह नहीं है।

उपरोक्त व्याख्या से स्वसिद्ध है कि दुर्गा (प्रकृति) तथा ब्रह्म (काल) ही तीनों देवताओं के माता-पिता हैं तथा ब्रह्मा, विष्णु व शिव जी नाशवान हैं व पूर्ण शक्ति युक्त नहीं हैं।

तीनों देवताओं (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी) की शादी दुर्गा (प्रकृति देवी) ने की। पृष्ठ नं. 128-129 पर, तीसरे स्कंद में।

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 12

ये, च, एव, सात्विकाः, भावाः, राजसाः, तामसाः, च, ये,
मतः, एव, इति, तान्, विद्धि, न, तु, अहम्, तेषु, ते, मयि।।

अनुवाद : (च) और (एव) भी (ये) जो (सात्विकाः) सत्वगुण विष्णु जी से स्थिति (भावाः) भाव हैं और (ये) जो (राजसाः) रजोगुण ब्रह्मा जी से उत्पत्ति (च) तथा (तामसाः) तमोगुण शिव से संहार हैं (तान्) उन सबको तू (मतः,एव) मेरे द्वारा सुनियोजित नियमानुसार ही होने वाले हैं (इति) ऐसा (विद्धि) जान (तु) परन्तु वास्तवमें (तेषु) उनमें (अहम्) मैं और (ते) वे (मयि) मुझमें (न) नहीं हैं।

''पवित्र शिव महापुराण में सृष्टि रचना का प्रमाण''

(काल ब्रह्म व दुर्गा से विष्णु, ब्रह्मा व शिव की उत्पत्ति)

इसी का प्रमाण पवित्र श्री शिव पुराण गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, अनुवादकर्ता श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, इसके अध्याय 6 रूद्र संहिता, पृष्ठ नं. 100 पर कहा है कि जो मूर्ति रहित परब्रह्म है, उसी की मूर्ति भगवान सदाशिव है। इनके शरीर से एक शक्ति निकली, वह शक्ति अम्बिका, प्रकृति (दुर्गा), त्रिदेव जननी (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी को उत्पन्न करने वाली माता) कहलाई। जिसकी आठ भुजाऐं हैं। वे जो सदाशिव हैं, उन्हें शिव, शंभू और महेश्वर भी कहते हैं। (पृष्ठ नं. 101 पर) वे अपने सारे अंगों में भस्म रमाये रहते हैं। उन काल रूपी ब्रह्म ने एक शिवलोक नामक क्षेत्र का निर्माण किया। फिर दोनों ने पति-पत्नी का व्यवहार किया जिससे एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम विष्णु रखा (पृष्ठ नं. 102)।

फिर रूद्र संहिता अध्याय नं. 7 पृष्ठ नं. 103 पर ब्रह्मा जी ने कहा कि मेरी उत्पत्ति भी भगवान सदाशिव (ब्रह्म-काल) तथा प्रकृति (दुर्गा) के संयोग से अर्थात् पति-पत्नी के व्यवहार से ही हुई। फिर मुझे बेहोश कर दिया।

फिर रूद्र संहिता अध्याय नं. 9 पृष्ठ नं. 110 पर कहा है कि इस प्रकार ब्रह्मा, विष्णु तथा रूद्र इन तीनों देवताओं में गुण हैं, परन्तु शिव (काल-ब्रह्म) गुणातीत माने गए हैं।

यहाँ पर चार सिद्ध हुए अर्थात् सदाशिव (काल-ब्रह्म) व प्रकृति (दुर्गा) से ही ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव उत्पन्न हुए हैं। तीनों भगवानों (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) की माता जी श्री दुर्गा जी तथा पिता जी श्री ज्योति निरंजन (ब्रह्म) है। यही तीनों प्रभु रजगुण-ब्रह्मा जी, सतगुण-विष्णु जी, तमगुण-शिव जी हैं।

''पवित्र श्रीमद्भगवत गीता जी में सृष्टि रचना का प्रमाण''

इसी का प्रमाण पवित्र गीता जी अध्याय 14 श्लोक 3 से 5 तक है। ब्रह्म (काल) कह रहा है कि प्रकृति (दुर्गा) तो मेरी पत्नी है, मैं ब्रह्म (काल) इसका पति हूँ। हम दोनों के संयोग से सर्व प्राणियों सहित तीनों गुणों (रजगुण - ब्रह्मा जी, सतगुण - विष्णु जी, तमगुण - शिवजी) की उत्पत्ति हुई है। मैं (ब्रह्म) सर्व प्राणियों का पिता हूँ तथा प्रकृति (दुर्गा) इनकी माता है। मैं इसके उदर में बीज स्थापना करता हूँ जिससे सर्व प्राणियों की उत्पत्ति होती है। प्रकृति (दुर्गा) से उत्पन्न तीनों गुण (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) जीव को कर्म आधार से शरीर में बांधते हैं।

यही प्रमाण अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16, 17 में भी है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 1

ऊर्ध्वमूलम्, अधःशाखम्, अश्वत्थम्, प्राहुः, अव्ययम्,
छन्दांसि, यस्य, पर्णानि, यः, तम्, वेद, सः, वेदवित् ।।

अनुवाद : (ऊर्ध्वमूलम्) ऊपर को पूर्ण परमात्मा आदि पुरुष परमेश्वर रूपी जड़ वाला (अधःशाखम्) नीचे को तीनों गुण अर्थात् रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु व तमगुण शिव रूपी शाखा वाला (अव्ययम्) अविनाशी (अश्वत्थम्) विस्तारित पीपल का वृक्ष है, (यस्य) जिसके (छन्दांसि) जैसे वेद में छन्द है ऐसे संसार रूपी वृक्ष के भी विभाग छोटे–छोटे हिस्से टहनियाँ व (पर्णानि) पत्ते (प्राहुः) कहे हैं (तम्) उस संसाररूप वृक्षको (यः) जो (वेद) इसे विस्तार से जानता है (सः) वह (वेदवित्) पूर्ण ज्ञानी अर्थात् तत्वदर्शी है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 2

अधः, च, ऊर्ध्वम्, प्रसृताः, तस्य, शाखाः, गुणप्रवृद्धाः,
विषयप्रवालाः, अधः, च, मूलानि, अनुसन्ततानि, कर्मानुबन्धीनि, मनुष्यलोके ।।

अनुवाद : (तस्य) उस वृक्षकी (अधः) नीचे (च) और (ऊर्ध्वम्) ऊपर (गुणप्रवृद्धाः) तीनों गुणों ब्रह्मा–रजगुण, विष्णु–सतगुण, शिव–तमगुण रूपी (प्रसृता) फैली हुई (विषयप्रवालाः) विकार– काम क्रोध, मोह, लोभ अहंकार रूपी कोपल (शाखाः) डाली ब्रह्मा, विष्णु, शिव (कर्मानुबन्धीनि) जीवको कर्मों में बाँधने की (मूलानि) जड़ें अर्थात् मुख्य कारण हैं (च) तथा (मनुष्यलोके) मनुष्यलोक – अर्थात् पृथ्वी लोक में (अधः) नीचे – नरक, चौरासी लाख जूनियों में (ऊर्ध्वम्) ऊपर स्वर्ग लोक आदि में (अनुसन्ततानि) व्यवस्थित किए हुए हैं।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 3

न, रूपम्, अस्य, इह, तथा, उपलभ्यते, न, अन्तः, न, च, आदिः, न, च,
सम्प्रतिष्ठा, अश्वत्थम्, एनम्, सुविरूढमूलम्, असंगशस्त्रेण, दृढेन, छित्वा ।।

अनुवाद : (अस्य) इस रचना का (न) नहीं (आदिः) शुरूवात (च) तथा (न) नहीं (अन्तः) अन्त है (न) नहीं (तथा) वैसा (रूपम्) स्वरूप (उपलभ्यते) पाया जाता है (च) तथा (इह) यहाँ विचार काल में अर्थात् मेरे द्वारा दिया जा रहा गीता ज्ञान में पूर्ण जानकारी मुझे भी (न) नहीं है (सम्प्रतिष्ठा) क्योंकि सर्वब्रह्मण्डों की रचना की अच्छी तरह स्थिति का मुझे भी ज्ञान नहीं है (एनम्) इस (सुविरूढमूलम्) अच्छी तरह स्थाई स्थिति वाला (अश्वत्थम्) मजबूत स्वरूपवाले संसार रूपी वृक्ष के ज्ञान को (असंड्गशस्त्रेण) पूर्ण ज्ञान रूपी (दृढेन्) दृढ़ सूक्ष्म

वेद अर्थात् तत्वज्ञान के द्वारा जानकर (छित्वा) काटकर अर्थात् निरंजन की भक्ति को क्षणिक अर्थात् क्षण भंगुर जानकर ब्रह्मा, विष्णु, शिव, ब्रह्म तथा परब्रह्म से भी आगे पूर्णब्रह्म की तलाश करनी चाहिए।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 4

ततः, पदम्, तत्, परिमार्गितव्यम्, यस्मिन्, गताः, न, निवर्तन्ति, भूयः,
तम्, एव्, च, आद्यम्, पुरुषम्, प्रपद्ये, यतः, प्रवृतिः, प्रसृता, पुराणी।।

अनुवाद : जब तत्वदर्शी संत मिल जाए (ततः) इसके पश्चात् (तत्) उस परमात्मा के (पदम्) पद स्थान अर्थात् सतलोक को (परिमार्गितव्यम्) भली भाँति खोजना चाहिए (यस्मिन्) जिसमें (गताः) गए हुए साधक (भूयः) फिर (न, निवर्तन्ति) लौटकर संसार में नहीं आते (च) और (यतः) जिस परमात्मा–परम अक्षर ब्रह्म से (पुराणी) आदि (प्रवृतिः) रचना–सृष्टि (प्रसृता) उत्पन्न हुई है (तम्) अज्ञात (आद्यम्) आदि यम अर्थात् मैं काल निरंजन (पुरुषम्) पूर्ण परमात्मा की (एव) ही (प्रपद्ये) मैं शरण में हूँ तथा उसी की पूजा करता हूँ।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 16

द्वौ, इमौ, पुरुषौ, लोके, क्षरः, च, अक्षरः, एव, च,
क्षरः, सर्वाणि, भूतानि, कूटस्थः, अक्षरः, उच्यते।।

अनुवाद : (लोके) इस संसारमें (द्वौ) दो प्रकारके (क्षरः) नाशवान् (च) और (अक्षरः) अविनाशी (पुरुषौ) भगवान हैं (एव) इसी प्रकार (इमौ) इन दोनों प्रभुओं के लोकों में (सर्वाणि) सम्पूर्ण (भूतानि) प्राणियों के शरीर तो (क्षरः) नाशवान् (च) और (कूटस्थः) जीवात्मा (अक्षरः) अविनाशी (उच्यते) कहा जाता है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 17

उत्तमः, पुरुषः, तु, अन्यः, परमात्मा, इति, उदाहृतः,
यः, लोकत्रयम् आविश्य, बिभर्ति, अव्ययः, ईश्वरः।।

अनुवाद : (उत्तमः) उत्तम (पुरुषः) प्रभु (तु) तो (अन्यः) उपरोक्त दोनों प्रभुओं ''क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष'' से भी अन्य ही है (इति) यह वास्तव में (परमात्मा) परमात्मा (उदाहृतः) कहा गया है (यः) जो (लोकत्रयम्) तीनों लोकों में (आविश्य) प्रवेश करके (बिभर्ति) सबका धारण पोषण करता है एवं (अव्ययः) अविनाशी (ईश्वरः) ईश्वर (प्रभुओं में श्रेष्ठ अर्थात् समर्थ प्रभु) है।

भावार्थ - गीता ज्ञान दाता प्रभु ने केवल इतना ही बताया है कि यह संसार उल्टे लटके वृक्ष तुल्य जानो। ऊपर जड़ें (मूल) तो पूर्ण परमात्मा है। नीचे टहनीयां आदि अन्य हिस्से जानों। इस संसार रूपी वृक्ष के प्रत्येक भाग का भिन्न-भिन्न विवरण जो संत जानता है वह तत्वदर्शी संत है जिसके विषय में गीता अध्याय 4 श्लोक नं. 34 में कहा है। गीता अध्याय 15 श्लोक नं. 2-3 में केवल इतना ही बताया है कि तीन गुण रूपी शाखा हैं। यहां विचारकाल में अर्थात् गीता में आपको मैं (गीता ज्ञान दाता) पूर्ण जानकारी नहीं दे सकता क्योंकि मुझे इस संसार की रचना के आदि व अंत का ज्ञान नहीं है। उस के लिए गीता अध्याय 4 श्लोक नं. 34 में कहा है कि किसी तत्व दर्शी संत से उस पूर्ण परमात्मा का ज्ञान जानों इस गीता अध्याय 15 श्लोक 1 में उस तत्वदर्शी संत की पहचान बताई है कि वह संसार रूपी वृक्ष के प्रत्येक भाग का ज्ञान कराएगा।

उसी से पूछो। गीता अध्याय 15 के श्लोक 4 में कहा है कि उस तत्वदर्शी संत के मिल जाने के पश्चात् उस परमपद परमेश्वर की खोज करनी चाहिए अर्थात् उस तत्वदर्शी संत के बताए अनुसार साधना करनी चाहिए जिससे पूर्ण मोक्ष (अनादि मोक्ष) प्राप्त होता है। गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में स्पष्ट किया है कि तीन प्रभु हैं एक क्षर पुरूष (ब्रह्म) दूसरा अक्षर पुरूष (परब्रह्म) तीसरा परम अक्षर पुरूष (पूर्ण ब्रह्म)। क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष वास्तव में अविनाशी नहीं हैं। वह अविनाशी परमात्मा तो इन दोनों से अन्य ही है। वही तीनों लोकों में प्रवेश करके सर्व का धारण पोषण करता है।

उपरोक्त श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16-17 में यह प्रमाणित हुआ कि उल्टे लटके हुए संसार रूपी वृक्ष की मूल अर्थात् जड़ तो परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म है जिससे पूर्ण वृक्ष का पालन होता है तथा वृक्ष का जो हिस्सा पृथ्वी के तुरन्त बाहर जमीन के साथ दिखाई देता है वह तना होता है उसे अक्षर पुरुष अर्थात् परब्रह्म जानों। उस तने से ऊपर चल कर अन्य मोटी डार निकलती है उनमें से एक डार को ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरुष जानों तथा उसी डार से अन्य तीन शाखाएं निकलती हैं उन्हें ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जानों तथा शाखाओं से आगे पत्ते रूप में सांसारिक प्राणी जानों। उपरोक्त गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में स्पष्ट है कि क्षर पुरुष (ब्रह्म) तथा अक्षर पुरुष (परब्रह्म) तथा इन दोनों के लोकों में जितने प्राणी हैं उनके स्थूल शरीर तो नाशवान हैं तथा जीवात्मा अविनाशी है अर्थात् उपरोक्त दोनों प्रभु व इनके अन्तर्गत सर्व प्राणी नाशवान हैं। भले ही अक्षर पुरुष (परब्रह्म) को अविनाशी कहा है परन्तु वास्तव में अविनाशी परमात्मा तो इन दोनों से अन्य है। वह तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका पालन-पोषण करता है। उपरोक्त विवरण में तीन प्रभुओं का भिन्न-भिन्न विवरण दिया है।

“पवित्र बाईबल तथा पवित्र कुरान शरीफ में सृष्टि रचना का प्रमाण”

इसी का प्रमाण पवित्र बाईबल में तथा पवित्र कुरान शरीफ में भी है।

कुरान शरीफ में पवित्र बाईबल का भी ज्ञान है, इसलिए इन दोनों पवित्र सद्ग्रन्थों ने मिल-जुल कर प्रमाणित किया है कि कौन तथा कैसा है सृष्टि रचनहार तथा उसका वास्तविक नाम क्या है।

पवित्र बाईबल (उत्पत्ति ग्रन्थ पृष्ठ नं. 2 पर, अ. 1:20 - 2:5 पर)

छटवां दिन :– प्राणी और मनुष्य :

अन्य प्राणियों की रचना करके 26. फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं, जो सर्व प्राणियों को काबू रखेगा। 27. तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके मनुष्यों की सृष्टि की।

29. प्रभु ने मनुष्यों के खाने के लिए जितने बीज वाले छोटे पेड़ तथा जितने पेड़ों में बीज वाले फल होते हैं वे भोजन के लिए प्रदान किए हैं, (माँस खाना नहीं कहा है।)

सातवां दिन :– विश्राम का दिन :

परमेश्वर ने छः दिन में सर्व सृष्टि की उत्पत्ति की तथा सातवें दिन विश्राम किया।

पवित्र बाईबल ने सिद्ध कर दिया कि परमात्मा मानव सदृश शरीर में है, जिसने छः दिन में सर्व सृष्टि की रचना की तथा फिर विश्राम किया।

पवित्र कुरान शरीफ (सुरत फुर्कानि 25, आयत नं. 52, 58, 59)

आयत 52 :– फला तुतिअल् – काफिरन् व जहिद्हुम बिही जिहादन् कबीरा (कबीरन्)।।52।

इसका भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद जी का खुदा (प्रभु) कह रहा है कि हे पैगम्बर ! आप काफिरों (जो एक प्रभु की भक्ति त्याग कर अन्य देवी–देवताओं तथा मूर्ति आदि की पूजा करते हैं) का कहा मत मानना, क्योंकि वे लोग कबीर को पूर्ण परमात्मा नहीं मानते। आप मेरे द्वारा दिए इस कुरान के ज्ञान के आधार पर अटल रहना कि कबीर ही पूर्ण प्रभु है तथा कबीर अल्लाह के लिए संघर्ष करना (लड़ना नहीं) अर्थात् अडिग रहना।

आयत 58 :– व तवक्कल् अलल् – हरूिल्लजी ला यमूतु व सब्बिह् बिहम्दिही व कफा बिही बिजुनूबि अिबादिही खबीरा (कबीरा)।।58।

भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद जी जिसे अपना प्रभु मानते हैं वह अल्लाह (प्रभु) किसी और पूर्ण प्रभु की तरफ संकेत कर रहा है कि ऐ पैगम्बर उस कबीर परमात्मा पर विश्वास रख जो तुझे जिंदा महात्मा के रूप में आकर मिला था। वह कभी मरने वाला नहीं है अर्थात् वास्तव में अविनाशी है। तारीफ के साथ उसकी पाकी (पवित्र महिमा) का गुणगान किए जा, वह कबीर अल्लाह (कविर्देव) पूजा के योग्य है तथा अपने उपासकों के सर्व पापों को विनाश करने वाला है।

आयत 59 :– अल्ल्जी खलकस्समावाति वल्अर्ज व मा बैनहुमा फी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अलल्अर्शि अर्रह्मानु फस्अल् बिही खबीरन्(कबीरन्)।।59।।

भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद को कुरान शरीफ बोलने वाला प्रभु (अल्लाह) कह रहा है कि वह कबीर प्रभु वही है जिसने जमीन तथा आसमान के बीच में जो भी विद्यमान है सर्व सृष्टि की रचना छः दिन में की तथा सातवें दिन ऊपर अपने सत्यलोक में सिंहासन पर विराजमान हो (बैठ) गया। उसके विषय में जानकारी किसी (बाखबर) तत्वदर्शी संत से पूछो

उस पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति कैसे होगी तथा वास्तविक ज्ञान तो किसी तत्वदर्शी संत (बाखबर) से पूछो, मैं नहीं जानता।

उपरोक्त दोनों पवित्र धर्मों (ईसाई तथा मुसलमान) के पवित्र शास्त्रों ने भी मिल-जुल कर प्रमाणित कर दिया कि सर्व सृष्टि रचनहार, सर्व पाप विनाशक, सर्व शक्तिमान, अविनाशी परमात्मा मानव सदृश शरीर में आकार में है तथा सत्यलोक में रहता है। उसका नाम कबीर है, उसी को अल्लाहु अकबिरू भी कहते हैं।

आदरणीय धर्मदास जी ने पूज्य कबीर प्रभु से पूछा कि हे सर्वशक्तिमान ! आज तक यह तत्वज्ञान किसी ने नहीं बताया, वेदों के मर्मज्ञ ज्ञानियों ने भी नहीं बताया। इससे सिद्ध है कि चारों पवित्र वेद तथा चारों पवित्र कतेब (कुरान शरीफ आदि) झूठे हैं। पूर्ण परमात्मा ने कहा :-

कबीर, बेद कतेब झूठे नहीं भाई, झूठे हैं जो समझे नाहिं।

भावार्थ है कि चारों पवित्र वेद (ऋग्वेद - अथर्ववेद - यजुर्वेद - सामवेद) तथा पवित्र चारों कतेब (कुरान शरीफ - जबूर - तौरात - इंजिल) गलत नहीं हैं। परन्तु जो इनको नहीं समझ पाए वे नादान हैं।

"पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर् देव) जी की अमृतवाणी में सृष्टि रचना"

विशेष :- निम्न अमृतवाणी सन् 1403 से {जब पूज्य कविर्देव (कबीर परमेश्वर) लीलामय शरीर में पाँच वर्ष के हुए} सन् 1518 {जब कविर्देव (कबीर परमेश्वर) मगहर स्थान से सशरीर सतलोक गए} के बीच में लगभग 600 वर्ष पूर्व परम पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर्देव) जी द्वारा अपने निजी सेवक (दास भक्त) आदरणीय धर्मदास साहेब जी को सुनाई थी तथा धनी धर्मदास साहेब जी ने लिपिबद्ध की थी। परन्तु उस समय के पवित्र हिन्दुओं तथा पवित्र मुसलमानों के नादान गुरुओं (नीम-हकीमों) ने कहा कि यह धाणक (जुलाहा) कबीर झूठा है। किसी भी सद् ग्रन्थ में श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी के माता-पिता का नाम नहीं है। ये तीनों प्रभु अविनाशी हैं इनका जन्म मृत्यु नहीं होता। न ही पवित्र वेदों व पवित्र कुरान शरीफ आदि में कबीर परमेश्वर का प्रमाण है तथा परमात्मा को निराकार लिखा है। हम प्रतिदिन पढ़ते हैं। भोली आत्माओं ने उन विचक्षणों (चतुर गुरुओं) पर विश्वास कर लिया कि सचमुच यह कबीर धाणक तो अशिक्षित है तथा गुरु जी शिक्षित हैं, सत्य कह रहे होंगे। आज वही सच्चाई प्रकाश में आ रही है तथा अपने सर्व पवित्र धर्मों के पवित्र सद्ग्रन्थ साक्षी हैं। इससे सिद्ध है कि पूर्ण परमेश्वर, सर्व सृष्टि रचनहार, कुल करतार तथा सर्वज्ञ कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ही है जो काशी (बनारस) में कमल के फूल पर प्रकट हुए तथा 120 वर्ष तक वास्तविक तेजोमय शरीर के ऊपर मानव सदृश शरीर हल्के तेज का बना कर रहे तथा अपने द्वारा रची सृष्टि का ठीक-ठीक (वास्तविक तत्व) ज्ञान देकर सशरीर सतलोक चले गए। कृपा प्रेमी पाठक पढ़ें निम्न अमृतवाणी परमेश्वर कबीर साहेब जी द्वारा उच्चारित :-

धर्मदास यह जग बौराना। कोइ न जाने पद निरवाना।।
यहि कारन मैं कथा पसारा। जगसे कहियो राम नियारा।।
यही ज्ञान जग जीव सुनाओ। सब जीवोंका भरम नशाओ।।
अब मैं तुमसे कहों चिताई। त्रयदेवनकी उत्पति भाई।।
कुछ संक्षेप कहों गुहराई। सब संशय तुम्हरे मिट जाई।।
भरम गये जग वेद पुराना। आदि रामका का भेद न जाना।।
राम राम सब जगत बखाने। आदि राम कोइ बिरला जाने।।
ज्ञानी सुने सो हिरदै लगाई। मूर्ख सुने सो गम्य ना पाई।।
माँ अष्टंगी पिता निरंजन। वे जम दारुण वंशन अंजन।।
पहिले कीन्ह निरंजन राई। पीछेसे माया उपजाई।।
माया रूप देख अति शोभा। देव निरंजन तन मन लोभा।।

कामदेव धर्मराय सत्ताये। देवी को तुरतही धर खाये।।
पेट से देवी करी पुकारा। साहब मेरा करो उबारा।।
टेर सुनी तब हम तहाँ आये। अष्टंगी को बंद छुड़ाये।।
सतलोक में कीन्हा दुराचारि, काल निरंजन दिन्हा निकारि।।
माया समेत दिया भगाई, सोलह संख कोस दूरी पर आई।।
अष्टंगी और काल अब दोई, मंद कर्म से गए बिगोई।।
धर्मराय को हिकमत कीन्हा। नख रेखा से भगकर लीन्हा।।
धर्मराय किन्हाँ भोग विलासा। मायाको रही तब आसा।।
तीन पुत्र अष्टंगी जाये। ब्रह्मा विष्णु शिव नाम धराये।।
तीन देव विस्तार चलाये। इनमें यह जग धोखा खाये।।
पुरुष गम्य कैसे को पावै। काल निरंजन जग भरमावै।।
तीन लोक अपने सुत दीन्हा। सुन्न निरंजन बासा लीन्हा।।
अलख निरंजन सुन्न ठिकाना। ब्रह्मा विष्णु शिव भेद न जाना।।
तीन देव सो उनको धावें। निरंजन का वे पार ना पावें।।
अलख निरंजन बड़ा बटपारा। तीन लोक जिव कीन्ह अहारा।।
ब्रह्मा विष्णु शिव नहीं बचाये। सकल खाय पुन धूर उड़ाये।।
तिनके सुत हैं तीनों देवा। आंधर जीव करत हैं सेवा।।
अकाल पुरुष काहू नहिं चीन्हां। काल पाय सबही गह लीन्हां।।
ब्रह्म काल सकल जग जाने। आदि ब्रह्मको ना पहिचाने।।
तीनों देव और औतारा। ताको भजे सकल संसारा।।
तीनों गुणका यह विस्तारा। धर्मदास मैं कहों पुकारा।।
गुण तीनों की भक्ति में, भूल परो संसार।
कहै कबीर निज नाम बिन, कैसे उतरैं पार।।

उपरोक्त अमृतवाणी में परमेश्वर कबीर साहेब जी अपने निजी सेवक श्री धर्मदास साहेब जी को कह रहे हैं कि धर्मदास यह सर्व संसार तत्वज्ञान के अभाव से विचलित है। किसी को पूर्ण मोक्ष मार्ग तथा पूर्ण सृष्टि रचना का ज्ञान नहीं है। इसलिए मैं आपको मेरे द्वारा रची सृष्टि की कथा सुनाता हूँ। बुद्धिमान व्यक्ति तो तुरंत समझ जायेंगे। परन्तु जो सर्व प्रमाणों को देखकर भी नहीं मानेंगे तो वे नादान प्राणी काल प्रभाव से प्रभावित हैं, वे भक्ति योग्य नहीं। अब मैं बताता हूँ तीनों भगवानों (ब्रह्मा जी, विष्णु जी तथा शिव जी) की उत्पत्ति कैसे हुई? इनकी माता जी तो अष्टंगी (दुर्गा) है तथा पिता ज्योति निरंजन (ब्रह्म, काल) है। पहले ब्रह्म की उत्पत्ति अण्डे से हुई। फिर दुर्गा की उत्पत्ति हुई। दुर्गा के रूप पर आसक्त होकर काल (ब्रह्म) ने गलती (छेड़-छाड़) की, तब दुर्गा (प्रकृति) ने इसके पेट में शरण ली। मैं वहाँ गया जहाँ ज्योति निरंजन काल था। तब भवानी को ब्रह्म के उदर से निकाल कर इक्कीस ब्रह्मण्ड समेत 16 संख कोस की दूरी पर भेज दिया। ज्योति निरंजन (धर्मराय) ने प्रकृति देवी (दुर्गा) के साथ भोग-विलास किया। इन दोनों के संयोग

से तीनों गुणों (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) की उत्पत्ति हुई। इन्हीं तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी) की ही साधना करके सर्व प्राणी काल जाल में फंसे हैं। जब तक वास्तविक मंत्र नहीं मिलेगा, पूर्ण मोक्ष कैसे होगा?

विशेष:- प्रिय पाठक विचार करें कि श्री ब्रह्मा जी श्री विष्णु जी तथ श्री शिव जी की स्थिति अविनाशी बताई गई थी। सर्व हिन्दु समाज अभी तक तीनों परमात्माओं को अजर, अमर व जन्म-मृत्यु रहित मानते रहे जबकि ये तीनों नाश्वान हैं। इन के पिता काल रूपी ब्रह्म तथा माता दुर्गा (प्रकृति/अष्टांगी) हैं जैसा आप ने पूर्व प्रमाणों में पढ़ा यह ज्ञान अपने शास्त्रों में भी विद्यमान है परन्तु हिन्दु समाज के कलयुगी गुरूओं, ऋषियों, सन्तों को ज्ञान नहीं। जो अध्यापक पाठ्यक्रम (सलेबस) से ही अपरिचित है वह अध्यापक ठीक नहीं (विद्वान नही) है, विद्यार्थियों के भविष्य का शत्रु है। इसी प्रकार जिन गुरूओं को अभी तक यह नहीं पता कि श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी के माता-पिता कौन हैं? तो वे गुरू, ऋषि,सन्त ज्ञान हीन हैं। जिस कारण से सर्व भक्त समाज को शास्त्र विरूद्ध ज्ञान (लोक वेद अर्थात् दन्त कथा) सुना कर अज्ञान से परिपूर्ण कर दिया। शास्त्रविधि विरूद्ध भक्तिसाधना करा के परमात्मा के वास्तविक लाभ (पूर्ण मोक्ष) से वंचित रखा सबका मानव जन्म नष्ट करा दिया क्योंकि श्री मद्भगवत गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में यही प्रमाण है कि जो शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण पूजा करता है। उसे कोई लाभ नहीं होता पूर्ण परमात्मा कबीर जी ने सन् 1403 से ही सर्व शास्त्रों युक्त ज्ञान अपनी अमृतवाणी (कविरवाणी) में बताना प्रारम्भ किया था। परन्तु उन अज्ञानी गुरूओं ने यह ज्ञान भक्त समाज तक नहीं जाने दिया। जो वर्तमान में स्पष्ट हो रहा है इससे सिद्ध है कि कर्विदेव (कबीर प्रभु) तत्वदर्शी सन्त रूप में स्वयं पूर्ण परमात्मा ही आए थे।

“आदरणीय गरीबदास साहेब जी की अमृतवाणी में सृष्टि रचना का प्रमाण”

आदि रमैणी (सद् ग्रन्थ पृष्ठ नं. 690 से 692 तक)

आदि रमैंणी अदली सारा। जा दिन होते धुंधुंकारा।।1।।
सतपुरुष कीन्हा प्रकाशा। हम होते तखत कबीर खवासा ।।2।।
मन मोहिनी सिरजी माया। सतपुरुष एक ख्याल बनाया।।3।।
धर्मराय सिरजे दरबानी। चौसठ जुगतप सेवा ठांनी।।4।।
पुरुष पृथिवी जाकूं दीन्ही। राज करो देवा आधीनी।।5।।
ब्रह्मण्ड इकीस राज तुम्ह दीन्हा। मन की इच्छा सब जुग लीन्हा।।6।।
माया मूल रूप एक छाजा। मोहि लिये जिनहूँ धर्मराजा।।7।।
धर्म का मन चंचल चित धार्या। मन माया का रूप बिचारा।।8।।
चंचल चेरी चपल चिरागा। या के परसे सरबस जागा।।9।।
धर्मराय कीया मन का भागी। विषय वासना संग से जागी।।10।।

आदि पुरुष अदली अनरागी। धर्मराय दिया दिल सें त्यागी।।11।।
पुरुष लोक सें दीया ढहाही। अगम दीप चलि आये भाई।।12।।
सहज दास जिस दीप रहंता। कारण कौंन कौंन कुल पंथा।।13।।
धर्मराय बोले दरबानी। सुनो सहज दास ब्रह्मज्ञानी।।14।।
चौसठ जुग हम सेवा कीन्ही। पुरुष पृथिवी हम कूं दीन्ही।।15।।
चंचल रूप भया मन बौरा। मनमोहिनी ठगिया भौंरा।।16।।
सतपुरुष के ना मन भाये। पुरुष लोक से हम चलि आये।।17।।
अगर दीप सुनत बड़भागी। सहज दास मेटो मन पागी।।18।।
बोले सहजदास दिल दानी। हम तो चाकर सत सहदानी।।19।।
सतपुरुष सें अरज गुजारूं। जब तुम्हारा बिवाण उतारूं।।20।।
सहज दास को कीया पीयाना। सत्यलोक लीया प्रवाना।।21।।
सतपुरुष साहिब सरबंगी। अविगत अदली अचल अभंगी।।22।।
धर्मराय तुम्हरा दरबानी। अगर दीप चलि गये प्रानी।।23।।
कौंन हुकम करी अरज अवाजा। कहां पठावौ उस धर्मराजा।।24।।
भई अवाज अदली एक साचा। विषय लोक जा तीन्यूं बाचा।।25।।
सहज विमाँन चले अधिकाई। छिन में अगर दीप चलि आई।।26।।
हमतो अरज करी अनरागी। तुम्ह विषय लोक जावो बड़भागी।।27।।
धर्मराय के चले विमाना। मानसरोवर आये प्राना।।28।
मानसरोवर रहन न पाये। दरै कबीरा थांना लाये।।29।।
बंकनाल की विषमी बाटी। तहां कबीरा रोकी घाटी।।30।।
इन पाँचों मिलि जगत बंधाना। लख चौरासी जीव संताना।।31।।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर माया। धर्मराय का राज पठाया।।32।।
यौह खोखा पुर झूठी बाजी। भिसति बैकुण्ठ दगासी साजी।।33।।
कृतिम जीव भुलांनें भाई। निज घर की तो खबरि न पाई।।34।।
सवा लाख उपजें नित हंसा। एक लाख विनशें नित अंसा।।35।।
उपति खपति प्रलय फेरी। हर्ष शोक जौंरा जम जेरी।।36।।
पाँचों तत्त्व हैं प्रलय माँही। सत्त्वगुण रजगुण तमगुण झांई।।37।।
आठों अंग मिली है माया। पिण्ड ब्रह्मण्ड सकल भरमाया।।38।।
या में सुरति शब्द की डोरी। पिण्ड ब्रह्मण्ड लगी है खोरी।।39।।
श्वासा पारस मन गह राखो। खोल्हि कपाट अमीरस चाखो।।40।।
सुनाऊं हंस शब्द सुन दासा। अगम दीप है अग है बासा।।41।।
भवसागर जम दण्ड जमाना। धर्मराय का है तलबांना।।42।।
पाँचों ऊपर पद की नगरी। बाट बिहंगम बंकी डगरी।।43।।
हमरा धर्मराय सों दावा। भवसागर में जीव भरमावा।।44।।
हम तो कहैं अगम की बानी। जहाँ अविगत अदली आप बिनानी।।45।।
बंदी छोड़ हमारा नामं। अजर अमर है अस्थीर ठामं।।46।।

जुगन जुगन हम कहते आये। जम जौरा सें हंस छुटाये।।47।।
जो कोई मानें शब्द हमारा। भवसागर नहीं भरमें धारा।।48।।
या में सुरति शब्द का लेखा। तन अंदर मन कहो कीन्ही देखा।।49।।
दास गरीब अगम की बानी। खोजा हंसा शब्द सहदानी।।50।।

उपरोक्त अमृतवाणी का भावार्थ है कि आदरणीय गरीबदास साहेब जी कह रहे हैं कि यहाँ पहले केवल अंधकार था तथा पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब जी सत्यलोक में तख्त (सिंहासन) पर विराजमान थे। हम वहाँ चाकर थे। परमात्मा ने ज्योति निरंजन को उत्पन्न किया। फिर उसके तप के प्रतिफल में इक्कीस ब्रह्मण्ड प्रदान किए। फिर माया (प्रकृति) की उत्पत्ति की। युवा दुर्गा के रूप पर मोहित होकर ज्योति निरंजन (ब्रह्म) ने दुर्गा (प्रकृति) से बलात्कार करने की चेष्टा की। ब्रह्म को उसकी सजा मिली। उसे सत्यलोक से निकाल दिया तथा शाप लगा कि एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों का प्रतिदिन आहार करेगा, सवा लाख उत्पन्न करेगा। यहाँ सर्व प्राणी जन्म-मृत्यु का कष्ट उठा रहे हैं। यदि कोई पूर्ण परमात्मा का वास्तविक शब्द (सच्चानाम जाप मंत्र) हमारे से प्राप्त करेगा, उसको काल की बंद से छुड़वा देंगे। हमारा बन्दी छोड़ नाम है। आदरणीय गरीबदास जी अपने गुरु व प्रभु कबीर परमात्मा के आधार पर कह रहे हैं कि सच्चे मंत्र अर्थात् सत्यनाम व सारशब्द की प्राप्ति कर लो, पूर्ण मोक्ष हो जायेगा। नहीं तो नकली नाम दाता संतों व महन्तों की मीठी-मीठी बातों में फंस कर शास्त्र विधि रहित साधना करके काल जाल में रह जाओगे। फिर कष्ट पर कष्ट उठाओगे।

।।गरीबदास जी महाराज की वाणी।।

(सत ग्रन्थ साहिब पृष्ठ नं. 690 से सहाभार)

माया आदि निरंजन भाई, अपने जाऐ आपै खाई।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर चेला, ऊँ सोहं का है खेला।।
सिखर सुन्न में धर्म अन्यायी, जिन शक्ति डायन महल पठाई।।
लाख ग्रास नित उठ दूती, माया आदि तख्त की कुती।।
सवा लाख घड़िये नित भांडे, हंसा उतपति परलय डांडे।
ये तीनों चेला बटपारी, सिरजे पुरुषा सिरजी नारी।।
खोखापुर में जीव भुलाये, स्वपना बहिस्त वैकुंठ बनाये।
यो हरहट का कुआ लोई, या गल बंध्या है सब कोई।।
कीड़ी कुजंर और अवतारा, हरहट डोरी बंधे कई बारा।
अरब अलील इन्द्र हैं भाई, हरहट डोरी बंधे सब आई।।
शेष महेश गणेश्वर ताहिं, हरहट डोरी बंधे सब आहिं।
शुक्रादिक ब्रह्मादिक देवा, हरहट डोरी बंधे सब खेवा।।
कोटिक कर्ता फिरता देख्या, हरहट डोरी कहूँ सुन लेखा।
चतुर्भुजी भगवान कहावैं, हरहट डोरी बंधे सब आवैं।।
यो है खोखापुर का कुआ, या में पड़ा सो निश्चय मुवा।

ज्योति निरंजन (कालबली) के वश होकर के ये तीनों देवता (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिव) अपनी महिमा दिखाकर जीवों को स्वर्ग नरक तथा भवसागर में (लख चौरासी योनियों में) भटकाते रहते हैं। ज्योति निरंजन अपनी माया से नागिनी की तरह जीवों को पैदा करते हैं और फिर मार देते हैं। जिस प्रकार नागिनी अपनी दुम से अण्डों के चारों ओर कुण्डली बनाती है फिर उन अण्डों पर अपना फन मारती है। जिससे अण्डा फूट जाता है। उसमें से बच्चा निकल जाता है। उसको नागिनी खा जाती है। फन मारते समय कई अण्डे फूट जाते हैं क्योंकि नागिनी के काफी अण्डे होते हैं। जो अण्डे फूटते हैं उनमें से बच्चे निकलते हैं यदि कोई बच्चा कुण्डली (सर्पनी की दुम का घेरा) से बाहर निकल जाता है तो वह बच्चा बच जाता है नहीं तो कुण्डली में वह (नागिनी) छोड़ती नहीं। जितने बच्चे उस कुण्डली के अन्दर होते हैं उन सबको खा जाती है।

माया काली नागिनी, अपने जाये खात।
कुण्डली में छोड़ै नहीं, सौ बातों की बात।।

इसी प्रकार यह कालबली का जाल है। निरंजन तक की भक्ति पूरे संत से नाम लेकर करेगें तो भी इस निरंजन की कुण्डली (इक्कीस ब्रह्मण्डों) से बाहर नहीं निकल सकते। स्वयं ब्रह्मा, विष्णु, महेश, आदि माया शेराँवाली भी निरंजन की कुण्डली में है। ये बेचारे अवतार धार कर आते हैं और जन्म-मृत्यु का चक्कर काटते रहते हैं। इसलिए विचार करें सोहं जाप जो कि ध्रुव व प्रहलाद व शुकदेव ऋषि ने जपा, वह भी पार नहीं हुए। क्योंकि श्री विष्णु पुराण के प्रथम अंश के अध्याय 12 के श्लोक 93 में पृष्ठ 51 पर लिखा है कि ध्रुव केवल एक कल्प अर्थात् एक हजार चतुर्युग तक ही मुक्त है। इसलिए काल लोक में ही रहे तथा 'ऊँ नमः भगवते वासुदेवाय' मन्त्र जाप करने वाले भक्त भी कृष्ण तक की भक्ति कर रहे हैं, वे भी चौरासी लाख योनियों के चक्कर काटने से नहीं बच सकते। यह परम पूज्य कबीर साहिब जी व आदरणीय गरीबदास साहेब जी महाराज की वाणी प्रत्यक्ष प्रमाण देती हैं।

अनन्त कोटि अवतार हैं, माया के गोविन्द।
कर्ता हो हो अवतरे, बहुर पड़े जग फंध।।

सतपुरुष कबीर साहिब जी की भक्ति से ही जीव मुक्त हो सकता है।

जब तक जीव सतलोक में वापिस नहीं चला जाएगा तब तक काल लोक में इसी तरह कर्म करेगा और की हुई नाम व दान धर्म की कमाई स्वर्ग रूपी होटलों में समाप्त करके वापिस कर्म आधार से चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के शरीर में कष्ट उठाने वाले काल लोक में चक्कर काटता रहेगा। माया (दुर्गा) से उत्पन्न हो कर करोड़ों गोबिन्द(ब्रह्मा-विष्णु-शिव) मर चुके हैं। भगवान का अवतार बन कर आये थे।

काल लोक में जन्म-मरण रूपी हरहट (चक्र)

फिर कर्म बन्धन में बन्ध कर कर्मों को भोग कर चौरासी लाख योनियों में चले गए। जैसे भगवान विष्णु जी को देवर्षि नारद का शाप लगा। वे श्री रामचन्द्र रूप में अयोध्या में आए। फिर श्री राम जी रूप में बाली का वध किया था। उस कर्म का दण्ड भोगने के लिए श्री कृष्ण जी का जन्म हुआ। फिर बाली वाली आत्मा शिकारी बना तथा अपना प्रतिशोध लिया। श्री कृष्ण जी के पैर में विषाक्त तीर मार कर वध किया। महाराज गरीबदास जी अपनी वाणी में कहते हैं :

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर माया, और धर्मराय कहिये।
इन पाँचों मिल परपंच बनाया, वाणी हमरी लहिये।।
इन पाँचों मिल जीव अटकाये, जुगन–जुगन हम आन छुटाये।
बन्दी छोड़ हमारा नामं, अजर अमर है अस्थिर ठामं।।
पीर पैगम्बर कुतुब औलिया, सुर नर मुनिजन ज्ञानी।
येता को तो राह न पाया, जम के बंधे प्राणी।।
धर्मराय की धूमा–धामी, जम पर जंग चलाऊँ।
जोरा को तो जान न दूगां, बांध अदल घर ल्याऊँ।।
काल अकाल दोहूँ को मोसूं, महाकाल सिर मूंडू।
मैं तो तख्त हजूरी हुकमी, चोर खोज कूं ढूंढू।।
मूला माया मग में बैठी, हंसा चुन–चुन खाई।
ज्योति स्वरूपी भया निरंजन, मैं ही कर्ता भाई।।
संहस अठासी दीप मुनीश्वर, बंधे मुला डोरी।
ऐत्यां में जम का तलबाना, चलिए पुरुष कीशोरी।।
मूला का तो माथा दागूं, सतकी मोहर करूंगा।
पुरुष दीप कूं हंस चलाऊँ, दरा न रोकन दूंगा।।
हम तो बन्दी छोड़ कहावां, धर्मराय है चकवै।
सतलोक की सकल सुनावां, वाणी हमरी अखवै।।
नौ लख पटट्न ऊपर खेलूं, साहदरे कूं रोकूं।
द्वादस कोटि कटक सब काटूं, हंस पठाऊँ मोखूं।।
चौदह भुवन गमन है मेरा, जल थल में सरबंगी।
खालिक खलक खलक में खालिक, अविगत अचल अभंगी।।
अगर अलील चक्र है मेरा, जित से हम चल आए।
पाँचों पर प्रवाना मेरा, बंधि छुटावन धाये।।
जहाँ ओंकार निरंजन नाहीं, ब्रह्मा विष्णु वेद नहीं जाहीं।
जहाँ करता नहीं जान भगवाना, काया माया पिण्ड न प्राणा।।
पाँच तत्व तीनों गुण नाहीं, जोरा काल दीप नहीं जाहीं।
अमर करूं सतलोक पठाँऊ, तातैं बन्दी छोड़ कहाऊँ।।

कबीर परमेश्वर (कविर्देव) की महिमा बताते हुए आदरणीय गरीबदास साहेब जी कह रहे हैं कि हमारे प्रभु कविर् (कविर्देव) बन्दी छोड़ हैं। बन्दी छोड़ का भावार्थ है

काल की कारागार से छुटवाने वाला, काल ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्मण्डों में सर्व प्राणी पापों के कारण काल के बंदी हैं। पूर्ण परमात्मा (कविर्देव) कबीर साहेब पाप का विनाश कर देते हैं। पापों का विनाश न ब्रह्म, न परब्रह्म, न ही ब्रह्मा, विष्णु, शिव जी कर सकते हैं। केवल जैसा कर्म है, उसका वैसा ही फल दे देते हैं। इसीलिए यजुर्वेद अध्याय 5 के मन्त्र 32 में लिखा है 'कविरंघारिरसि' कविर्देव (कबीर परमेश्वर) पापों का शत्रु है, 'बम्भारिरसि' बन्धनों का शत्रु अर्थात् बन्दी छोड़ है।

इन पाँचों (ब्रह्मा-विष्णु-शिव-माया और धर्मराय) से ऊपर सतपुरुष परमात्मा (कविर्देव) है। जो सतलोक का मालिक है। शेष सर्व परब्रह्म-ब्रह्म तथा ब्रह्मा-विष्णु-शिव जी व आदि माया नाशवान परमात्मा हैं। महाप्रलय में ये सब तथा इनके लोक समाप्त हो जाएंगे। आम जीव से कई हजार गुणा ज्यादा लम्बी इनकी उम्र है। परन्तु जो समय निर्धारित है वह एक दिन पूरा अवश्य होगा। आदरणीय गरीबदास जी महाराज कहते हैं :

शिव ब्रह्मा का राज, इन्द्र गिनती कहां।
चार मुक्ति वैकुंण्ठ समझ, येता लह्या।।
संख जुगन की जुनी, उम्र बड़ धाारिया। जा जननी कुर्बान, सु कागज पारिया।।
येती उम्र बुलंद मरैगा अंत रे। सतगुरु लगे न कान, न भैंटे संत रे।।

चाहे संख युग की लम्बी उम्र भी क्यों न हो वह एक दिन समाप्त जरूर होगी। यदि सतपुरुष परमात्मा (कविर्देव) कबीर साहेब के नुमाँयदे पूर्ण संत(गुरु) जो तीन नाम का मंत्र (जिसमें एक ओउम् + तत् + सत् सांकेतिक हैं) देता है तथा उसे पूर्ण संत द्वारा नाम दान करने का आदेश है, उससे उपदेश लेकर नाम की कमाई करेंगे तो हम सतलोक के अधिकारी हंस हो सकते हैं। सत्य साधना बिना बहुत लम्बी उम्र कोई काम नहीं आएगी क्योंकि निरंजन लोक में दुःख ही दुःख है।

कबीर, जीवना तो थोड़ा ही भला, जै सत सुमरन होय।
लाख वर्ष का जीवना, लेखै धरै ना कोय।।

कबीर साहिब अपनी (पूर्णब्रह्म की) जानकारी स्वयं बताते हैं कि इन परमात्माओं से ऊपर असंख्य भुजा का परमात्मा सतपुरुष है जो सत्यलोक (सच्च खण्ड, सतधाम) में रहता है तथा उसके अन्तर्गत सर्वलोक [ब्रह्म (काल) के 21 ब्रह्मण्ड व ब्रह्मा, विष्णु, शिव शक्ति के लोक तथा परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्ड व अन्य सर्व ब्रह्मण्ड] आते हैं और वहाँ पर सत्यनाम-सारनाम के जाप द्वारा जाया जाएगा जो पूरे गुरु से प्राप्त होता है। सच्चखण्ड (सतलोक) में जो आत्मा चली जाती है उसका पुनर्जन्म नहीं होता। सतपुरुष (पूर्णब्रह्म) कबीर साहेब (कविर्देव) ही अन्य लोकों में स्वयं ही भिन्न-भिन्न नामों से विराजमान हैं। जैसे अलख लोक में अलख पुरुष, अगम लोक में अगम पुरुष तथा अकह लोक में अनामी पुरुष रूप में विराजमान हैं। ये तो उपमात्मक नाम हैं, परन्तु वास्तविक नाम उस पूर्ण पुरुष का कविर्देव (भाषा भिन्न होकर कबीर साहेब) है।

"आदरणीय नानक साहेब जी की वाणी में सृष्टि रचना का संकेत"

श्री नानक साहेब जी की अमृतवाणी, महला 1, राग बिलावलु, अंश 1 (गु. ग्र. पृ. 839)

आपे सचु कीआ कर जोड़ि। अंडज फोड़ि जोडि विछोड़।।
धरती आकाश कीए बैसण कउ थाउ। राति दिनंतु कीए भउ–भाउ।।
जिन कीए करि वेखणहारा।(3)
त्रितीआ ब्रह्मा–बिसनु–महेसा। देवी देव उपाए वेसा।।(4)
पउण पाणी अगनी बिसराउ। ताही निरंजन साचो नाउ।।
तिसु महि मनुआ रहिआ लिव लाई। प्रणवति नानकु कालु न खाई।।(10)

उपरोक्त अमृतवाणी का भावार्थ है कि सच्चे परमात्मा (सतपुरुष) ने स्वयं ही अपने हाथों से सर्व सृष्टि की रचना की है। उसी ने अण्डा बनाया फिर फोड़ा तथा उसमें से ज्योति निरंजन निकला। उसी पूर्ण परमात्मा ने सर्व प्राणियों के रहने के लिए धरती, आकाश, पवन, पानी आदि पाँच तत्व रचे। अपने द्वारा रची सृष्टि का स्वयं ही साक्षी है। दूसरा कोई सही जानकारी नहीं दे सकता। फिर अण्डे के फूटने से निकले निरंजन के बाद तीनों श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी की उत्पत्ति हुई तथा अन्य देवी-देवता उत्पन्न हुए तथा अनगिनत जीवों की उत्पत्ति हुई। उसके बाद अन्य देवों के जीवन चरित्र तथा अन्य ऋषियों के अनुभव के छः शास्त्र तथा अठारह पुराण बन गए। पूर्ण परमात्मा के सच्चे नाम (सत्यनाम) की साधना अनन्य मन से करने से तथा गुरु मर्यादा में रहने वाले (प्रणवति) को श्री नानक जी कह रहे हैं कि काल नहीं खाता।

राग मारु(अंश) अमृतवाणी महला 1(गु.ग्र.पृ. 1037)

सुनहु ब्रह्मा, बिसनु, महेसु उपाए। सुने वरते जुग सबाए।।
इसु पद बिचारे सो जनु पुरा। तिस मिलिए भरमु चुकाइदा।।(3)
साम वेदु, रुगु जुजरु अथरबणु। ब्रहमें मुख माइआ है त्रैगुण।।
ता की कीमत कहि न सकै। को तिउ बोले जिउ बुलाईदा।।(9)

उपरोक्त अमृतवाणी का सारांश है कि जो संत पूर्ण सृष्टि रचना सुना देगा तथा बताएगा कि अण्डे के दो भाग होकर कौन निकला, जिसने फिर ब्रह्मलोक की सुन्न में अर्थात् गुप्त स्थान पर ब्रह्मा-विष्णु-शिव जी की उत्पत्ति की तथा वह परमात्मा कौन है जिसने ब्रह्म (काल) के मुख से चारों वेदों (पवित्र ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) को उच्चारण करवाया, वह पूर्ण परमात्मा जैसा चाहे वैसे ही प्रत्येक प्राणी को बुलवाता है। इस सर्व ज्ञान को पूर्ण बताने वाला सन्त मिल जाए तो उसके पास जाइए तथा जो सभी शंकाओं का पूर्ण निवारण करता है, वही पूर्ण सन्त अर्थात् तत्वदर्शी है।

श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ 929 अमृत वाणी श्री नानक साहेब जी की राग रामकली महला 1 दखणी ओअंकार

ओअंकारि ब्रह्मा उतपति। ओअंकारू कीआ जिनि चित। ओअंकारि सैल जुग

भए। ओअंकारि बेद निरमए। ओअंकारि सबदि उधरे। ओअंकारि गुरुमुखि तरे। ओनम अखर सुणहू बीचारु। ओनम अखरु त्रिभवण सारु।

उपरोक्त अमृतवाणी में श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि ओंकार अर्थात् ज्योति निरंजन (काल) से ब्रह्मा जी की उत्पत्ति हुई। कई युगों मस्ती मार कर ओंकार (ब्रह्म) ने वेदों की उत्पत्ति की जो ब्रह्मा जी को प्राप्त हुए। तीन लोक की भक्ति का केवल एक ओम् मंत्र ही वास्तव में जाप करने का है। इस ओम् शब्द को पूरे संत से उपदेश लेकर अर्थात् गुरू धारण करके जाप करने से उद्धार होता है।

विशेष :– श्री नानक साहेब जी ने तीनों मंत्रों (ओम् + तत् + सत्) का स्थान - स्थान पर रहस्यात्मक विवरण दिया है। उसको केवल पूर्ण संत (तत्वदर्शी संत) ही समझ सकता है तथा तीनों मंत्रों के जाप को उपदेशी को समझाया जाता है।

(पृ. 1038) उत्तम सतिगुरु पुरुष निराले, सबदि रते हरि रस मतवाले।
रिधि, बुधि, सिधि, गिआन गुरु ते पाइए, पूरे भाग मिलाईदा।।(15)
सतिगुरु ते पाए बीचारा, सुन समाधि सचे घरबारा।
नानक निरमल नादु सबद धुनि, सचु रामैं नामि समाइदा (17)।।5।।17।।

उपरोक्त अमृतवाणी का भावार्थ है कि वास्तविक ज्ञान देने वाले सतगुरु तो निराले ही हैं, वे केवल नाम जाप को जपते हैं, अन्य हठयोग साधना नहीं बताते। यदि आप को धन दौलत, पद, बुद्धि या भक्ति शक्ति भी चाहिए तो वह भक्ति मार्ग का ज्ञान पूर्ण संत ही पूरा प्रदान करेगा, ऐसा पूर्ण संत बड़े भाग्य से ही मिलता है। वही पूर्ण संत विवरण बताएगा कि ऊपर सुन्न (आकाश) में अपना वास्तविक घर (सत्यलोक) परमेश्वर ने रच रखा है।

उसमें एक वास्तविक सार नाम की धुन (आवाज) हो रही है। उस आनन्द में अविनाशी परमेश्वर के सार शब्द से समाया जाता है अर्थात् उस वास्तविक सुखदाई स्थान में वास हो सकता है, अन्य नामों तथा अधूरे गुरुओं से नहीं हो सकता।

आंशिक अमृतवाणी महला पहला (श्री गु. ग्र. पृ. 359-360)

सिव नगरी महि आसणि बैसउ कलप त्यागी वादं।(1)
सिंडी सबद सदा धुनि सोहै अहिनिसि पूरै नादं।(2)
हरि कीरति रह रासि हमारी गुरु मुख पंथ अतीत (3)
सगली जोति हमारी संमिआ नाना वरण अनेकं।
कह नानक सुणि भरथरी जोगी पारब्रह्म लिव एकं।(4)

उपरोक्त अमृतवाणी का भावार्थ है कि श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि हे भरथरी योगी जी आप की साधना भगवान शिव तक है, उससे आप को शिव नगरी (लोक) में स्थान मिला है और शरीर में जो सिंगी शब्द आदि हो रहा है वह इन्हीं कमलों का है तथा टेलीविजन की तरह प्रत्येक देव के लोक से शरीर में सुनाई दे रहा है।

हम तो एक परमात्मा पारब्रह्म अर्थात् सर्वसे पार जो पूर्ण परमात्मा है अन्य किसी और एक परमात्मा में लौ (अनन्य मन से लग्न) लगाते हैं।

हम ऊपरी दिखावा (भस्म लगाना, हाथ में दंडा रखना) नहीं करते। मैं तो सर्व प्राणियों को एक पूर्ण परमात्मा (सतपुरुष) की सन्तान समझता हूँ। सर्व उसी शक्ति से चलायमान हैं। हमारी मुद्रा तो सच्चा नाम जाप गुरु से प्राप्त करके करना है तथा क्षमा करना हमारा बाणा (वेशभूषा) है। मैं तो पूर्ण परमात्मा का उपासक हूँ तथा पूर्ण सतगुरु का भक्ति मार्ग इससे भिन्न है।

अमृत वाणी राग आसा महला 1 (श्री गु. ग्र. पृ. 420)

।।आसा महला 1।। जिनी नामु विसारिआ दूजै भरमि भुलाई। मूलु छोड़ि डाली लगे किआ पावहि छाई।।1।। साहिबु मेरा एकु है अवरु नहीं भाई। किरपा ते सुखु पाइआ साचे परथाई।।3।। गुर की सेवा सो करे जिसु आपि कराए। नानक सिरु दे छूटीऐ दरगह पति पाए।।8।।18।।

उपरोक्त वाणी का भावार्थ है कि श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि जो पूर्ण परमात्मा का वास्तविक नाम भूल कर अन्य भगवानों के नामों के जाप में भ्रम रहे हैं वे तो ऐसा कर रहे हैं कि मूल (पूर्ण परमात्मा) को छोड़ कर डालियों (तीनों गुण रूप रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिवजी) की सिंचाई (पूजा) कर रहे हैं। उस साधना से कोई सुख नहीं हो सकता अर्थात् पौधा सूख जाएगा तो छाया में नहीं बैठ पाओगे। भावार्थ है कि शास्त्र विधि रहित साधना करने से व्यर्थ प्रयत्न है। कोई लाभ नहीं। इसी का प्रमाण पवित्र गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में भी है। उस पूर्ण परमात्मा को प्राप्त करने के लिए मनमुखी (मनमानी) साधना त्याग कर पूर्ण गुरुदेव को समर्पण करने से तथा सच्चे नाम के जाप से ही मोक्ष संभव है, नहीं तो मृत्यु के उपरांत नरक जाएगा।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ नं. 843-844)

।।बिलावलु महला 1।। मैं मन चाहु घणा साचि विगासी राम। मोही प्रेम पिरे प्रभु अबिनासी राम।। अविगतो हरि नाथु नाथह तिसै भावै सो थीऐ। किरपालु सदा दइआलु दाता जीआ अंदरि तूं जीऐ। मैं आधारु तेरा तू खसमु मेरा मै ताणु तकीआ तेरओ। साचि सूचा सदा नानक गुरसबदि झगरु निबेरओ।।4।।2।।

उपरोक्त अमृतवाणी में श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि अविनाशी पूर्ण परमात्मा नाथों का भी नाथ है अर्थात् देवों का भी देव है (सर्व प्रभुओं श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी तथा ब्रह्म व परब्रह्म पर भी नाथ है अर्थात् स्वामी है) मैं तो सच्चे नाम को हृदय में समा चुका हूँ। हे परमात्मा ! सर्व प्राणी का जीवन आधार भी आप ही हो। मैं आपके आश्रित हूँ आप मेरे मालिक हो। आपने ही गुरु रूप में आकर सत्यभक्ति का निर्णायक ज्ञान देकर सर्व झगड़ा निपटा दिया अर्थात् सर्व शंका का समाधान कर दिया।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ नं. 721, राग तिलंग महला 1)

यक अर्ज गुफतम् पेश तो दर कून करतार।

हक्का कबीर करीम तू बेअब परवरदिगार।
नानक बुगोयद जन तुरा तेरे चाकरां पाखाक।

उपरोक्त अमृतवाणी में स्पष्ट कर दिया कि हे (हक्का कबीर) आप सत्कबीर (कून करतार) शब्द शक्ति से रचना करने वाले शब्द स्वरूपी प्रभु अर्थात् सर्व सृष्टि के रचन हार हो, आप ही बेएब निर्विकार (परवरदिगार) सर्व के पालन कर्ता दयालु प्रभु हो, मैं आपके दासों का भी दास हूँ।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ नं. 24, राग सीरी महला 1)

तेरा एक नाम तारे संसार, मैं ऐहा आस ऐहो आधार।
नानक नीच कहै बिचार, धाणक रूप रहा करतार।।

उपरोक्त अमृतवाणी में प्रमाण किया है कि जो काशी में धाणक (जुलाहा) है यही (करतार) कुल का सृजनहार है। अति आधीन होकर श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि मैं सत कह रहा हूँ कि यह धाणक अर्थात् कबीर जुलाहा ही पूर्ण ब्रह्म (सतपुरुष) है।

विशेष :- उपरोक्त प्रमाणों के सांकेतिक ज्ञान से प्रमाणित हुआ सृष्टि रचना कैसे हुई? अब पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति करनी चाहिए। यह पूर्ण संत से नाम लेकर ही संभव है।

''अन्य संतों द्वारा सृष्टि रचना की दन्त कथा''

अन्य संतों द्वारा जो सृष्टि रचना का ज्ञान बताया है वह कैसा है? कृप्या निम्न पढ़े :- सृष्टि रचना के विषय में राधास्वामी पंथ के सन्तों के व धन-धन सतगुरू पंथ के सन्त के विचार :-

पवित्र पुस्तक जीवन चरित्र परम संत बाबा जयमल सिंह जी महाराज'' पृष्ठ नं. 102-103 से ''सृष्टि की रचना'' (सावन कृपाल पब्लिकेशन, दिल्ली)

''पहले सतपुरुष निराकार था, फिर इजहार (आकार) में आया तो ऊपर के तीन निर्मल मण्डल (सतलोक, अलखलोक, अगमलोक) बन गया तथा प्रकाश तथा मण्डलों का नाद (धुनि) बन गया।''

पवित्र पुस्तक सारवचन (नसर) प्रकाशक :- राधास्वामी सत्संग सभा, दयालबाग आगरा, ''सृष्टि की रचना'' पृष्ठ 81,

'प्रथम धूंधूकार था। उसमें पुरुष सुन्न समाध में थे। जब कुछ रचना नहीं हुई थी। फिर जब मौज हुई तब शब्द प्रकट हुआ और उससे सब रचना हुई, पहले सतलोक और फिर सतपुरुष की कला से तीन लोक और सब विस्तार हुआ।''

यह ज्ञान तो ऐसा है जैसे एक समय कोई बच्चा नौकरी लगने के लिए साक्षात्कार (इन्टरव्यू) के लिए गया। अधिकारी ने पूछा कि आप ने महाभारत पढ़ा है। लड़के ने उत्तर दिया कि उंगलियों पर रट रखा है। अधिकारी ने प्रश्न किया कि पाँचों पाण्डवों के नाम बताओ। लड़के ने उत्तर दिया कि एक भीम था, एक उसका बड़ा भाई था, एक उससे छोटा था, एक और था तथा एक का नाम मैं भूल गया। उपरोक्त सृष्टि रचना का ज्ञान तो ऐसा है।

सतपुरुष व सतलोक की महिमा बताने वाले व पाँच नाम (औंकार - ज्योति निरंजन - ररंकार - सोहं - सत्यनाम) देने वाले व तीन नाम (अकाल मूर्ति - सतपुरुष - शब्द स्वरूपी राम) देने वाले संतों द्वारा रची पुस्तकों से कुछ निष्कर्ष :-

संतमत प्रकाश भाग 3 पृष्ठ 76 पर लिखा है कि ''सच्चखण्ड या सतनाम चौथा लोक है'', यहाँ पर 'सतनाम' को स्थान कहा है। फिर इस पवित्र पुस्तक के पृष्ठ नं. 79 पर लिखा है कि ''एक राम दशरथ का बेटा, दूसरा राम 'मन', तीसरा राम 'ब्रह्म', चौथा राम 'सतनाम', यह असली राम है।'' फिर पवित्र पुस्तक संतमत प्रकाश पहला भाग पृष्ठ नं. 17 पर लिखा है कि ''वह सतलोक है, उसी को सतनाम कहा जाता है।'' पवित्र पुस्तक 'सार वचन नसर यानि वार्तिक' पृष्ठ नं. 3 पर लिखा है कि ''अब समझना चाहिए कि राधा स्वामी पद सबसे उच्चा मुकाम है कि जिसको संतों ने सतलोक और सच्चखण्ड और सार शब्द और सत शब्द और सतनाम और सतपुरुष करके ब्यान किया है।'' पवित्र पुस्तक सार वचन (नसर) आगरा से प्रकाशित पृष्ठ नं. 4 पर भी उपरोक्त ज्यों का त्यों वर्णन है। पवित्र पुस्तक 'सच्चखण्ड की सड़क' पृष्ठ नं. 226 ''संतों का देश सच्चखण्ड या सतलोक है, उसी को सतनाम- सतशब्द-सारशब्द कहा जाता है।''

विशेष :- उपरोक्त व्याख्या ऐसी लगी जैसे किसी ने जीवन में न तो शहर देखा, न कार देखी और न पैट्रोल देखा है, न ड्राईवर का ज्ञान हो कि ड्राईवर किसे कहते हैं और वह व्यक्ति अन्य साथियों से कहे कि मैं शहर में जाता हूँ, कार में बैठ कर आनंद मनाता हूँ। फिर साथियों ने पूछा कि कार कैसी है, पैट्रोल कैसा है और ड्राईवर कैसा है, शहर कैसा है? उस गुरु जी ने उत्तर दिया कि शहर कहो चाहे कार एक ही बात है, शहर भी कार ही है, पैट्रोल भी कार को ही कहते हैं, ड्राईवर भी कार को ही कहते हैं, सड़क भी कार को ही कहते हैं।

आओ विचार करें - सतपुरुष तो पूर्ण परमात्मा है, सतनाम वह दो मंत्र का नाम है जिसमें एक ओम् + तत् सांकेतिक है तथा इसके बाद सारनाम साधक को पूर्ण गुरु द्वारा दिया जाता है। यह सतनाम तथा सारनाम दोनों स्मरण करने के नाम हैं। सतलोक वह स्थान है जहाँ सतपुरुष रहता है। पुण्यात्माएं स्वयं निर्णय करें सत्य तथा असत्य का।

''भक्ति मर्यादा''

नाम (दीक्षा) लेने वाले व्यक्तियों के लिए आवश्यक जानकारी

1. पूर्ण गुरु से दीक्षा लेनी चाहिए :-

पूर्ण गुरु की पहचान : - आज कलियुग में भक्त समाज के सामने पूर्ण गुरु की पहचान करना सबसे जटिल प्रश्न बना हुआ है। लेकिन इसका बहुत ही लघु और साधारण-सा उत्तर है कि जो गुरु शास्त्रों के अनुसार भक्ति करता है और अपने अनुयाइयों अर्थात् शिष्यों द्वारा करवाता है वही पूर्ण संत है। चूंकि भक्ति मार्ग का संविधान धार्मिक शास्त्र जैसे - कबीर साहेब की वाणी, नानक साहेब की वाणी, संत गरीबदास जी महाराज की वाणी, संत धर्मदास जी साहेब की वाणी, वेद, गीता, पुराण, कुरआन, पवित्र बाईबल आदि हैं। जो भी संत शास्त्रों के अनुसार भक्ति साधना बताता है और भक्त समाज को मार्ग दर्शन करता है तो वह पूर्ण संत है अन्यथा वह भक्त समाज का घोर दुश्मन है जो शास्त्रों के विरूद्ध साधना करवा रहा है। इस अनमोल मानव जन्म के साथ खिलवाड़ कर रहा है। ऐसे गुरु या संत को भगवान के दरबार में घोर नरक में उल्टा लटकाया जाएगा।

उदाहरण के तौर पर जैसे कोई अध्यापक सलेबस (पाठयक्रम) से बाहर की शिक्षा देता है तो वह उन विद्यार्थियों का दुश्मन है।

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 15

न, माम्, दुष्कृतिनः, मूढाः, प्रपद्यन्ते, नराधमाः,
मायया, अपहृतज्ञानाः, आसुरम्, भावम्, आश्रिताः ।।

अनुवाद : माया के द्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है ऐसे आसुर स्वभावको धारण किये हुए मनुष्यों में नीच दूषित कर्म करनेवाले मूर्ख मुझको नहीं भजते अर्थात् वे तीनों गुणों (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिव) की साधना ही करते रहते हैं।
यजुर्वेद अध्याय न. 40 श्लोक न. 10 (संत रामपाल दास जी द्वारा भाषा-भाष्य)
अन्यदेवाहुःसम्भवादन्यदाहुरसम्भवात्, इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे।।10।।

हिन्दी अनुवाद :- परमात्मा के बारे में सामान्यत निराकार अर्थात् कभी न जन्मने वाला कहते हैं। दूसरे आकार में अर्थात् जन्म लेकर अवतार रूप में आने वाला कहते हैं। जो टिकाऊ अर्थात् पूर्णज्ञानी अच्छी प्रकार सुनाते हैं उसको इस प्रकार सही तौर पर वही समरूप अर्थात् यथार्थ रूप में भिन्न-भिन्न रूप से प्रत्यक्ष ज्ञान कराते हैं।

गीता अध्याय नं. 4 का श्लोक नं. 34

तत्, विद्धि, प्रणिपातेन, परिप्रश्नेन, सेवया,
उपदेक्ष्यन्ति, ते, ज्ञानम्, ज्ञानिनः, तत्वदर्शिनः ।।

अनुवाद : उसको समझ उन पूर्ण परमात्मा के ज्ञान व समाधान को जानने वाले संतोंको भलीभाँति दण्डवत् प्रणाम करनेसे उनकी सेवा करनेसे और कपट छोड़कर सरलतापूर्वक प्रश्न करनेसे वे परमात्म तत्व को भली भाँति जाननेवाले ज्ञानी महात्मा

तुझे उस तत्वज्ञानका उपदेश करेंगे।

2. नशीली वस्तुओं का सेवन निषेध :-- हुक्का, शराब, बीयर, तम्बाखु, बीड़ी, सिगरेट, हुलास सूँघना, गुटखा, मांस, अण्डा, सुल्फा, अफीम, गांजा और अन्य नशीली चीजों का सेवन तो दूर रहा किसी को नशीली वस्तु लाकर भी नहीं देनी है। बन्दी छोड़ गरीबदास जी महाराज इन सभी नशीली वस्तुओं को बहुत बुरा बताते हुए अपनी वाणी में कहते हैं कि -

सुरापान मद्य मांसाहारी, गमन करै भोगैं पर नारी। सतर जन्म कटत हैं शीशं, साक्षी साहिब है जगदीशं।।
पर द्वारा स्त्री का खोलै, सतर जन्म अंधा होवै डोलै। मदिरा पीवै कड़वा पानी, सत्तर जन्म श्वान के जानी।।
गरीब, हुक्का हरदम पिवते, लाल मिलावैं धूर। इसमें संशय है नहीं, जन्म पिछले सूर।।1।।
गरीब, सो नारी जारी करै, सुरा पान सौ बार। एक चिलम हुक्का भरै, डुबै काली धार।।2।।
गरीब, सूर गऊ कुं खात है, भक्ति बिहुनें राड। भांग तम्बाखू खा गए, सो चाबत हैं हाड।।3।।
गरीब, भांग तम्बाखू पीव हीं, सुरा पान सैं हेत। गौस्त मट्टी खाय कर, जंगली बनें प्रेत।।4।।
गरीब, पान तम्बाखू चाब हीं, नास नाक में देत। सो तो इरानै गए, ज्यूं भड़भूजे का रेत।।5।।
गरीब, भांग तम्बाखू पीवहीं, गोस्त गला कबाब। मोर मृग कूं भखत हैं, देगें कहां जवाब।।6।।

3. तीर्थ स्थानों पर जाना निषेध :-- किसी प्रकार का कोई व्रत नहीं रखना है। कोई तीर्थ यात्रा नहीं करनी, न कोई गंगा स्नान आदि करना, न किसी अन्य धार्मिक स्थल पर स्नानार्थ व दर्शनार्थ जाना है। किसी मन्दिर व ईष्ट धाम में पूजा व भक्ति के भाव से नहीं जाना कि इस मन्दिर में भगवान है। भगवान कोई पशु तो है नहीं कि उसको पुजारी जी ने मन्दिर में बांध रखा है। भगवान तो कण-कण में व्यापक है। ये सभी साधनाएँ शास्त्रों के विरुद्ध हैं।

जरा विचार करके देखो कि ये सभी तीर्थ स्थल (जैसे जगन्नाथ का मन्दिर, बदरीनाथ, हरिद्वार,मक्का-मदीना, अमर नाथ, वैष्णो देवी, वृन्दावन, मथुरा, बरसाना, अयोध्या राम मन्दिर, काशी धाम, छुड़ानी धाम आदि), मन्दिर, मस्जिद, गुरु द्वारा, चर्च व ईष्ट धाम आदि ऐसे स्थल हैं जहाँ पर कोई संत रहते थे। वे वहाँ पर अपनी भक्ति साधना करके अपना भक्ति रूपी धन जोड़ करके शरीर छोड़ कर अपने ईष्ट देव के लोक में चले गए। तत्पश्चात् उनकी यादगार को प्रमाणित रखने के लिए वहाँ पर किसी ने मन्दिर, किसी ने मस्जिद, किसी ने गुरु द्वारा, किसी ने चर्च या किसी ने धर्मशाला आदि बनवा दी। ताकि उनकी याद बनी रहे और हमारे जैसे तुच्छ प्राणियों को प्रमाण मिलता रहे कि हमें ऐसे ही कर्म करने चाहिए जैसे कि इन महान आत्माओं ने किये हैं। ये सभी धार्मिक स्थल हम सभी को यही संदेश देते हैं कि जैसे भक्ति साधना इन नामी संतों ने की है ऐसी ही आप करो। इसके लिए आप इसी तरीके से साधना करने वाले व बताने वाले संतों को तलाश करो और फिर जैसा वे कहें वैसा ही करो। लेकिन बाद में इन स्थानों की ही पूजा प्रारम्भ हो गई जो कि बिल्कुल व्यर्थ है और शास्त्रों के विरुद्ध है।

ये सभी स्थान तो एक ऐसे स्थान की भांति हैं जहाँ पर किसी हलवाई ने भट्ठी बना कर जलेबी, लड्डु आदि बना कर स्वयं खा कर और अपने सगे-साथियों को

खिला कर चले गए। उसके बाद में उस स्थान पर न तो वह हलवाई है और न ही मिठाई। फिर तो वहाँ केवल भट्ठी ही है। वह न तो हमारे को मिठाई बनाना सिखला सकती है और न ही हमारा पेट (उदर) भर सकती है। अब कोई कहे कि आओ भईया! आपको वह भट्ठी दिखा कर लाऊँगा जहाँ पर एक हलवाई ने मिठाई बनाई थी। चलो चलते हैं। वहाँ जा कर उस भट्ठी को देख लिया और सात चक्कर भी काट आए। क्या आपको मिठाई मिली? क्या आपको मिठाई बनाने की विधि बताने वाला हलवाई मिला? इसके लिए आपने वैसा ही हलवाई खोजना होगा जो सबसे पहले आपको मिठाई खिलाए और बनाने की विधि भी बताए। फिर जैसे वे कहे केवल वही करना, अन्य नहीं।

ठीक इसी प्रकार तीर्थ स्थानों की पूजा न करके वैसे ही संतों की तलाश करो जो शास्त्रों के अनुसार पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब की भक्ति करते व बताते हों। फिर जैसे वे कहे केवल वही करना, अपनी मन मानी नहीं करना।

सामवेद संख्या नं. 1400 उतार्चिक अध्याय नं. 12 खण्ड नं. 3 श्लोक नं. 5(संत रामपाल दास द्वारा भाषा-भाष्य):-

भद्रा वस्त्रा समन्या३वसानो महान् कविर्निवचनानि शंसन्।
आ वच्यस्व चम्वोः पूयमानो विचक्षणो जागृविर्देववीतौ।।5।।

हिन्दी :- चतुर व्यक्तियों ने अपने वचनों द्वारा पूर्ण परमात्मा (पूर्ण ब्रह्म) की पूजा का सत्यमार्ग दर्शन न करके अमृत के स्थान पर आन उपासना (जैसे भूत पूजा, पितर पूजा, श्राद्ध निकालना, तीनों गुणों की पूजा (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शंकर) तथा ब्रह्म-काल की पूजा मन्दिर-मसजिद-गुरूद्वारों-चर्चो व तीर्थ-उपवास तक की उपासना) रूपी फोड़े व घाव से निकले मवाद को आदर के साथ आचमन करा रहे होते हैं। उसको परमसुखदायक पूर्ण ब्रह्म कबीर सहशरीर साधारण वेशभूषा में (''वस्त्र का अर्थ है वेशभूषा-संत भाषा में इसे चोला भी कहते हैं। जैसे कोई संत शरीर त्याग जाता है तो कहते हैं कि महात्मा तो चोला छोड़ गए।'') सत्यलोक वाले शरीर के समान दूसरा तेजपुंज का शरीर धारण करके आम व्यक्ति की तरह जीवन जी कर कुछ दिन संसार में रह कर अपनी शब्द-साखियों के माध्यम से सत्यज्ञान को वर्णन करके पूर्ण परमात्मा के छुपे हुए वास्तविक सत्यज्ञान तथा भक्ति को जाग्रत करते हैं।

गीता अध्याय नं. 16 का श्लोक नं. 23

यः, शास्त्रविधिम्, उत्सृज्य, वर्तते, कामकारतः, न, सः,
सिद्धिम्, अवाप्नोति, न, सुखम्, न, पराम्, गतिम्।।

अनुवाद : जो पुरुष शास्त्र विधि को त्यागकर अपनी इच्छा से मनमाना आचरण करता है वह न सिद्धि को प्राप्त होता है न परम गति को और न सुख को ही।

गीता अध्याय नं. 6 का श्लोक नं. 16

न, अति, अश्र्नतः, तु, योगः, अस्ति, न, च, एकान्तम्,
अनश्र्नतः, न, च, अति, स्वप्नशीलस्य, जाग्रतः, न, एव, च, अर्जुन।।

अनुवाद : हे अर्जुन! यह योग अर्थात् भक्ति न तो बहुत खाने वाले का और न बिल्कुल न खाने वाले का न एकान्त स्थान पर आसन लगाकर साधना करने वाले का तथा न बहुत शयन करने के स्वभाव वाले का और न सदा जागने वाले का ही सिद्ध होता है।

पूजैं देई धाम को, शीश हलावै जो। गरीबदास साची कहै, हद काफिर है सो।।
कबीर, गंगा काठै घर करै, पीवै निर्मल नीर। मुक्ति नहीं हरि नाम बिन, सतगुरु कहैं कबीर।।
कबीर, तीर्थ कर–कर जग मूवा, उडै पानी न्हाय। राम ही नाम ना जपा, काल घसीटे जाय।।
गरीब, पीतल ही का थाल है, पीतल का लोटा। जड़ मूरत को पूजतें, आवैगा टोटा।।
गरीब, पीतल चमच्चा पूजिये, जो थाल परोसै। जड़ मूरत किस काम की, मति रहो भरोसै।।
कबीर, पर्वत पर्वत मैं फिर्या, कारण अपने राम। राम सरीखे जन मिले, जिन सारे सब काम।।

4. पितर पूजा निषेध :-- किसी प्रकार की पितर पूजा, श्राद्ध निकालना आदि कुछ नहीं करना है। भगवान श्री कृष्ण जी ने भी इन पितरों की व भूतों की पूजा करने से साफ मना किया है। गीता जी के अध्याय नं. 9 के श्लोक नं. 25 में कहा है कि -

यान्ति, देवव्रताः, देवान्, पितृऋन्, यान्ति, पितृव्रताः।
भूतानि, यान्ति, भूतेज्याः, मद्याजिनः, अपि, माम्।

अनुवाद : देवताओं को पूजने वाले देवताओं को प्राप्त होते हैं पितरों को पूजने वाले पितरों को प्राप्त होते हैं भूतों को पूजने वाले भूतों को प्राप्त होते हैं और मतानुसार पूजन करने वाले भक्त मुझसे ही लाभान्वित होते हैं।

बन्दी छोड़ गरीबदास जी महाराज और कबीर साहिब जी महाराज भी कहते हैं

''गरीब, भूत रमै सो भूत है, देव रमै सो देव। राम रमै सो राम है, सुनो सकल सुर भेव।।''

इसलिए उस (पूर्ण परमात्मा) परमेश्वर की भक्ति करो जिससे पूर्ण मुक्ति होवे। वह परमात्मा पूर्ण ब्रह्म सतपुरुष (सत कबीर) है। इसी का प्रमाण गीता जी के अध्याय नं. 18 के श्लोक नं. 46 में है।

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः।।46।।

अनुवाद : जिस परमेश्वरसे सम्पूर्ण प्राणियोंकी उत्पत्ति हुई है और जिससे यह समस्त जगत् व्याप्त है, उस परमेश्वरकी अपने स्वाभाविक कर्मोंद्वारा पूजा करके मनुष्य परमसिद्धिको प्राप्त हो जाता है।।63।।

गीता अध्याय नं. 18 का श्लोक नं. 62 :--

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्।।62।।

अनुवाद : हे भरतवंशोभ्द्रव अर्जुन! तू सर्वभावसे उस ईश्वरकी ही शरणमें चला जा। उसकी कृपासे तू परम शान्ति (संसारसे सर्वथा उपरति) को और अविनाशी परमपदको प्राप्त हो जायगा।

सर्वभाव का तात्पर्य है कि कोई अन्य पूजा न करके मन-कर्म-वचन से एक परमेश्वर में आस्था रखना।

गीता अध्याय नं. 8 का श्लोक नं. 22 :--

पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया।
यस्यान्तः स्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम्।।22।।

अनुवाद : हे पृथानन्दन अर्जुन! सम्पूर्ण प्राणी जिसके अन्तर्गत हैं और जिससे यह सम्पूर्ण संसार व्याप्त है, वह परम पुरुष परमात्मा तो अनन्यभक्तिसे प्राप्त होनेयोग्य है।

अनन्य भक्ति का तात्पर्य है एक परमेश्वर (पूर्ण ब्रह्म) की भक्ति करना, दूसरे देवी-देवताओं अर्थात् तीनों गुणों (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिव) की नहीं। गीता जी के अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 1 से 4 :--

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 1

ऊर्ध्वमूलम्, अधःशाखम्, अश्वत्थम्, प्राहुः, अव्ययम्,
छन्दांसि, यस्य, पर्णानि, यः, तम्, वेद, सः, वेदवित्।।1।।

अनुवाद : ऊपर को जड़ वाला नीचे को शाखा वाला अविनाशी विस्तृत संसार रूपी पीपल का वृक्ष है, जिसके छोटे-छोटे हिस्से या टहनियाँ, पत्ते कहे हैं, उस संसार रूप वृक्ष को जो इस प्रकार जानता है। वह पूर्ण ज्ञानी अर्थात् तत्वदर्शी है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 2

अधः, च, ऊर्ध्वम्, प्रसृताः, तस्य, शाखाः, गुणप्रवृद्धाः, विषयप्रवालाः,
अधः, च, मूलानि, अनुसन्ततानि, कर्मानुबन्धीनि, मनुष्यलोके।।2।।

अनुवाद : उस वृक्षकी नीचे और ऊपर तीनों गुणों ब्रह्मा-रजगुण, विष्णु-सतगुण, शिव-तमगुण रूपी फैली हुई विकार काम क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार रूपी कोपल डाली ब्रह्मा, विष्णु, शिव ही जीवको कर्मोंमें बाँधने की भी जड़ें अर्थात् मूल कारण हैं तथा मनुष्यलोक, स्वर्ग, नरक लोक पृथ्वी लोक में नीचे (चौरासी लाख जूनियों में) ऊपर व्यस्थित किए हुए हैं।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 3

न, रूपम्, अस्य, इह, तथा, उपलभ्यते, न, अन्तः, न, च, आदिः, न, च,
सम्प्रतिष्ठा, अश्वत्थम्, एनम्, सुविरूढमूलम्, असङ्गशस्त्रेण, दृढेन, छित्वा।।3।।

अनुवाद : इस रचना का न शुरूवात तथा न अन्त है न वैसा स्वरूप पाया जाता है तथा यहाँ विचार काल में अर्थात् मेरे द्वारा दिया जा रहा गीता ज्ञान में पूर्ण जानकारी मुझे भी नहीं है क्योंकि सर्वब्रह्मण्डों की रचना की अच्छी तरह स्थिति का मुझे भी ज्ञान नहीं है इस अच्छी तरह स्थाई स्थिति वाला मजबूत स्वरूपवाले निर्लेप तत्वज्ञान रूपी दृढ़ शस्त्र से अर्थात् निर्मल तत्वज्ञान के द्वारा काटकर अर्थात् निरंजन की भक्ति को क्षणिक जानकर। (3)

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 4

ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं यस्मिन्गता न निवर्तन्ति भूयः।
तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये यतः प्रतृत्ति प्रसृता पुराणी।।4।।

अनुवाद : उसके बाद उस परमपद परमात्मा की खोज करनी चाहिये।

जिसको प्राप्त हुए मनुष्य फिर लौटकर संसारमें नहीं आते और जिससे अनादिकालसे चली आनेवाली यह सृष्टि विस्तारको प्राप्त हुई है, उस आदि पुरुष परमात्माके ही मैं शरण हूँ।

इस प्रकार स्वयं भगवान श्री कृष्ण ने इन्द्र जो देवी-देवताओं का राजा है कि पूजा भी छुड़वा कर उस परमात्मा की भक्ति करने के लिए ही प्रेरणा दी थी। जिस कारण उन्होंने गोवर्धन पर्वत को उठाकर इन्द्र के कोप से ब्रजवासियों की रक्षा की।

गरीब, इन्द्र चढ़ा ब्रिज डुबोवन, भीगा भीत न लेव।
इन्द्र कढाई होत जगत में, पूजा खा गए देव।।
कबीर, इस संसार को, समझाऊँ कै बार।
पूँछ जो पकड़ै भेढ की, उतरा चाहै पार।।

5. गुरु आज्ञा का पालन :-- गुरुदेव जी की आज्ञा के बिना घर में किसी भी प्रकार का धार्मिक अनुष्ठान नहीं करवाना है। जैसे बन्दी छोड़ अपनी वाणी में कहते हैं कि :- "गुरु बिन यज्ञ हवन जो करहीं, मिथ्या जावे कबहु नहीं फलहीं।"

कबीर, गुरु बिन माला फेरते, गुरु बिन देते दान।
गुरु बिन दोनों निष्फल हैं, पूछो वेद पुराण।।

6. माता मसानी पूजना निषेध :-- आपने खेत में बनी मंढी या किसी खेड़े आदि की या किसी अन्य देवता की समाध नहीं पूजनी है। समाध चाहे किसी की भी हो बिल्कुल नहीं पूजनी है। अन्य कोई उपासना नहीं करनी है। यहाँ तक कि तीनों गुणों (ब्रह्मा, विष्णु, शिव) की पूजा भी नहीं करनी है। केवल गुरु जी के बताए अनुसार ही करना है।

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 15

न, माम्, दुष्कृतिनः, मूढाः, प्रपद्यन्ते, नराधमाः,
मायया, अपहृतज्ञानाः, आसुरम्, भावम्, आश्रिताः ।।

अनुवाद : मायाके द्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है ऐसे आसुर स्वभावको धारण किये हुए मनुष्य नीच दुषित कर्म करनेवाले मूर्ख मुझको नहीं भजते अर्थात् वे तीनों गुणों (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिव) की साधना ही करते रहते हैं।

कबीर, माई मसानी शेढ शीतला, भैरव भूत हनुमंत। परमात्मा उनसे दूर है, जो इनको पूजंत।।
कबीर, सौ वर्ष तो गुरु की सेवा, एक दिन आन उपासी। वो अपराधी आत्मा, परै काल की फांसी।।
गुरु को तजै भजै जो आना। ता पसुवा को फोकट ज्ञाना।।

7. संकट मोचन कबीर साहेब हैं :-- कर्म कष्ट (संकट) होने पर कोई अन्य ईष्ट देवता की या माता मसानी आदि की पूजा कभी नहीं करनी है। न किसी प्रकार की बुझा पड़वानी है। केवल बन्दी छोड़ कबीर साहिब को पूजना है जो सभी दुःखों को हरने वाले संकट मोचन हैं।

सामवेद संख्या न. 822 उतार्चिक अध्याय 3 खण्ड न. 5 श्लोक न. 8 (संत रामपाल दास द्वारा भाषा-भाष्य):-

मनीषिभिः पवते पूर्व्यः कविर्नृभिर्यतः परि कोशां असिष्यदत्।

त्रितस्य नाम जनयन्मधु क्षरन्निन्द्रस्य वायुं सख्याय वर्धयन्।।8।।

हिन्दी :-सनातन अर्थात् अविनाशी कबीर परमेश्वर हृदय से चाहने वाले श्रद्धा से भक्ति करने वाले भक्तात्मा को तीन मन्त्र उपेदश देकर पवित्र करके जन्म व मृत्यु से रहित करता है तथा उसके प्राण अर्थात् जीवन-स्वांसों को जो संस्कारवश अपने मित्र अर्थात् भक्त के गिनती के डाले हुए होते हैं को अपने भण्डार से पूर्ण रूप से बढ़ाता है। जिस कारण से परमेश्वर के वास्तविक आनन्द को अपने आशीर्वाद प्रसाद से प्राप्त करवाता है।

कबीर, देवी देव ठाढे भये, हमको ठौर बताओ। जो मुझ(कबीर) को पूजैं नहीं, उनको लूटो खाओ।।
कबीर, काल जो पीसै पीसना, जोरा है पनिहार। ये दो असल मजूर हैं, सतगुरु के दरबार।।

8. अनावश्यक दान निषेध :- कहीं पर और किसी को दान रूप में कुछ नहीं देना है। न पैसे, न बिना सिला हुआ कपड़ा आदि कुछ नहीं देना है। यदि कोई दान रूप में कुछ मांगने आए तो उसे खाना खिला दो, चाय, दूध, लस्सी, पानी आदि पिला दो परंतु देना कुछ भी नहीं है। न जाने वह भिक्षुक उस पैसे का क्या दुरूपयोग करे। जैसे एक व्यक्ति ने किसी भिखारी को उसकी झूठी कहानी जिसमें वह बता रहा था कि मेरे बच्चे ईलाज बिना तड़फ रहे हैं। कुछ पैसे देने की कृपा करें को सुनकर भावनावस होकर 100 रु दे दिए। वह भिखारी पहले पाव शराब पीता था उस दिन उसने आधा बोतल शराब पीया और अपनी पत्नी को पीट डाला। उसकी पत्नी ने बच्चों सहित आत्म हत्या कर ली। आप द्वारा किया हुआ वह दान उस परिवार के नाश का कारण बना। यदि आप चाहते हो कि ऐसे दुःखी व्यक्ति की मदद करें तो उसके बच्चों को डॉक्टर से दवाई दिलवा दें, पैसा न दें।

कबीर, गुरु बिन माला फेरते, गुरु बिन देते दान। गुरु बिन दोनों निष्फल हैं, पूछो वेद पुरान।।

9. झूठा खाना निषेध :-- ऐसे व्यक्ति का झूठा नहीं खाना है जो शराब, मांस, तम्बाखु, अण्डा, बीयर, अफीम, गांजा आदि का सेवन करता हो।

10. सत्यलोक गमन (देहान्त) के बाद क्रिया-कर्म निषेध :- यदि परिवार में किसी की मौत हो जाती है, चिता में अग्नि कोई भी दे सकता है, घर का या अन्य तथा अग्नि प्रज्वलित करते समय मंगलाचरण बोल दें। तो उसके फूल आदि कुछ नहीं उठाने हैं, यदि उस स्थान को साफ करना अनिवार्य है तो उन अस्थियों को उठाकर स्वयं ही किसी स्थान पर चलते पानी में बहा दें। उस समय मंगलाचरण उच्चारण कर दें। न पिंड आदि भरवाने हैं, न तेराहमी, छः माही, बरसोधी, पिंड भी नहीं भरवाने हैं तथा श्राद्ध आदि कुछ नहीं करना है। किसी भी अन्य व्यक्ति से हवन आदि नहीं करवाना है। सम्बन्धी तथा रिश्तेदारों आदि जो शोक व्यक्त करने आए उनके लिए कोई भी एक दिन नियुक्त करें। उस दिन प्रतिदिन करने वाला नित्य नियम करें, ज्योति जागृत करें, फिर सर्व को खाना खिलाऐं। यदि आपने उसके (मरने वाले के) नाम पर कुछ धर्म करना है तो अपने गुरुदेव जी की आज्ञा ले कर बन्दी छोड़ गरीबदास जी महाराज की अमृतमयी वाणी का अखण्ड पाठ करवाना चाहिए। यदि पाठ करने की आज्ञा न मिले तो परिवार के उपदेशी भक्त चार दिन या सात दिन घर

में एक अखण्ड जोत देशी घी की जलाऐ तथा ब्रह्म गायत्री मन्त्र प्रतिदिन चार बार करें तथा तीन या एक बार के मन्त्र का दान संकल्प सतलोक वासी को करें। जैसा उचित समझे एक, दो, तीन तक मन्त्र के जाप का फल उसे दान करें। प्रतिदिन की तरह ज्योति व आरती, नाम स्मरण करते रहना है, यह याद रखते हुए किः-

कबीर, साथी हमारे चले गए, हम भी चालन हार। कोए कागज में बाकी रह रही, ताते लाग रही वार।।
कबीर, देह पड़ी तो क्या हुआ, झूठा सभी पटीट। पक्षी उड़या आकाश कूं, चलता कर गया बीट।।

''कर्म काण्ड के विषय में सत्य कथा''

मेरे (संत रामपाल दास के) पूज्य गुरूदेव स्वामी राम देवानन्द जी महाराज को सोलह वर्ष की आयु में किसी महात्मा के सत्संग सुनने से वैराग हो गया था। एक दिन वे खेतों में गये हुए थे। पास में ही वन था। वे वन में जाकर किसी मृत जानवर की हड्डियों के पास अपने कपड़े फाड़कर फैंक जाते हैं और स्वयं महात्मा जी के साथ चले जाते हैं।

जब उनकी खोज हुई तो उनके घर वालों ने देखा कि वन में हड्डियों के पास फटे हुए कपड़े पड़े हैं तो उन्होंने सोचा कि किसी जंगली जानवर ने उन्हें खा लिया है। उन कपड़ों तथा हड्डियों को उठा कर घर पर ले आते हैं और अंतिम संस्कार कर देते हैं। उसके बाद तेरहवीं तथा छःमाही करते हैं और फिर श्राद्ध शुरू हो जाते हैं।

जब मेरे पूज्य गुरूदेव बहुत वृद्ध हो चुके थे तो वे एक बार घर पर गये। तब उन घर वालों को यह पता चला कि ये जीवित हैं और घर छोड़कर चले गये थे। उन्होंने बताया कि जब ये घर छोड़कर चले गये थे तो इनकी खोज हुई। वन में इनके कपड़े मिले। उनके पास कुछ हड्डियाँ पड़ी थी। तो हमने सोचा कि किसी जंगली जानवर ने इनको खा लिया है और उन कपड़ों तथा हड्डियों को घर पर लाकर अंतिम संस्कार कर दिया।

फिर मैंने (संत रामपाल दास ने) मेरे पूज्य गुरूदेव के छोटे भाई की पत्नी से पूछा कि जब हमारे पूज्य गुरूदेव घर छोड़कर चले गये थे तो तुमने पीछे से क्या किया? उसने बताया कि जब मैं ब्याही आई थी तो उस समय मुझे इनके श्राद्ध निकलते मिले थे। मैं अपने हाथों से इनके लगभग 70 श्राद्ध निकाल चुकी हूँ। उसने बताया कि जब घर में कोई नुकसान हो जाता था जैसे कि भैंस का दूध न देना, थन में खराबी आ जाना, कोई और नुकसान हो जाना आदि तो हम स्यानों के पास बूझा पड़वाने के लिए जाते थे तो वे कहते थे कि तुम्हारें घर में कोई निःसन्तान (अनमैरिड) मरा हुआ है। तुम्हारे को वह दुःखी कर रहा है। फिर हम उसके कपड़े आदि देते हैं।

तब मैंने कहा कि ये तो दुनिया का उद्धार कर रहे हैं। ये किसको दुःख दे रहे थे। ये तो अब सुख दाता हैं। फिर मैंने (सन्त रामपाल जी महाराज ने) उस वृद्धा से कहा कि अब तो ये आपके सामने हैं, अब तो ये व्यर्थ की साधना जैसे श्राद्ध निकालने बंद कर दो। तब उसने कहा कि यह तो पुरानी रिवाज है, यह कैसे छोड़ दूं? अर्थात् हम अपनी पुरानी रिवाजों में इतने लीन हो चुके हैं कि प्रत्यक्ष प्रमाण होने पर कि वह

गलत कर रहे हैं छोड़ नहीं सकते। इससे प्रमाणित होता है कि श्राद्ध निकालना, पितर पूजा करना आदि सब व्यर्थ हैं।

11. बच्चे के जन्म पर शास्त्र विरूद्ध पूजा निषेध :-- बच्चे के जन्म पर कोई छटी आदि नहीं मनानी है। सुतक के कारण प्रतिदिन की तरह करने वाली पूजा, भक्ति, आरती, ज्योति जगाना आदि बंद नहीं करनी है।

इसी संदर्भ में एक संक्षिप्त कथा बताता हूँ कि एक व्यक्ति की शादी के दस वर्ष पश्चात् पुत्र हुआ था। पुत्र की खुशी में उसने बहुत ही खुशी मनाई। बीस-पच्चीस गाँवों को भोजन के लिए आमन्त्रित किया और बहुत ही गाना-बजाना हुआ अर्थात् काफी पैसा खर्च किया। फिर एक वर्ष के बाद उस पुत्र का देहान्त हो जाता है। फिर वही परिवार टक्कर मार कर रोता है और अपने दुर्भाग्य को कोसता है। इसलिए कबीर साहेब हमें बताते हैं कि :-

कबीर, बेटा जाया खुशी हुई, बहुत बजाये थाल। आना जाना लग रहा, ज्यों कीड़ी का नाल।।
कबीर, पतझड़ आवत देख कर, बन रोवै मन माहिं। ऊंची डाली पात थे, अब पीले हो हो जाहिं।।
कबीर, पात झड़ंता यूं कहै, सुन भई तरूवर राय। अब के बिछुड़े नहीं मिला, न जाने कहां गिरेंगे जाय।
कबीर, तरूवर कहता पात से, सुनों पात एक बात। यहाँ की याहे रीति है, एक आवत एक जात।।

12. देई धाम पर बाल उतरवाने जाना निषेध :-- बच्चे के किसी देई धाम पर बाल उतरवाने नहीं जाना है। जब देखो बाल बड़े हो गए, कटवा कर फैंक दो। एक मन्दिर में देखा कि श्रद्धालु भक्त अपने लड़के या लड़कियों के बाल उतरवाने आए। वहाँ पर उपस्थित नाई ने बाहर के रेट से तीन गुना पैसे लीये और एक कैंची भर बाल काट कर मात-पिता को दे दिए। उन्होंने श्रद्धा से मन्दिर में चढ़ाए। पुजारी ने एक थैले में डाल लिए। रात्री को उठा कर दूर एकांत स्थान पर फैंक दिए। यह केवल नाटक बाजी है। क्यों न पहले की तरह स्वाभाविक तरीके से बाल उतरवाते रहें तथा बाहर डाल दें। परमात्मा नाम से प्रसन्न होता है पाखण्ड से नहीं।

13. नाम जाप से सुख :-- नाम (उपदेश) को केवल दुःख निवारण की दृष्टि कोण से नहीं लेना चाहिए बल्कि आत्म कल्याण के लिए लेना चाहिए। फिर सुमिरण से सर्व सुख अपने आप आ जाते हैं।

''कबीर, सुमिरण से सुख होत है, सुमिरण से दुःख जाए।
कहैं कबीर सुमिरण किए, सांई माहिं समाय।।''

14. व्याभीचार निषेध :-- पराई स्त्री को माँ-बेटी-बहन की दृष्टि से देखना चाहिए। व्याभीचार महापाप है। जैसे :--

गरीब, पर द्वारा स्त्री का खोलै। सत्तर जन्म अन्धा हो डोलै।।सुरापान मद्य मांसाहारी। गवन करें भोगैं पर नारी।। सत्तर जन्म कटत हैं शीशं। साक्षी साहिब है जगदीशं।। पर नारी ना परसियों, मानो वचन हमार। भवन चर्तुदश तास सिर, त्रिलोकी का भार।। पर नारी ना परसियो, सुनो शब्द सलतंत। धर्मराय के खंभ से, अर्धमुखी लटकंत।।

15. निन्दा सुनना व करना निषेध :-- अपने गुरु की निंदा भूल कर भी न करें और न ही सुनें। सुनने से अभिप्राय है यदि कोई आपके गुरु जी के बारे में मिथ्या बातें

करें तो आपने लड़ना नहीं है बल्कि यह समझना चाहिए कि यह बिना विचारे बोल रहा है अर्थात् झूठ कह रहा है।

गुरु की निंदा सुनै जो काना। ताको निश्चय नरक निदाना।।
अपने मुख निंदा जो करहीं। शुकर श्वान गर्भ में परहीं।।

निन्दा तो किसी की भी नहीं करनी है और न ही सुननी है। चाहे वह आम व्यक्ति ही क्यों न हो। कबीर साहेब कहते हैं कि -

"तिनका कबहू न निन्दीये, जो पांव तले हो। कबहु उठ आखिन पड़े, पीर घनेरी हो।।"

16. गुरु दर्श की महिमा :-- सतसंग में समय मिलते ही आने की कोशिश करे तथा सतसंग में नखरे (मान-बड़ाई) करने नहीं आवे। अपितु अपने आपको एक बीमार समझ कर आवे। जैसे बीमार व्यक्ति चाहे कितने ही पैसे वाला हो, चाहे उच्च पदवी वाला हो जब हस्पताल में जाता है तो उस समय उसका उद्देश्य केवल रोग मुक्त होना होता है। जहाँ डॉक्टर लेटने को कहे लेट जाता है, बैठने को कहे बैठ जाता है, बाहर जाने का निर्देश मिले बाहर चला जाता है। फिर अन्दर आने के लिए आवाज आए चुपके से अन्दर आ जाता है। ठीक इसी प्रकार यदि आप सतसंग में आते हो तो आपको सतसंग में आने का लाभ मिलेगा अन्यथा आपका आना निष्फल है। सतसंग में जहाँ बैठने को मिल जाए वहीं बैठ जाए, जो खाने को मिल जाए उसे परमात्मा कबीर साहिब की रजा से प्रसाद समझ कर खा कर प्रसन्न चित्त रहे।

कबीर, संत मिलन कूं चालिए, तज माया अभिमान। जो–जो कदम आगे रखे, वो ही यज्ञ समान।।
कबीर, संत मिलन कूं जाईए, दिन में कई–कई बार। आसोज के मेह ज्यों, घना करे उपकार।।
कबीर, दर्शन साधु का, परमात्मा आवै याद। लेखे में वोहे घड़ी, बाकी के दिन बाद।।
कबीर, दर्शन साधु का, मुख पर बसै सुहाग। दर्श उन्हीं को होत हैं, जिनके पूर्ण भाग।।

17. गुरु महिमा :-- यदि कहीं पर पाठ या सतसंग चल रहा हो या वैसे गुरु जी के दर्शनार्थ जाते हों तो सर्व प्रथम गुरु जी को दण्डवत्(लम्बा लेट कर) प्रणाम करना चाहिए बाद में सत ग्रन्थ साहिब व तसवीरें जैसे साहिब कबीर की मूर्ति - गरीबदास जी की व स्वामी राम देवानन्द जी व गुरु जी की मूर्ति को प्रणाम करें जिससे सिर्फ भावना बनी रहेगी। मूर्ति पूजा नहीं करनी है। केवल प्रणाम करना पूजा में नहीं आता यह तो भक्त की श्रद्धा को बनाए रखने में सहयोग देता है। पूजा तो वक्त गुरु व नाम मन्त्र की करनी है जो पार लगाएगा।

कबीर, गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागुं पाय।
बलिहारी गुरु आपने, जिन गोविन्द दियो मिलाय।।
कबीर, गुरु बड़े हैं गोविन्द से, मन में देख विचार। हरि सुमरे सो रह गए, गुरु भजे होय पार।।
कबीर, हरि के रूठतां, गुरु की शरण में जाय।कबीर गुरु जै रूठजां, हरि नहीं होत सहाय।।
कबीर, सात समुन्द्र की मसि करूं, लेखनि करूं बनिराय।
धरती का कागज करूं, तो गुरु गुन लिखा न जाय।।

18. माँस भक्षण निषेध :--अण्डा व मांस भक्षण व जीव हिंसा नहीं करनी है। यह महापाप होता है। जैसे साहेब कबीर जी महाराज व गरीबदास जी महाराज ने बताया है:-

कबीर, जीव हने हिंसा करे, प्रकट पाप सिर होय। निगम पुनि ऐसे पाप तें, भिस्त गया नहिं कोय।।1।।
कबीर, तिलभर मछली खायके, कोटि गऊ दे दान। काशी करौंत ले मरे, तो भी नरक निदान।।2।।
कबीर, बकरी पाती खात है, ताकी काढी खाल। जो बकरीको खात है, तिनका कौन हवाल।।3।।
कबीर, गला काटि कलमा भरे, कीया कहै हलाल। साहब लेखा मांगसी, तब होसी कौन हवाल।।4।।
कबीर, दिनको रोजा रहत हैं, रात हनत हैं गाय। यह खून वह वंदगी, कहुं क्यों खुशी खुदाय।।5।।
कबीर, कबिरा तेई पीर हैं, जो जानै पर पीर। जो पर पीर न जानि है, सो काफिर बेपीर।।6।।
कबीर, खूब खाना है खीचडी, मांहीं परी टुक लौन। मांस पराया खायकै, गला कटावै कौन।।7।।
कबीर, मुसलमान मारैं करदसो, हिंदू मारैं तरवार। कहै कबीर दोनूं मिलि, जैहैं यमके द्वार।।8।।
कबीर, मांस अहारी मानव, प्रत्यक्ष राक्षस जानि। ताकी संगति मति करै, होइ भक्ति में हानि।।9।।
कबीर, मांस खांय ते ढेड़ सब, मद पीवैं सो नीच। कुलकी दुरमति पर हरै, राम कहै सो ऊंच।।10।।
कबीर, मांस मछलिया खात हैं, सुरापान से हेत। ते नर नरकै जाहिंगे, माता पिता समेत।।11।।
गरीब, जीव हिंसा जो करते हैं, या आगे क्या पाप। कंटक जुनी जिहान में, सिंह भेड़िया और सांप।।
झोटे बकरे मुरगे ताई। लेखा सब ही लेत गुसाईं।। मृग मोर मारे महमंता। अचरा चर हैं जीव अनंता।।

जिह्वा स्वाद हिते प्राना। नीमा नाश गया हम जाना।।
तीतर लवा बुटेरी चिड़िया। खूनी मारे बड़े अगड़िया।।
अदले बदले लेखे लेखा। समझ देख सुन ज्ञान विवेका।।
गरीब, शब्द हमारा मानियो, और सुनते हो नर नारि।
जीव दया बिन कुफर है, चले जमाना हारि।।

अनजाने में हुई हिंसा का पाप नहीं लगता। बन्दी छोड़ कबीर साहिब कहते हैं :

''इच्छा कर मारै नहीं, बिन इच्छा मर जाए। कहैं कबीर तास का, पाप नहीं लगाए।।''

19. गुरु द्रोही का सम्पर्क निषेध :-- यदि कोई भक्त गुरु जी से द्रोह (गुरु जी से विमुख हो जाता है) करता है वह महापाप का भागी हो जाता है। यदि किसी को मार्ग अच्छा न लगे तो अपना गुरु बदल सकता है। यदि वह पूर्व गुरु के साथ बैर व निन्दा करता है तो वह गुरु द्रोही कहलाता है। ऐसे व्यक्ति से भक्ति चर्चा करने में उपदेशी को दोष लगता है। उसकी भक्ति समाप्त हो जाती है।

गरीब, गुरु द्रोही की पैड़ पर, जे पग आवै बीर। चौरासी निश्चय पड़ै, सतगुरु कहैं कबीर।।
कबीर, जान बुझ साची तजै, करै झूठे से नेह। जाकी संगत हे प्रभु, स्वपन में भी ना देह।।

अर्थात् गुरु द्रोही के पास जाने वाला भक्ति रहित होकर नरक व लख चौरासी जूनियों में चला जाएगा।

20. जुआ निषेध :-- जुआ-ताश कभी नहीं खेलना चाहिए।

कबीर, मांस भखै और मद पिये, धन वेश्या सों खाय। जूआ खेलि चोरी करै, अंत समूला जाय।।

21. नाच-गान निषेध :-- किसी भी प्रकार के खुशी के अवसर पर नाचना व अश्लील गाने गाना भक्ति भाव के विरूद्ध है। जैसे एक समय एक विधवा बहन किसी खुशी के अवसर पर अपने रिश्तेदार के घर पर गई हुई थी। सभी खुशी के साथ नाच-गा रहे थे परंतु वह बहन एक तरफ बैठ कर प्रभु चिंतन में लगी हुई थी। फिर उनके रिश्तेदारों ने उससे पूछा कि आप ऐसे क्यों निराश बैठे हो? आप भी हमारे की

तरह नाचों, गाओ और खुशी मनाओ। इस पर वह बहन कहती है कि किस की खुशी मनाऊँ? मुझ विधवा का एक ही पुत्र था वह भी भगवान को प्यारा हो चुका है। अब क्या खुशी है मेरे लिए? ठीक इसी प्रकार इस काल के लोक में प्रत्येक व्यक्ति की स्थिति है। यहाँ पर गुरु नानक देव जी की वाणी है कि :-

ना जाने काल की कर डारै, किस विधि ढल पासा वे।
जिन्हादे सिर ते मौत खुड़गदी, उन्हानूं केड़ा हांसा वे।।
साध मिलें साडी शादी (खुशी) होंदी, बिछड़ दां दिल गिरि (दुःख) वे।
अखदे नानक सुनो जिहाना, मुश्किल हाल फकीरी वे।।

कबीर साहेब जी महाराज भी कहते हैं कि :--

कबीर, झूठे सुख को सुख कहै, मान रहा मन मोद।
सकल चबीना काल का, कुछ मुख में कुछ गोद।।
कबीर, बेटा जाया खुशी हई, बहुत बजाये थाल।
आवण जाणा लग रहा, ज्यों कीड़ी का नाल।।

विशेष :- स्त्री तथा पुरूष दोनों ही परमात्मा प्राप्ति के अधिकारी हैं। स्त्रियों को मासिक धर्म (Maінces) के दिनों में भी अपनी दैनिक पूजा, ज्योति लगाना आदि बन्द नहीं करना चाहिए, न ही किसी के देहान्त या जन्म पर भी दैनिक पूजा कर्म बन्द नहीं करना है।

नोट :-- जो भक्तजन इन इक्कीस सुत्रीय आदेशों का पालन नहीं करेगा उसका नाम समाप्त हो जाएगा। यदि अनजाने में कोई गलती हो भी जाती है तो वह माफ हो जाती है और यदि जान बुझकर कोई गलती की है तो वह भक्त नाम रहित हो जाता है। इसका समाधान यही है कि गुरुदेव जी से क्षमा याचना करके दोबारा नाम उपदेश लेना होगा।

लेखक
संत रामपाल दास महाराज
सतलोक आश्रम, बरवाला
जिला-हिसार, हरियाणा (भारत)

''शास्त्रानुकूल भक्ति से हुए भक्तों को लाभ''

''उजड़ा परिवार बसा''

मैं भक्त रमेश पुत्र श्री उमेद सिंह, गाँव-पेटवाड़, त. हांसी, जिला हिसार का रहने वाला हूँ अब एम्पलाईज कॉलोनी, जेल के सामने जीन्द में सपरिवार रहता हूँ।

नाम लेने से पहले हम भूतों की पूजा करते थे। हमारे गाँव में बाबा सरिया की मान्यता थी, जिस पर हम प्रत्येक महीने की पूर्णिमा को ज्योति लगाने जाते थे। हम शुक्रवार, जन्माष्टमी, शिवरात्री का व्रत भी करते थे। पित्तरों का पिंड दान और श्राद्ध भी निकालते थे। फिर भी हमारा घर बिल्कुल उजड़ चुका था। जब मैं बारह वर्ष का था तब मेरे पिता जी की मृत्यु हो गई थी। घर में तीन सदस्य थे, तीनों की आपस में लड़ाई रहती थी, तीनों को भूत-प्रेत बहुत दुःखी किया करते थे और तीनों बहुत ज्यादा बीमार रहते थे। पहले डाक्टरों को दिखाया पर कोई आराम नहीं हुआ, फिर सेवड़ों के पास गए, कोई कहता तुम 5000 रूपये दे दो मैं तुम्हें बिल्कुल ठीक कर दूँगा, कोई कहता तुम 10000 रूपये दे दो।

हम बिल्कुल उजड़ चुके थे। परन्तु कोई आराम नहीं हुआ। मेरे रिश्तेदार भक्त रघुबीर सिंह गाँव कौंथ कलां, वाले के बार-2 कहने से मेरी माता जी ने सन् 1996 में संत रामपाल जी महाराज से नाम ले लिया। मेरी पत्नी को पाँच वर्ष उपरांत भी कोई संतान उत्पन्न नहीं हुई थी। मेरी माता जी के कहने से मेरी पत्नी ने भी संत रामपाल जी महाराज से नाम ले लिया। नाम दान लेते ही वर्ष के अन्दर मेरी पत्नी ने एक लड़के को जन्म दिया। मेरा भगवान से विश्वास उठ चुका था। इस कारण मैंने नाम नहीं लिया तथा अपनी माता व पत्नी को भी संत जी के पास जाने से मना करता था। मेरा लड़का जो पंद्रह दिन का था, बहुत ज्यादा बीमार हो गया। डाक्टरों ने कह दिया कि यह लड़का सुबह तक मर जायेगा, इसे ले जाओ। शाम को एक भक्त ने बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज के बारे में बताया कि आश्रम जीन्द में आए हैं वे पूर्ण संत हैं और वे ही इस बच्चे को ठीक कर सकते हैं। हम डाक्टरों और सेवड़ों के पास जा-जाकर थक चुके थे। मेरा भगवान से विश्वास उठ गया था। मैंने उस भक्त को मना कर दिया। किंतु उसने दोबारा फिर प्रार्थना की कि वे स्वयं बन्दी छोड़ भगवान ही धरती पर आए हुए हैं। यदि वे दया कर दें तो यह लड़का ठीक हो सकता है। उस भक्त के इतने विश्वास के साथ कहने पर मैंने अपनी माता जी को अनुमति दे दी। मेरी माँ ने लड़के को ले जाकर सतगुरु रामपाल जी महाराज के चरणों में रख दिया और रोते हुए प्रार्थना की कि महाराज जी यह बच्चा मर चुका है। अब आप ही इसे ठीक कर सकते हैं। तब बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज ने कहा कि कबीर परमेश्वर की रजा से यह ठीक हो जाएगा। अगले दिन जब बच्चे को मरना था वह ठीक हो गया।

हमारा उजड़ा हुआ घर बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज की कृपा से दोबारा बस गया। इतना चमत्कार देखकर भी पाप कर्मों की वजह से मैंने नाम नहीं

लिया और पूर्व वाली पूजा तथा भूतों की पूजा ही करता रहा। हमारे घर पर बन्दी छोड़ गरीबदास जी महाराज की वाणी का पाठ संत रामपाल जी महाराज करते थे और मैं बाहर जाकर शराब पीता था। फिर एक वर्ष बाद एक दिन हमारे घर पाठ हो रहा था तब शाम को बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज ने सत्संग किया। तब मैंने सत्संग सुना और नाम भी ले लिया। फिर हमारे घर में दुःख नाम की चीज नहीं रही। मेरी माता जी ने किसी के बहकावे में आकर नाम खण्डित कर दिया। कुछ समय पश्चात सन् 2000 में मेरी माँ को अचानक पैर में जलन होने लगी। डाक्टरों को दिखाया। उन्होंने बताया कि इसे ब्लड़ कैंसर है। यह दस-पंद्रह दिन में मर जायेगी। अगर पी.जी.आई. चण्डीगढ़ में ले जाओ तो वहाँ डेढ़ लाख रूपये लग कर यह ज्यादा से ज्यादा एक साल तक जीवित रह सकती है। परन्तु दर्द कम नहीं होगा। बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज ने बताया कि आपकी माता जी ने नाम खंडित कर दिया है। जैसे बिजली का बिल न भरने से कनेक्शन कट जाने से विद्युत से मिलने वाला लाभ बंद हो जाता है। उसे फिर सुचारु करवाना पड़ता है। मेरी माता जी ने अपनी गलती की क्षमा याचना की। महाराज जी ने दोबारा नाम दिया तथा सिर पर हाथ रखा। सिर पर हाथ रखते ही पैर की जलन व दर्द बन्द हो गया। फिर लगभग दो वर्ष के बाद जाड़ पड़वाने की वजह से जाड़ में से खून निकलने लगा। डाक्टर ने दवाई दी और टांके भी लगाए, परन्तु खून निकलना बंद नहीं हुआ। फिर डॉक्टर ने इसकी बीमारी चैक की और बताया कि इसे ब्लड कैंसर है और अब वह फूट चुका है। अब यह ठीक नहीं हो सकती। इसे घर ले जाओ। यह खून निकलने से दो दिन में मर जायेगी। फिर अगले दिन इसके पेशाब और लैटरिंग में से भी खून आना शुरु हो गया। तब मैंने सतगुरु रामपाल जी महाराज को फोन से बताया कि डाक्टर ने कहा है कि ये दो दिन में मर जायेगी। तब सतगुरु रामपाल जी महाराज ने कहा कि बन्दी छोड़ जो करेंगे ठीक करेंगे। फिर अगली रात को दो बजे यमदूत उसे लेने के लिए आए। मेरी माँ ने कहा कि तेरे पिता जी (वे दस वर्ष पहले गुजर चुके थे) मुझे लेने के लिए आये हुए हैं। इतना कहते-कहते वह यमदूत मेरी माँ के अन्दर प्रवेश कर गया और कहने लगा कि मैं इसे लेकर जाऊँगा, इसका समय पूरा हो चुका है। मेरे को चाय पिलाओ। तब हमने उसके लिए चाय बनाने के लिए रखी ही थी, इतने में वह यमदूत कहने लगा कि पता नहीं तुम्हारे घर में कितनी बड़ी शक्ति है, वह मुझे मार रही है, मैं यहाँ और नहीं रूक सकता, मुझे जल्दी से चाय पिलाओ, मैं जा रहा हूँ और गर्म चाय ही पी गया। जाते हुए कहने लगा कि तुम्हारे घर में पूर्ण परमात्मा खड़े हैं। मैं इसे नहीं ले जा सकता, यह कहते हुए वह चला गया। एक मिनट के बाद ही खून बिल्कुल बंद हो गया, जीभ और दाँत जो काले हो चुके थे, बिल्कुल साफ हो गए और बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज की कृपा से वह पूरी तरह से पहले से भी स्वस्थ हो गई। परमात्मा कबीर साहेब जी ने मेरी माता जी की पाँच वर्ष आयु बढ़ा दी। 24 जुलाई 2005 को सत्य भक्ति करके सतलोक प्रस्थान

किया। बोलो बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज की जय। सत साहेब।

''गुर्दे ठीक करना व शैतान को इंसान बनाना''

मैं भक्त जगदीश पुत्र श्री प्रभुराम, गाँव-पंजाब खोड़, दिल्ली-81 । डी. टी. सी. (दिल्ली ट्रांस्पोर्ट कॉर्पोरेशन) में मकैनिक हूँ। मुझे शराब ने राक्षस वृत्ति का इन्सान बना दिया था। शराब पीना, मुर्गे खाना, सिगरेट पीना, हुक्का पीना।

मैं नौकरी से शाम को लगभग 7 या 8 बजे आता था। कई बार घर आने में शराब ज्यादा पीने पर 9 या 10 भी बज जाते थे। शराब में पागल हुए एक बार इधर एक बार उधर लड़खड़ाते हुए पैरों से घर में घुसता था। आते ही पत्नी व बच्चों को पीटना शुरु कर देना, हर रोज घर में कहर होता था। जिन बच्चों को प्यार के साथ अपनी छाती से लगाना चाहिए था वे मासूम बच्चे मुझको देखकर चारपाई के नीचे घुस जाते थे। बच्चे अपने पिता जी के घर आने की राह देखते हैं कि पापा जी आएगें, हमारे लिए खाने की चीजें लाएगें। परन्तु मैं खाने की चीजों की बजाय शराब में पागल हुए लाल आँखों से उनको मारने लग जाता था।

दूसरी तरफ मेरी धर्मपत्नी सुमित्रा देवी भी अपने दुःखी जीवन के साथ खतरनाक बीमारी से जूझती हुई स्वांस पूरे कर रही थी। उसके दोनों गुर्दे खराब हो चुके थे। डॉक्टरों ने कह दिया था कि दवाई खाते रहो। लेकिन छः महीने से ज्यादा यह जीवित नहीं रह सकती। ऑल इंडिया मैडीकल और डॉ. राम मनोहर लोहिया हॉस्पिटल दिल्ली से भी यह रिपोर्ट मिली कि गुर्दे खराब हो चुके हैं और यह छः महीने से ज्यादा जीवित नहीं रह सकती और साथ में दवाई भी अंत समय तक खाते रहना होगा। उन मासूम बच्चों का क्या हाल होगा जिनका पिता शराब पीता हो, माँ मृत्युशैय्या पर हो। कोई वजन का कार्य नहीं कर सकती। तो उन बच्चों को जब यह पता चला कि तुम्हारी मम्मी (माता जी) भी छः महीने से ज्यादा जीवित नहीं रहेगी तो उन बच्चों की आँखों से आंसु बहते रहते थे। एक तो पिता जी शराबी और दूसरी तरफ हमारी माता जी जानलेवा बीमारी से पीड़ित, हमारा क्या होगा? तीन लड़के तथा एक लड़की अपनी माता जी के पास गिरकर रोने लगे तथा कहा कि हे भगवान हम सब को भी हमारी माता जी के साथ ही अपने पास बुला लेना। यहाँ किसके सहारे जीयेंगे ?

परमात्मा ने उन बच्चों की भी पुकार सुनी और हमारे भी शुभ कर्म उदय हुए कि हमारे पड़ोस में ही भक्तमति निहाली देवी ने अपने गुरुदेव संत रामपाल जी महाराज की आज्ञानुसार 30-31-1 जनवरी 1997 को सतगुरु गरीबदास जी महाराज की अमृतमयी वाणी तीन दिन का अखण्ड पाठ अपने घर करवाया। जिसमें संत रामपाल जी महाराज ने 31 दिसम्बर 1996 को रात्री में 9 से 11 बजे तक सत्संग किया। मेरी धर्मपत्नी सुमित्रा देवी भी पड़ोस में सत्संग सुनने के लिए चली गई। थोड़ी देर बाद मैं (जगदीश) भी अपनी नौकरी से घर आ गया। घर आने पर बच्चों से पता चला कि हमारी माता जी पड़ोस में माई निहाली देवी के घर सत्संग सुनने

के लिए गई है। यह सुनकर मैं बहुत क्रोधित हुआ और मैंने कहा कि कहाँ पाखण्डियों के पास चली गई ? मैं अभी उसको पीटते हुए घर लाता हूँ। यह विचार कर मैं भक्तमति निहाली देवी के घर चला गया। मैंने शराब पी रखी थी। जब मैं निहाली माई के घर पहुँचा तो संत रामपाल जी महाराज सत्संग कर रहे थे। बहुत संख्या में भक्तजन सत्संग सुन रहे थे। उन सभी को देखकर मैं कुछ नहीं बोला और चुपचाप सबसे पीछे बैठ गया। मैंने सत्संग सुना। सत्संग में महाराज जी ने बताया कि :-

शराब पीवैं कड़वा पानी, सत्तर जन्म श्वान के जानी।
गरीब, सो नारी जारी करैं, सुरापान सो बार।
एक चिलम हुक्का भरैं, डूबैं काली धार।।
कबीर, मानुष जन्म पाय कर, नहीं भजैं हरि नाम।
जैसे कुआ जल बिना, खुदवाया किस काम।।

महाराज जी ने सत्संग में बताया कि जिन बच्चों को पिता जी ने सीने से लगाना चाहिए, उस शराबी व्यक्ति को देख कर बच्चे चारपाई के नीचे छुप जाते हैं। शराबी व्यक्ति आप भी दुःखी, धनहानि, समाज में इज्जत समाप्त तथा परिवार तथा पड़ौस व रिश्तेदारों तक को परेशान करके बद दुआऐं प्राप्त करता है। जैसे शराबी की पत्नी व बच्चे तो कहर का शिकार होते ही हैं। परन्तु पत्नी के माता-पिता, भाई-बहन आदि भी दिन-रात चिन्तित रहते हैं। सर्व पाप का भार उस नादान शराबी के शीश पर आता है। मनुष्य जन्म प्रभु ने भक्ति करके आत्म कल्याण करने को दिया है, इसको शराब आदि में नष्ट नहीं करना चाहिए। जैसे बच्चा स्कूल में शिक्षा ग्रहण नहीं करता, आवारा गर्दी में घूमता रहता है। वह शिक्षा से वंचित रह जाता है। फिर सारी आयु मजदूरी करके जीवन निर्वाह करता है। फिर उसे याद आता है कि यदि में आवारागर्दी न करता तो आज अन्य सहपाठियों की तरह बड़ा अधिकारी होता। परन्तु अब क्या बने, यह तो उस समय सोचना था।

कबीर साहेब कहते हैं कि - अच्छे दिन पीछे गये, गुरु से किया न हेत। अब पछतावा क्या करे, जब चिड़ियां चुग गई खेत।।

इसी प्रकार यदि मनुष्य जन्म में जो प्राणी प्रभु भक्ति नहीं करता वह पशु-पक्षियों की योनियों को प्राप्त होता है। जो व्यक्ति शराब पीता है, वह शराब के नशे में खाने की भरी थाली को लात मारता है। भक्ति न करने से भिन्न-भिन्न प्राणियों की योनियों में कष्ट उठाता है। कभी वह कुत्ते की योनी धारण करता है। कुत्ता सारी रात सर्दी में भी गली में रहता है। ऊपर से वर्षा तथा सर्दियों की रात्री में महाकष्ठ उठाता है। सुबह भूख सताती है। किसी घर की रसोई में घुसने की चेष्टा करता है। घर वाले डण्डा या पत्थर मारते हैं। कुत्ता बहुत देर तक चिल्लाता रहता है। फिर अन्य घर में घुसता है, वहाँ न जाने रोटी मिलेगी या सोटी (डण्डा)। यदि वहाँ भी डण्डा नसीब में हुआ तो वह शराबी जो अब कुत्ता बना है, गाँव के बाहर जाता है। भूख से व्याकुल हुआ मनुष्यों का मल खाता है। यदि वह नादान

प्राणी जब मनुष्य शरीर में था, सत्संग में आता, अच्छे विचार सुनता, बुराई त्यागकर अपना कल्याण करवाता तथा बच्चों को अच्छी शिक्षा तथा प्रभु की दीक्षा प्रदान करवाता, सदा सुखी हो जाता। शराब का नशा कुछ समय रहता है। परमात्मा के नाम भजन से हुए सुख का आनन्द सदा साथ रहता है।

उपरोक्त सत्संग आदरणीय संत रामपाल जी महाराज का सुन कर मेरी शराब छू मंत्र हो गई। आँखों से आंसु बह चले। घर चला गया, नींद नहीं आई। 1 जनवरी 1997 को दोपहर 1.30 बजे अपनी पत्नी को साथ लेकर संत रामपाल जी महाराज के पास गया, उनसे आत्म कल्याण के लिए उपदेश प्राप्त किया। उसके बाद आज (2005) तक शराब, तम्बाकु तथा मांस छुआ भी नहीं। मेरी पत्नी ने भी सतगुरु रामपाल जी से उपदेश लिया। उस दिन के बाद वह बिल्कुल स्वस्थ है। डॉक्टरों के ईलाज तथा बीमारी की एक्स-रे आदि की रिपोर्ट आज भी हमारे घर रखी है। जन-जन को दिखाते हैं।

मेरी सर्व से प्रार्थना है कि आप भी प्रभु के चरणों में आओ। संत रूप में आए परमेश्वर के संदेश वाहक संत रामपाल को पहचानों। मुफ्त नाम उपदेश प्राप्त करके कृप्या अपना कल्याण करवाऐं। सत साहेब।

भक्त जगदीश

”भूतों व रोगों के सताए परिवार को आबाद करना“

भक्तमति अपलेश देवी पत्नी श्री रामेहर पुत्र श्री माँगेराम, गाँव-मिरच, तहसील चरखी दादरी, जिला भिवानी (हरियाणा)।

मैं अपलेश देवी अपने दुःखी जीवन की एक झलक आपको बता रही हूँ। मैं और मेरे बच्चे - राहूल और ज्योति हैं जो बीते समय के बुरे हालातों को याद करके सिहर जाते हैं। जिनका वर्णन करते समय कलेजा मुंह को आता है।

6 दिसम्बर 1995 की रात्री में बदमाशों ने मेरे पति को ड्यूटी के दौरान जान से मार दिया था। लेकिन इस पूर्ण परमात्मा (कबीर साहिब) ने हमारा ध्यान रखा और मेरे पति को जीवन दान दिया जो आज हमें परिवार सहित बन्दी छोड़ गुरु रामपाल जी महाराज की दया से पूर्ण परमात्मा के चरणों में स्थान मिल गया है। हमारे परिवार में मेरे पति को साफ कपड़े पहनाते जो कुछ देर बाद अन्डर वियर के ऊपर के हिस्से पर जहाँ पर रबड़ या नाड़ा होता है वहाँ चारों ओर खून से कपड़े रंगीन हो जाते थे, तथा बच्चों को भी बलगम के साथ खून आता था और मैं भी एक वर्ष से हार्ट (दिल) की बीमारी से बहुत परेशान हो चुकी थी। जिसके लिए वर्षों से दवाईयाँ खा रही थी। मेरे पतिदेव दिल्ली पुलिस में हैं। मेरे सारे शरीर पर फोड़े-फुन्सी हो जाते थे। घर में परेशानियों के कारण मेरे पति रामेहर का दिमागी संतुलन भी बिगड़ गया था।

हमने इन परेशानियों के लिए सन् 1995 से जुलाई 2000 तक एक दर्जन से भी ज्यादा लंगड़े, लोभी व लालची गुरुवों के दरवाजे खट-खटाए तथा भारत वर्ष में

तीर्थ स्थानों जैसे जमुना, गंगा, हरिद्वार, ज्वाला जी, चामुन्डा, चिन्तपूरनी, नगर कोट, बाला जी, मेहन्दी पुर व गुड़गाँवा वाली माई तथा गौरख टीला राजस्थान वाले प्रत्येक स्थानों पर बच्चों सहित काफी बार चक्कर लगाते रहे लेकिन हमें कोई राहत नहीं मिली।

इस प्रकार हमारे परिवार की हालत यहाँ तक आ चुकी थी कि हम होली व दिवाली भी किसी मस्जिद में बैठकर बिताने लग गये थे।

हम बड़े खुशनसीब हैं जो हमें संत रामपाल जी महाराज के द्वारा परम पूज्य कबीर परमेश्वर की शरण मिल गई। अब कहाँ गये वे काल के दूत तथा वे हमारी बीमारियाँ जिनका ईलाज आल इण्डिया हॉस्पीटल में चल रहा था, जो सतगुरुदेव के चरणों की धूल के आगे टिक नहीं पाई।

25 फरवरी 2001 को एक काल की पूजा करने वाले स्याने ने फोन करके पूछा कि अपलेश तुम्हारा नाम है। मैंने कहा कि हाँ, आप अपना नाम बताओ। तब वह स्याना कहता है कि यह बलवान कौन है, आपका क्या लगता है? मैंने कहा कि तुम कौन हो, आपका क्या नाम है तथा यह सब क्यों पूछना चाहते हो ? तब वह स्याना कहता है कि बेटी तुम मेरा नाम मत पूछो। मैं बताना नहीं चाहता तथा मैं हांसी से बोल रहा हूँ। यह बलवान तथा इसके साथ एक आदमी आए और दोनों मुझे 3700 रूपए तुम पर घाल घलवाने के लिए दे गए थे। मैंने तुम्हारा फोन नं. भी बलवान से लिया था कि मैं पूछूंगा कि उनकी दुर्गति हुई या नहीं। मेरे पास आपका फोन नं. नहीं था, बलवान ने ही दिया था। जो मैंने यह बुरा कार्य रात्री में किया। लेकिन जैसे ही मैं सोने लगा तो मुझे सफेद कपड़ों में जिस गुरु की तुम पूजा करते हो वे दिखाई दिये, जिन्होंने मुझे बतला दिया कि इसका परिणाम तुम खुद भोगोगे। यह परिवार सर्व शक्तिमान सर्व कष्ट हरण परम पूज्य कबीर परमेश्वर की शरण में है। आपकी तो औकात ही क्या है ? यहाँ का धर्मराज भी अब इस परिवार का कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

गरीब, जम जौरा जासै डरै, मिटें कर्म के लेख।
अदली अदल कबीर हैं, कुल के सद्गुरु एक।।

परम पूज्य कबीर परमेश्वर जी से जम (काल तथा काल के दूत) तथा मौत भी डरती है। वे पूर्ण प्रभु पाप कर्म के दण्ड के लेख को भी समाप्त कर देते हैं। इसके बाद उस स्याने ने कहा कि बेटी तुम्हें यह बतला दूँ कि तुम जिस देव पुरुषोत्तम की पूजा करते हो, वे बहुत प्रबल शक्ति हैं। मैं 25 वर्ष से यह घाल घालने का कार्य कर रहा हूँ। न जाने कितने परिवार उजाड़ चुका हूँ। परन्तु आज पहली बार हार खाई है। बेटी इस शक्ति को मत छोड़ देना, नहीं तो मार खा जाओगे। आपके विनाश के लिए बलवान आदि घूम रहे हैं। मैंने कहा कि हम पूर्ण परमात्मा की पूजा करते हैं, बलवान मेरे पति का बड़ा भाई है। हमारा जानी दुश्मन बना है।

हम आज इतने खुशनसीब हैं कि हमारे दिल में किसी वस्तु या कार्य की आवश्यकता होती है उसको यह सतगुरुदेव, सत कबीर साहिब पूर्ण कर देते हैं।

आज गुरु गोविन्द दोनों खड़े, हम किसके लागे पाय। हम बलिहारी सतगुरुदेव रामपाल जी के चरणों में जिन्हें परमेश्वर दिया मिलाय।

हे भाईयों और बहनों हम सारा परिवार मिलकर आपको यह सन्देश देते हैं कि अगर आपको सतलोक का मार्ग, पूर्ण मोक्ष व सर्व सुख प्राप्त करना हो और सांसारिक दुःखों से छुटकारा पाना हो तो बन्दी छोड़ संत रामपाल जी महाराज से सतनाम प्राप्त कर लेना और अपना अनमोल मनुष्य जन्म सफल कर लेना।

।। सत साहिब।।

भक्तमति अपलेश देवी

"भक्त सतीश की आत्मकथा"

मैं भक्त सतीश दास 193 सेक्टर 7, आर.के.पुरम. नई दिल्ली का रहने वाला हूँ। उपरोक्त पंक्तियाँ हमारे जीवन में चरित्रार्थ होती हैं। क्योंकि सतगुरु बन्दी छोड़ रामपाल जी महाराज का दिसम्बर सन् 1997 को प्रीतमपुरा दिल्ली में सत्संग हुआ था तो हम अपने एक मित्र के कहने पर सत्संग सुनने गए, परन्तु पारम्परिक पुजाऐं छोड़ने की बातें सुनने के बाद सत्संग में दिल नहीं लगा। सतगुरु जी शास्त्रों में पढ़-पढ़कर हमें समझा रहे थे तो हमारे मन में आया कि किताबों को तो हम घर में ही न पढ़ लेंगे। इस प्रकार ज्योति निरंजन (काल) ने हमारी बुद्धि स्थिर कर दी और हमारा भक्ति वाला चैनल बंद कर दिया। सतगुरु हमें समझाते हैं कि -

गुरु बिन किन्हें न पाया ज्ञाना, ज्यों थोथा भूस छड़े किसाना।
गुरु बिन भरम ना छूटें भाई, कोटि उपाय करो चतुराई।।

इस प्रकार हमारी बुद्धि स्थिर होने की वजह से हम ईधर-उधर की बातें करते हुए घर वापिस आ गए। सन् 1999 में मेरी पत्नी श्रीमति मंजू को ब्रेन ट्यूमर (दिमागी कैंसर) हो गया, जिसका हमें सफदरजंग हॉस्पीटल में निरीक्षण व ईलाज के समय पता चला। इसके बाद मैंने उसको पंत हॉस्पीटल तथा A.I.I.M.S. नई दिल्ली और इसके बाद अपोलो हॉस्पीटल नई दिल्ली में भी डॉक्टर को दिखाया। सभी डॉक्टरों ने तुरन्त ऑप्रेशन की सलाह देते हुए कहा कि ऑप्रेशन के दौरान इसके एक हाथ में पैरालाईसिस हो सकता है। अपोलो हॉस्पीटल के डॉक्टर ने तो रिपोर्ट देखने के बाद यहाँ तक कहा कि इसकी दोनों आँखें अभी तक ठीक कैसे हैं ? और उसी समय आई स्पेशलिस्ट से टैस्ट करवाने के लिए कहा। मैंने तभी चैक करवाई। तब आई स्पेशलिस्ट और न्यूरो सर्जन ने सलाह दी कि हर पंद्रह दिन बाद इसकी आँखों की जाँच करवाते रहना, कभी भी खत्म हो सकती है, क्योंकि ब्रेन ट्यूमर ऐसी जगह पर है। मेरी पत्नी व मैं दोनों ही पैरों से विकलांग हैं और हाथ व आँखें खत्म होने की बात सुनकर स्वांस ऊपर का ऊपर और नीचे का नीचे रह गया, लेकिन कोई चारा न पाकर अंत में पंत हॉस्पीटल नई दिल्ली में ऑप्रेशन करवाने की सोची और डॉक्टर के कहने पर INMAS हॉस्पीटल तिमारपुर दिल्ली से M.R.I करवा ली और अन्य सारे टैस्ट भी करवा लिए। केवल ऑप्रेशन की तारीख लेनी थी। हमें पूर्ण परमात्मा तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज के पहले सुने

सत्संग की ये पंक्तियां याद आई -

जिन मिलते सुख उपजे, मिटें कोटि उपाध। भुवन चतुर्दश ढूंढियों, परम स्नेही साध।।

और हमारा भक्ति चैनल परमेश्वर ने ऑन कर दिया और मन में भावना उत्पन्न हुई कि ऑप्रेशन से पहले नाम लेकर देख लेते हैं। फिर अपने दोस्त के साथ प्रीतमपुरा दिल्ली में जाकर 4 फरवरी 2001 को पूर्ण परमात्मा तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज से नामदान लिया। पूर्व वाली सभी पूजाऐं छोड़ दी। सतगुरु जी ने अखण्ड पाठ करवाने की सलाह देते हुए कहा कि परमात्मा ने चाहा तो ऑप्रेशन टल जायेगा और सब कुछ ठीक हो जायेगा। हमने सतगुरु की आज्ञा अनुसार घर पर तीन दिन का अखण्ड पाठ करवाया और इसके बाद डॉक्टर से ऑप्रेशन की तारीख लेने पंत हॉस्पिटल नई दिल्ली गये। जो डॉक्टर पहले ऑप्रेशन की सलाह दे रहे थे, वही डॉक्टर दूसरे एम.आर.आई. को देखकर कहने लगा की अभी ऑप्रेशन की कोई जरूरत नहीं है। तब सतगुरु की वाणी याद आई कि -

सतगुरु दाता हैं कलि माहिं, प्राण उधारण उतरे सांई।
सतगुरु दाता दीन दयालं, जम किंकर के तोड़ें जालं।।

और हम सतगुरु को याद करके फूट-फूट कर रोने लगे कि हे परमेश्वर हम आपकी महिमा को किन शब्दों में व्याख्यान करें। इस प्रकार पूर्ण परमेश्वर कबीर साहेब के अवतार तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज की कृप्या से हमारा ऑप्रेशन टल गया और उसके बाद हमने एक पैसे की गोली दवाई भी नहीं खाई है और सुखमय जीवन जी रहे हैं।

20 नवंबर 2004 को रात को काल के झपट्टे के कारण मेरी पत्नी मृतक समान हो गई थी, परमेश्वर का अमृत जल पिलाने के बाद होश आया। फिर हम उसे सतगुरु जी के पास लेकर आए तो सतगुरु जी ने बताया कि आज इनकी मृत्यु होनी थी। कबीर परमेश्वर ने इनकी उम्र बढ़ा दी है और अब उसको भक्ति करनी है।

फिर 22 नवंबर 2004 को मेरी पत्नी को सोनीपत सत्संग में ही लकवे (पैरालाईसिस) का अटैक पड़ा और उसकी वजह से उसके हाथ की ताकत समाप्त होने लगी और उसी समय सतगुरु जी का हाथ अपने हाथ में दिखाई देने लगा और लगभग पाँच मिनट तक दिखाई देता रहा। जब लकवे (पैरालाईसिस) का असर समाप्त हो गया तब सतगुरु जी का हाथ अदृश्य हो गया और आज तक वह बिल्कुल ठीक है।

सतगुरु तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज जो कबीर परमेश्वर के ज्यों के त्यों अवतार आए हैं ने हमारे को सिद्ध कर दिया कि

गरीब जम जौरा जासे डरें, मिटें कर्म के अंक।
कागज कीरें दरगह दई, चौदह कोटि न चंप।।

भक्त सतीश मेहरा,
RLF-907/17, राज नगर-II, पालम कालोनी,
नई दिल्ली। मो. 09718184704

''भक्त बहीद् खाँ की आत्मकथा''

बन्दी छोड़ कबीर साहेब की जय

बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज के चरणों में कोटी-कोटी दण्डवत् प्रणाम, मैं बहीद् खाँ पुत्र मुन्शी खाँ गाँव व तहसील - मेहगाँव जिला भिण्ड (मध्यप्रदेश) का रहने वाला हूँ। मैं 3 साल से सख्त बीमार था। मेरी दोनों किडनी खराब थी। मैनें 2 साल ग्वालियर में बड़े-बड़े **M.B.B.S.** डाक्टरों से इलाज करवाया परन्तु कोई राहत नहीं मिली। उसके बाद ग्वालियर के डाक्टरों ने मुझे दिल्ली **A.I.M.S.** (ऑल इण्डिया मेडिकल) के लिए रैफर कर दिया। वहां डाक्टरों ने सभी जाचों के बाद बताया कि 3 बोतल खून चाहिए पहले आपका खून फिल्टर होगा फिर आपके परिवार से किसी सदस्य की किडनी निकालकर आपको आपरेशन द्वारा लगाई जाएगी आपरेशन का खर्च 4 लाख लगेगा। मैं रूपये देने में असमर्थ था। इसलिए दिल्ली से अपने घर वापिस आ गया तथा असहाय होकर मृत्यु का इन्तजार करने लगा। क्योंकि में खाने-पीने, चलने-फिरने व उठने-बैठने में असमर्थ हो चुका था।

फिर किसी व्यक्ति द्वारा पता चला कि हरियाणा में बरवाला जि. हिसार के अन्दर परमात्मा आए हुए हैं। जो असाध्य रोगों को परमात्मा की भक्ति से ठीक करते हैं। ये शब्द सुनकर 24-7-09 को आपके चरणों में पहुँच कर नाम दान ले लिया। नाम दान लेने के बाद मुझे आराम होना शुरू हो गया और धीरे-धीरे एक महीना भी नहीं लगा। मैं आपकी कृप्या से बिल्कूल ठीक हो गया। मेरे सतगुरु! प्रमाण के लिए मेरी बीमारी के सभी टैस्ट व कागजात मेरे पास मौजूद हैं। हे परम पिता परमेश्वर आपने जो जीवन मेरे को दिया उसका अहसान मैं कभी नहीं उतार पाऊँगा। मेरे सतगुरु ''अपने दास पर कृप्या करके ऐसे ही अपने चरणों में लगाए रखना।''

।।सत साहेब।।

आपका दास
भक्त बहीद् खाँ पुत्र मुन्शी खाँ
गाँव, डाकखाना व तहसील -मेहगाँव,
जिला - भिण्ड (मध्यप्रदेश)

''भक्तमति तारा कट्टा पर असीम कृपा हुई''

बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज के चरणों में कोटि-२ दण्डवत् प्रणाम मैं तारा कट्टा जयपुर निवासी, संस्कृत में एम.ए. हूँ। राजस्थान यूनिवर्सिटी से बी.ए. व संस्कृत में स्वर्ण पदक प्राप्त है। मैंने छः लेखकों की गीता, उपनिष्द, पुराण व सारे दर्शन शास्त्र व सभी गुरुओं के प्रवचन सुने परन्तु संतुष्टि नहीं हुई। एक बार जयपुर में भास्कर भक्ति चैनल पर सतगुरु रामपाल जी महाराज का प्रोग्राम देखा तथा 30 नवम्बर 2003 में नाम उपदेश लिया। उस समय में बहुत बिमारियों से परेशान थी। मई 1991 में मुझे बायोपसी टैस्ट के माध्यम से पता चला

कि मुझे अल्सरेटिव कोलाइटिस (Ulcerative Colitis) नामक बिमारी बताई। इसमें बड़ी आंत में छाले हो जाते है तथा लैटरिंग में खून आता है तथा इसके बारे में डाक्टर ने बताया कि इसका कही पर भी इलाज नहीं है। मुझे 3-6-2002 में आंत में अल्सर 75cm तक बढ़ गए थे। 10-4-08 में गुरु जी के कहने पर मैंने दवाई बंद कर दी। इसमें 4 टेबलेट्स तो ऐसी थी जिनके बारे में डा० ने कहा था कि अगर जीवित रहना है तो पूरी जिंदगी खानी पड़ेंगी। 23-4-04 में मेरे Iungs (फेफड़ों) में Infection हो गया। जब मैं डा० के पास इलाज के लिए गई तो डा० ने मेरे एक्स रे देख कर कहा कि आप ऐसी बिमारी से ग्रसित हो जिसमें आपको बुखार होना चाहिए, वजन कम होना चाहिए तथा खून की कमी होनी चाहिए। लेकिन आप बिल्कुल स्वस्थ हो, मैंने कहा यह मेरे सतगुरु रामपाल जी महाराज की कृपा है कर्म की मार तो मुझ पर आना चाहती है। लेकिन मेरे गुरुदेव कर्म की उस मार को मुझ पर प्रभावी नहीं होने दे रहे। इसी प्रकार अपने भक्त की परमात्मा रक्षा करते हैं। इससे डा० काफी प्रभावित हुआ। एक बार Jan/09 में प्रचार के लिए जाना था। रात भर खून की पिचकारी चली सुबह सोचा मरना तो है ही प्रचार करते-२ मर जाऊं। तीसरे दिन में बिना दवा ठीक हो गई। डा० ने एक बार बोला कि कोरटिसून सटीराइड (Cortisone Steroid) शरीर को चलाने के लिए रोज लेनी पड़ेगी। लेकिन सतगुरु रामपाल जी महाराज के कहने पर मैंने सारी दवाई छोड़ दी। मैंने एक भी दवाई नहीं ली और अब मैं सतगुरु रामपाल जी महाराज की दया से बिलकुल स्वस्थ हूँ। इतने लम्बे समय से चल रही बीमारी गुरुदेव की शरण में आने से बिल्कुल ठीक हो गई। मेरा कहना है कि ऐसा सत्यज्ञान व सत्य भक्ति मार्ग पृथ्वी पर और कहीं नहीं है। सतगुरु रामपाल जी महाराज साक्षात् पूर्ण परमात्मा हैं। सत साहेब।

सतगुरु के चरणों में दण्डवत् प्रणाम्।

भक्तमति तारा कट्टा

फोन नं. - 09772312335

''गुरुकृपा की महिमा''

मैं त्रिलोक दास बैरागी ग्राम ढीमरखेड़ा जिला - कटनी, मध्यप्रदेश का निवासी हूँ। मैंने दिनांक 27-06-10 को नाम दान लिया था जब मैंने नाम दान लिया था तब मुझे मालूम नहीं था कि नाम दान नहीं बल्कि अमृत ले रहा हूँ। मेरी बात आपको अतिसयोक्ति लगेगी। लेकिन कसम मुझे गुरुदेव के चरणों की। इसमें मैंने जो भी अनुभव किये हैं या जो भी प्रमाण मेरे सामने हुए, मैंने कल्पना भी नहीं की थी कि मेरे साथ ऐसा चमत्कार होगा नाम दान लेने से छः माह बाद मेरा पुत्र बिमार होता है जिसका जन्म पांच पुत्रियों के बाद हुआ था। मैं अपने पुत्र का इलाज लगातार एक माह तक एम.बी.बी.एस. डाक्टरों से करवाता रहा मगर एक माह तक बालक ठीक नहीं हुआ। अचानक मेरे बालक ने एक दिन सुबह 09:00 बजे आंख बंद कर ली, मतलब बेहोश हो गया। मैं उसे लेकर उमरियापान भागा वहां के सभी

डाक्टरों ने इलाज करने से मना कर दिया। मैं उसे लेकर सिहोरा गया सभी जगह एम.बी.बी.एस. डाक्टर हैं मगर पुत्र की हालत देखकर सभी ने इलाज करने से मना कर दिया मानों वो बताना चाहते थे कि तुम्हारे पुत्र की मृत्यु हो चुकी है पुत्र की उम्र सिर्फ एक वर्ष थी हिम्मत बांधकर एक डाक्टर ने कहा कि अगर उसे आक्सीजन मिल जाये तो शायद कुछ हो सकता है मैंने तत्काल एक फोर व्हीलर रिजर्व की और जबलपुर के लिये भागा जो कि बच्चों का रिसर्च सेन्टर है। वहां के डाक्टर ने बच्चे की हालत देखकर कहा कि इसमें कहीं कोई हलचल नहीं हो रही है कहीं भी सूई लगाता हूं इसको कुछ मालूम ही नहीं हो रहा है भर्ती करना मेरे लिये रिस्क की बात है। मैंने कहा भर्ती करो और भर्ती करके इलाज शुरू करो बाकी सब परमात्मा पर छोड़ दो डाक्टर ने कहा अगर इसे छः घण्टे में होश आ गया तो शायद बच जाये नहीं तो मुश्किल है सुबह नौ बजे से रात्रि के नौ बज चुके थे परन्तु बालक होश में नहीं आ रहा था। लड़के की मां ने और मैंने रोना शुरू कर दिया मेरा ध्यान अचानक ''ज्ञान गंगा'' और ''भक्ति सौदागर को संदेश'' में लिखे हुये चमत्कारों की तरफ गया जो भक्तों के साथ हुये हैं। मैंने अपने आप को संभाला और अपने आपको गुरु के चरणों में समर्पित कर दिया कहा गुरु जी मेरे पुत्र की रक्षा करो और मुझे जो विश्वास था गुरु की महिमा पर उसकी लाज रखो। लगभग 12 बजे जब डाक्टर राउन्ड पर आया तो कहता है कि बच्चे की हालत में क्या सुधार है मैंने कहा जैसा सुबह था वैसा अभी भी है डाक्टर ने इंजेक्शन मंगाया और बालक की जांघ पर लगाया इंजेक्शन लगते ही बालक रोने लगा जैसे वो खुद इंजेक्शन गुरुजी ने लगाया हो पूरे हाल में खुशी की लहर दौड़ गई डाक्टर ने मेरे सिर पर हाथ रखकर कहा अब तुम्हारा बालक होश में आ गया है ऐसे मर्ज वाले बालक बहुत कम होश में आते हैं।

विचारणीय बात यह है कि इन्जैक्शन का असर तो दस या बीस मिनट के बाद होता है। लड़का इन्जैक्शन की सूई के दर्द से ही रो उठा। इस से स्पष्ट है कि यह सर्व कमाल परमेश्वर कबीर जी का है।

''सतगुरु शरण में आने से आई टलै बला।
जै भाग्य में मृत्यु हो कांटे में टल जा''

गुरुजी कहते हैं कि कसक के साथ मन्त्र जाप करने से जो चमत्कार हुआ। मैं दंग रह गया मैं हास्पिटल में गुरुजी के चरणों की वंदना की और धन्यवाद देते हुए रो पड़ा। डाक्टर ने कहा कि इसे लगातार आठ दिन के इलाज की आवश्यकता है चौबीस घण्टे का पांच हजार लग रहा था। मैंने डाक्टर से कहा मुझे सुबह छुट्टी चाहिए डाक्टर ने कहा इसे अगर आप घर ले गये तो ये बालक मर सकता है क्योंकि अभी होश में आया है। मैंने कहा जो होगा देखा जायेगा, बस मुझे छुट्टी चाहिए आज बालक को छः माह से ऊपर हो गये उसे बुखार भी नहीं आ रहा है। ऐसी महिमा देखकर मैं धन्य हो गया। मेरी साईकिल लेने की हिम्मत नहीं होती थी। क्योंकि मेरी पारिवारिक स्थिति ठीक नहीं थी। अचानक स्टेट बैंक के मैनेजर ने कहा

क्या आप बैंक से लोन लेना पसंद करेगें मैंने कहा अगर मिल जाये तो इससे बढ़ के क्या है, मेरी पारिवारिक स्थिति सुधर जायेगी। बैंक मैनेजर ने मुझे डेढ़ लाख रूपये का लोन दे दिया। साईकिल ना खरीद पाने वाला आदमी अचानक 55000 रूपये की हीरो होण्डा गाड़ी ले आया। आज मैं शान से गाड़ी में घूमता हूं मैं शासकीय स्कूल में चपरासी के पद पर कार्यरत था। नौकरी करते मुझे 16 वर्ष गुजर चुके थे। लेकिन मेरी पारिवारिक स्थिति ठीक नहीं हुई। जबलपुर संभाग से प्रमोशन हुये और मेरा सिंगल प्रमोशन हुआ मैं चपरासी से बाबू हो गया, जमाने को कुर्सी रखने वाला आदमी खुद साहब बनकर कुर्सी पर बैठ गया। मेरा वेतन इतना हो गया जितना मैंने सोचा नहीं था। मेरा छोटा भाई बी.एड. का आसरा छोड़कर मायूस हो गया था। एक दिन अचानक उसके पास कांउसलिंग लेटर आया उसे विश्वास ही नहीं हुआ क्योंकि उसे 29 अंक मिले हुए थे और बी. एड. करने के लिए 33 अंक से ऊपर चाहिऐ लेकिन इस बार 28 अंक वालों को ले लिया गया। जिस कारण से 29 अंक होने की वजह से उसे मौका मिल गया और आज वो बी. एड. कर रहा है। ये चार चमत्कार ऐसे हुये जिनके बारे में मैंने कभी सोचा नहीं था। मगर रामायण में लिखी मुझे वो याद आ गई कि 'मात-पिता गुरु की वाणी, बिना विचार करो शुभ जानी' ये सभी चमत्कार एक वर्ष के भीतर हुये है। प्रमाण के लिये :-

1 - भारत हॉस्पिटल सेन्टर के सभी डाक्यूमैंट
2 - गाड़ी के सभी कागजात
3 - प्रमोशन का आदेश
4 - बी. एड. का काउंसलिंग लेटर

ये सभी चमत्कार नाम दान लेने के छः माह बाद हुये है। लेकिन सिर्फ नाम दान लेने से फायदा नहीं होता बल्कि गुरु के बताये मार्ग पर चलना पड़ता है।

''हरि रूठै गुरु ठौर है, गुरु रूठै नहीं ठौर''

गुरु देव जी के चरणों में शिष्य के अनुभव सादर समर्पित हैं।

भक्त त्रिलोक दास बैरागी
सहा. ग्रेड - 3
शास. उच्च. माध्यमिक विद्यालय, मुरवारी
तह.-ढीमरखेड़ा, जिला-कटनी (म.प्र.)

''11000 वॉल्टेज के तार से छुड़वाना''

मैं भक्त सुरेश दास पुत्र श्री चाँद राम निवासी गांव धनाना, जिला सोनीपत जो कि फिलहाल शास्त्री नगर रोहतक (हरियाणा) का निवासी हूँ। सतगुरु जी से नाम उपदेश लेने से पहले मेरे घर की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर थी, परिवार का कोई भी ऐसा सदस्य नहीं था जो कि कभी बीमार न रहता हो, मेरी पत्नी को भूत-प्रेत बहुत ही ज्यादा परेशान करते थे। इतना कष्ट रहने के बावजूद हम देवी देवताओं की बहुत पूजा करते थे तथा मेरी हनुमान जी में बहुत ज्यादा आस्था थी। लेकिन घर में संकट

पर संकट आते जा रहे थे। किसी भी काम में बरकत नहीं हो रही थी। पूर्ण परमात्मा सतगुरु रामपाल जी महाराज जी मेरे परिवार के होने के कारण हम उनको पूर्ण परमात्मा नहीं मान पाये जिसका खामियाजा हमें कई वर्षों तक झेलना पड़ा। तभी गांव सिंहपुरा निवासी भक्त विकास ने मुझे बताया कि आपके घर में पूर्ण परमात्मा जगत् गुरु रामपाल जी महाराज आये हुए हैं और आप कहां सोये पड़े हो, तो मैंने कहा कि काल ने हमें कष्ट ही इतना दे रखा है कि हमें वहां के बारे में जानने का टाईम ही नहीं मिला। सारा समय डाक्टरों के चक्कर काटने में चला जाता है। ऊपर से आर्थिक तंगी भी बहुत रहती है। उस भक्त ने मुझे काफी समझाया, पूर्ण परमात्मा की ऐसी दया हुई कि मैं संत रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लेने के लिए अक्तूबर 2010 में सतलोक आश्रम बरवाला में पहुँचा। नाम उपदेश लेने के बाद सतगुरु जी ने अपना दया का पिटारा खोल दिया और मुझे वो सुख अनुभव होने लगे जिनका वर्णन इस जुबान से कर पाना बहुत मुश्किल है।

मेरी पत्नी को भूत-प्रेत सता रहे थे। सतगुरु देव जी की दया से अब वह पूर्ण रूप से ठीक है। 7 सितम्बर 2011 को मेरा लड़का मोहित उम्र 12 साल जो कि मेरे कहने पर मिस्त्री को बुलाने के लिए गया था। मेरा लड़का मिस्त्री के मकान की छत पर चढ़ गया तथा छज्जे पर चला गया। छज्जे के साथ ऊपर 11000 (ग्यारह हजार) वोलटेज के बिजली के तार थे। लड़के तथा तारों के बीच में केवल एक फीट की दूरी थी। जब वह उनके नजदीक गया तो तारों ने लड़के को खेंच लिया और लड़के के सिर पर तार चिपक गया तथा एक इन्च गहरा घुस गया व मुंह जल गया और बिजली सारे शरीर में प्रवेश करके पैर के अंगूठे की हड्डी को तोड़ कर निकलने लगी। उसी समय सतगुरु रामपाल जी महाराज आकाश मार्ग से आए तथा मेरे लड़के को बहुत ही चमकदार (तेजोमय) शरीर सहित दिखाई दिये जैसे हजारों ट्यूबों का प्रकाश हो रहा हो। उन्होंने लड़के का हाथ पकड़ कर बिजली से छुड़ाकर छज्जे पर लिटा दिया। फिर लड़के की सतगुरु जी से बहुत बातें हुई तथा जब सतगुरु जी जाने लगे तो लड़के ने पूछा कि गुरु जी कहां जा रहे हो तो गुरु जी ने कहा कि बेटा मैं तेरे साथ हूँ तू घबरा मत। उस समय मेरे लड़के मोहित की माता जी भी वहीं पर थी। उसने यह दृश्य अपनी आँखों देखा तथा वह बहुत घबरा गई। क्योंकि लड़के के शरीर से बिजली के लपटें निकल रही थी।

उसके बाद हम लड़के को पी. जी. आई. रोहतक हॉस्पिटल में लेकर गये। वहां पर भी लड़के को गुरु जी दिखाई दिये व मेरे लड़के ने कहा कि गुरु जी मेरे साथ हैं। आप घबराओ मत। यदि आज हम गुरु जी की शरण में नहीं होते तो हमारा लड़का आज जिंदा नहीं होता तथा मेरी पत्नी को भी प्रेत मार डालते, हम उजड़ने से बच गये। यह सतगुरु रामपाल जी महाराज जी की ही दया है।

सर्व पाठकों से प्रार्थना है कि मेरी सत्यकथा को पढ़कर आप जी भी सतगुरु रामपाल जी महाराज जी की शरण में आकर अपना समय रहते कल्याण कराऐं तथा प्रारब्ध में लिखे कर्मों के कारण जो घटनाऐं घटनी होती हैं उन से पूर्ण रूप से बचोगे। सतगुरु रामपाल जी महाराज के सतसंग वचनों में मैंने सुना था कि पूर्ण परमात्मा कबीर जी बन्दी छोड़ हमारे सर्व पापों को नाश कर देते हैं। ऐसा ही

प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 161 मंत्र 2 में तथा मण्डल 9 सुक्त 80 मंत्र 2 में भी लिखा है कि यदि किसी रोगी की प्राण शक्ति क्षीण हो चुकी है तथा उसकी आयु भी शेष न रही हो तो उसके प्राणों की रक्षा करूं तथा उसे सौ वर्ष आयु प्रदान करके अर्थात् उसकी आयु बढ़ा कर साधक को सर्व सुख प्रदान करता हूँ।

सज्जनों सतगुरु रामपाल जी महाराज ने अपने अमृत वचनों में यह भी बताया है कि प्रत्येक प्राणी अपने किए कर्मों के अनुसार ही सुख व दुःख प्राप्त करता है। दुःख तो पाप कर्मो का फल है तथा सुख पुण्य कर्मों का फल है। अभी तक सर्व सन्त, आचार्य, गुरु यही कहते रहे हैं कि जो प्रारब्ध कर्म का भोग है वह तो प्राणी को भोग कर ही समाप्त करना होगा। हे सभ्य पाठकों ! सतगुरु रामपाल जी महाराज कहते हैं कि पाप कर्म से दुःख होता है। यदि पाप कर्मों का नाश हो जाए तो दुःख का स्वतः अन्त हो जाता है। यदि भक्ति करते-२ भी पाप कर्म का फल (दुःख) भोगना ही पड़े तो भक्ति की आवश्यकता ही समाप्त हो जाती है। 7 सितम्बर 2011 को हमारे प्रारब्ध कर्म के पाप के कारण मेरे पुत्र मोहित की मृत्यु होनी थी। हमारे सतगुरु रामपाल जी महाराज जी की कृपा से परम पुज्य कबीर परमेश्वर जी ने हमारे पाप का नाश कर दिया तथा मेरे बच्चे की जीवन रक्षा करके आयु बढ़ा दी। यदि 7 सितम्बर 2011 को प्रारब्ध कर्म के फलस्वरूप मेरा बेटा मर जाता तो हम सर्व परिवार के सदस्य भक्ति त्याग देते तथा नास्तिक हो जाते। क्योंकि हमें उस समय परमात्मा का पूर्ण ज्ञान नहीं था। अब भगवान पर अत्यधिक विश्वास हो गया है। यह भी विश्वास हो गया कि परम पूज्य कबीर जी ही परमेश्वर हैं। ये पाप नाशक सर्व सुखदायक व पूर्ण मोक्षदायक हैं तथा सतगुरु रामपाल जी महाराज उन्हीं के भेजे उनके अवतार आए हैं। अतः आप जी से पुनः प्रार्थना है कि अविलम्ब सतलोक आश्रम बरवाला में पहुँचे तथा उपदेश लेकर कल्याण कराऐं। आप जी से प्रार्थना करने का मेरा उद्देश्य यह है कि मेरे जैसे दुःखीया बहुत हैं। मेरी उपरोक्त आत्मकथा को पढ़कर विचार करके वे भी मेरे की तरह संकटों का निवारण करा सकेंगे तथा सुखी हो सकेंगे।

यह संसार समझदा नाहीं, कहंदा शाम दोपहरे नूं।
गरीबदास यह वक्त जात है, रोवोगे इस पहरे (समय) नूं।।

प्रार्थी

भक्त सुरेश दास पुत्र श्री चाँद राम,
शास्त्री नगर, हिसार बाई पास, रोहतक
मोब. नं. 09829588628

''भक्त दीपक दास के परिवार की आत्म कथा''

।। बन्दी छोड़ सतगुरू रामपाल जी महाराज जी की दया ।।

मुझ दास का नाम दीपक दास पुत्र श्री बलजीत सिंह, गांव महलाना जिला सोनीपत है। हम तीन पीढ़ियों से राधास्वामी पंथ डेरा बाबा जैमल सिंह से नाम उपदेशी थे। सबसे पहले मेरी दादी जी की माता जी यानि मेरे पिता जी की नानी जी ने राधास्वामी पंथ से नाम उपदेश ले रखा था। उसके बाद मेरे दादा-दादी जी और फिर मेरे माता-पिता जी ने भी राधास्वामी पंथ के संत गुरविन्द्र सिंह जी से नाम लिया हुआ था। हम भी गुरविन्द्र जी महाराज को पूर्ण पुरूष मानते थे तथा इस पंथ में पूर्ण श्रद्धा यह सोच कर रखते थे कि यह संसार में प्रभु प्राप्ति का श्रेष्ट पंथ है और उनके विशाल डेरे और विशाल संगत समूह को देखकर विशेष आकर्षित थे और सेवा करने के लिए डेरा बाबा जैमल सिंह व्यास (पंजाब) में तथा छत्तरपुर पूसा रोड़ दिल्ली भी जाते रहते थे। लेकिन इस पंथ में उम्र विशेष में नाम दिया जाता है इसलिए अभी मैं इस पात्रता के लिए अयोग्य था।

मेरे माता-पिता जिस दिन छत्तरपुर से नाम लेने के लिए गये हुए थे उसी दिन मेरे छोटे भाई (उम्र 5) के हाथ से पड़ोस के एक बच्चे की आँख में कोई वस्तु अनजाने में लग गई। जब शाम को नाम उपदेश लेकर मेरे माता-पिता वापिस आए। उसी दिन से हमारा व हमारे पड़ोसियों का वैर हो गया कि आपके बेटे ने हमारे बेटे की आँख में जानबूझ कर चोट मारी है और उसी दिन से हमारे ऊपर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा।

उसी दौरान मेरे दादा जी का बीमारी के कारण देहांत हो गया जब मेरे दादा जी का पार्थिक शरीर दूसरे कमरे में रखा हुआ था तो उस समय मेरी दादी जी, जिनका देहांत हुए 12 वर्ष हो चुके थे, मेरी बुआ प्रेमवती में प्रेत की तरह प्रवेश करके बोली। (मेरी दादी ने भी राधास्वामी पंथ से प्राप्त पाँच नामों की बहुत ज्यादा साधना कर रखी थी। वे नियमित रूप से तीन बजे ही व दिन में भी भजन व सुमरन करने के लिए बैठ जाती थी और घण्टों राधास्वामी पंथ के बताये नामों का जाप व अभ्यास किया करती थी।) कि आज तुम्हारे दादा जी का जीवन संस्कार समाप्त हो गया इसलिए मैं तुम्हें संभालने आई हूँ। मेरी दादी जी को जीवित अवस्था में सांस की बीमारी के कारण खांसी रहती थी वे बारह साल के बाद भी ज्यों की त्यों ही खांस रही थी। तब हमने पूछा कि ''दादी जी आप तो बहुत दुःखी दिखाई दे रही हो, क्या आप सतलोक नहीं गई''। तब मेरी दादी ने कहा कि ''बेटा मैंने गलत साधना के कारण अपना अनमोल मनुष्य जीवन व्यर्थ कर दिया और अब मृत्यु के पश्चात् भूत योनि में कष्ट उठा रही हूँ। मैं कहीं सतलोक में नहीं गई'' मेरी माता जी ने घोर आश्चर्य के साथ पूछा कि ''माँ ! क्या आपको आपके गुरू चरण सिंह जी महाराज ने नहीं संभाला? तब मेरी दादी जी ने अत्यंत दुःख के साथ कहा कि ''उन्होंने मेरी कोई संभाल नहीं कि और मैं आज भी ऐसे ही दुःखी हो रही हूँ''।

उस घटना के दो साल बाद एक दिन मेरी दूसरी बुआ कमला देवी के अंदर मेरे दादा जी प्रेतवत् प्रवेश करके बोले और कहा कि ''मैं तो बहुत दुःखी हूँ तथा मेरी कोई गति नहीं हुई, मैं नहाना चाहता हूँ''। यह सुनकर मेरी माता जी ने दुःख व आश्चर्य से कहा कि ''आप तो सतलोक में गए थे, क्या वहाँ पर नहाने के लिए पानी भी नहीं है''? लेकिन दादा जी ने कोई जवाब नहीं दिया। फिर मेरी माता जी मेरे दादा जी (यानि जो कि मेरी बुआ कमला देवी में प्रेतवत् प्रवेश थे) को नहलाने लगी तो वह कहने लगे कि ''बेटी मैं अपने आप नहा लूंगा'' तो मेरी माता जी ने दादा जी को हालांकि वह मेरी बुआ जी में प्रवेश थे, इसलिए बुआ वाले कपड़े ही पहना दिये, तो मेरा दादा जी बोले ''बस बेटी मेरी धोती ले आओ, मैं बांध लूंगा''। मेरी माता जी ने ऐसे ही एक चद्दर पकड़ा दी, जो उन्होंने कपड़ों के ऊपर से ही लपेट ली। फिर कहा कि ''मेरे लिए चाय बनाओ और जल्दी-२ में ही चाय पी ली''। मैंने पूछा कि दादा जी! आप सतलोक नहीं गए तो उन्होंने कहा कि ''बेटा मैं तो बहुत कष्ट में हूँ''। मेरी माता जी ने फिर पूछा कि आप तो राधास्वामी हजूर चरण सिंह जी महाराज से नाम उपदेशी थे, भक्ति भी करते थे, क्या उन्होंने आपकी कोई संभाल नहीं की? तब मेरे दादा जी (जो मेरी बुआ कमला देवी में प्रेतवत् प्रवेश थे) ने कहा कि ''उन्होंने मेरी कोई संभाल नहीं की, मैं तो ऐसे ही धक्के खाता फिर रहा हूँ।''

उसी दौरान मेरी आँखें भी इतनी कमजोर हो गई थी कि मुझे कम दिखाई देने लग गया था और चश्मा बार-बार बदलवाना पड़ा था। मैं एक दोस्त के साथ पढ़ने के लिए उसके पास जाता था। वहाँ पर भक्त संतराम जी ने मुझे पूर्ण ब्रह्म के अवतार सतगुरू रामपाल जी महाराज की महिमा सुनाई तथा कहा कि आप सतगुरू रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लो आपकी आँखें ठीक हो जाएगी तथा कहा कि इन्हीं कष्टों और दुःखों से हम जीवों को निकालने के लिए परमेश्वर कबीर साहेब संत का रूप धारण करके आते हैं। मैंने कहा कि ''मेरे माता पिता जी ने राधास्वामी पंथ से नाम उपदेश ले रखा है।'' भक्त संतराम जी ने कहा कि ''वह पंथ पूर्ण नहीं है, उनकी भक्ति साधना से न तो सतलोक प्राप्ति होगी और न ही जीवन में कभी कर्म की मार टल सकेगी, उसे तो सिर्फ कबीर साहेब का नुमाईदा पूर्ण संत ही टाल सकता है।''

मेरे पिता जी को साँस की बिमारी थी, दस कदम चलने पर ही वे बेहाल हो जाते थे और सांस की बीमारी के कारण दम फूलने लगता था, हाई और लो ब्लड प्रैशर की भी बीमारी थी। मेरे पिता जी को इलैक्शन डयूटी के दौरान हार्ट अटैक हुआ पर कर्म संस्कार वश वे बच गये, लेकिन तब हम यह सोचते रहे कि राधास्वामी पंथी संत गुरविन्द्र सिंह जी महाराज ने हार्ट अटैक से बचा लिया, बड़ी रजा की।

लेकिन उसके बाद तो हमने सर्दियों की एक-एक रात में अपने पिता जी का एक-एक साँस टूटते देखा है, बिल्कुल मृत प्राय हो जाते थे और सिवाय बैठ कर

रोने के हम कुछ नहीं कर पाते थे, क्योंकि दवाईयों का भी आखिर आ चुका था, डाक्टर जितनी ज्यादा से ज्यादा डोज दवाई की बढ़ा सकते थे, बढ़ा चुके थे। इससे ज्यादा वे खुराक को नहीं बढ़ा सकते थे। मेरी माता जी डेरे बाबा जैमल सिंह से लाया हुआ प्रशाद उन्हें खिलाती और राधास्वामी पंथी गुरूविन्द्र सिंह जी महाराज की मूर्ति के सामने बैठ कर प्रार्थना करती और रोती। उसी समय मेरे छोटे भाई को ओपरे (प्रेत प्रकोप) की शिकायत रहने लगी। वह रात को चमक कर उठ जाता था तथा कहता था कि ''कोई मेरा पैर पकड़ कर खींच रहा है और मुझे सोने नहीं दे रहा है'' वह भी बहुत बीमार रहने लगा। पूर्ण परमात्मा कबीर परमेश्वर जी की दया से मुझ दास को 8 अक्तूबर 1998 को सतगुरू रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश प्राप्त हुआ। सतगुरु रामपाल जी महाराज जी की असीम कृपा से बीस दिन के अंदर ही मेरा चश्मा उतर गया तथा मैंने दवाई खाना भी छोड़ दिया। मुझे सतगुरू रामपाल जी महाराज पर पूरा विश्वास हो गया था। भक्त संतराम जी ने घर पर आकर मेरे माता पिता जी को भी समझाया कि आप पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब के नुमाईंदे पूर्ण संत रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लो, आपके सर्व कष्टों का निवारण हो जाएगा।

उसके बाद मैंने भी अपने माता पिता को समझाया तो वे बोले ''हम पहले तो राधास्वामी थे, अब सन्त रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लेगें, दुनिया क्या कहेगी''? तब मैंने कहा कि ''पिता जी, यदि एक डाक्टर से इलाज नहीं हो रहा तो क्या दूसरा डाक्टर नहीं बदलते?'' परन्तु दुःखी बहुत थे, कुछ समय बाद कबीर परमेश्वर जी की शरण में आ गये और राधास्वामी पंथ के उन पांच नामों का त्याग करके, पूर्ण संत सतगुरु रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश ले लिया।

सतगुरू कबीर साहेब जी कहते हैं ''शरण पड़े को गुरू संभाले जान के बालक भोला रे'' **सारे परिवार के नाम लेने के साथ ही हमारे अच्छे दिन शुरू हो गये।** मेरे भाई का ओपरा (प्रेतबाधा) ठीक हो गया, पिता जी का स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक हो गया, पहले वे दस कदम भी नहीं चल सकते थे, अब एक आदमी के साथ लग कर चीनी की बोरी को उठा देते हैं। आज हमारा परिवार पूर्ण परमात्मा के अवतार सतगुरू रामपाल जी महाराज जी की शरण में उनकी दया से पूर्ण सुखी है।

परन्तु हमारे दादा-दादी व पिता जी की नानी जी के मनुष्य जीवन का जो नुकसान हुआ उसकी भरपाई किसी भी प्रकार से नहीं हो सकती। यदि किसी आदमी की जान बचाने के लिए लाखों और करोड़ों रूपये खर्च कर दिए जाए और उसकी जान बच जाए तो उसे उस खर्च हुए पैसे का कोई मलाल नहीं होता, और सोचता है कि चलो जान तो बची। लेकिन आज चाहे कितनी भी कीमत चुकाने पर भी मेरे दादा-दादी का जीवन जो कि शास्त्रविरूद्ध साधना (राधास्वामी पंथ द्वारा बताए पांच नामों की साधना) करने से बिल्कुल व्यर्थ चला गया (वे भूत और पितर की योनियों में कष्ट भोग रहे हैं), वापिस नहीं आ सकता। जो घिनौना मजाक ये नकली सन्त और पंथ सर्व समाज के साथ कर रहे हैं, क्योंकि चौरासी लाख योनियाँ

भोगने के पश्चात् मिलने वाले अनमोल मनुष्य जीवन को, जो पूर्ण परमात्मा को प्राप्त करने का एकमात्र साधन है उसे बरबाद कर रहे हैं। इस महाक्षति की आपूर्ति किसी भी कीमत से नहीं की जा सकती।

हे बंदी छोड़ सतपुरूष रूप सतगुरू रामपाल जी महाराज आपने बड़ी दया कि हम तुच्छ जीवों पर जो अपना सत्य ज्ञान देकर अपनी शरण में बुला लिया अन्यथा हम भी पीढ़ी दर पीढ़ी से प्राप्त इस शास्त्रविरूद्ध साधना में अपने मनुष्य जन्म को समाप्त करके कहीं भूत और पितरों की योनियों में चले जाते और इस शास्त्रविधियुक्त सत्भक्ति से वंचित रह जाते।

सर्व बुद्धिजीवी समाज से प्रार्थना है कि अभी भी समय है। इस सत्य ज्ञान को समझे तथा निष्पक्ष होकर निर्णय करें। बन्दी छोड़ सतगुरू रामपाल जी महाराज के चरणों में आकर सत्भक्ति प्राप्त करके अपने मनुष्य जीवन का कल्याण करवाएं।

।।सत साहेब।।

सतगुरु चरणों का दास
भक्त दीपक दास
मोब. +919992600853

परमेश्वर की असीम कृपा

बन्दी छोड़ सतगुरू रामपाल जी महाराज की जय

यजुर्वेद अध्याय 8 मंत्र 13 में प्रमाण है कि पूर्ण परमात्मा पापी से भी पापी व्यक्तियों के भी सम्पूर्ण पापों का नाश करके भयंकर रोगों से भी मुक्त कर देते हैं। जिसका मैं जीता जागता उदाहरण हूँ।

मैं केशव मैनाली पुत्र श्री इन्द्र प्रसाद मैनाली गाँव विकास समिति हरिऔन, जिला सर्लाही, नेपाल का निवासी हूँ और वर्तमान में काठमाण्डू उपत्यका टिमी भक्तपुर में घर बनाकर रहता हूं। मैं चुरे भावर (नेपाल) नाम के राजनैतिक पार्टी का अध्यक्ष एवं पूर्व सभासद हूँ। मेरा मोबाईल नं. +00977-9841892583 है। मेरे ऊपर सतगुरू रामपाल जी महाराज ने चमत्कारी कृपा कर मुझे और मेरे परिवार के सम्पूर्ण दुःखों को नाश कर सुखी बना दिया।

संसार की नजर में मैं सुखी और सम्मानित जीवन जी रहा था परन्तु मैं अपनी बीमारियों के कारण बहुत ही दुःखी था। मैं पिछले 20 बर्षो से खूनी बवासीर से पीड़ित था और शौच करते समय अत्यधिक पीड़ा सहन करनी पड़ती थी साथ ही 8 वर्षो से क्रोनिक ब्रोंकाइटिस से पीड़ित था। राजनैतिक कर्मी होने के कारण बहुत लोगों से मिलना पड़ता था और हमेशा मुख पर कपड़ा या हाथ रखकर बोलना पड़ता था। मैंने अपने रोगों के इलाज के लिए अच्छे से अच्छे डाक्टरों को दिखाया। परन्तु कोई फायदा नहीं हुआ। जबकी मैंने धर्म के नाम पर अज्ञानी संतो के चक्कर में पड़कर अपने जीवन के 62 वर्ष बर्बाद चुका था।

मुझे यह बातें सतगुरू रामपाल जी महाराज जी से नाम उपदेश लेने के बाद

पता चला। नेपाल संसद का सभासद होने के कारण सरकारी खर्चों पर मैं संसार के किसी भी डाक्टर से अपने रोग का ईलाज करवा सकता था। परन्तु नेपाल के मेडिकल बोर्ड ने इसके लिए सिफारिश नहीं की क्योंकि उनके अनुसार मेरा रोग लाईलाज था और कोई भी डाक्टर मुझे ठीक नहीं कर सकता। अब तो मुझे लगता था कि जीवनपर्यन्त दुःख भोगना पड़ेगा और हमेशा दवा खाते रहना पड़ेगा।

एक दिन मैं शोकमग्न बैठा था मुझे मेरे मित्र भक्त भोला दास जो कई वर्षों से सतगुरू रामपाल जी महाराज का शिष्य था मेरे दुःखों को सुनकर सतगुरू जी से उपदेश लेने पर आपके दुःखों का अवश्य नाश होगा। यह कहकर विश्वास दिलाने लगा। मैं तथाकथित बड़े-बड़े संतों की संगत करके थक चुका था। उस मित्र की वाणी मेरे लिए अंधेरे में दीपक के प्रकाश के समान मेरे मन को छू गयी। मैं तीसरे दिन ही सतलोक आश्रम चण्डीगढ़ रोड बरवाला, जिला हिसार, हरियाणा (भारत) के लिए चल दिया तथा अपनी पत्नी को भी लिया क्योंकि घुटने की हड्डी घिस जाने के कारण वह भी बहुत परेशान थी और उसकी आँखों में जल बिन्दु नामक एक लाईलाज रोग था तथा अपने छोटे पुत्र की पत्नी को भी साथ में ले लिया। मुझे रास्ते में नेपाल के कई भक्तजन मिल गए जो सतलोक आश्रम में जा रहे थे इस प्रकार मैं बिना कोई परेशानी सतलोक आश्रम आ गया।

मैं संतो व महंतो के स्वार्थ से परिचित था तथा सतगुरू रामपाल जी महाराज का कोई पुस्तक व प्रवचन नहीं सुना था, किसी के कहने मात्र से आ गया था। अतः आते ही नाम उपदेश लेने के लिए तैयार नहीं था। मेरा सौभाग्य ही था कि मेरा आना ही सतसंग समागम के समय हुआ और मुझे सतगुरू देव का सतसंग सुनने को मिला जिसमें मुझे पता चला कि इस संसार के सभी धर्मगुरू, सभी पंड़ित, सभी पुरोहित अपने निजी स्वार्थ के लिए धर्म के नाम पर लोगों को काल-जाल में फँसाकर हम भोली-भाली आत्माओं को नरक भेजने का प्रपंच रच रहे हैं वे न तो कभी परमेश्वर से मिले है और न ही उन्हें परमेश्वर की सत्यभक्ति का ज्ञान है और यह काम वे चन्द रूपयों तथा समाज में सम्मान पाने मात्र के लिए कर रहे हैं। परन्तु मैं फिर भी नाम उपदेश लेने के लिए तैयार नहीं हुआ लेकिन मेरी पत्नी तुरन्त नामदान के लिए तैयार थी। क्योंकि नाम दान लिए बिना गुरू दर्शन तथा गुरू का आर्शीवाद मिलना संभव नहीं था। यह शायद मुझ पर राजनीति का ही रंग शेष था जो मैं किसी का विश्वास नहीं करता था। फिर भी आपस में सलाह मशवरा करके हम तीनों ने नाम उपदेश तारीख 2 मई 2012 को लिया और गुरू जी के दर्शन के लिए गया। वहाँ पर दया के सागर हम पर कृपा दृष्टि करने के लिए जैसे तैयार खड़े थे। जैसे ही मैंने अपने रोगों के बारे में कहा तो सतगुरू देव जी बोले "सब ठीक हो जाएगा" का आर्शीवाद मेरे सिर पर हाथ रखकर दिया और मेरे साथ चमत्कार हो गया। सुबह शौच जाने पर पाखाने से खून गिरा और उसके साथ ही बवासीर मानो समाप्त ही हो गया। दो दिन आश्रम में रहने पर क्रोनिक ब्रोंकाइटिस करीब 80 प्रतिशत ठीक हो गया था जो अब पूरा ठीक हो चुका है।

मात्र महीने दो महीने में कभी-कभी कुछ खाँसी हो जाती है। पत्नी के घुटने का रोग भी ठीक हो गया। काठमाण्ड़ो आने पर काठमाण्डू के उसी अस्पताल में उनकी आँख का पुनः परीक्षण करवाया। डाक्टर भी यह देखकर आश्चर्यचकित हो गए कि उनकी आँखो में जल बिन्दु नामक रोग का कोई नामो निशान भी नहीं है और आँखे पूर्णतया ठीक हैं।

मेरा रोग मुक्ति का चमत्कार परिवार, रिश्तेदारी तथा पड़ोस में चारों तरफ फैल गया। मेरे परिवार के अन्य सदस्य भी किसी न किसी रोग से परेशान थे। जैसे मेरे बड़े भाई जो खुद एक डाक्टर है उनका सारा शरीर फूल (Swelling) जाता था। मेरी बेटी को महीनावारी (मेनसेज) के समय असाध्य रूप से पेट में दर्द होता था। मेरी दूसरी बेटी जो पेशे से वकील है साइटिका और गले की हड्डी घिसने के रोग से जीवन से निराश हो चुकी थी तथा मेरी बहन का पति भी जल बिन्दु रोग से पीड़ित था। सभी मेरे ऊपर सदगुरूदेव की कृपा से बहुत ही प्रभावित हुए। तब तक मैं आश्रम के नियमों और भक्ति भाव से थोड़ा बहुत परिचित हो गया था। मैंने सभी को "ज्ञान गंगा" पुस्तक अच्छी तरह पढ़ने के लिए प्रेरित किया। अगली बार जब मैं आश्रम आने लगा तो सभी को साथ ले लिया। उन लोगों को नाम उपदेश लेने में कोई दुविधा नहीं थी। सभी ने नाम उपदेश लिया विश्वास के साथ भक्ति की। आज सभी रोग मुक्त होकर सुखी जीवन जी रहे हैं।

सतगुरू रामपाल जी महाराज पूर्ण परमात्मा के प्रतिरूप नहीं "पूर्ण परमात्मा" ही हैं जो अपने को छुपाकर रख रहें हैं और अपने को "पूर्ण परमात्मा का दास" कहते हैं और धरती पर फँसे हुए जीवों को बन्धन मुक्त करके सतलोक ले जाने के लिए आए हैं। हमारे सदग्रन्थों में प्रमाण है कि जब कलयुग का पाँच हजार पाँच सौ पाँच वर्ष बीत जाएगा तो तारणहार संत, जग तारण के लिए धरती पर आऐंगे।

"कबीर, पाँच हजार अरू पाँच सौ पाँच जब कलयुग बीत जाए
महापुरूष फरमान तब जग तारण को आए"।।

सर्व प्रेमी भक्तों! समय आ गया है, पूर्ण संत भी आ गए हैं और ज्ञान अमृत वर्षा कर रहें हैं। वर्तमान के सभी नकली संत महंत रूपी ठगों से बचो और जल्द से जल्द सदगुरू के चरण में आकर निःशुल्क नाम उपदेश लेकर अपना कल्याण कराओ और पूर्ण मोक्ष प्राप्त करों। ।। सत साहेब ।।

केशव प्रसाद मैनाली (दास),
काठमांण्डू (नेपाल)
फोन नं. +00977-9841892583

''भक्त रामस्वरूप दास की आत्मकथा'

बन्दी छोड़ कबीर साहेब की जय

मैं भक्त रामस्वरूप पुत्र मंगत राम गांव बड़ौली जिला-अम्बाला का रहने वाला हूँ। मैंने 13 साल से धन-धन सतगुरु से नाम ले रखा था। 6 साल पहले मेरे हाथ-पांव काम करना छोड़ गये थे। कमर से नीचे जैसे मेरा सारा शरीर मृत प्राय हो गया था। मेरे दोनों लड़के मेरे को अम्बाला सरकारी हस्पताल में लेकर गये फिर प्राईवेट डाक्टरों को भी दिखाया। इसके बाद मुझे 2 साल तक ईलाज के लिये इधर-उधर ले जाने के बाद मुझे P.G.I. चण्डीगढ़ भी लेकर गये वहां एक साल में मेरे दो बार टेस्ट किये गये। क्योंकि जिस मशीन से मेरे टेस्ट होते थे उसमें मेरा नम्बर एक महीने में आता था। उसकी टेस्टींग फीस छः हजार रूपये थी। वहां पर मेरे को दोनों बार की टेस्टींग में बीमारी के कारणों का पता नहीं लगा तो दोनों बार मेरे सिर का आप्रेशन करने को कहा गया जिसमें मेरी जान का खतरा बताया और पूर्ण ठीक होने की कोई गारन्टी नहीं है ऐसा कहा। उसके बाद घर वाले मुझे बाबा रामदेव के योग आश्रम में भी लेकर गये वहां मेरा कुछ दिन इलाज होता रहा कोई आराम न होने से मेरे को घर ले आये। फिर मुझे झाड़-फूंक करने वालों के पास पंजाब हरियाणा आदि स्थानों पर लेकर गये वहां भी मेरे को कोई आराम नहीं हुआ। हमने सोच लिया कि अब जीवन ही थोड़े दिन का है। जब मैं सभी ओर से निराश हो गया तो मेरे को मेरी लड़की जिसकी शादी शाहपुर (अम्बाला) में हुई थी उसने मेरे को वहां पर बुलाया गया। मेरे जमाई संजू ने कुकू - भगत के बारे में बताया। जो 15 अगस्त 2008 को मेरे को लेकर बरवाला आश्रम में सतगुरु बंदी छोड़ रामपाल जी महाराज के पास लेकर आये 16 अगस्त 2008 को मैंने नामदान लिया। उसके बाद मेरे को आराम होने लगा। गुरू जी की कृप्या से अब मैंने अपने खेत में आप ट्रेक्टर चलाया और अपनी सारी जमीन की बुवाई का काम किया महाराज के आशीर्वाद से मेरे को दुबारा जीवन दान मिला। महाराज बन्दी छोड़ ने जो कप्या की उसको जुबान से ब्यान नहीं कर सकता। गुरु जी आप सतलोक से मेरा जीवन दान देने के लिए आए हो मेरा कोटी-कोटी दण्डवत् प्रणाम है।

जय बन्दी छोड़ की।

आपका दास

भक्त राम स्वरूप दास

गांव - बड़ौली, जिला - अम्बाला

❖❖❖

➢ सतलोक आश्रम की अन्य पुस्तकें (आध्यात्मिक ज्ञान गंगा, ज्ञान गंगा, गहरी नजर गीता में, गीता तेरा ज्ञान अमृत, सृष्टि रचना सम्पूर्ण, मानवता का ह्रास तथा विकास आदि) हमारी वेबसाईट (www.jagatgururampalji.org) से डाउनलोड कर सकते हैं।